



# राजस्थानी कहावतें

[ बंगाल हिन्दी मण्डल द्वारा पुस्तक ]

सम्पादक

डा० कर्हीचालाल सहल

बंगाल हिन्दी-विभाग

बिरसा बाट'र कामेज पिसानी

प्रकाशक

बंगाल हिन्दी मण्डल

८, इंडिया एक्सचेंज प्लेस, कलकत्ता-१

वितरक  
भारती भण्डार  
लीडर प्रेस इकाहाबाद

प्रथम संस्करण  
वर्ष २०१७ वि०  
मूल्य ५/००

मुख्य  
सीताराम शुक्ले  
लीडर प्रेस, इकाहाबाद

## समर्पण

विद्या-विहार, पिलानी

के

कूलपति

लेफ्टिनेंट कमाण्डर अश्वेय श्री शुक्लदेवजी पांडे

को

उनके संरक्षण और प्रोत्साहन में प्रस्फुटित

अपनी साहित्य-साधना

का

बहु अमिष पुष्प

अद्यापूर्वक समर्पित

क० देयाशाल साहू



# आमुख

## ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

हम चाहे किसी भी भाषा की कहावतों का अध्ययन करें उसकी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को मनी भाँति समझे बिना अध्ययन में समया नहीं जा सकती। राजस्थानी भाषा के सम्बन्ध में भी यही बात लागू होती है। इस भाषा की कहावतों का सम्पूर्ण रूप से अध्ययन करने के लिए केवल राजस्थानी साहित्य के इतिहास पर दृष्टि रखने से ही काम नहीं चलेगा क्योंकि राजस्थानी भाषा में अनेक कहावतें ऐसी हैं जिनकी जड़ें प्रामाण्य-महामाण्ड काल के सुदूर अतीत तक पहुँची गई हैं। अतः राजस्थानी भाषा की कहावतों के सम्पूर्ण परीक्षण के लिये हमें प्राचीन भारतीय वाङ्मय को भी लक्ष्य में रखना होगा। विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं का लिखित साहित्य बालिक संस्कार तथा रीति-रिवाज ही भारतवर्ष की मौलिक सांस्कृतिक एकता के परिचायक नहीं हैं कहावतों द्वारा भी इस देश की अलंकार सांस्कृतिक एकता पर प्रकाश पड़ता है।

बेकन की इस प्रसिद्ध उक्ति से मनी परिचित हैं कि किसी राष्ट्र की प्रतिभा विद्यमानता तथा उसकी अन्तरात्मा का दर्शन उसकी कहावतों द्वारा ही होता है।\* इस उक्ति से हम बहुतों में सहमत हैं किन्तु एसी कहावतें भी अनेक हैं जो राष्ट्रीय परिधि का अतिक्रमण कर अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में संचरण करने लगती हैं। ऐत-विदेश का भेद वहाँ विरोधित हो जाता है और जहाँ सम्पूर्ण समुदाय ही एक कुटुम्ब का रूप धारण कर लेती हैं। फिर कहावतों का परस्पर आदान-प्रदान भी होता है। अित प्रकार जो संस्कृतियों में सम्पर्क स्थापित होने के परिणामस्वरूप आरस्परिक आदान-प्रदान निरालम्ब स्वाभाविक है उसी प्रकार जो लोय व्यापार-परि के हेतु प्रवास में जाते हैं उनके साथ उनकी लोकोक्तियाँ भी जाया करती

\*The genius, wit and spirit of a nation are discovered through its proverbs.—Bacon.

रहती हैं। अनेक जबसरीं पर तो यह निर्णय करना भी बड़ा कठिन हो जाता है कि जन्मक लोकोक्ति कौन से देश में उत्पन्न हुई क्योंकि एक समान लोकोक्तिवाँ अनेक राष्ट्रों के लोकोक्ति-साहित्य में प्रायः मिल जाती हैं। अथवा घ की कहावतों के प्रसंग में पुण्यदत्त महापुरुष की निम्नलिखित लोकोक्ति का उल्लेख मैंने किया है —

की गण्ड पितृषु अविदेहिपतेर ।

मुक्कड छवयंशु सारमेर ॥ १-८-७

“ मुक्कड छवयंशु सारमेर ” (बग़ैमा की तरह कुत्ते भौंकते हैं तो प्रौकने दो) को पढ़ कर *The moon does not heed the barking of dogs\** का स्मरण हुए बिना नहीं रहता। इस कहावत को देखी कहा जाय या विदेही ?

हम नहीं कह सकते कि इस प्रकार दो विभिन्न राष्ट्रों की लोकोक्तियों में पारस्परिक साम्य का एक मात्र कारण भाषा-प्रदान ही है। अनुभव की समानता के कारण भी ऐसा होना सम्भव है। जिस प्रकार कमी-कमी नदी के मूल रूप का पला लगाना मुश्किल होता है उसी प्रकार लोकोक्तियों के मूल रूपों को ढूँढ निकालना भी दुष्कर हो जाता है।

किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण अन्वयन के लिए हम उसके बस देश-काल आदि सभी से परिचित होना चाहते हैं। इसी प्रकार कहावतों के सम्बन्ध में भी समझिये। राजस्थानी कहावतों की एक व्यक्ति के रूप में कल्पना की जाय तो इन कहावतों का निम्नलिखित विविध रूप दृष्टिगोचर होता है।

१—बहुत सी कहावतें राजस्थान की मापदण्ड हैं।

२—अनेक कहावतें अपनी जायना में सम्पूर्ण भारतीय परिवार की उदस हैं।

३—अनेक कहावतें सार्वभौम हैं।

ऐसी परिस्थिति में यह आवश्यक है कि राजस्थानी कहावतों को उनकी सम्पूर्णता में देखने के लिए न केवल राजस्थान और भारतवर्ष के ही कहावती साहित्य वा विद्वान्वाक्यन किया जाय बल्कि विदेशी साहित्य पर भी एक सरसरी दृष्टि डाली जाय। सभी इन कहावतों के उक्त विविध रूप वा कुछ परिचय मिल सकें। इसीलिए विषय प्रबन्ध के रूप में भारतीय और विदेशी कहावतों

\* The Oxford Dictionary of English proverbs compiled by William George Smith p. 451 1935 Edition.

का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया गया है। भारतीय साहित्य की कहावतों को मैंने संस्कृत पाणि प्राकृत और अपभ्रंश की कहावतों में विभक्त किया है। संस्कृत भाषा की कहावतों के प्रयोग में वैदिक बादमय इतिहास-पुराण स्मृति-ग्रन्थ, नीति-साहित्य तथा संस्कृत काव्य एवं नाटकों की लोकोक्तियों से उदाहरण दिये गये हैं।

— भारतीय साहित्य तो एक विशाल समुद्र के समान है। हजारों वर्षों के साहित्य की कहोवतों का किस्तूत विवेचन न तो मेरा ध्येय ही है और न यह सङ्ग्रह संभव ही है। कहावतों के इस ऐतिहासिक विवेचन के आचार पर मैं केवल यह रिक्त काया चाहता हूँ कि अनेक बार कहावतों के क्षेत्र में पहुँचने पर प्रादेशिक श्रुतियाँ टूटने लगती हैं और हम उस स्वस्थ वातावरण में पहुँचकर साँस लेने लगते हैं जहाँ भारतीय संस्कृति अपने महीम बीमब के साथ प्रकट हुई है। हमसे यह भी पता चलता है कि किस कहावत को हम नहीं समझते हैं वही कहावत न जाने कितनी प्राचीन निकले जिसे हम अपने प्रदेश की समझते हैं वही न जाने कितनी अन्य प्रदेश की निकल जाने प्रदेश की ही नहीं कभी-कभी दूसरे राष्ट्र की ही निकल जाये। †

---

† They, therefore, form a basis for those who are labouring to bridge over the gulf between Eastern and western thought.—Preface to Eastern Proverbs and Emblems (Rev J Long p 6).



# संस्कृत वाङ्मय और कहावतें—एक विहंगम दृष्टि

## १—वेदों की कहावतें

लोकोक्तियाँ कितनी प्राचीन हैं इसके सम्बन्ध में निश्चयपूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता। भारतवर्ष के प्राचीनतम किञ्चित् साहित्य ऋग्वेद में लोकोक्तियों के अनेक उदाहरण मिलते हैं। यथा •

अ.—न वै स्वैवानि ऽभ्यामि संति ।

स्वियों की मित्रता कोई मित्रता नहीं ।

अ.—अग्निनाग्निं ऽभिद्वते ।

आग से आग बढ़फटी है ।

न.—न ऽदते चांस्य ऽस्माय वेवा । १

दिना कष्ट उठाये देवता भी सहायता नहीं करते ।

डा० सुनीतिकुमार बादुर्या के ग्रन्थों में 'ऋग्वेद से शुरू करके अब तक के भारतीय साहित्य में प्रचार और कहावतों का एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है। ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में कितने ही पूरे अर्थ ऋक पाद या अर्थपाद को अर्थात् लोकोक्ति या कहावत कहा जा सकता है। २ इसी प्रकार 'वाङ्मय प्रचार' के विद्वान् लेखक श्री सुशीलकुमार रे की भी आशयता है कि 'न वै स्वैवानि ऽभ्यामि संति' ऋग्वेद संवाद मूल १०।१५।१५ जैसे प्रचार-वाक्य न केवल ऋग्वेद में बल्कि ऋग्वेद-संघों और बौद्ध त्रिपिटक में भी विरल नहीं हैं। ३

१ नितायने—( God helps those who help themselves.

(२) हिम्मतें भरवां, भरवे सुरा ।

बारसाह की बेटी ककीर से निकार ।

(२) २ दैविये भूमिका यज्ञस्थानी कहावती ।

३ द्रष्टव्य वाङ्मय प्रचार भूमिका । प्रथम संस्करण पृष्ठ ९

वैदिक कथावर्तों का कबो कोई विविध अध्ययन और पर्यालोचन नहीं हुआ है। हाँ या द्विवेद नामक एक विद्वान् ने अथर्व 'गीति मंत्ररी' धीरे-धीरे प्रश्न की रचना की थी जिसमें आठ अध्याय और २०० श्लोक हैं। श्लोक के पूर्वार्द्ध में कोई सूक्ति अथवा कथावर्त है तथा उत्तरार्द्ध में स्पष्टीकरण के लिए किसी कथा की ओर संकेत है जिसका या तो ऋग्वेद में वर्णन हुआ है अथवा जो वहाँ प्रसंगत प्राप्त है। यहाँ कुछ श्लोक नीतिमंत्ररी से उदाहरणार्थ उद्धृत किये जा रहे हैं —

बहुप्रजस्य पुत्रस्य सुबाधोऽपि हरा विपत् ॥  
 वीरमिष्टं मनुजम्वा वयस्याबहुभोत न ॥ ऋ० १, ४ ६-  
 विजग्य मनुजस्य संतो मर्त्य प्राप्य सहामिना ।  
 अतुरधमसाङ्कत्वा तं लीजमुजकः पपु ॥ ऋ० १ २०, ६-  
 भुजाभुर्न कृतं कर्म भुञ्जते वैशता वनि ।  
 सविता हेमहस्तोऽनुद्भवोऽथ-पुवको द्विजः ॥ ऋ० १ ३५, ९-  
 प्रभोरपि विराचित्वं कथहानि करोति यत् ।  
 विवातिवि दद्यापाचरिष्टो मेवोऽभवत्ततः ॥ ऋ० १, ५१, १  
 तत्त्वविदपि संसारे मूढो भवति लोमतः ।  
 तत्त्वज्ञा सरमापाचरिष्टमर्म नवां ग्रहे ॥ ऋ० १, ६२, ३  
 अथ्यं सुहृज्जलो अस्ता धनुम्यं ता स्यूवतः ।  
 अविभय्यां तापितो भुमुस्त्रित-कुरे निपातिक्तः ॥ ऋ० १ १०५, १७-  
 यादुसाङ्गव्यते बंभुर्नानि कर्मास्य तादुधम् ।  
 अविभनाबभवावर्षं बरतुः वेदवे दितम् ॥ ऋ० १, ११६, ६-  
 कुलकमाप्तो बर्षो न त्याज्यः प्रभुनि सह ।  
 कन्धोऽविभय्यां विभय्यां हि कुलकं सुभुक्तं सुदुः ॥ ऋ० १, ११७, ८-  
 न दद्याद्दोषीतामामाभयं चूरकर्ममाम् ।  
 ईत्या दत्ताभयाः कुरे प्राप्तिपरमेभवंनी ॥ ऋ० १, ११६, ११, २४  
 देवा रजन्ति तं नित्यं यस्य स्यात् विजन्तं मनः ।  
 ररत्नेन्द्रोऽमताञ्च धोचतुर्बाक्षियतुर्बताम् ॥ ऋ० १, ५४, ६-

या द्विवेद ने स्वयं ही गीति मंत्ररी के श्लोकों की रचना की और उन पर टीका लिखी। टीका में सायणभाष्य की पद्धति का अनुसरण किया गया है इसलिये

‘नीति संवरी का रचयिता सामन से पूर्ववर्ती नहीं हो सकता ।’

## २—ब्राह्मण-ग्रन्थों की कहावतें

वेदों की भाँति ब्राह्मण-ग्रन्थों में भी कहावतें और सूक्तियाँ इतस्तत् बिखरी पड़ी हैं । उदाहरणार्थ—

- क अमुनं कृत्वा घेवति ।  
 ख कृन्वो वै कृत्वा पर्यग्यो वर्धति ।५  
 ग कस्य वा घर्म ।  
 घ घत् वै म्युनं तत् पूर्वम् यत् पूषम् तत् म्युनम् ।  
 ङ भनुष्या पूर्वकेऽस्तिघर्मति ।

ब्राह्मण-ग्रन्थों में तो ‘सुभाषित’ शब्द का भी प्रत्यक्ष प्रयोग हुआ है । यथा “एषा बभ्रुमात्वा याया यात्रिके-दर्वैर्पीयमाणा सुभाषितकपात्तद्विहितः सर्वतो मीयते बभ्रुते । यनाहुषा ह्युत्तिक्रेण यायादहस्ता म्यनुपयोजनाय । एवं वाति ते बहवो क्वा सः पुरोव्याग्बृहपतिवेम्निहोत्रम् ॥ ऐ० ब्रा० २५, ५ ।

ऐतरेय ब्राह्मण में ही हरिश्चन्द्र की कथा के प्रसंग में निम्नलिखित सुभाषित उपलब्ध होते हैं—

- क. नाताघाताय धीरस्तीति रोहित शुभुन ।  
 ख आस्ते नव आतीनस्योर्ध्वस्तिष्ठति तिष्ठतः ।  
 गेते निपद्यमानस्य वरति वरती नयः ॥

उक्त ब्राह्मण-ग्रन्थ में प्रसुक्त ‘सुभाषित’ शब्द लोकोक्ति का ही रूप मान पड़ता है ।

“आस्यां वैशी वरतराम कवे न लुडी होय” राजस्थानी भाषा की एक प्रसिद्ध कहावत है जिसकी समानान्तर उक्ति “बहुर्वै कस्यम्” वैतथीय ब्राह्मण ( ११४ ) में भी प्राप्त होती है । इसी प्रकार अन्य ब्राह्मण-ग्रन्थों के सम्बन्ध में भी समतया चाहिए ।

∨ Indian Antiquary April 1870, vol ∨ The Nitiman-  
 jari of Dya Dviveda by Dr F Kielhorn, Deccan Coll-  
 ege Poona.

५ निहारये—“वासी मदा वरमंत ।”

## १—उपनिषदों की कहावतें

## क प्राज्ञवर्ग की कहावतें

उपनिषदों में बहिन ज्ञानकांड का विवचन होने के कारण उनको वेदों का मस्तक कहा गया है। दार्शनिक ग्रन्थों में लोकोक्तियों का प्रायः अभाव पाया जाता है। इसका कारण यह है कि लोकोक्तियाँ मुख्यतः जनसामान्य के बराबर की उक्तियाँ होती हैं जब कि दार्शनिकता तत्त्वस्पर्शी विम्लन की अपेक्षा रखती है। इसलिए दार्शनिक ग्रन्थों को अनेक उक्तियाँ लोकोक्तियाँ न रहकर प्राज्ञोक्तियों का रूप धारण कर लेती हैं। यहाँ पर उपनिषदों में कुछ प्राज्ञोक्तियों के उदाहरण दिये जा रहे हैं—

- १ मात्स्यस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति । बु० उ० २।१।५
- २ आरना वा अरे इत्यथ्य भोतव्यो भंतव्यो. बु० २।४।५, ४।५।५६
- ३ आचारः प्रथमो धर्म । माय सं० ४।१
- ४ अय्यात्मविद्या विद्यानाम् । म० पोता १०।३२
- ५ कर्ममा दध्यते चतुर्विधया तु प्रमुष्यते । १ सं० सो० २।९८
- ६ उदारचरितानां तु वतुर्बन्धुर्दृढकम् । महा० १।७१
- ७ उर्वीं पुण्डी बहुता विदना । महा ना० १०।१४६\*
- ८ य ग्यस्वर्गं तु चरितानि तांश्च स्वर्गोपास्यानि नो इतरानि । तैत्ति० १।११।९
- ९ यो वै भूमा तस्तुर्ध्वं गच्छेत् सुक्रमस्ति । छन्दो० ७।२३।१
- १० विद्ययाऽमृतमश्नुत । ईसा० ११ ।

संस्कृत के विद्वानों में इस प्रकार की उक्तियों का उसी प्रकार प्रचलन है विल प्रकार लोकोक्तियों का सामान्य लोगों में। इस प्रकार की उक्तियाँ यदि कहावत कहना सफ्तो है तो इन्हें एक विशिष्टधर्म (प्राज्ञवर्ग) की कहावतें कहा जा सफता है।

## ख लौकिक ग्याय

किन्तु उपनिषदों में यत्र-तत्र दृष्टान्तों के रूप में लौकिक ग्यायों का प्रयोग हुआ है। उदाहरणार्थ—

- १ कोऽयमभरम्यायेन नृपतो भवति । ना० प० ५।५२
- २ कालमेव प्रतीसेत् निर्देयमुत्कम्यायेन चरित्वात् । ना० प० ५।१५ ।

\* ६ कालोहपरं निरवेविचित्रुला च वृषी । (चरवृति)

मुंङकोपनिषद् १।२।८, मीमा ७।९ और कठोपनिषद् २।५ में 'अंबेनैव वीक्ष-  
मावायवावा' इस कहावती उपमा का प्रयोग हुआ है। कबीर की निम्नालिखित  
छाबी में आते-आते इस उपमा ने एक कहावती उक्ति का रूप धारण कर लिया—

आ का मुँह भी अंबला, चेला करा गिरान् ।

अम्बे अम्बा ठेलिमा दीनू कूप पड़त ॥

बालन्दबनद्वय अवीठनाव स्तवन में भी इस न्याय का प्रयोग हुआ है—

“पुख्य वरस्वर अतुमव बीहदे अम्बो अम्प बुलाय ।

वस्तु बिबारे बो आगम कटि, वरन परन ग्ही ठाम् ॥

य—कहावती उपमाएँ

उपनिषदों में कुछ इस प्रकार की उपमाएँ हैं जिन्हें एक प्रकार से कहावती  
उपमा कहा जा सकता है। इस प्रकार की उपमाओं में स्वतन्त्र रूप से कहावत बन  
सकने का सामर्थ्य विद्यमान रहता है। जैसे

“अर्थात्प्य चतुरो वेदान्तर्भसाहभाष्यनेकसः ।

ब्रह्मवर्त्तं न जानाति र्वाँ पाकरत्तं यवा ॥”

“रर्वाँपाकरत्तं यवा” के स्थान पर यदि कहा जाय कि “कुरछी के जान बीबव  
की स्वाद ?” तो यह निश्चित रूप से कहावती आकारप्रकार की ही एक महत्त्व  
पूर्ण उक्ति का रूप धारण कर लेगी।

“बिदानम् पद-संग्रह” में यह कहावती उपमा लोकोक्ति के रूप में ही  
प्रयुक्त हुई है।

“रस भाजन में रहत रबी गित ।

नहि तस रस पहिचान ॥”

य—आयाजक

“काल पर लो आज कर” एक कहावती वाक्य है। उपनिषत्कार की भी  
एक ऐसी ही उक्ति उपलब्ध होती है “अद्य क्व मण्डू यः ।” भवसं १।१९  
“हस्तस्य विण्डमुत्सृज्य लिहेत्पूर्वमस्मत्तन ।” जा० ब० ४।५८ को पढ़कर इसके  
समकाल अनेक लोकोक्तियों का स्मरण हो जाता है। “लीचिन ग्यावांभलि” में  
“विण्डमुत्सृज्य कर्त्तैडि” न्याय इनी प्रसंग में प्रयुक्त हुआ है जिसका अर्थ है मधुर  
विण्ड को छोड़कर हाथ बाटता है। ‘रघुनाथवर्मन् के लौकिक ग्यावरलाकर’ में  
उक्त न्याय का ‘विण्डं हित्वा कर्त्तैडि’ यह अन्वय प्राप्त होता है। पंचपात्रिका

पृष्ठ ४९ में इस न्याय को "आमानक" धार्य द्वारा अभिविहित किया गया है ।  
 "सोप्यमाभाकं लोके विग्नानुत्तुग्य कर्त्तुं शक्यते ।" "सौरं विहायारोचकप्रस्तः  
 सौषोरचविमनुभवति" ० जैसी उक्तियाँ इसके समानान्तर रची जा सकती हैं ।

### ४—कहावती बंधनूपा

इसी प्रकार निम्नलिखित उक्तियों को विचारार्थ लीजिये—

१—आत्मतीर्त्तं सन्तुत्तुग्य बहिस्तीर्त्तानि यो ववेत् ।

करस्यं स बह्वात्सं त्यक्त्वा काचं विमार्त्तते ॥ आ० ४० ४।५०

इस पद्य के उत्तरार्थ को यदि 'हाय रो रत्न छोड़ र काच हूँ' में बदल  
 दिया जाय तो कौन इसे कहावत नहीं नहैया ?

२—पिनीलिकायां कृष्णायां कङ्कस्तत्र प्रवर्त्तत । यो० सि० १।११४

३—श्रीतिः प्रीत्या भवति । सानर० ९५ ८

४—मृतस्य नरत्वं कुतः । यो० सि० १।४५

५—मृता मोहमयी जाता, जाती बोधमयः सुतः ।

सूतकृत्यतन्मनूती कर्त्तं सम्प्यामुवात्महे ॥ नवे० २।१३

६—यथा पक्षिणो रात्री तदभाषित्य तिष्ठति ।

विद्यम्य च पुनयच्छेतद्भूतसमापयः ॥ नवे० सं० १।२२ ९

७—रिपुना हृष्यते रिपुः । मही० ५।१११

८—मायुष्यात्तकारणम् । मही० ३।१० १

जिन प्रकार कहावतों में कभी-कभी असम्भव घटनाएँ रची जाती हैं वही  
 प्रकार उपनिषदों में भी इस प्रकार का वाक्यविन्यास देखा जाता है । उदाहरणार्थ—

१—काको वा हंसवद्वपश्चेत् अयद्वपश्चु निरवत्तम् । से० वि० ६।९२ ११

२—मनुत्तककमारस्य श्रोतुर्त्तं चद्वपश्चेत्तपत् ।

निमित्तं घण्ट्युदेव एवश्चेत्तपश्चित्त तत् ॥ से० वि० ६।९०

### ख—निष्कण

ऊपर जिन उपनिषदों में उदाहरण दिये गए हैं वे प्रायः परवर्ती उपनिषद्

७ लोकिकन्यायाश्चरति, द्वितीया भाषा । Colonel G. A. Jacob, P 47

८ cf. Love begets love.

९ "चिद्विद्या रंज बसेरा ।"

१० "बव तद्व जीना, तद्व तद्व सीना ।"

११ "काया हंस-वाक्य बलि भुते जननी जात " ।

हैं पूर्ववर्ती नहीं। पूर्ववर्ती उपनिषदों में यदि लोकोक्तियों का बाहुस्य न हो तो आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि वेला ऊपर कहा गया है लोकोक्ति बटना की ठेकर चलती है जब कि दार्शनिक ग्रन्थ चिन्तन-मनन पर आधारित रहते हैं। उपनिषद् जैसे ग्रन्थों में से यदि सूक्तियाँ अथवा प्राचीनकृतियाँ एकत्र की जायें तो जनायास एकत्र की जा सकता है किन्तु उपनिषदों में प्रयुक्त लोकोक्तियों के सम्बन्ध में यह बात नहीं कही जा सकती तथापि समझाने के लिए ग्याय बुध्दात्त उदाहरण आदि का यहाँ प्रयोग करना पड़ता है वहाँ ऐसी उक्तियाँ व्यवहार में लागी पड़ती हैं जो लाकसामान्य हैं। कबीर जैसे दार्शनिक ने भी लोक के सामान्य अनुभवों के सहारे दार्शनिक सिद्धान्तों को बहुत सीधे ढंग से समझा दिया था।

फिर भी इतना निःसन्देह कहा जा सकता है कि उपनिषद्-काल में भी कहावतों जैसी वस्तु प्रचलित अवश्य हो चाहे घासनीय एवं दार्शनिक ग्रन्थों में कहावतों का बाहुस्य न मिलता हो।

### इतिहास और पुराणों की कहावतें

इस शीर्षक के अन्तर्गत रामायण महाभारत योगवासिष्ठ तथा पुराणों की कहावतों पर विचार किया गया है। रामायण और महाभारत तो हमारे यहाँ इतिहास-ग्रन्थ माने ही जाते हैं योगवासिष्ठ का भी लोग वास्तविक रामायण का उत्तर अथ मानते हैं और उसे वासिष्ठ रामायण भी कहते हैं। यही कारण है कि इस ग्रन्थ की कहावतों को भी मैंने रामायण महाभारत की कहावतों के साथ ही रचना उचित समझा है।

#### १.—रामायण की कहावतें

रामायण और महाभारत भारतीय संस्कृति के दो नेत्र हैं। दोनों के बाव आदि कवि की रामायण का सर्वाधिक महत्त्व है। मानवजीवन के विविध प्रसंगों तथा तत्कालीन समाज का अन्धा विषय इन महाकाव्य में हुआ है। रामायण सूक्तियों का बंधार ही है ही इसमें स्वातन्त्र्य-स्वाम वर अनेक लौकिक प्रचारों का भी उल्लेख हुआ है। यथा

न रिजयदुदरंभे ननुर्धं द्विषा इति ।

क्याती लोकप्रचारोऽयं भरतेमान्यथा इत ॥ ३।१६।३४

अर्थात् मनुष्य पित्रा के स्वभाव वा अनुकरण न कर माता के स्वभाव का अनुकरण करता है इन लोकप्रचार को भरत ने अत्यन्त निन्द कर दिया क्योंकि

भरत कीकैयी के पीछे नहीं गये। इस सम्बन्ध में राजस्थानी की निम्नलिखित कहावत उल्लेखनीय है—

“मा पर पुत पिता पर षोड़ो धबो नहीं तो षोड़म-बोड़ो।”

अर्थात् पुत्र माता का अनुसरण करता है षोड़ा पिता का। यदि बहुत नहीं तो षोड़ी बहुत अनुकम्पता तो बेसी ही जाती है।

यह कहावत राजस्थान में ही नहीं बल्कि पश्चिम के साम्य भारतवर्ष के बहुत से अन्य प्रदेशों में भी प्रचलित है। इस कहावत का मूल वास्मीकि रामायण के उक्त लोकप्रवाद में मिल जाता है।

इसी प्रकार एक दूसरी राजस्थानी कहावत है “मा पैल डोकरो, पड़ा पैल ठोकरी” अर्थात् ससकी माँ के अनुकम्प होती है और बड़े क बंठित दुकड़े बड़े के अनुकम्प। एक ऐसी ही कहावत वास्मीकि रामायण में भी मिलती है—

धृत्वात्प्र प्रबादोर्म्यं कीकिकः प्रतिभाति मे ।

पिबुधमनुकायन्ते नरा मातरमंभवा ॥ २।१५।२८

सुमन की कीकैयी के प्रति उक्ति है कि यह लौकिक प्रभाव मुझे सत्य ज्ञान पड़ता है कि पुत्रप पिता का अनुसरण करते हैं और स्त्रियाँ अपनी माता का। यह तुम्हारे आचरण से ही प्रकट है। न बाप को है पड़ो कुमारिका इसी प्रकार की उक्ति प्रियप्रवामकार की भी है। एक मराठी लोकोक्ति में भी कहा गया है—

“जाय तमी मातो व जाती तमी पोली।”

किन्ती की मकाल मृत्यु नहीं होती इस तरह की कोई लोकोक्ति रामायण-काल में प्रचलित रही होगी तभी तो बादि कवि ने कहा है—

धृत्यं बतेदं प्रबदन्ति लोके नाकालमृत्युर्बन्धतीति धृत्ः ॥ ५।२८।३

धृत्वं हृषकाले मरत्वं न विद्यते ॥ २।२०।५१ ।

इसी प्रकार हनुमान ने आत्महत्या न करने का निश्चय करते हुए कहा था—

“जीवन्मृशानि वस्यति ।”

राजस्थानी भाषा के मुकवि समयसुन्दर ने भी अपने “सीताराम चौपाई” नामक ग्रन्थ में लिखा है—

“जीवतो जीव कस्यान देसइ ।”

यह पंक्ति “जीवन्मृशानि वस्यति” का ही अनुवाद ज्ञान पड़ती है।

वास्मीकि रामायण में अहाँ प्रवाद आदि शब्दों का प्रयोग नहीं हुआ है वही



भी अनेक ऐसी उक्तियाँ हैं जिन्हें निरवधारक रूप से "लोकहित" की संज्ञा दी जा सकती है। उदाहरण के लिए "अहिंसेन अष्टौ पादाभिव्रजामाति न संभव" ५।४२।९ को लीजिये। यह रामचरित मानस की "जय जलें जय ही की भाषा" इस उक्ति के समानांतर रखी जा सकती है। इसी प्रकार की अन्य कहानतें नीचे उद्धृत की जा रही हैं—

१—माय्य छिन्ना कुडारेण निम्बं परिचरतु कः ।

यश्चेन पयसा सिम्बेस्रीवास्य मधुरो भवेत् ॥ २।३५।१६ । १२

अर्थात् आम के पेड़ को कटार से काटकर नीम की परिचर्या कौन करे? नीम को दूब से सींचने पर भी वह भीठा नहीं होता।

इस प्रसंग में रामस्थानी की निम्नलिखित उक्ति उल्लेखनीय है—

"नीम न मीठी होय, सींचो पुड़ कर चीब सैं ।

जिनका बड़या लुबाय क चासो चीब सैं ॥"

इसी प्रकार रामायण की एक दूसरी उक्ति में कहा गया है "न हि निम्बस्तु जलेत् सीढं लोके निगदितं वच" ।

"गर्भस्ति न वृषा धूरा निर्जला इव तौवराः ॥ ६।६५।३" रामायण की इस उक्ति को पढ़कर "बरतें जिकी बरतें कौगी" का अनायास स्मरण हो जाता है।

"To err is human. यह अंग्रेजी की एक प्रसिद्ध कहावत है जिसका मूल रूप रामायण में सुप्रसिद्ध है। 'न करिष्यमापराधमिति ॥ ४।३६।१ का भाव उक्त अंग्रेजी लोकहित से ठीक मिलता-जुलता है।

'यथा हि कृष्टं राजा प्रजास्तनुकर्तते' ॥ ७।४३।१९ और 'यथा राजा सथा प्रजा दोषों में एक ही बात कही गई है। 'यतोऽके सेतुर्बन्धो न कस्यापि विधीयते' १।१।५४। मं पटः पर एव सः ६ ८०।१५। नाभिरग्नी प्रवर्तते ५।५५।२२, बुभ्यमाने भवेत्प्रीतिः ५।२६।३९। स्वभावो बुद्धिर्कमः ६।३६।११, विवस्तु वरवस्यताम् ५।२५।१०, मरणावापि वीर्याणि ६।११।१५, बुद्धिं परिभूयते २।२१।११ लोकव्यक्ति कालेन गच्छता ह्यपयच्छति ६।५।४ ।

१२ करिष्यामवर्षं छित्वा वलागादिषु निविश्यति ।

बुद्धं बुद्ध्या कर्मे युज्युः स शोचति कलामने ॥ २।६३।८ ।

सींचे पेड़ बबूल का आम कहीं से जाय

संशुद्धेन तु वक्तव्यम् ११८०१२, वक्तव्यता समुच्चयः ७५२१११, अग्रियस्य च उत्पत्त्य वक्ता श्रीता च दुर्लभः ११३७१२, अनिर्वर भियो मुक्तम् ५११२११० आदि अनेक लोकोक्तियां रामायण से आकृष्टि की जा सकती हैं ।

रामायण में भी लोकप्रचार के रूप में अनेक उक्तियों का उल्लेख हुआ है उनकी प्राचीनता के सम्बन्ध में हम निश्चित रूप से कुछ कह नहीं सकते । 'बतोरके सेतुर्बन्ध' तथा 'मया राजा तथा मया' आदि अनेक उक्तियां ऐसी हैं जो रामायण तथा महाभारत दोनों में समान रूप से उपलब्ध हैं ।

बहुत सी कहावतें ऐसी हैं जो माट्टवर्ष की प्रायः सभी प्रादेशिक भाषाओं में मिलती हैं । उनके सम्बन्ध में यह नहीं कहा जा सकता कि एक भाषा ने किसी दूसरी भाषा से कहावतें ग्रहण की हैं । तथा यह है कि इस प्रकार की लोकोक्तियां देश की उपसाम्य सम्पदा के रूप में महाकाव्यों के भी युग से पहले प्रचलित रही हैं और देशवासियों के आचार-व्यवहार को प्रभावित करती रही हैं ।

## २—महाभारत की कहावतें

जिस प्रकार अगवान् समुद्र और पर्वतराज हिमालय रत्ननिधि के रूप में प्रसिद्ध हैं कुछ वैसी ही महिमा महाभारत की भी है । एक ओर अठारह पुराण सब धर्मशास्त्र तथा वेद-वेदांग और दूसरी ओर अकेला यह महाग्रन्थ । धर्म अर्थ, काम और मोक्ष से सम्बन्ध रखने वाला जो ज्ञान इसमें है वही अग्र्य है जो इसमें नहीं वह और कहीं भी नहीं ।<sup>१३</sup> यह माट्टीय सृष्टि का एक महान् विश्वकोष है । सब प्रकार के कथाप्रसंगों को लेकर विराट् जीवन का सर्वांगीण चित्र इस महाग्रन्थ में उपस्थित किया गया है । महाभारत में स्थान-स्थान पर प्रयुक्त सभी सूक्तियों और लोकोक्तियों का विवेचन करना दुःसाहस मान होगा इसलिए यहाँ पर उनका विम्बर्जन मात्र किया जा रहा है । इस ग्रन्थरत्न में प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियों के उदाहरण लीजिये—

१३ यथा समुद्रो अगवान् यथा हि हिमवान् पिपिः ।

क्यातावुभी रत्ननिधी तया भारतमुच्यते ॥ १८१५१५५ ॥

अष्टादश पुराणानि धर्मशास्त्राणि सर्वथाः ।

वेदाः सांघास्तर्षकत्र भाष्यं भेकतं स्मितम् ॥ १८१५१५६ ॥

धर्मो धर्मो च कामे च मोक्षे च भारतवर्ष ।

बहिर्हास्ति तदग्र्यं यमेहास्ति न त्वत् क्वचित् ॥ ११६२१५३ ॥

१—तेनस्ती यमो यन्ता, न तु बोधाकर्षणम् ॥ ५।१६८।२०।११

कहते योंडा है किन्तु यह सेनापति को मिला है । ठीक इसी भाव्य को व्यक्त करने वाली राजस्थानी कहावत है "मरे सिपाही अर नाम होय सिरदार रो" अर्थात् मरते सिपाही हैं और नाम होता है सरदार का ।

२—यथा राजन् हस्तिरथे पशानि संनीयन्ते सर्वेऽहरोक्ष्णवानि ॥ १२।१६।२५

'हाथो कं जोर में सँभ्य जोर हनायै' राजस्थान की एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है और राजस्थान की ही क्यों मराठी भाषि प्रादेशिक भाषाओं में भी 'हस्व्यां श्री पावमें हसोष्वा पावलात' जैसी कहावतें सुनाई पड़ती हैं । इन सब का मूल महाभारत के उक्त कहावती भाष्य में डूबा जा सकता है ।

३—सर्वो हि मम्यते लोके आत्मान बुद्धिमत्तरम् ॥ १०।१।४ ।

प्रत्येक मनुष्य अपने आपको दूसरे की अपेसा अधिक बुद्धिमान् समझता है इससे मिलती-जुलती वा राजस्थानी कहावतें लीजिये—

क. अकक बुनिया में डपोड है; एक भाप में बाघो बुनिया में ।

ख. बरायो घन अर भाप में अकक क्यारा बीकै ।

४—तदेवास्तनवन्निबद्धेऽत्र नाभिप्येतु नः ४।४।१३ ।

इसी अर्थ को प्रकट करने वाली राजस्थानी भाषा की एक समानांतर लोकोक्ति में कहा गया है बैँडे बोय, उठारै न कोय । अर्थात् समा में जहाँ बैठना हो वहाँ पहले से ही अपना स्थान बेलकर बैठना चाहिए ठाकि फिर वहाँ से कोई उठा न सक ।

५—विश्वत्सेशोदकं पाषो मशूकेषु बहत्स्वपि ॥ १२।१४।१।८२ ।

मेंढक़ों के टर्-टर् करते रहने पर भी नार्ये तो पानी पीती ही हैं । राजस्थानी भाषा में दाखसाम्य की दृष्टि से तो ऐसी कोई कहावत मेरे पढ़ने-सुनने में नहीं आयी किन्तु भाषसाम्य वा जहाँ तक संबन्ध है निम्नलिखित कहावत इस प्रसंग में अत्यन्त उल्लेखयोग्य है—

“जया ही रोडा रोतो र जया ही पाववा जोमती ।”

तात्पर्य यह है कि जीजनेवाले यों ही जीजते रह्ये मीत्र उड़ाने बाक तो मीत्र ही उड़ाये ।

६—“कादा नै छेई छाना पई” एक प्रसिद्ध राजस्थानी लोकोक्ति है जिसका अर्थ यह है कि कीचड़ का छेड़ने से छीटे ही उठाने हैं । महाभारत में इसी का प्रतिक्रम निम्नलिखित रूप में उल्लेख है—

१— प्रभातमादि वंक्तव्य श्रेयो न स्वर्गनं कृत्वाम् ॥ ३।२।४९ ।

७—तीर्थो भवते यत् कूपेभ्यः जनने तथा ३।४९।२३ । यह तो एक ऐसी प्रकृति है जो भारतवर्ष की प्रायः सभी प्रादेशिक भाषाओं में मिलती है ।

### योगवासिष्ठ की कहावतें

योगवासिष्ठ वेदव्याख्यान का एक प्रसिद्ध ग्रंथ है जो बसिष्ठजी द्वारा रचित कहा जाता है । उसमें बसिष्ठजी ने रामचंद्र को वेदांत का उपदेश दिया है । ६ प्रकरणों और ३२ हजार श्लोकों में यह ग्रंथ समाप्त हुआ है । स्वानुस्मान पर कहावतों के प्रयोग की दृष्टि से इसका विशेष महत्त्व है यद्यपि सूक्तियों की संख्या कहावतों से कहीं अधिक है । योगवासिष्ठ की कुछ कहावतें खींचते—

- १ वातस्य कूपेभ्यमिति कृत्वात्वा ॥
- शारं जलं कापुत्रवा विवलि ॥ ६ उ० १६३।५६ ।
- २ अन्वस्यं रोक्षते निम्बस्त्वप्यस्यं ननु रोक्षते ॥ ६ उ० ६७।२८ ।
- ३ उवाच ननु उवाचस्य ननु अनामृतेन नु ॥ ६ उ० १६३।६ ।
- ४ न हि पीतामृतावान्ता स्वस्ते क्व काञ्चित् ॥ ६ उ० ४५।४० ।
- ५ बहूपस्यं वारणा यत्र तथोर्वापिबु का कथा ॥ ६ उ० ६८।३७ ।<sup>१४</sup>
- ६ करदिकार्यसाधनं कृपयो बहु मय्यते ॥ ३।७०।७७ ।
- ७ पार्श्वतलं तथा तैलम् ॥ ३।१००।४२ ।<sup>१५</sup>
- ८ न बीजवति यथासि तत्र स्वार्थकट कता ॥ ६।१४।६२ ।
- ९ बलेनवि पुनर्बद्धं केन नृत्तव्युतं कसम् ॥ ६ उ० १२५।३२ । १६

अर्थात् यह हमारे पिता का कर्ता है ऐसा कहते हुए कापुत्र्य लोग आपस पीते हैं । किसी का नाम अच्छा लगता है ता किसी को मनु । जिसके पैर

१४ बिलारहे—हिन्दी—बड़े बड़े बह नए, मरहा कुछ चितना पानी ।

The elephant and the horse are drowned and the  
ask if there is much water (Punjabi Proverb.)

१५ तैल तो तिलां तै ही नौकर ।

१६ बिरठ तै जो पस दूरे, बहुरि न लागे डार ।

में जूते हैं जसे समस्त पृथ्वी ही जमड़े से ढकी हुई-सी जान पड़ती है। जिसने जमूठ पी लिया है उसे कड़वी कांजी मच्छी नहीं लगती। वहाँ बड़े-बड़े हाथी बूब खाते हैं, वहाँ भेड़ों की क्या विचार ? इपस को यदि फूटी कौड़ी भी मिल जाती है तो भी वह उसे बहुत करके मानता है। जब तक तिल है, तभी तक तेल है। वहाँ बीज ही नहीं वहाँ अंकुर कैसा ? जो फल धाम्ना से अल्प हो चुका उसे मल करके भी फिर वहाँ कौन लगा सकता है ?

“सतां प्राप्तपरं भैरवम्” १ उ० २१६।४ अर्थात् कृष्ण यन्त्रः १ उ० १६२।२०

आदि अनेक ऐसी उक्तियाँ भी यौगवाधिष्ठ में मिलती हैं जो समान रूप से रामायण, महाभारत तथा पुराणों में प्रयुक्त हुई हैं। यौगवाधिष्ठ यद्यपि वेदांत का संबंध है किंतु इतने भी लौकिक व्यवहार का संस्मरण न करने का उपदेश दिया गया है। “लोकस्वितिरलक्ष्या हि बहुतामपि मानवः” ५।६५।३० संस्कृत की एक अन्य लोकोक्ति में भी यही बात विवक्षितपूर्वक कही गई है

“यद्यपि शुद्धं लौकिकवर्द्धं नाचरणीयम् नाचरणीयम् ।”

#### ४—पुराणों की कहावतें

भारतवर्ष की व्यावहारिक और साधनिक जीवनपद्धति को प्रभावित करने में पुराणों का बहुत कुछ हाथ रहा है। पुराणों का नीतिशास्त्र बहुत व्यापक और विद्यालय है। जीवन के सभी अंग-उपांगों से संबंध रखनेवाली सूक्तियाँ इनमें व्यवस्थित हैं। बहुत सी सूक्तियाँ तो ऐसी हैं जिन्हें हम मानवता के नैतिक कोड (कानूनसंग्रह) के नाम से अभिहित कर सकते हैं। इस दृष्टि में प्राचीनकाल से ही सुभाषितों और सूक्तियों का बहुत अधिक महत्त्व दिया जाता रहा है। विष्णु पुराण से पता चलता है कि प्रह्लाद को पहले पहल सुभाषितों की ही शिक्षा दी गई थी।

सुभाषितों के सावधान ऐसी उक्तियों का भी पुराणों में अभाव नहीं है जो कहावतों की भाँति प्रचलित हैं। उदाहरण के लिये निम्नलिखित उक्तियों की लीजिये—

१ सतां प्राप्तपरं भैरवम् ॥ ३९ ॥ अर्थात् प्रमादवर्द्ध ।

अर्थात् नाश करके सब चरने से संजयनों में मित्रता हो जाती है ।

२ अरुणास्तत्र छिद्यन्ते कुम्भास्तित्थमित्थि पावपा ।१७

अर्नात् जो बरु सीधे होते हैं व काट दिय जाते हैं, जो बाधे-ट्रेड होते हैं वे काटे रहते हैं ।

३ ईशं हि कुरतिब्रह्मम् । पद्य० सर्वं ब्रह्मं अ० २२। ७।

४ आपत्काले नृणां नूनं वरुणं नैव सम्पत्ते ।

स्कार, ब्रह्मब्रह्मं तेषुमाहात्म्य अ० ५। ११७ ।

५ वषा इत्तं तथा भुक्तो । पद्य० भूमिब्रह्मं अ० ८१। ४४ ।

६ पथा ये नृहृत्सेवु बालो बिग्रन्ति मत्तरम् ।

तथा धुनामूर्धं कम कर्तारभनृपण्डति ॥ पद्य० भूमिब्रह्मं अ० ८१। ४७।

७ प्राप्स्यमर्षं लभने मनुष्यो ईवीरपि तं वारयितुं न शक्यतः ।

अता न शोषानि न विस्मयो मे, लकारलोका न पुनः प्रयाति ॥ १०

याम् और कर्मसंबंधी उक्तिपं की प्रचुरता समूचे भारतीय साहित्य में देखने को मिलती है ।

८ ज्येष्ठः स्तुतमो धाता ।१९

अर्नात् बड़ा माई पिता क समान होता है ।

९ उपानद्बुद्धपादस्य ननु अर्नात्तुनेव भूः । स्कार, प्रमाहब्रह्मं अ० २५५। ३२।

अर्नात् बिलने वेर में बूटा पहन रहा है उसकी बुद्धि में समस्त ब्रह्मी अमर्षे से ढकी हुई-नी है ।

१० सर्वस्य बिलत्रे प्रातो न बीह्याया कर्षवण । स्कार, भागवतब्रह्मं अ० १८७। ४०

अर्नात् सबका प्रात होता है लेकिन इच्छा का कोई प्रात नहीं होता ।

अपर जो बस उक्तिपं की गई है व या दो प्राज्ञोक्तिपं के संतपेठ है या लोकोक्तिपं के ।

पुराणों में कुछ उक्तिपं ऐसी भी है जिसकी समकाल लोकोक्तिपं राजस्वामी माया में आज भी मिलती है । उदाहरण के लिए आहारे बजाहारे लज्जा न करे राजस्वाम में कहावत की भांति प्रचलित है । वास्तव में यह किसी संस्कृत सूक्ति का ही लोकोक्तिपं रूप है । इन भाग्य की संस्कृत सूक्तिपं पुराणा में मिलती है जिनमें से दो यहाँ उद्धृत की जा रही हैं

{८ Puranic words of wisdom.

( Collected and Edited by A. P. Karmarkar p. 37 )

१९. वही, पृष्ठ ४५

१ स्त्रीसंगमे तथा पीत धूले व्याख्यालसंबन्धे  
व्यवहारे तथाहारे स्वर्णां च समापये  
आये व्यये तथा नित्यं त्यक्ततन्त्रस्तु च नभेत् । त्रिगपुराण, पूर्व  
भाग अ० ३५।६०।६१।

२ आहार व्यवहारे च त्यक्ततन्त्रं सदा नभेत् । २०

पुत्रदानामलाभेन नारी चैव वसिष्ठता" ११ अर्थात् पुरुषों के न मिलने पर  
नारी पतिव्रता कहलाती है । इसी प्रकार एक राजस्थानी लोकोक्ति में कहा गया  
है "अभिले का से कटी है" अर्थात् विषयभोग न मिलने पर ब्रह्मचर्य का  
पालन स्वयं हो जाता है ।

भागवत ११ स्कन्ध अ २३ के एक श्लोक में कहा गया है "न तथा तप्यते  
ब्रह्म, पुत्रान्वाचोऽनुमर्षे, यथा तु वसिष्ठो वसिष्ठा ह्यपत्तां पश्यन्वच ।"

निम्नलिखित राजस्थानी सुक्ति और कहावत में भी यही बात प्रकारोंतर  
से कही गई है

१ "लोहू तनी तलवार न लायै बीम तनी तलवार जितो"  
अर्थात् छोड़े की बनी तलवार का प्रभाव भी उतना तीव्र नहीं होता, जितना  
बीम की तलवार का होता है ।

२ 'घोड़े की लात, आबमो की बात' में भी इसी भाव की अभिव्यक्ति  
हई है ।

भागवत की एक अन्य कहावत में कहा गया है—

ब्रिह्वा वसिष्ठु संवसति स्ववसिष्ठिः तत्संबेदनायां कतमाय कप्येत् ॥

११।२३।५१

यदि कोई बीतां स ब्रिह्वा को काटे तो किम पर काय किया जाय ? बीतां  
पर बीप करने में नूमरी पीड़ा आ नहीं होगी ।

इस प्रसंग में राजस्थान में प्रचलित बात और जीम का निम्नलिखित कहावती  
वार्तालाप पठनीय है—

"बात और जीम आपस में बोझ्या । जीम कहेंपो—भाई मेहरबानी राजस्थानी  
बात मत ग्हांकम्यो । बात बोझ्या—बू दिबलो रोज्ये, मुझा मत ग्हांकम्ये ।"

अर्थात् बात और जीम न आपस में बाधकीय की । जीम ने कहा भाई, कृपा

बनाने रचना करीं क्या न बाचना । वीर में उत्तर दिया—दुम बंधकता न  
दिलसाता मही ऐसा न हो कि हमें तुझका डाक ।

पुरुषों से कुछ कहामतों के उपाहरण और बिये जा रहे हैं—

- १ "महाभगो येन पत स पन्था ।" पृष्ठ ५०
- २ काकोऽपि जीवति विरं च वति च मुंल्ले । पृ० ५२
- ३ स्वस्ये चित्ते वातव-संभवति । पृष्ठ ५४ ।
- ४ कच्छकेवैव कंठकम् । पृष्ठ ५६ ।
- ५ इव कार्यमद्य कुर्वीत । स्वार्द नागरखंड अ० २६, १८।८ ।
- ६ नापुष्यः कस्यचिद्ब्रूयात् । पद्म, पातालखंड अ० ११०।१८ ।
- ७ बुद्धिर्नस्य बलं तस्य । सिध० ब्रह्मसंहिता अंड ४ अ० २१९।५२ ।
- ८ न र्भे भूरा विष्टवन्ते बर्षायस्यैव बीवपम् । मानवत १०, अ० ५०।२०।
- ९ न हि ब्रूवामनि-पारे धोमते र्भे कथावत । पृष्ठ ६१ ।
- १० पदकर्मो मिद्यते मंत्रः । पृष्ठ ६५ ।
- ११ तुर्वीरावष्टिता रज्जुस्तया नागोऽपि बध्मते । पृष्ठ ६५ ।
- १२ अनायके न वस्तव्यं । पृष्ठ ६७ ।
- १३ बालस्य वरितं बलं । पृष्ठ ६६ ।
- १४ पतनात्ता-समुष्णया । पृष्ठ ६६ ।
- १५ मरणात्तं हि जीवितम् । पृष्ठ ६६ ।
- १६ स्वानस्थितानि पूज्यन्ते पूज्यन्ते च परस्थिता ।  
स्वानाश्रय्या न पूज्यन्ते केसा वन्ता नन्वा मराः । पृष्ठ ६७ ।
- १७ सरोजिनीगुर्धं भेति मू य एव न बहुटः । पृष्ठ २२ ।
- १८ स रावकः कालवयाद्विनयः । पृष्ठ ३७ । २५
- १९ बसिष्ठकृतमग्नाऽपि जानकी कुञ्जजावनम् । पृष्ठ ३७ ।
- २० न पितु-कर्मणा पुत्र-पिता वा पुत्रकर्मणा ।  
स्वयं ह्येतो न पण्डमि स्वयं ब्रह्माः स्वकर्मणा । पृष्ठ ३७ ।

पुत्रस्थान में भी एक ऐसी ही बहावत है ' करणी भोगी आपकी के बटो  
त बाव ।'

बहावतों में जैसे वस्तुपरिगणन की प्रवृत्ति देखी जाती है वैसे जैसे कहीं पौरा  
निक मुक्तिपथों में भी मिलती है । उदाहरण के लिए एक उक्ति यहाँ दी जा  
रही है—

२२ " इक कञ्चनूत लबातव माती, त्या रावक अर दिया न बाती ।"



शानैर्विद्या अनेरर्वाः शानैः शर्वतमाद्यहेतुः ।

शानं कामं च धर्मं च पञ्चैतानि शानैः शानैः ॥ पृष्ठ ६२ ।<sup>२३</sup>

### स्मृतियों की कहावतें

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है स्मृतियाँ पहले स्मृति में ही स्थित रही होंगी बाद में इन्होंने किञ्चित् रूप धारण कर लिया होगा । स्मृतियाँ कृत् कृत्नी हैं, नहीं कह सकते किसी किसी ने तो उनकी संख्या १५२ तक मानी है । किन्तु याज्ञवल्क्यस्मृति के आचाराध्याय में मनु, बभ्रु, विष्णु, हारीत याज्ञवल्क्य आदि १८ प्रसिद्ध स्मृतिकारों के नामों का उल्लेख हुआ है । स्मृतियों में आचारस्युद्धाट का वर्णन होने के कारण स्वान-स्वान पर प्राज्ञोक्तियों का मिश्रण अत्यन्त स्वाभाविक है । कुछ स्मृतिवा से उदाहरण लीजिये—

१ यत्र भार्यस्तु पूज्यन्त रमन्ते तत्र देवताः । मनुस्मृति ३।३५६ ।

२ मन्तः पूतं समाचरेत् । मनु० ६।४६ ।

३ आत्मादपि तुनापितम् । मनु० २।२३९ ।

४ शरीरत्वं दुष्कलादपि । मनु० २।२३८ ।

मनुस्मृति के श्लोक न तेन ब्रह्मो मवति येनास्य पत्नितं शितः ।

यो वै पुत्राप्यबोधानस्तं वेवा स्वविर विदुः ॥ २।१५६ ॥

का पूर्वार्ध "न तेन बरो सो होति येनस्य पत्नितं शितो" अन्वय २।६० में भी प्राप्त होता है । महाभारत में भी किञ्चित् रूपान्तर के साथ यही श्लोक मिलता है । हमने स्पष्ट है कि शीर्षकात् तक यह उचित मारतर्क में बहुप्रचलित रही होगी ।

सोमदेव के 'नीतिवाक्यामृतम्' में अनेक स्मृतिकारों की कहावतों का उल्लेख हुआ है । यथा

१ ब्रह्मास्वादनतः अन्तितर्पदि यात्रस्य आचरते ।

आरोप्यन्मन्त्रा नाम तद्मन्त्रयति को विदुः ॥ हारीत ।

२३ टिप्पणी— बुद्ध संस्था "Puranic words of wisdom" से ही गई है ।

२४ निताहवे— "नितं यदि अर्करया शास्यति तत कि तप्यतीनेन ।"  
( ब्रह्मसंहिता )

- २ अमुं सर्वं च सर्वते च क्रीडन् परामर्शं ।  
यथा च सरसो ब्रह्मं सुखं छिद्यते छेदकैः ॥ बृहस्पतिः १९
- ३ अन्ववर्तयमेवेत्सु काकतालीयमेव च ।  
पद्मूर्ध्वव्यवहः सिद्धिः कर्मविधयि जायते ॥ बृहस्पतिः ।
- ४ स्वामिनापिच्छित्नी मृत्युं परस्मादपि कस्तपः ।  
इवापि तिहायते यद्ब्रह्मिष्ठं स्वामिनमाश्रितः ॥ ऐंय्य १९

भारत की प्रादेशिक भाषाओं में प्रचलित अनेक लोकोक्तियों के मूल रूप का पता लगाने तथा यह जानने के लिए कि हमारे देश का लोकोक्तिसाहित्य किठना संपन्न एवं समृद्ध है स्मृतिग्रंथों का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है ।

### नीति शास्त्रमय और लोकोक्तियों

मनुष्यों का नैतिक आचरण किस प्रकार सुद्ध हो और वे अपने वैयक्तिक आर्थिक सामाजिक और राजनीतिक उत्कर्ष के लिए किस प्रकार व्यवहार करें, इस सबका निर्देश करने वाला साहित्य 'नीति शास्त्रमय' के नाम से प्रसिद्ध है । भारत का नीतिशास्त्रमय अम्य देशों की तुलना में अत्यन्त समृद्ध है । यदि ऐसा कहा जाय तो इसमें कोई आशुनित न होगी । यह शास्त्रमय यहाँ एक ओर स्वतंत्र रूप से लिखे हुए नीतिग्रंथों के रूप में उपलब्ध है वहीं दूसरी ओर रामायण महाभारत तथा पुराणादि ग्रंथों में स्वान-स्वान पर प्रयुक्त नीतिवचनों और सूक्तियों के रूप में प्राप्य है । रामायण तथा महाभारत में विशेषतः महाभारत में राजवर्ग गृहस्ववर्ग स्त्रीवर्ग राजनीति व्यावहारिक कौशल तथा पारिवारिक कर्म आदि का सुन्दर विवेचन आदर्श स्थितियों की सामने रखकर किया गया है । महाभारत के पांडिपर्व, उद्योगपर्व और वनपर्व इत दृष्टि से विशेष पठनीय है ।

स्वतंत्र रूप से लिखे हुए नीतिग्रंथ भी दो प्रकार के हैं—एक तो वे जो लुप्त रूप में भ्रष्टा कटकर पुर्णों के रूप में लिखे गये हैं और हमारे वे जिनमें पद्य पद्यों को लेकर कहाएँ वही गई हैं और जहाँ के माध्यम से नीति को सिखायी दी गई है । दूसरे प्रकार के ग्रंथ पद्यरचनाएँ हैं जिनमें बीच-बीच में नैतिक सूक्तियाँ और कहावतें पभिराशियों की मीठि विखरी गई हैं ।

२५ विलास्ये—बोका रहगयी बालमा, बोका भावर होय ।

बोकी बच में साकड़ी काट न सकई कोय ॥

२६ विलास्ये—“बपनी बनी में कुता घेर ।”

प्रथम प्रकार के ग्रंथों में 'वाचस्पयसूत्र' कीटिस्य का अर्थसाहस्य कामरुक् का नीतिशास्त्र, सोमदेव का नीतिवाचस्पयसूत्र वाहस्पत्यनीति सूत्रनीति वाचस्पयनीति तथा भृशु हरि के सतकनव' आदि विशेष रूप से उल्लेख्य हैं। जाने वाचस्पयसूत्रादि के अनेक उपबोधी संकलन निकले। सन् १३६६ में प्रसिद्ध विद्वान् 'शास्त्र' गणर द्वारा "शास्त्रसंग्रहपत्र" नामक विद्यालय संकलन प्रस्तुत किया गया जिसमें ४९८९ पद्यों का संग्रह सम्बन्ध हुआ है। आधुनिक युग के ग्रंथों में काशीनाथ पांडुरंग द्वारा संकलित "सुभाषितरत्नभांडार" नामक बृहत् संग्रह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इतना ही नहीं बल्कि सताब्दी में सुविख्यात संस्कृतपंडित डा० वाचस्पय ने समस्त संस्कृत साहित्य से कोई ८००० उत्कृष्ट पद्यों को चुनकर अपने सुंदर पद्यानुवाद के साथ तीन खंडों में "Indische Sprüche" नामक विद्यालय ग्रंथ के रूप में प्रकाशित कराया। इनके प्रकार के नीतिग्रंथों में पंचतंत्र और द्वितीयदेव का नाम लिया जा सकता है।

उक्त दोनों प्रकार के नीतिग्रंथ सुभाषितों के तो भांडार हैं ही किन्तु लोकोक्तियों के प्रयोग की दृष्टि से भी इनका कम महत्व नहीं है। इन सब ग्रंथों में प्रयुक्त लोकोक्तियों की मीमांसा यहाँ सम्भव नहीं है। इसलिए प्रथम प्रकार के नीति-ग्रंथों के प्रतिनिधिस्वरूप यहाँ वाचस्पयसूत्र कीटिस्य के अर्थसाहस्य, वाचस्पयनीति और सुभाषितरत्न भांडार से कुछ लोकोक्तियाँ उद्धृत की जा रही हैं।

### वाचस्पयसूत्र—

डा० वासुदेवसरन अग्रवाल के शब्दों में 'वाचस्पय का रचा हुआ वाचस्पयसूत्र नामक एक प्राचीन ग्रंथ आज भी उपलब्ध है जिसे कीटिस्य के व्यावहारिक नीतिज्ञान का संघा हुआ मूलमूल ही कहना चाहिए। इसके ५०१ सूत्रों में अनेक नूत लोकोक्ति-शैली के हैं। जैसे—

- १ बिना तपाए हुए लोहे से सोहा नहीं जुड़ता। नातन्तलोहे लोहेनसंपत्ते ।
- २ सिंह नुला होने पर भी बच नहीं पाता। न सुभारतोऽपि सिंहस्यैव चरति।
- ३ कलाक के हाथ में धूल का भी मान नहीं होता। धीमन्नुहस्तान् वयोऽन्व-  
बन्धयेत् ।
- ४ उबार के हजार से नकर की कोड़ी घली। इव सद्गुणैश्च कास्मिन्नी  
येयती । १७

इसी कथावत का चापक्य सूत्र में एक स्फाटिक यह है—

इषो मयुरावध कपोतो बटः । ४१५९ । कस के मोर से बाज का कबूतर  
बण्डा है ।<sup>२८</sup>

कौटिल्य का अर्थ शास्त्र—

जो लोग यह समझते हैं कि प्राचीन भारतीयों ने धर्म और मोक्ष को छोड़  
कर अन्य पुरुषार्थों की ओर ध्यान नहीं दिया वे हम देश के प्राचीन साहित्य  
से परिचित नहीं जान पड़ते । चापक्य का अर्थशास्त्र कामरुक का नीतिसार तथा  
सोमदेवसूरि का नीतिवाक्यामृत आदि अनेक ग्रंथ हैं जिनमें अन्य पुरुषार्थों का भी  
तत्त्वस्पर्शी विवेचन हुआ है ।

कौटिल्य का अर्थशास्त्र लोकोक्तियों के प्रयोग को दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण  
है । इस ग्रंथ में मनु, भारद्वाज उज्जना शुक्र बृहस्पति विद्यालाल पिशुन पराशर  
वातस्यापि कोवपदंत और बाहुबलीपुत्र नामक प्राचीन आचार्यों के राजनीति  
संबंधी मतों का जगह-जगह उल्लेख आया है । आचार्य चापक्य प्रारंभ में ही  
कहते हैं कि पृथ्वी के काम की पालन के लिए पूर्वजाओं ने जितने अर्थशास्त्र  
प्रस्थापित किये हैं प्रायः उन सबका संग्रह करके यह अर्थशास्त्र लिखा गया है ।

कौटिल्य का यह ग्रंथ मूत्रसैली में प्रायः मध्य में लिखा गया है । एक उदाहरण  
की विवे—

‘अत्रकोटो हि मातस्यन्यायमुद्भाषयति बलीयानबलं प्रकृतं बहमराभाधे ।’<sup>२९</sup>

### चापक्यनीति

- १ मरानां नापिडो बूर्धः, बलिषां चैव चापकः ।  
अनुप्यरः शृवाकस्तु, स्त्रीषां पुर्ना च नातिनी ॥ ५।२१ ।
- २ आहार ध्यबहारे च त्यक्तकण्ठः सुखो भवेत् । ७।२ ।
- ३ छिन्ने ब्रूते नैव दाद्या न चरन् । १०।१३ ।
- ४ आनूक्तित्वं पयसा ब्रूतेन च निवृत्तो नपुरत्त्वति ।
- ५ अति क्पेन वै लीडा अति एवैव राषकः ।

२८. मूमिका मैवाङ्ग की कथावतें पृष्ठ २-३

२९. विताहये—अत्रकोटो हि इण्डो मातस्यन्यायमुद्भाषयति । बलीयान-  
बलं प्रकृतं ।

इति मातस्यन्यायः । नीतिवाक्यामृत सोमदेव सूरि ।

असि दानाद् बभिक्षंढो ह्यसि सर्वत्र वर्षपत् ॥ ३।१२ ।

६. मघाहृषो मविनीसुत । ४।१० ।

७. बचने कि दक्षिता । १६।१७ ।

सुभाषितरत्नभांडागार—

१—अपि पत्न्यन्तरिर्षय कि करोति यतामुषि । २—अर्धो घटो घोत्वमुपैति नूनं । ३—कि मरितोऽपि कस्तूर्यां लघुनो याति सीरजम् । ४—को न याति वर्ष लोके मुख पिडेन पूरितः । ५—दृष्टे कण्ठे भवं पयः । ६—यंतव्यं राजपथे । ७—बांडाक्तः पतिषां काकः । ८—आनाता बसमी ग्रहः । ९—बहुं रा यत्र बस्तारस्तत्र मौर्वं हि सोमनम् । १०—दुग्धबीतोपि कि याति आयसः कलहंसतान् । ११—दूरतः पर्वता रम्याः । १२—न क्षुपञ्जनं युक्तं प्रदीप्ते बहिष्पना गृहे । १३—न हि तापयितुं क्षयं सागरान्मस्तुभोऽस्मया । १४—निर्वापरीने किन्तु सेतुवाम् । १५—यंको हि नमसि लिप्ता श्रेणुः पतति मूर्धनि ( कवासरिस्तागर ) । १६—पयोक्ते कि जम् सेतुबन्धः । १७—बहिराम्बन्धकर्मः श्रेणुः । १८—सुप्तस्य शीघ्रम् । १९—स्वदेशजातस्य नरस्य नूनं गुणाधिकस्यापि भवेदपत्ता । २०—इयात्को मुहनागाय । २१—सर्वनाशाय मानुसः । २२—मास/बशिष्ठरत्नोऽपि काकः कि गवदायते । २३—अक्षीयती केवलमीश्वरभ्यम् ।

दूसरे प्रकार के नीति-ग्रंथों में शीर्षस्थानीय है पंचतंत्र । यह ग्रंथ संस्कृत के नीतिशास्त्र का शृंगार है । बिष्णुधर्म ने इसकी रचना उस समय की थी जब उनकी अवस्था ८० वर्ष की थी और नीतिशास्त्र का परिपक्व अनुभव उन्हें प्राप्त हो चुका था । उन्होंने स्वयं कहा है 'मैंने इन शास्त्र की रचना का प्रयत्न अर्धशत बुद्धिपूर्वक किया है जिससे औरों का हित हो । जिस समय उन्होंने यह ग्रंथ लिखा उनका मन सब प्रकार के इद्रियमोगों से निवृत्त हो चुका था । इन प्रकार के इस विदुशुद्धि निर्मलचित्त ब्राह्मण ने मनु बृहस्पति शुक पराशर, व्यास चाणक्य आदि आचार्यों के राजधाम्न और अर्चवार्त्ता को मक्कर कावहिन के सिद्ध पंचतंत्र रची यह नबनीत शीघ्र किया ।<sup>१</sup>

इसमें पशु-पक्षियों तथा मनुष्यों के काव्यनिक कथाभाग का लकर मामास्य व्यवहार तथा नीतिशिल्पा का उपदेश दिया गया है । पंचतंत्र का विश्व की अनेक भाषाओं में अनुबाह हुआ है इसीसे इन ग्रंथ की महत्ता एवं लाभप्रियता का अनुमान लगाया जा सकता है । इन ग्रंथ की कुछ प्रसिद्ध बहार्थें लीजिये—

- १ यदकर्मो निघते मंत्रः । १।११२ ।
- २ छिद्रेष्वनर्वा बहुली मन्मथि । २।१८८ ।
- ३ बुभुक्षितः किं न करोति पापम् । ३।१६ ।
- ४ दृष्टे दुष्टं समावृतम् । ५।७० ।
- ५ मौर्वं सर्वावसायनम् । ३।५१ ।

“एक ह्रास से लोको सही बहती” इस लोकोक्ति का मूल पर्यवेन न हस्तेन सात्त्विकः संश्रययते” पंच० २।१३८ में मिल जाता है। एतस्वाजी लोकोक्ति / ‘एकलो बनी के भाद कोड़े’ के साथ पद्यतंत्र की निम्नलिखित कहावत को मिलाकर पढ़िये।

“उत्पतितोऽपि बबलो म्वाद्यं संस्तुं न शक्नोति” पंच० १।४८ ।

### ४—संस्कृत के काव्य और कहावतें

संस्कृत सुभाषितों के जो बनेक संग्रह प्रकाशित हुए उनमें कूटपत्र स्वभावादि वर्चन काव्यमय चमत्कार आदि सबका समावेश हुआ है किन्तु हमें केवल उन सुभाषितों से घाल्य हैं जिनसे आधुनिक लोकोक्तियों के किन्हीं मूल स्त्रों का पता चलता है जबवा आकारप्रकार की दृष्टि से जिनकी पचना प्राज्ञोक्तियों जबवा लोकोक्तियों में की जा सकती है। इस संबंध में सर्वप्रथम कालिदास के ग्रंथ उल्लेखनीय हैं। कवि-कृत-बुद्ध की निम्नलिखित उक्तियाँ पठित समाज में कहावतों की भाँति प्रचलित हैं—

१—स्नेहः पापघाती । २—प्रसारविह्वलानि पुटः कलानि । ३—एतत् सना-  
नच्छनु कांचनेन । ४—विचमप्यनुत्तं वचविद् भवेत् । नरत्वं प्रकृतिः सरीरिणाम् ।  
५—तेजसा हि न वयः समीहयते । ७—आप्ता पुष्पा ह्यविचारणीया । ८—  
घटीरनाद्यं जलं घर्मसादनम् । ९—ननीरनागानपतिर्न विद्यते । १०—याञ्चा  
नौवा वरनविपुत्रे तावमे लम्बकामा । ११—वीर्यवच्छत्युपरि च दया चक्रेति  
कमेव ।

लोकोक्तियों के प्रयोग की दृष्टि से कालिदास के मालविकाग्निमित्र नाटक का विशेष महत्त्व है। इस नाटक में प्रयुक्त कुछ लोकोक्तियों के उदाहरण लीजिये—

१—हृष्टा मे निरुचिय सुवादि बहुतो मरो किञ्च इत्थि आजगत्स विरोध  
पश्यन्तं ति । अदि सन्धो एतो लोमवानो । तृतीयं मेव ।

निपुणिका—मैं बहुत सुना करती हूँ कि मरिचा पीने से स्त्रियाँ बहुत सुन्दर  
क्यने लगती हैं। यह लालबाद (कहावत) सच है क्या ?

२—भौतिषीए—अल्पि बहु सौम्यपदारो आत्मानि सुहं पुत्रं वा हिं  
अतमबलत्वा क्त्वेरि ति । पंचम अंक ।

ज्योतिष्का—वह लोकप्रवाद है कि अपना मन जाने जाने वाले सुख वा  
दुःख सभी बता देता है ।

इस नाटक में जहाँ लोकप्रवाद अथवा लोकप्रवाद शब्दों का प्रयोग नहीं हुआ  
है, वहाँ भी स्वान-स्वान पर कहावतों को अवतारना की गई है । उदाहरणार्थ—

१—अम्पनम्पट्टो पिहृकरोरो विवात्तिआए आलोए बरिरो । अतुर्प अंक ४  
पिजड़े से झूटा हुमा कबूतर बिल्ली के सामने आ पड़ा ।

२—रदुहुरा बाहरगि ति कि देवो पुहरोए बरिसिहुं बिरमदि । अतुर्प अंक ४  
पृथ्वी पर पानी बरसाने के लिए देव मंडकों की टर्-टर् की बाट पोड़े ही  
पोहते हैं ।

काकियास के अन्तर बाक के हर्षचरित में से कुछ सूक्तियों के उदाहरण  
यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं जिनमें कुछ प्राज्ञाभित्तियाँ हैं और कुछ लाकोभित्तियाँ—

१—अतिव्रतवाहिनी आनित्यता नदी । २—उपयोगं तु प्रीतिर्न विचारयति ।

३—धीरसर्वार्थं हि पीडनं शोकस्य । ४—गृहार्थैरनुमत्तव्या एव लोकवृत्तयः ।

५—को हि नाम सहने विरुद्धरत्यावाम् । ६—मध्या न द्विदण्णारयन्ति वाचम् ।

७—मनापसहाया हि सत्त्वबन्धु । ८—सुभाग्यो निमित्तेन स्वयमारब्धायते

लौके । मियो हि बोवात्त्वतादयः कामना विकाराः । ९—स्त्रियो हि विषयाः  
सुखाम् ।

११ सुभाषितों की दृष्टि से महाकवि भारवि का काव्य अत्यन्त प्रसिद्ध है । " हितं  
नलोहारि अः दुर्लभं वचः " " वासादपि सुभाषितं वाहयन् " ' अहसा विवर्षी न  
क्रियाम् ' अंतिम सुभाषित की लेकर तो अनेक कहानियाँ भी प्राप्य लुनी जाती हैं ।

हर्ष के नैवचरित में भी ' आर्जवं हि कुटिलैर्बु न नीति ' जैसे सुभाषितों  
का अभाव नहीं है ।

सोमदेव के ' यद्यस्तिकन ' में जिसकी रचना सन् १५९ में हुई थी कहावतों  
का प्रचुर प्रयोग निश्चय है । यथा

१—बुधेन न नीयने बुर्जवी वृत्तः कृतस्तस्य सुर्मपत्तानि ।

२—अज्ञानभावादवचो प्रमत्ताबुधेसथाडात्वपभाधि कार्ये ॥

वृत्त प्रयातो विचलः समस्तो कतीवर्कं कं कल तैतुवन् ।

३—अगत्यबाह्वि नु वर्तितव्यं महाजनी येन वतः स यथा ।

४—नेत्रं हि द्रुतेऽपि निरीक्ष्यमाणमात्मलोकेऽवतमयेव ।

५—सर्वत्र हे पुत्र न वदुःखानि ।

६—इतस्तदमितो व्याधः कृतास्तु माभिनो गतिः ।

७—को नाम बीमस्तस्मिन्मृगश्रोत्रपायणार्थं स्वर्गं गयेत् ।

८—राजपरिपूहीतं तुभमपि काञ्चीनवति ।

९—घटं प्रति घटव्यायेन ।

१०—अन्वक्तवर्तकीयम् ।

११—को नाम शीघ्रमारोग्येवके अन्वक्तुं सुवीः ।

१२—अस्ति च श्रेयांसि बहुविष्मन्ति इति विदुर्वा प्रवाचः ।

पाणि भाषा की कथावर्त—

प्राचीन साहित्य में लोकोक्तियों के अध्ययन की दृष्टि से बौद्ध साहित्य का विशेष महत्व है। तत्कालीन समाज का वैसे विज्ञान इस साहित्य में उपलब्ध होता है वैसे संनवत संस्कृत-साहित्य में भी नहीं। अमित्रातवर्ग की भाषा होने के कारण संस्कृतियों का ध्यान पाश्चिम्य प्रवर्तन तथा बहिष्मन्मयी अविश्वसित की ओर विशेष रहा और संस्कृत राज्याध्यय में ही पनपती रही। किन्तु बौद्ध शास्त्रमय के संनवत में ऐसा नहीं कहा जा सकता। बौद्ध में स्वयं अपने उपदेश तत्कालीन लोकभाषा में दिये। उपदेश के लिए प्राचीन गाथाओं का प्रयोग बौद्ध धर्म की प्रमुख विशेषता है। इस धर्म के अनेक पन्नों में गाथाएँ अन्तर्भूक्त मिलेंगी। बौद्ध शास्त्रमय के ९ अंगों में जिनमें हृष्ट वर्गीकरण में गाथा एक स्वतन्त्र वर्ग ही माना जा सकता है। 'संयुक्त निकाय' में पहला वर्ग जो 'सागत्यवग्व' कहलाता है एक प्रकार का गाथा वर्ग ही है। इसी प्रकार आतक कथाओं में से भी अविश्वसित का मूल गाथाएँ ही हैं। गाथा-विशेष के आचार पर ही ध्यान नाम पुरा किया गया है। बौद्ध शास्त्रमय में सुभाषितों और लोकोक्तियों की दृष्टि से अन्वक्त, उदान आतक इतिवृत्तक आदि विशेषतः उल्लेखनीय हैं। यहाँ अन्वक्त और आतकों से कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं।—

१ न को अन्वर्त्त विज्ञानाति इषी सुपरत्तं यथा । अन्वक्त ६४

'इषी सुपरत्तं यथा यह रूपमा कितनी प्राचीन है और कितना सार्वत्रिक प्रयोग इसका हुआ है वह कहने की आवश्यकता नहीं।

२ परिबिष्मन्निर्दं क्वं रोपनिर्दं पर्वपुरं ।

विश्वसनी प्रतिबन्धेनो अरवत्तं हि बीकितं ॥ अन्व० १४८\*

\* "घटा न क्षुद्रं जीवन्ना घटा न आता केस १"



संस्कृत छाया

किमानां वस्त्रमच्छन्नकराणां बहूनां बभूवने तथा च ।

स्तनानां स्थानमृष्टानां सखि तत्र आदरं करोति ॥

उपरोक्त कहानत में निरिष्ट स्थानमृष्ट वस्तुओं का कोई आदर नहीं करता ।

८. विह्वेहि युवा न वेपसि । (पाया १८९, पृ० १४०)

विनयेन युवा न गृह्यन्ते । ( संस्कृत छाया )

बन से युव ग्रहण नहीं होता ।

९. आर्यम्वयस्य बीषो हस्तकर्मो निष्कर्मो वचेन । पाया १९१

आर्यम्वयस्य बीषो हस्तहन्तो निष्कल एव । ( संस्कृत छाया )

अर्थात् जो अर्यान्व है उसके हाथ में बीषक देना निष्कल ही है ।

१०. विहितां च विष लिष्टिषु कसादपष्टीषु तेन वदयेन ।

पच्छा सो वि पतसो अपहृ करिषं न तु समत्सो ॥

( पाया १९९, पृ० २६ )

संस्कृत छाया

विधिना परेषु लिखितं कसादपष्टे तेन वदयेन ।

पञ्चासोऽपि प्रतप्तोऽन्यथा कर्तुं न शक्नु सनर्ध ॥

११. वस्तुहविषोपादुर्ध्वं मरयेन विना न बीसत्सु । (पाया २४१, पृ० ५०)

वस्तुहविषोपादुर्ध्वं मरयेन विना न विस्मर्यते ॥

प्रेमी-जन का दुःख मृत्यु पर्यन्त बना रहता है ।

१२. सखेऽहं अयं विष घरस्त अम्यन्तरे कच्छी ।

( पाया २४१, पृ० ५० )

संस्कृत छाया

कथयत्ययमेव गृहस्याम्यन्तरे कच्छी ।

बागन में ही घर के अन्दर की कच्छी का पता चल जाता है ।

२. माया सप्तशती

पाया सप्तशती में भी स्थान-स्थान पर सोपोकितियां बिखरी पड़ी हैं ।

उदाहरणार्थ—

१. उपेवाहितो कर्मो जातो । १।४०

तापुनेभ्यः कर्मो जातः ।

इसे टीकाकार ने कौटिल्य नामावली के नाम से अभिहित किया है ।

२. पक्काई बि बिम्बकलाई नगर काएहि कम्बन्धि । ३।४८

पक्कायपि बिम्बकलानि केवलं काई कायन्ते

नीम के फल यदि पके हुए हों तो भी उन्हें केवल काए जाते हैं ।

३. सो अत्यो बी शृन्वे से मितं बं निरन्तरं बसने ।

तं बयं अत्य युना तं बिन्गारं काहि बन्धो । ३।५१

बन वही है जो इस्तगत है मित्र वही है जो निरन्तर विपत्ति में साज देता है रूप वही है जहाँ गुण है और विज्ञान वही है जहाँ धर्म है ।

४. उत्पन्नमन्त्रि विरहणो किरणा उर्यं किन्न पुरमि । ३।८४

अस्तमनेऽपि रणेः किरणा कम्बन्धेव स्फुरमि । (संस्कृत छाया )

मस्त होते हुए सूर्य की किरनें भी ऊपर की ओर ही जाती हैं ।

५. को बुधमन्त्रं कंजिएम बोभारिड तरु । ३।८६

को बीर्भमाजार्तं काकिन्ध्या प्रतारमिन् सक्नोति ? (संस्कृत छाया )

बुध विज्ञान को बुध-यही जाति के स्मान में काँची से कौन बोझा दे सकता है ?

६. राजुमुहम्मि बि घसिणी किरणा अममं बिन्न मुमन्धि । ४।१९

राजुमुधेऽपि घसिणः किरणाः पौमूबमैव मुंभन्धि ।

राजमा की किरनें राजु के मुक में भी जमूत ही काशती हैं ।

७. भोभडी बिनाबि कम्बेन पामबिभडे बडे करु । ५।२

भूकरी बिनाऽपि कम्बेन पामबिभडे पवाऽचरन्ति ।

सूकरी बिना काम ही बाँध के पास जाँ चरती हैं ।

८. बंक्कस उम्मुअसस ब संबन्धो कि बिर् होइ । ५।२४

अनुकस्य बकस्य ब संबन्ध कि बिर् भवति ?

डेडे-सीधे वा संबन्ध भी क्या विरम्बायी हो सकता है ?

९. ब रसेन बिना युलो होइ । ६।५४

ब रसेन बिना बुडो भवति ।

ईश के रस के बिना बुड़ नहीं हो सकता ।

## अपभ्रंश की कहावतें

### १ पुष्पदन्त

कर्म-सिद्धान्त से सम्बन्ध रखने वाली कहावतें प्रायः भारत की सभी भाषाओं में मिलती हैं अपभ्रंश में भी ऐसी कहावतों का प्राचुर्य है। कौतिल पुस्तक पिडासह लिहियड (पुष्पदन्त महापुराण सर्ग २४ कडवक ८ पंक्ति ८ वीं) अर्थात् छलाट में लिखे हुए को कौन मिटा सकता है? 'सुक्लिय छलु भुंजइ सणु लोड' (अवजडविमो संधि) अर्थात् सब लोय अपने क्रिये का फल भोगते हैं। इस प्रकार की अनेक कहावतें अपभ्रंश से उद्धृत की जा सकती हैं। कुछ कहावतें ऐसी हैं जो न जाने कितने मार्गों से इस देश में चली आ रही हैं। उदाहरण के लिये पुष्पदन्त के महापुराण की ही एक कहावत लीजिए — उज्जत परदेसु परावयासु परवसु जीविड परदिणु गालु । इमी आगय की बहुत सी उक्तियाँ महाभारतादि ग्रन्थों में मिलती हैं। इसी प्रकार की दूसरी कहावत है करपव कथय वलय पवि लोयनि हो कि निबिहि रप्पवम् (Vol II. L. II 8) अर्थात् करस्मित स्वर्ण-करुण को देखने के लिए क्या दर्पण हाथ में लिया जाता है? अथवा 'करेकरुणु कि आरिते सोसिय? (सुद० प० ७२) विनुपरविहि घब केंब परिरजइ' के उमानन्तर लोकोक्तियाँ भारत की प्रायः सभी भाषाओं में मिलती हैं।

'यदइवाडु कि इशियड सण्ये?' अर्थात् यदइ को क्या सोप इस सचटा है? यह पुष्पदन्त की एक प्रसिद्ध लोकोक्ति है जिसका प्रयोग आगे चल कर अपने को उमयघो रमायन रास में श्री केदाराम मुनि ने भी किया है—

"रावव वाले भामनियां सु, आरति काइनि जाचो;  
भूरि भुंजगे यदइ न बीधे से जोवाचो जाचो"

(पृष्ठ १३ उंर १५)

( श्री रामयमोरसायन रास )

अर्थात् रासम त्रिमों से कहुवा है कि इस प्रकार आकस-व्याकुल क्यों हो रही हो ? पीछे से आकसमकारी आ रहे है तो उनका मुझे क्या डर ? यह कहावत का प्रतिष्ठ ही है कि मदक बहुत से साँपों से कमी नहीं डरता । १

इस महापुराण की निम्नलिखित कहावत भी उल्लेखनीय है—

(१) "को गणह पितुनु भविसहियतेज मुक्कड छवयंबु सारनेज" दुर्बना की निम्ना की परवाह नहीं करनी चाहिए । चन्द्रमा की ओर कुत्ते याही भौका करते हैं । इस कहावत के सम्बन्ध में सबसे बड़ी कृतुहल की बात यह है कि शब्द और अर्थ दोनों दृष्टियों से समानता रखने वाली एक ऐसी ही कहावत अंग्रेजी में भी उपलब्ध होती है "The moon does not heed the barking of dogs" रासस्थानी आदि प्रादेशिक भाषाओं में यह कहावत हाथी के पीछे बहुत म कुत्ते यों ही भौका करते हैं इस रूप में प्रचलित है । २

(२) कुडवेण मवह को अलनिहानु अर्थात् कुडव ( एक छोटा माप ) म क्या समुद्र मापा जा सकता है ? (३) अस्मि सहसाहु जोसुहु अर्थात् स्वभाव की कोई ओपनि नहीं है । (४) स्यासुते बजसह, असज्ज हस्मि निरजसह अर्थात् मक्खी के आस में मक्खी ही पँसती है हाथी नहीं । वात्पर्य यह है कि मूर्ख ही बोझा जाता है बुद्धिमान् नहीं । (५) अण्यु कि वाहहु मत्सह लिपहं ? और क्या प्रेमी के माने पर सींग हाते है ? रासस्थान में यही कहावत दूसरे रूप में प्रचलित है "मूरख के माने सौंप कोनी होय" अर्थात् मूर्ख के सींग नहीं होते बस बह पशु ही है ।

## २ धनपाल

धनपाल का भविसयतकहा अपग्रस का एक दूसरा महत्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें स्वान-स्वान पर अनेक कहावतों विजरी पड़ी है । उदाहरण के लिये निम्न लिखित कहावतों को मीशिये—

१ 'कि पिठ होइ विराकिण् भाविण्' अर्थात् पानी के बिलोने से कहीं भी पैदा हो सकता है ? ( मधि २ कडवक ७ पंक्ति ८ )

१ मिळाइये — मोठ खनेई में को खैनी

२ मिळाइये — हाथियों को बैल धनो हो पेडकड़ा घुस्या करे हे'

( रासस्थानी कहावत )

३ मिळाइये—स्वभावास ओपय नहीं । ( जराठी )

२ 'अहमारि सम्बहो मुमुक्षासह (संधि ३ कडवक १२, पंक्ति ५) अर्थात् यदि सब पुरुषों का नाश कर देती है।

३ 'होइ सबनु परिवारिण् पुणार्ह (संधि ३ कडवक १४ पंक्ति ११) अर्थात् पुष्य-परम्परा से ही सब कुछ होता है। भर्तृहरि ने भी अपने श्रुमान् घटक में यही कहा है—“पुष्यं कव्यं यधि तेषु तवास्ति वाक्का पुष्यैर्बिना नहि भवन्ति समीहितार्था।”

४ 'पखो सरीरि पाठ जो भाषइ तं तासइ बनेर्बि संतावइ' अर्थात् दूसरे पर जो बुरा सोचता है वह उसी पर पड़ता है और उसे ताप पहुँचाता है। (संधि ६ कडवक १० पंक्ति ३) 'साइ सने जो जोर को ताको कप तयार' इसी से निष्पत्ती सुलती कहावत है।

५ "बहा जेध बतं तहा सेग पतं इम सुखए तितुलीएन कुतं।

सुपायमवा कीइवा अत माकी कहुं ती नरो पाकए तत्प सली ॥”

( संधि १२ कडवक ३ पंक्ति २४-२५)

अर्थात् जैसा तुम बोधे वैसा ही पाओगे। कोइय बोकर तुम्हें मान कैसे मिल सकता है? 'दोपै पेइ बबूस को आम कहाँ से होय ?

६ 'तं साहुड अं जाधि जीविजइ' अर्थात् जीने को लाभ ही समझना चाहिए। इस उक्ति को पढ़कर महाकवि कालिदास की निम्नलिखित पंक्ति का स्मरण हुए बिना नहीं रहता—“अथमप्यवतिष्ठते स्वमन् ननु जन्तुर्वरि लाभवाप्तयौ। ( रघुवंश ७३३ ) अर्थात् यदि कोई प्राणी एक क्षण भी जीता है तो उसे लाभवान् ही समझना चाहिए।

अभिप्यवत कवा वा लेनक हेमचन्द्र से जो शताब्दी पहले अर्थात् १० वीं शताब्दी में हुआ वा यद्यपि उनकी निश्चित तिथि का पता नहीं है।

### ३ मुनि रामसिंह

१० वीं शताब्दी के राजस्थानवासी मुनि रामसिंह को रचनाओं में भी यत्र तत्र कहावतें मिलती हैं। उदाहरण के लिए निम्नलिखित लाकारित को लीजिये—

“सपि मुक्की कंचुलिय अं वितु तं न मुएइ।”

अर्थात् सर्व कंचुली छोड़ देता है पर विप नहीं छोड़ता।

१ दिलाइये—'बहुपं सलित-विरलियई कव चोप्यइउ न होइ' (वर० प्रकाश २ ७४)

अर्थात् बार-बार पानी मचने से हाथ धिकने—बुपड़े नहीं होते।

## ४ हेमचन्द्र

माचार्य हेमचन्द्र द्वारा उद्धृत वाहों में भी स्वान-स्वान पर कहावत बिखरी पड़ी है। उदाहरणार्थ कुछ कहावतें यही भी जा रही हैं—

“महु हियउं तइं ताए तुहुं सवि अरें विनविज्जइ ।  
पिम काई करउं हुअं काई तुहुं मअउं मअउ पिज्जिअइ ॥”

अर्थात् मेरा हृष्य तुम्हारे द्वारा तुम उमके द्वारा और वह भी मय्य क द्वारा विज्जिअइ की जाती है। प्रिय ! क्या मैं करूँ और क्या तुम करो ? मछली मछली क द्वारा काई जाती है। यह मत्स्य-स्वाम्य विज्जिअइ प्राचीन है, कुछ नहीं कहा जा सकता।

‘तनु वइवण वि मुण्डियउं जनु अस्मिइइइ मानु अर्थात् विज्जिअइ सिर यजा है उमे तो विधाना ने ही मूढ दिया।

‘वई बिबरी ती बुइबी होइ विनामहो कालि अर्थात् विनाम-काल में बुद्धि विपरीत हो जाती है। यह साकारित ता जाइ भी अपने तत्सम क्य (‘विनामवासे विपरीत बुद्धि’) में प्रायः सर्वत्र सुनी जाती है।

‘सुइअन्तरिपिएं पाणिएअपिअ पिआसकि छिअइइ। अर्थात् हे प्रिय ! स्वप्न में पिने पानी से क्या प्यास बुझ सकती है ?

## ५ अशुभ रहमान

कवि अशुभ रहमान इत ‘मन्वेस रामर’ में भी निम्नलिखित लोकाहित का प्रयोग हुआ है—

यइ विअु हियउं अहु पतु पिउ हुई उअम इहु कहु कअम ।  
सिअत्पि गइव उबाअपनि पिअइ हराबिय पिय सबअ ॥१९०॥

1

( सर्वत्र रातक-तृतीय प्रक्रम )

छन्द के परार्य का तात्पर्य है ‘वईबी मीप के लिए यई बी अपने कअ भी दे आई।’ ‘बीबेबी मये छअ होन के दूने होकर अये जाइ इनी प्रकार की लोकाहितयाँ हैं।

रत्नोक के पूर्वार्द्ध में इन कहावत के लिए ‘अअम अर्थात् उपमा मर’ का प्रयोग हुआ है। सरसी चापा में Nathal शब्द कहावत के लिए प्रयुक्त है जिसका

धर्म ही है उपमा बुष्टान्त अथवा सादृश्य । इस भाषा में अन्य भाषाओं की अपेक्षा कहावती उपमाओं का बाहुल्य भी है ।<sup>१</sup>

प्री० हरिबंस कोचर ने अपने ग्रन्थ 'अपभ्रंश-साहित्य' में अनेक अपभ्रंश की लोकोपिधियों का उल्लेख किया है जिनमें से कतिपय महत्त्वपूर्ण लोकोपिधियाँ यहाँ उद्धृत की जा रही हैं—

१ कर्णें पस्तदूटह को रपनु पित्तकह हेम बिलकह कबनु

( बंबुसामि खरिउ २ १८ )

अर्थात् कर्ण से रस को कौन बरसेगा ? पीठस से सोने को कौन बेचेगा ?

२ एक्के हत्के तास कि बन्नाह

कि मरेवि पंचमु पाइज्जर । ( तुवसव खरिउ ८ ३ )

अर्थात् एक हाथ से तामी कैसे बनाई जा सकती है ? क्या मरण पर भी पंचम पामा जाता है ?

३ बर तुवन्न कससहो उबरि, डंकनु कि अप्पर विज्जह ( तुवं० ८:६ )

क्या सुवर्ण-कसस के ऊपर अप्पर का डकना दिया जाता है ?

४ घरि वलित्तमि खनि सक्क को कूजए । ( भावना संधि-अकरण ५७ )

अर्थात् घर के प्रदीप्त होने पर कौन कुआँ खोद सकता है ?

५ कज्जह कए बुहारी बडी सोहह नेहु करेह लभिडी ।

बड़ पुत्र कि सुवं सुप किज्जह ता लि कज्ज तीए साहिज्जई ?

( कस्त स्वकव कस्त ॥१७॥ )

अर्थात् बंबी बुहारी से कार्य सिद्ध होता है कुम्भी से नहीं । उसे बुरा-बुरा करने पर क्या काम निकल सकता है ? बंबी बुहारी से ही घर की धोखा है । घर में एकता के महत्त्व को प्रतिपादित करने वाली यह राजस्थानी लोकोपिध इस सम्बन्ध में उल्लेखनीय है—

“बंबी भारी तास की, कुम्भी बीजर क्याप ॥”<sup>२</sup>

बंबी बुहारी तास की

१ Introduction to the Proverbs of Arabia by Prof. H. A. R. Gibb M. A. (Racial Proverbs p xxxvii)

२ इसका रूप भी यी मिलता है—  
बंबी बुहारी तास ।  
कुम्भी पाठी पान ३

## विदेशी कहावतों का इतिहास

### क. बाइबिल की कहावतें

पीरस्य बेर्ता में जिस प्रकार अरम्य प्राचीन काल से कहावतें उपलब्ध होती हैं, उसी प्रकार पारशात्य बेर्ता में भी। ईसाइयों के प्रसिद्ध धर्म-ग्रन्थ बाइबिल में कहावतों के इकतीस प्रकार हैं किन्तु बाइबिल की कहावतें ही सबसे प्राचीन नहीं हैं क्योंकि विद्वानों के मतानुसार बाइबिल की कुछ कहावतों का मूल मिस्र के प्रसिद्ध बाइपाह अमेनोफिन आदि के सुनापित-संग्रहों में मिल जाता है। डा० वासुदेव धरम अथवाल के ग्रन्थों में 'बाइबिल के Proverbs नामक प्रकरण का जो महत्व पहले कभी प्रकट नहीं हुआ था वह अब तुरुन्तारमक दृष्टि से अध्ययन करने पर ज्ञात हो रहा है।<sup>१</sup>

### ख. प्राचीन कहावतें

ईसा के पूर्व भी कहावतों का प्रयोग हमें मिलता है। सेंट पाल १ कोरिन्थियन १५ ३३ में बुर्बन की संगति से सज्जन विमर्द आता है इस लोकोक्ति का प्रयोग किया है किन्तु एक ग्रीक साह्यकार मिर्नर (४०० ई० पू०) ने अपन एक नाटकीय पात्र के मुँह से इसी लोकोक्ति का प्रयोग करवाया है और कौन जाने यह लोकोक्ति मिर्नर से भी पहले प्रयोग में आती रही होगी। हमारे यहाँ भी 'असंख संनरोवेन सत्यवच मतिविग्रम' का प्रयोग मिलता है।<sup>२</sup>

पेनसिलवनिया-विश्वविद्यालय में अनीरिया की जाया इतिहास आदि क. प्रोफेसर डा० एस्. एन्. केमर ने मिट्टी के दो बड़े पट्टों का पता लगाया है जिन पर, कहा जाता है कि दुनिया की सबसे पुरानी लिखित कहावतें और मुक्तिदायक शक्ति हैं। इस्तनबुल-यूनिवर्सिटी के सीकड़ों नाइरियक महत्त्व के पट्टों में उक्त

१ भूमिका 'मिथाइ की कहावतें' भाग १ पृष्ठ २।

२ महापट्ट वासनग्रहाय-कोष इतर विभाव बराबत रामहृष्य राठे और चिन्तामणि पन्नेत कर्त प्रस्थापना पृष्ठ १८



को पट्टे भी प्राप्त हुए थे। सुमेरियन कहानियों का यह संग्रह मात्र से १६०० वर्ष पहले हुआ था। डा. जेम्स की मचना के अनुसार बाइबिल की कहानियों से १००० वर्ष से भी पून ये कहानियाँ संबुद्धित हो सकी थी। इन कहानियों के स्पास्टर मात्र भी प्रचलित हैं। कहानियों में से एक उपाहरण यहाँ दिया जा रहा है।

‘जीने की अपेक्षा निर्धन का मरना अच्छा, यदि उसे रोगी मिलती है तो मुझ नहीं मिलता यदि नमक मिलता है तो रोटी नहीं मिलती। यदि धन घेर मिलता है तो पशु रखने की जगह नहीं मिलती यदि पशु रखने की जगह मिलती है तो घर नहीं मिलता।’<sup>१</sup>

✓ चपा बडे बात ना जर बात बडे चपा ना ( राजस्थानी )

अर्थात् जहाँ जाने है वहाँ बात नहीं और जहाँ बात है वहाँ जाने नहीं।

अर्थात् सब प्रकार की सुविधाएँ एक साथ नहीं मिलती जहाँ धन है वहाँ विद्या नहीं जहाँ विद्या है वहाँ धन नहीं।

मिस्रवासियों में से Kogumne Imhotep और Patahotep ने अपने ज्ञान और अनुभव को कहानियों के रूप में व्यक्त किया था। छठे तीनों पचासकारियों का समय ईसा के २५० वर्ष पूर्व माना जाता है। इनके पता चलता है कि मिस्र में कहानियों की परम्परा कितनी प्राचीन है। कमधुवृत्तिवम से भी बहुत पहले चीन के लोगों ने साहित्यिक कहानियों की मूठि की थी और चीन देश के इन मूठि ने मिस्र देने के उद्देश्य से कहानियाँ का एक सुन्दर साधन के रूप में प्रयोग किया था।

Solon, Phocylides और Theognis जैसे गीत के महाकवियों के प्रादुर्भाव से पहले ही यहाँ की कहानियों में प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया था। उनसे पूर्ववर्ती गीतकारों और परवर्ती सात प्रसिद्ध ब्रह्मिणों ने विषय पीढ़ियों के लोक-संचित ज्ञान को साहित्यिक रूप देने का प्रयत्न किया था।

सैकड़ों वर्ष पहले चीन में Know Thyself नामक मूठि प्रचलित थी जिसका समानांतर रूप ‘आत्मार्थ विधि’ के रूप में हमारा यहाँ मिल जाता है। स्पार्ता के लोग अपने अर्थशास्त्र के लिए प्रख्यात थे मगर वे वास्तविकता का वे अनावश्यक नमस्ते थे। उनका यहाँ अन्तर्भाषी के लिए Laconic मध्य

रुद्र हो गया था। उत्कृष्टपूर्ण जन्मसंकेत छोटे-से चटकरदार बाण्य के लिए Laconic Speech का प्रयोग होता था।

राजस्थानी भाषा में एक कहावत प्रचलित है 'बर्म री पाय रा बाँस काँई बेलवा अयन्त् बर्म की माय क बर्तियाँ का क्या देखना ? इसकी समानांतर अँगरेजी कहावत है—Look not a gift horse in the mouth. यह कहावत यद्यपि ग्रीक-ची माखूम पकती है और ऐसा समझा है कि इंग्लैंड में ही इसका उद्भव हुआ है किन्तु साब्य करने पर पता चलता है कि यह कहावत अत्यन्त प्राचीन है। यह ईसा की चौथी शती पूर्व से भी पुरानी है और हो सकता है कि उससे भी पहले की हो क्योंकि इस शती के अन्त में हीने बाके सेंट जेरोम ने इस लोकोपिठ का प्रयोग किया है। इसी प्रकार Liars should have good memories. इस लोकोपिठ का प्रयोग भी सेंट जेरोम की कृतियों में हुआ है। उसके भी पूर्ववर्ती एक लैटिन-ग्रन्थ में यह लोकोपिठ उपलब्ध होती है<sup>१</sup>—यात्रा में अच्छी संगति यात्री के समान है<sup>२</sup>। इस लोकोपिठ का प्रयोग भी एक प्राचीन लैटिन ग्रन्थ में मिलता है। (Quintilian Inst I 4)।

### साहित्यिक लेखक और कहावतें

अँगरेज कवि चासर, फेंक पन्थकार प्रायोग्य चाबि ने अपनी कृतियों में लोकोपिठों का प्रयोग किया है। अगस्तसिद्ध नाट्यकार शंक्सपियर ने तो अपनी रचनाओं में ही कहावतों का प्रयोग नहीं किया उसने तो अपने अनेक पाठकों के शीर्षक ही कहावतों के रूप में रखे। जैसे All's well that ends well, Much Ado about nothing चाबि।

रानी एलिजाबेथ बादशाह जेम्स तथा चार्ल्स के समय में अमीर-उमराव प्रसिद्ध व्यक्ति तथा प्रख्यात लेखक अपनी बातचीत तथा पत्र-व्यवहार में अपनी बमाई हुई तथा पूर्व प्रचलित कहावतों का प्रचुर प्रयोग करते थे। रानी एलिजाबेथ को स्वयं कहावतें पढ़ने का शौक था। अपनी बुद्धिमत्ता तथा प्रवृत्तता के लिए उनका नाम लोकोपिठ्युत है। प्रसिद्ध है कि एक बार सर वास्टर रैम्से ने रानी क महल की छिड़की के ऊपर निम्नांकित पंक्ति लिखी थी

1 Oblitus veteris proverbii mendaces memores esse oportere

2. Good company on a journey is worth a couch.

Feign would I rise, but that I fear to fall

रागी ने जब उठ पंक्ति को पढ़ा तो निम्नलिखित पंक्ति द्वारा इसकी पुष्टि कर दी

If thy heart fail thee, do not rise at all

पाश्चात्य कथावर्तों के इतिहास में रागी एस्त्रिजाबेक के युग का महत्वपूर्ण स्थान है। Drayton ने कथावर्त में एक चतुर्दशपदी (Sonnet) लिखी और पार्लियामेंट के एक सदस्य Thomas Jones ने तो एक बिल पर महम के विकसित होने में अपनी पूरी बख्शुता ही कथावर्तों के रूप में ली।<sup>१</sup>

स्पेन के साहित्य में सर्वोच्च और उसके प्रसिद्ध उपन्यास 'डान क्विखोट' को ऐतिहासिक महत्व प्राप्त है। इस उपन्यास के पाठक जानते हैं कि सैकोपैजा के युद्ध से किस प्रकार कथावर्तों पर कथावर्त निकलती चलती है। इस प्रत्यकार ने तो आबास्तर के साथ Sancho Panza's Proverbs नाम से उनका एक स्वतंत्र संग्रह भी प्रकाशित करवाया है।

लैटिन कवि प्लाटस फ्रांस के दो प्रसिद्ध लेखक राबेके व माथेन तथा फुलर ने (जो कार्लिज के मतानुसार चार्ल्सपाथ में अनुपम नमना जाता है) कथावर्तों का बिलमा प्रचुर प्रयोग किया है उसने पता चलता है कि मार्तुरियक लेखकों ने भी कथावर्तों का बिलमा अपनाया है। इनसेट के कथावर्तों साहित्य से बिलको पूष परिचय नहीं वह Hudibras का रजाम्बादन मही कर सकता क्योंकि इतमें बिलने प्रसंग आते हैं वे कथावर्तों के बिना ज्ञान के समझ में नहीं आ सकते।<sup>२</sup>

सर वास्टर स्काट ने भी स्वान-स्वान वर अपने उपन्यासों में लोकोचितों का प्रयोग किया है। Tales of my Landlord नामक कथा-संग्रह में उसने कथावर्तों का अत्यधिक प्रयोग किया है। इसी प्रकार अपने Talisman नामक उपन्यास में फकीर का बेश धारण किये हुए मालादिन के मुल ने पात्र की बिलिप्टता के अमुरुप अनेक कथावर्तों महलबाई मई है।

घ कथावर्तों के नाट्य प्रयोग

फ्रांस के राजा लुई १५<sup>वें</sup> की राज-नमना में भी कथावर्तों का बड़ा भावर होता

1 Introduction P XIV (The Oxford Dictionary of English proverbs compiled by W G Smith)

2 Lessons in Proverbs by R C Trench P 3-4

वा । वही कहावतों के आधार पर हास्य-नाटक प्रहसन मूर्ख-नाट्य आदि की रचना हुआ करता थी । लोक-कथानों की भाँति इन नाटकों में भी कहावतों का समावेश हुआ करता था । सन् १९५४ ई० में एक कहावतबर्णी नृत्य-नाट्य की सृष्टि की गई थी । इसमें ज्यों-ज्यों एक कहावत बोली जाती थी त्यों-त्यों उड़ीसे बनुरूप एक एक नया प्रवेश दृष्टिगोचर होता था । उदाहरण के लिए एक क्लेश कहावत लीजिए—*He threatens who is afraid* इस कहावत के बनुरूप इतने उपस्थित करने के लिए वीरमन्य कुछ लोभ तथा डो-पार सान्त प्रकृति के नग्नरी नामरिक रंभमंभ पर उपस्थित हो नृत्य-नाट्य प्रस्तुत करते थे । अन्त में सान्त प्रकृति के नागरिकों द्वारा उभाकमित वीर अवेद रिये जाते थे ।<sup>१</sup>

### ४ निष्कप

किन्तु, भाये बसकर कहावतों का महत्त्व बटने लगा । इसका एक कारण तो यह था कि जब बिना रम की मूर्ख सर्वसामान्य कहावतों का प्रयोग प्रचुरता से होने लगा तो स्वभावतः ही उनके निष्कप प्रतिश्रिया हुई । इस प्रकार की कहावतों के *Cross Answers* तैयार होने लगे । उदाहरणार्थ दो कहावतें लीजिए

1. *More the merrier*

2. *Pride of the rich makes the labours of the poor*  
इसके निम्नलिखित *Cross Answers* रिये गये हैं

1. *Not so ! one hand is enough in a purse*

2. *Not so the labours of the poor make the pride of the rich*

सन् १९१९ ई० में इस प्रकार के *Cross Answers* का एक संग्रह भी पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ ।<sup>२</sup>

१४ वीं सताब्दी के प्रारम्भ तथा १८ वीं सताब्दी में कहावतें इतनी उपेक्षणीय समझी जाने लगी कि लार्ड चेष्टरफील्ड को कहना पड़ा कि पैयाननाला ब्यवित

१ अचरकिमानुं तत्त्वदर्शन फिरोजगारह इस्तमजी मेहता पृ० १९५ १९६ ।

२ डाक्टर सत्येन्द्र ने अपने 'बजलोक-साहित्य का अध्ययन' पृष्ठ ५४१ ५४२ में *Cross Answers* में भिन्न-भिन्न लोककथितियों के एक प्रकार 'गहगड्ड' का उल्लेख किया है । 'गहगड्ड' में सुख की भावना को नर्भ 'गहगड्ड' द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है । इसमें दो ब्यक्तियों की उक्तिपत्ती रहती है । एक ब्यक्ति सुझाव रखता है कि ऐसा हो तो 'गहगड्ड' नर्भ जबर्जु आमन्त्र भावे इतरा उन सुझावों

कहावटों और प्राम्ग्य सूक्तियों का कभी आशय नहीं होता किन्तु डिजरेली ने इसका प्रतिपाद उपस्थित करत हुए कहा कि सार्ज वेष्टरफील्ड को यदि कहावटों के इतिहास का ज्ञान होता तो वे ऐसी बात नहीं कहते ।<sup>१</sup>

कहावटों के इतिहास से तो यह सुस्पष्ट है कि कहावटें ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव की रश्मियाँ विकीर्ण करनेवाली ऐसी बहुसूक्ष्म शक्तियाँ हैं जिनका प्रकाश आज भी मन्द नहीं पड़ा है और जो अपने अन्तर्हित सत्य के बल पर जन्तु काळ तक जयमगाती रहेंगी । अब तो जब से मानव-विज्ञान और कोफ-वार्ता-शास्त्र का विशेष अध्ययन होने लगा है तब से कोफोपित्तों के वैज्ञानिक अध्ययन का भी महत्त्व बढ़ा है ।

को अम्बीकार करता जाता है जब तक कि उसकी बधि का सुझाव न जा जाय ।

एक सुझाव मानी यह रखा गया

कितक दबोरा ध्यो घता, गुर बजिये को हूट ।

तपूँ रसीई बैजी मुसाकिर बौँ मार्वे गह्वड्ड ॥

नहीं गह्वड्ड नहीं गह्वड्ड ।

इसमें मोहन का उल्लेख है फिर बल का सुझाव तब धयन का पर मुसा-किर 'नहीं गह्वड्ड' ही कहता रहा ।

अन्त में उसने कहा

सेत फूल हरीपाई बंडी और फिरबों के छर ।

हम भीटें तुम बिपी मुसाकिर, पीँ मार्वे गह्वड्ड ॥

मार्वे गह्वड्ड बर्र गह्वड्ड ।

- 1 Vide Curiosities of Literature (The Philosophy of Proverbs by Disraeli)

## कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन

साई बेकन की इस प्रसिद्ध उक्ति से सभी परिचित हैं कि किसी भी राष्ट्र की प्रतिमा विदग्धता और आत्मा के दर्शन उसकी कहावतों में होते हैं। इतना ही नहीं एस्सम्बल्नी इतिहास रीति-रिवाज धारणाएँ, विद्वानों की चिन्ता-पद्धति आदि का ज्ञान भी हमें उस देश-विशेष की कहावतों द्वारा हो जाता है। ग्रीस की कहावतों के अध्ययन से इस बात पर प्रकाश पड़ता है कि उस देश का कितना अधिक सम्बन्ध इतिहास और काव्य से है। देवी-देवताओं की पौराणिक गायानों के असंख्य प्रसंग इस कहावतों में मरे पड़े हैं तथा उनके प्राचीन इतिहास की अनेक घटनाओं के विरोध उनकी लौकिकियों में सहज ही व्यक्त हो जाते हैं। इतना ही नहीं उनकी कहावतें होमर के काव्यों के बहुविध प्रसंगों में भी भरपूर हैं जिससे स्पष्ट है कि उन लौकिकियों के प्रयोक्तारों का होमर के काव्य से परिचय या क्योंकि बिना उन प्रसंगों की जानकारी के उन कहावतों का मर्म नहीं समझा जा सकता।

रोम की कहावतें ग्रीस की कहावतों की अपेक्षा संख्या में अत्यधिक कम हैं। प्रतिमा और बुद्धि की दृष्टि से रोम के लोगों की ग्रीस के निवासियों से तुलना नहीं की जा सकती। रोम की कहावतों में ऐसी बहुत कम हैं जिनमें पौराणिक किंवदन्तकालिक प्रसंगों का उल्लेख है। यह भी सत्य है कि रोम के देवताओं की संख्या ग्रीस के देवताओं की अपेक्षा बहुत कम थी। रोम की कहावतों में ऐसी भी बहुत कम हैं जिनमें काव्यगत सौन्दर्य अथवा असामान्य भाव-सुकुमारता के दर्शन होते हैं। किन्तु, फिर भी रोम की कहावतों की अपनी स्वतन्त्र विशेषताएँ हैं जिनकी उल्लेखा नहीं की जा सकती।

रोम की बहुत सी कहावतों में नैतिक भावनाया का प्राबल्य दृष्टिगोचर होता है। रोमनिवासियों की व्यापार-बुद्धि व्यावहारिकता मिथ्याविश्वास तथा बठोरता का अच्छा विवरण रोम की कहावतों में मिल जाता है। रोम की इति-सम्बन्धी

कहावतें इस बात की परिचायक हैं कि वहाँ के निवासी कृषि विपदक कार्यों में फिटनी सजीव और प्रबल अभिरुचि रखते थे ।<sup>१</sup>

इटली में राजनीतिक कहावतों की संख्या अत्यधिक है । इसका मुख्य कारण यह है कि वह देश घणामित्तियों तक अंततः या पूर्वतः राजनीतिक दालत का अधिकार रहा जिसके कारण इस प्रकार की कहावतों में घाघन के बिकट आलोचना प्रायः सुमाई पड़ती है । इन लोकोक्तियों में बहुधा पशुओं के रूपों का प्रयोग हुआ है जिसका मुख्य कारण यह है कि इटली-निवाशियों की पशुओं के प्रति बड़ी सहा-गुमुवि है और उनकी पर्यवेक्षण शक्ति भी बड़ी सूक्ष्म है ।<sup>२</sup>

‘इटली की कहावतें वहाँ के निवाशियों की यन्मीर एवं गूढ़ राजनीतिक वृत्ति के रूप में रंपी हुई हैं और उनका ज्ञान उनकी स्वार्थपरता में कैथित हो गया जान पड़ता है । इटली के किसी भी कहावत-संग्रह को छठाकर देखिए तो पता चलेगा कि प्रत्येक सप्त कहावतों में से एक कहावत स्वार्थपरक है अथवा संकुचित मनो-वृत्ति की परिचायक है ऐसा लगता है मानो सुदृष्टि के सांसारिक जनों के लिए एक सांसारिक पुस्तक हो ।’<sup>३</sup>

ट्रेच के मतानुसार इटली की कहावतें सन्धेह के आतावरण से भरपूर हैं समस्त संसार को वे सन्धेह की वृष्टि से देखने की शिक्षा देती हैं उन्हें सारे जगत् में शत्रु ही शत्रु दिखावाई पड़ते हैं । वृत्ता का उनमें अययकार मिलता है जीवन के जंजाल को काटने के लिए वृत्ता ही उनकी वृष्टि में लक्ष्य पथ प्रदशक का काम दे सकती है । मेकियावेली की आत्मा ही मानो इन कहावतों में मन्तरित हो उठी हो । इतना ही नहीं बहुव-सी कहावतों में प्रतिघोष की भावना को अत्यन्त प्रसन्न ठहराया गया है । उदाहरण के लिए इटली की दो कहावतें सीलिए, जिनमें कहा गया है—

(१) प्रतिघोष ईश्वर के लिए वास है (२) प्रतिघोष के लिए नमब और स्वान की टाक में रहना चाहिए, क्योंकि जमी में जली-माँति प्रतिघोष नहीं किया जा सकता ।

1 Lessons in Proverbs by Trench (p 40-50)

2 Racial Proverbs (Introduction to the Proverbs of Italy—Emilo Bodrero).

3 Curiousities of Literature London 1838 p 391

किन्तु, इसका अर्थ यह न समझा जाय कि इटली की सभी कहावतें इसी प्रकार की हैं। वहाँ अच्छी कहावतें भी मिलती हैं। उदाहरणार्थ—'For an honest man half his wit is enough the whole is too little for a knave' १

ट्रेन्च ने कहावतों की दृष्टि से स्पेन की भाषा को सर्वाधिक महत्त्व प्रदान किया है। इस भाषा की कहावतें गुण तथा संख्या दोनों ही दृष्टियों से अत्यन्त समृद्ध हैं। जान मिमार्ट ने स्पेन की कहावतों का एक हस्तलिखित संग्रह तैयार किया था जिसमें कहावतों की संख्या २५ से ३० हजार तक पहुँच गई थी। पहले यह संग्रह रिचार्ड हरबर के पुस्तकालय में था (कट० • १६९७)। कहावतों का यह संग्रह बड़ी उत्प्रेरणा और तन्मयता से तैयार किया गया था। इसके संकल्पिता के अनुभवों में से जो कोई भी कहावत साफ़र उसे बेठा उसे वह पारिभाषिक के रूप में अवश्य कुछ दिया करता था और जिस श्रेणी के व्यक्ति से उसे यह कहावत प्राप्त होती उसका भी पूरा व्यौरा वह अपने संग्रह में बख़र लेता था।

नया युवक और नया बुढ़ा स्पेन के सभी श्रेणियों अपनी दैनिक बातचीत में कहावतों का प्रचुर प्रयोग करते हैं। उनकी दृष्टि में कहावतें जीवन की समस्याओं पर सामाजिक और अधिभूत रूप से प्रकाश भी डालती हैं। स्पेन की कहावतों में जिन व्यक्तियों की अत्यन्त सुन्दर पद्यति देखी जाती है, जिसके परिचय-स्वरूप स्पेन के साहित्य में भी उनका मरपुर समावेश हुआ है।

स्पेन की कहावतों में सामान्यतः एक प्रकार की मन्त्रीरता विचारशीलता कुछ विनोद और एक प्रकार की बकोक्ति के वर्तन होते हैं। स्त्री-वाक्यात्म्य स्वाभिमान स्वातंत्र्य आदि वृत्तियों का विवरण भी उनसे हो जाता है। स्पेन की एक कहावत में कहा गया है कि स्त्रियों के हाथ चोट नहीं पहुँचाते—*White hands cannot hurt*। इसमें स्त्रियों के प्रति कितने सम्मान का भाव प्रबोधित किया गया है। खेक्सपियर की तरह स्पेन के नाट्यकार Calderon ने भी अपने नाटकों के कुछ शीर्षक लोकोपितियों के रूप में रखे हैं।

स्पेन की कुछ कहावतों में अपने पड़ोसी पुर्तगाल के लोगों के प्रति हीन-भाव दिखाई पड़ता है। एक कहावत में कहा गया है कि स्पेन-निवासी में कितने गुन हैं, उन्हें निकाल दिया जाय तो एक पुर्तगाली बच रहेगा।<sup>२</sup>

1 Trench (p 54-55 & 57).

2 Abstract from a Spaniard all his good quali



रुस की कहावतों में बहूँ के निवासियों के व्यक्तित्व की आश्चर्यजनक अभिव्यक्ति हुई है। कहा जाता है कि रुस में १० हजार से भी ज्यादा कहावतें हैं। इस विशाल वैषम्य ने सतावियों से कहावतों के निर्माण में योग दिया है। प्रायः हर एक कहावत एक दूसरे से भिन्न है और मूलतः सही है। कहावतों के रूप प्राकृत्य और मौखिकता का कारण रुसवासियों का कहावतों के प्रति सहज प्रेम है।

रुस की कहावतों की एक विशेषता ध्यान देने योग्य है। दुनिया के अन्य देशों में प्रेस पुस्तकों, धोख-यंत्रिकाओं आदि से कहावतों का उसके पुरातन महत्त्वपूर्ण आसन से अपक्षय कर दिया है किन्तु रुस के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। आज भी रुसवासियों का अपनी कहावतों के प्रति प्रेम अटल है। वेबल से कहावतों के बिना सम्बन्ध आरम्भ ही से अन्धकार सेबी-वेबताओं से है, अब प्रचलित नहीं रह गई है। अधिकतर कहावतें आज भी लोगों की जिह्वा पर मूल्य कर रही हैं और सम्भवतः आप आनेवाली सतावियों में भी कटती रहनी। रुस के लोग कहावतों के इतने प्रेमी क्यों हैं इसका प्रमुख कारण यह है कि कहावतों को वे अपनी रहस्यमय सम्पत्ति समझते हैं। यह सतावियों में बर्तन और उपवेश-सम्बन्धी प्रायः सभी कुछ रुस में विदेशों से लाया गया लेकिन सोवियत-विज्ञान का सम्बन्ध पूर्वतः अपने देश के साथ ही रहा। इसमें भी बीतों का सम्बन्ध स्थियों से तथा परिवर्तनों की नवार्थों का सम्बन्ध बच्चों में रहा लेकिन बहूँ तक कहावतों की बात है, कहावतें और वेबल कहावतें ही समूचे देश की निधि हैं।

रुस की कहावतों का दृष्टिकोण अत्यन्त स्वल्प है—सामान्यता उनमें नहीं है, छोटकरी उनमें नहीं पाई जाती। आकार-प्रकार में वे संक्षिप्त हैं और महत्त्व ही प्राण्य हैं। कहावतों के अतिरिक्त और कोई साधन एसा नहीं है जिसमें रुस के सामान्य स्त्री-पुरुष का चित्रण इतनी सूक्ष्म के माध्यम हुआ हो।

अरबी भाषा अपनी साफ़ोकिता के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध है। अरब के लोगों में समाजिक अन्धकार पारस्परिक चर्चा में उत्तमोत्तम कहावतों के प्रयोग की एक

ties, and there remains a Portuguese (Trench p 63)

- 1 Introduction to the Proverbs of Russia by Andrew Ivanovich Guershoon LL. B (p xcix xcvi—xcvii)

परिपाटी-भी पाई जाती है किन्तु आजकल के मुबका में साक्षरता का प्रचार बंद रहा है।

अरब की सबसे प्राचीन साक्षरता में रेगिस्तानी जावन की सामाजिक रमा की अभिव्यक्ति हुई है किन्तु पुरानी सभी कहावतों इमी प्रकार की नहीं हैं ऐसी भी कहावतें हैं जो सामान्यतः दुनिया व सभी देना में पाई जाती हैं किन्तु इस्लाम के उदय के साथ अरब के साक्षरता-साहित्य में नूतन विचारों की एक लहर-सी बौड़ गई। मुहम्मद की बहुत-सी विचारों अरब में प्रचलित द्वारा बिहाने लोकहितवा का रूप धारण कर लिया अरब में एक नवीन नीति पद्धति का भावनात्मक हुआ। मुहम्मद के अनुयायियों ने भी इस प्रकार की कहावतों की संख्या बढ़ाई।

अरब के लोगों ने जब दूसर देना में अपनी विजय-पताका फहराई और जब वे मिस्र सीरिया मेसोपोटामिया और फारस की जनता के सम्पर्क में आया ता यह स्वामाजिक या कि अरब के लोकहित-साहित्य पर उन देगों के लोकहित-साहित्य की प्रतिक्रिया होती। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि अरब की सभी पुरानी कहावतें विलुप्त हो गई और नई कहावतों ने उनका स्थान ग्रहण कर लिया। किन्ती अंत में ता यह अक्षर्य हुआ किन्तु अरब-निबामिया की स्त्रीप्रियता व शरण्य उनकी कहावतों में परस्पर-बिरोधी तरकों का समन्वय हो हुआ। ननु मूल्य नहीं। आज भी हजारों पुरानी कहावतें अरब में प्रचलित हैं।

अरब की कहावतों में परस्पर-बिरोधी तरक इतने हैं कि उनका अरब-निबा मियों के मानस का प्रतिबिम्ब नहीं कहा जा सकता। सामान्यतः यह भागा की जा सकती है कि इन लोकहितवा में से अधिकता भाग्यवाद से संबद्ध होती किन्तु वास्तविकता यह नहीं है। व्यक्तिगत स्वाधीनता और बाधित पर बल देन वाली कहावतों की संख्या उनसे नहीं अधिक है जिनमें भाग्यवाद का समर्थन हुआ है। ऐसी से सम्बन्ध रखनेवाली कहावतों की संख्या बहुत कम है। हाँ सीरिया और मिस्र के रूपकों में अक्षर्य इति-विषयक कहावतें प्रचलित हैं। अरब में ऐसी कहावतों की प्रचलता है जिनमें व्यापारिक शरदारकी का आर्थिक प्रयोग हुआ है। बाधित्य की महिमा बहुत-सी कहावतों में सुरक्षित रह सकी है। शर-साधक और अभिव्यक्ति की समीचीनता अरब की कहावतों में मिलती है किन्तु बाधित

बगवता का अपेक्षाकृत अभाव है। सच्चा हास्य सम्भवतः दिग्ग की कहावतों में ही मिलता है।<sup>1</sup>

फारसी भाषा बाल्कनेबाले वातचीत में बड़ चतुर होते हैं और वहाँ भी सम्भव ही वे सूक्तियों का प्रयोग करते वखे बये हैं। इस भाषा में भी लोकोक्तियों का स्वभावतः ही महत्त्वपूर्ण स्थान है लेकिन फारस की बहुत-सी प्रचलित कहावतें अरबी लोकोक्तियों के अनुवादमात्र हैं। फारसी में रोमसाही की बहुत-सी उक्तियाँ कहावतों की भाँति व्यवहृत होती हैं।

अरबों के पड़ोसी जो यहूदी लोग हैं उनकी भाषा में भी सुन्दर लोकोक्तियाँ हैं। अन्य भाषाओं में भी इन यहूदियों के सम्बन्ध में बहुत-सी कहावतें मिलती हैं। इन लोगों में स्त्रियों के प्रति जो तुच्छ भावना है वह इनकी कहावतों में भी मल्लो-भाँति प्रतिबिम्बित है।

टर्की की कहावतें सामान्यतः बहुत छोटी होती हैं क्योंकि टर्की भाषा में सम्बन्ध-शुद्ध सर्वनाम ही नहीं। कुछ आधुनिक कहावतों का छोड़ कर टर्की की प्रायः सभी कहावतें प्राचीन हैं—बहुत-सी कहावतों का सम्बन्ध उस युग से है जब टर्की के लोग मध्य एशिया में सानाबदोश और कुपक-जीवन व्यतीत करते थे। इन कहावतों में जानवरों के रूपकगत प्रयोग बहुत हैं। टर्की की कहावतों में अन्तिम-से अन्तिम विचारधारा को भी सरलतम पद्धति द्वारा व्यक्त करने की समता है। टर्की के लोगों में वातचीत करते समय प्रायः एक-आव कहावत का प्रयोग अवश्य होता है। इन कहावतों को पढ़कर ईसामतीह की उक्तियों का स्मरण हो जाता है जिनमें मङ्गेरियों मैसनों और फूक-मीचा से उपनाएँ गृहीत हुई हैं।

फ्रांस की भाषा में जो विषेय युग है वही इस देश की कहावतों में भी मिलते हैं। नीलध्वं टीपटाव तीक्ष्णता और सफाई जो इन लोकोक्तियों में मिलती हैं वे अत्यन्त दुर्लभ हैं। फ्रांस की कहावतों में जीवन के तांत्रिक पक्ष से सम्बन्ध रखनेवाली उक्तियाँ ही विशेषतः उपलब्ध होती हैं।

किन्तु जर्मनी की लोकोक्तियों के सम्बन्ध में ऐसा नहीं कहा जा सकता। वहाँ की कहावतों में राष्ट्रीय चाण्डाल की अच्छी अभिव्यक्ति हुई है। जर्मनी में अनेक कहावतें ऐसी हैं जिनमें उल्लेख लोकोक्तियों के सभी गुण मिलते हैं।

1 Introduction to the Proverbs of Arabia, by H. A. R. Gib

एवम क कानों में या एक प्रकार की पूजा की बुद्धिपूर्व जाती है उसका  
बन्धा निरर्थक नहीं ही कहावतों में भी मिल जाता है ।<sup>1</sup>

आकार-प्रकार की दृष्टि से चीनी भाषा कहावतों के निर्माण के लिए अत्यन्त  
उत्सुक है । चीन के पुराने दार्शनिक कन्फ्यूशियस और Lao Tzu की बहुत-सी  
पंक्तियाँ भी कहावतों के रूप में प्रचलित हैं । चीन की कहावतों में अतिप्रयोजित  
ही भाषा अवेसाहृत अधिक मिलती है जिससे इन कहावतों के आकार में बुद्धि  
हूँ है । इनमें अनुप्रास की अवेसा तुक की प्रधानता देखी जाती है जो चीनी  
चीनी एकाक्षर भाषाओं के लिए स्वाभाविक है ।

एक बुद्ध और कन्फ्यूशियस के धर्म का प्रचार आपान में हुआ था इनके उप  
देशों के सार का अधिशिष्ट जनता में कहावतों के रूप में प्रचार हुआ । किन्तु  
शासन की अधिकारस कहावतों का निर्माण वहीं की सामान्य जनता द्वारा हुआ है ।

बायरलैंड की कहावतों में विदग्धता और हास्य की अपभ्रंश सामीर्य अधिक  
है । इसका कारण सम्भवतः यह है कि इस देश का लगातार छठ सतायियों  
एक बुद्ध में लम रहना पडा है । बायरलैंड की बहुत-सी कहावतें छन्द में हैं । जिस  
प्रकार पाप टेनीसन और दूसरे अंगरेज कवियों की अनेक सक्तियाँ कहावतें बन गई  
हैं, उन्ही प्रकार, सम्भव है इस भाषा की अनेक कहावती पंक्तियाँ उन प्राचीन कवि  
गानों की पंक्तियाँ हों जिनका अस्तित्व आज नहीं रह गया है । इसके अतिरिक्त  
बायरलैंड की सैकड़ों कहावतों में आन्तरिक तुक-साम्य के वर्तन होते हैं । केवल  
वर्तमान के आकारों के लिए इन कहावतों की उपयोगिता जतनी नहीं है जिसनी  
उस जीवन-काल के कारण जो इनके द्वारा अभिव्यक्त होता है ।

रूस की कहावतों में भी अनुप्रास और आन्तरिक तुक का प्रापुय बुद्धिगत  
होना है । इनमें तीन वस्तुओं का एक साथ उत्प्रेर अनेक बार देखा जाता है ।  
यही की कहावतों का नैतिक स्तर देखा है । हास्य की भी अच्छी अभिव्यक्ति  
इसमें हुई है । सामिक कहावतों का भी यहाँ अभाव नहीं है ।<sup>2</sup>

ब्रिटिश द्वीप-समूह में स्काटलैंड अपनी कहावतों के लिए अत्यन्त प्रसिद्ध है ।  
शामल्यतः अंगरेजी भाषा की प्रायः सभी कहावतें किन्नी शब्द अथवा उच्चारण  
पाठ के भेद से स्काटलैंड में प्रचलित हैं ।

किन्तु स्काटलैंड में ऐसी बहुत-सी कहावतें हैं जिनका प्रचार कबल स्काटलैंड

1 महापद्म-दास-सम्प्रदाय-कोश विभाग 2

2. Racial Proverbs.

म ही है । अग्य वशा म सख्या की दृष्टि स अधिक कहावतें मिल जायेंगी, एसी कहावतें भी मिल जायेंगी जिनमें चातुर्य तीक्ष्णता अथवा कृपायता क दर्शन हमें किन्तु बाधोचित मोर अकृत्रिम कहावतों के लिए स्फाटलैड की कहावतें अपना खानी नहीं रखतीं । स्फाटलैड की कहावतों का एक होय यह है कि उनका सेन अत्यन्त सीमित है । उनम वहाँ के लोगों के रीति-रिवाज उनकी कल्पना उनकी आकांक्षा उनके सुख-दुःख मोर उनकी मनीषुति की अच्छी छाँकी देखने का मिळती है किन्तु ऐसी कहावतों का अभाव है जिन्हें सावधिक अथवा सावदेयिक कहा जा सके ।

स्विट्जरलैंड म जो कहावत प्रचलित है, उनमें से अधिकांश एसी है जिनका जवनी म भी प्रचार है । स्वीडन की कहावतों में पुरातत्त्वबता सम्बन्ध क इति हास-व्येसक सामाजिक राजनीतिज्ञ तथा कला-मर्मज्ञ के लिए प्रचुर सामग्री प्राप्त हो सखती है ।

पोर्लैण्ड-निवासी का कहावता के प्रति उठना ही आक्यण रूपा है जितना गिझु का बाल-कविताओं ( Nursery rhymes ) के प्रति ।

मलाया में बार्ताकाप में कहावतों का प्राचुर्य देखने का मिळता है । वहाँ के परिवार म यदि कोई अजनबी जा जाय बीर उछे वहाँ की कहावतों का ज्ञान न हो तो वह बार्ताकाप के मर्म का नहीं समथ सकेगा । E S Hoos म पथार्थ ही कहा है—

'So deeply embedded are proverbs in Malayan thought and speech that it is only by a careful study of local sayings and their judicious use in conversation that a foreigner can hope to break down the barriers of reserve and win the confidence and friendship of this lovable and warm-hearted people

## राजस्थानी कहावतें

संसार के सभी देशों और सभी जातियों में कहावतों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। सांसारिक व्यवहार-मदुता और सामान्य बुद्धि का जैसा निरूपण कहावतों में मिलता है वैसे व्यंग्य-वृत्तम है। कहावतें मातृ-स्वभाव और व्यवहार-जीवन के सिद्ध के रूप में प्रचलित होती हैं और वर्तमान पीढ़ी को उत्तपत्रिकार के रूप में पूर्वजों से प्राप्त होती हैं। जिस देश के लोक-जीवन में प्रकृतता, उष्माह और व्यवहार-मदुता की भाँप निरूपण गतिशील रहती है उस देश में कहावतों का प्राबुध सामान्यतः रहने में आता है। पय-प्रवर्तन की दृष्टि से भी कहावतों की उपारिपता सहज ही समझ में आ जाती है। क्या घर और क्या बाहर—यसः जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उद्बोधन के रूप में चिरकाठ से कहावतें उपयोगी निरूपण रहती हैं। समाज में मनुष्य किस तरह व्यवहार करे जिससे लोक-जीवन के वाय-वाय उसका व्यक्तिगत जीवन भी सुखमय हो सके इसका निर्देश प्रचलित कहावतों में साधारणतः मिल जाता है। सामान्यतः मनुष्य कुछ जोकर सीधता है किन्तु वही शिक्षा यदि उच्च कहावतों के रूप में सुखम हो जाय तो वह बहुत से कटकलीय पक्षों से अपनी रक्षा कर सक्ता है। इस सम्बन्ध में ध्यान देने की बात यह भी है कि सामाजिक बचना लिए हुए कहावत के रूप में प्रकृत कोई मुहाबरेदार वाक्य कभी-कभी हमारे मानस-मट पर इस प्रकार अंकित हो जाता है कि उसकी छान मिटाये नहीं मिटती। बहुधा ऐसा भी देखने में आया है कि अनेक प्रकार की युक्तियों से अनेक प्रकार के उक्त-वित्तों से अनेक मन्त्रेह का समाधान नहीं होने पाता वह मन्त्रेह बात ही-बात में एक समयोचित लोकोक्ति शायद दूर हो जाय है हमारी समस्त संज्ञाओं का समाधान हो जाता है और मुक्त ही उस सारपत्रित उक्ति के तन्त्र पर हम चिरवाय करने लगते हैं। जीवन में अनेक ऐसे अवसर आते हैं जहाँ कहावतों की इस आरचयजनक शक्ति को देखकर वे मन-ही-मन अंकित रह सया हैं ! वह भाग्य सचमुच ही मनुष्य है और उसके दोषों को दूर करने वाले वस्तुतः भाग्यशाली है जिनमें सामाजिक ज्ञान और जनमन के रूप

में कहावतों का बहुत भारदार सुरक्षित है। रामस्वामी भाषा भी इस दृष्टि से काफी सम्पन्न कही जा सकती है।

साहित्य की दृष्टि से भी कहावतों का कम महत्त्व नहीं। कहावतों भाषा का शृंगार है उनके प्रयोग से भाषा में समीपता और स्फूर्ति का संभार हो जाता है। इसीलिए कुछ आर्थशास्त्रियों ने तो लोकोक्ति नामक एक स्वतन्त्र अस्मंभार ही मान लिया है। विशेषतः उपन्यास और कहानियों में तो कहावतों का प्रयोग एक प्रकार से अनिवार्य हो उठता है। स्वर्गीय प्रेमचन्द जी की रचनाओं में जो कहावतों की बहार दिखलाई पड़ती है उससे उनके हाथ लगाया हुआ साहित्य पवन अत्यन्त हृद्यभरा और समीप जान पड़ता है। लोकोक्तियों के ब्याप्त्यप्रयोग से उन्हें भाषा में जाड़ भर दिया है।

योरप आदि देशों में तो शिखा-पद्धति में भी कहावतों का बड़ा उपयोग किया जाता है। रचनाशास्त्र का अध्यापक विचार-विरलेपन की आपत्त दूर करने और उसे प्रोत्साहित करने के लिए अपने छात्रों के सामने एक कहावत रख देता है जिसको लेकर वे या तो किसी कथानक की उद्गमना करते हैं अथवा लोकोक्ति के अर्थ को चरितार्थ करने वाली किसी वृत्ता का आधिपकार करते हैं। कभी कभी किसी कहावत को वाद-विवाद का रूप भी दे दिया जाता है जिसमें परस्पर और विपक्ष में अपने-अपने विचारों को प्रकट करने का अवसर छात्रों की मिल जाता है। इससे हम इस निष्कर्ष पर भी पहुँचते हैं कि कहावतों का सत्य सार्वभौमिक और सार्वकालिक नहीं होता। बहुत-सी कहावतों में स्वान और काल के आवृत्त सीमित जीवन की ही अभिव्यक्ति हो पती है जिसमें देश काल तथा भौतिक स्थिति की भिन्नता से सत्य का रूप भी बदल जाता है। एक परिस्थिति विशेष में जो सत्य है वही परिस्थिति की भिन्नता से असत्य वा बाना बान बन कर जाता है। बहुत-सी कहावतें ऐसी हैं जिनमें विभिन्न जातियों के विभिन्न धर्म मिलते हैं। अधिकांश कहावतों में देश अथवा जाति-विशेष के संबंध अनुभवों की निधि सुरक्षित रहनी है। किसी विद्वान् न कहावतों को मानव जाति के अतिमित काल-संबन्ध का नाम दिया है किन्तु इस प्रकार की परिभाषा या बतियन सार्वभौमिक और सार्वकालिक कहावतों के लिए नहीं ही लागू पड़े बहुतांश में जो यह अध्यापित रूप में द्रुपित ही नहीं जायगी।

कहावत की वैज्ञानिक परिभाषा देना कोई सरल काम नहीं है। अपने जीवन की दृष्टि में किसी को गिराया या भेजावनी देन के उद्देश्य से किसी बात का किसी की आद में बहने के अभिप्राय के अथवा किसी को उत्साहित देने के किसी

पर अर्थय कसन के लिए अपन न स्वतन्त्र भय रहने बाडी जिस सारगमित लोक-प्रचलित संक्षिप्त उक्ति वा श्लोक प्रयोग करते हैं उने सामान्यत कहावत का नाम दिया जा सकता है । कहावत का यह लक्षण बहुत व्यापक होते हुए भी सर्वथा निरर्थक होने का दावा नहीं करता क्योंकि राजस्थानी भाषा में ही कहावत कहने की इतनी सीखिया प्रचलित है कि उन सबका समावेश इस परिभाषा की परिधि में नहीं किया जा सकता फिर भी सारगर्भत्व संक्षिप्तता मुकीसापन उक्ति-वैविध्य अटपटापन तुक-साम्य आदि कहावत-सम्बन्धी सामान्य विशेषताएँ निर्धारित की जा सकती हैं ।

कहावतें सामान्यत ऐसी मिलती हैं जिनके निर्माता का पता नहीं बसता किन्तु कभी-कभी बहुत से कवियों की सुकितियाँ कहावत का रूप धारण कर लेती हैं प्रयोगवाकों को इस बात का ज्ञान भी नहीं रहता कि वे किस कवि विद्याय की उक्ति का प्रयोग कर रहे हैं । उदाहरणार्थ मिसरविहि लोक संस्कृत की एक पृथिविज्ञ कहावत है जिसका प्रयोग संस्कृत से अनभिज्ञ पाठक भी करते रहते हैं । उनको क्या पता कि इन्धुमती स्वर्णकर का वर्णन करते हुए पुरावास के मनीषी कवि की लेखनी से निम्नलिखित श्लोक निकल पड़ा था जिगरी अगुर्भ वकिन नै आज कहावत का रूप धारण कर रहा है—

अवीगरावाहवतार्थअनुर्वाहीति जम्पानवराकुमारी ।

भातो न काम्यो न च वेद सम्यक्शब्दु न सा भिमवविहि लोक ॥

संस्कृत साहित्य में अवातरग्यान के रूप में प्रयुक्त बहुत-सी पवित्रयो आज कहावतों के रूप में परिचित हो गई हैं किन्तु जो कहावतें किन्ती काम्यविषय की सुकितियाँ न होकर श्रुतिपरम्परा द्वारा लोगों के मानम-पट पर अंकित हैं उनका काक-निर्धारण नहीं किया जा सकता । इस प्रकार की कहावतें जो भाषी पीढ़ी को बनीबी के रूप में प्राप्त होती रहती हैं और लिखित रूप धारण न करने पर भी न जाने कितनी सहस्रावियों से उनका प्रयोग होता रहता है ।

किन्तु कहावतों का काक निर्धारण न होने पर भी उनका महत्त्व कम नहीं हो जाता क्योंकि उनके द्वारा वेद-विषय अथवा जाति-विषय की विचार-आराओं रीति-रिवाज उदाहार, गिष्टता वैतन आदर्भ तथा सामाजिक संपन्न कर जगता प्रकाश पड़ता है जिसके द्वारा अतीत के गर्भ में छिप हुए बहुत-सी खंडहर अथक उठते हैं । समाज-साधन का विज्ञान यदि अनुसंधान करे तो वह उनकी महायता से तत्कालीन सामाजिक जीवन के नमूनों का एक नैदान-विद्य उपविष्ट कर सकता है ।



कहावर्तों के निर्माण में तुक-साम्य का बड़ा हाथ रहता है । तुकान्त रचना आसानी से पाए जा सकती है और स्मृति में फिर स्थायित्व प्राप्त कर लेती है । मूल शब्दों पर भी अवसाहस्य गणना से वह स्मृति-मंत्र में लाई जा सकती है । सामान्य जनता को श्रुतिक मन्त्रात्मक भाव्य की अपेक्षा तुकान्त रचना में स्वभावतः अधिक आकर्षण मिलता है । यही कारण है कि तुकान्त-लोकोक्तिवाँ अधिक लोक-प्रिय हो जाती हैं । किन्तु तुकान्त-लोकोक्तियों में तुक की ओर पहले ध्यान दिया जाता है अर्थ की ओर बाद में । इस प्रकार कई लोकोक्तिवाँ में तुक का समतुल्य जितना मिलता है उतना सत्य का नहीं । सत्य की सत्य में रख कर तुक पर नहीं पहुँचा जाता जितना तुक को सत्य में रख कर बाद में सत्य का निर्वारण किया जाता है । उदाहरणार्थ कुछ रामस्थानी कहावतें नीचे—

- 1) १. बोल फड़के बाँई । के बीर मिस के चाँई ।  
 २. भाँय फड़के बहूनी । काँय घमूका सहनी ।

अर्थात् यदि स्त्री की बाँई बोल फड़के तो या तो भाँई मिस या पति मिसे । यदि दाहिनी भाँय फड़के तो उसे साँय घमूका सहना पड़े । साधारणतः स्त्री की बाँई बोल फड़कना धुम और दाहिनी भाँय फड़कना अधुम समझा जाता है किन्तु इस लोकोक्ति में धुमाधुम परिभाषा का जो स्वरूप उपस्थित किया गया है वह सब तुक बोल की हवा है ।

कुछ कहावतें ऐसी हैं जिनमें तुक के मात्र-मात्र भाव भी बड़े भुम्बर का में प्रकट हुआ है—

1) १. मूँक के लपावय कोनी, नीर के बिछावय कोनी ।  
 अर्थात् जहाँ मूल है वहाँ कोरी-कोरी लोकी ही अमूल है—वहाँ साग-नखी बस ? और जिन कोनों में नीर है, वहाँ बिगल बँये ? जिन कोतिल में नीर बनेरी लकिया और बिछौता क्या रे ! इन उक्ति को सुनते ही चैत हय इस कहावत की लोचन जाने मचाई के कायल हो जाने हैं । इसे ही काव्य में प्रत्य मित्रा का भाव्य ( Pleasure of recognition ) कहा गया है ।

२. बाबी साँय रहो साँय । अर्थात् लानी गये चाँये बाद चाँये किन्तु मान न जाने पावे ।

३. सेतो रोई बार शर, भँहयो रोई एक बार । नम बजावन में भी बड़ी सुन्दर व्यावहारिक बात वही गई है ।

विस्तार-अथ स अधिक उदाहरण नहीं दिये जा सकते ।

साधारणतः कहावतें लंबी नहीं होती किन्तु लंबी-लंबी प्रयोगों के रूप

म भी कुछ उक्तियों इस प्रकार प्रचलित हो जाती हैं कि हम उन्हें बहावता के अतिरिक्त दूसरे नाम से नहीं सकते। राजस्थानी भाषा में प्रस्तावर के रूप में प्रचलित बहावता का भी अभाव नहीं है। उदाहरणार्थ—

१ ठाकरा, घोड़ी ठका तीन देती। ठाकरे यार तो पहल हो ठक आतो  
बोप तो एकही देती।

अर्थात् किसी ने कहा—ठाकुर साहब त्रिम घोड़ी पर आप मवार हो रहे हैं वह तीन बार उछाल मारेगी। उत्तर मिला कि ठाकरे तो पहली उछाल में ही जमीन पर गिर पड़गा या उछाल तो घोड़ी अकेली देगी। इस प्रस्तावर में जैसे हास्य और व्यंग्य का फलारा छूट रहा है।

२ ठाकरा, भागो किता क ? कँ पैल को मार जाविय।

अर्थात् ठाकुर साहब, भाग में आप कैसे हैं ? उत्तर मिला—वीछा कान बाल की मार जैसी हो।

३ बीबरो, बीठपो है ? कँ तू गुड़ा बं।

अर्थात् किसी ने पूछा—बीपरी ! बीठे हुए हो। उत्तर मिला—यदि तुम नहीं मूहाना तो मुड़का बं।

उक्त बहावतों में बाह्य सारणमय और परिभाषा का पुनः न हो किन्तु इनमें आशय का अन्वय ही ही जो विलक्षण और प्रयुक्त कर देता है।

कह बहावतें ऐसी हैं जो पूरे पद्य के रूप में प्रचलित हैं। एक मिर्चाली से खाना खाने के लिए कहा तो उत्तर मिलिस्ता कहँ तँपार हा मय किन्तु जब पीछा पड़ने पर उन्हीं मिर्चाली से खान उठान के लिए कहा गया तब कहने लगे—  
हम तो बुड़े हैं किसी खान का बुलावा—

आबी बीपां आया आबो, बिसमिस्ता हाइ हाप बुलाओ।

आबो मीपां छान उठाबी, हुन बुड़ा कोई खान बुलाओ।

इसी से मिलती-जुलती एक और बहावत सुनी जाती है (जो यद्यपि पद्य के रूप में नहीं है)

जां जाव लकड़ी ख्याबी तो कँ प काकर का कान।

जां जाव खीबड़ी आबो तो कँ बिसमिस्ता।

जब इस प्रकार के वाचस्पय परस्पर मिल जायें जहाँ अन्वय के लिए अर्थ-समन्वय ही बहो विचलित-पद्यात्मक बहावत का प्रयोग बहुधा किया जाता है—

- ऐसा हो सँसा मिस्या बामन को नाई।

- ऊ रीनी आतनी हो आतनी रिताई ॥

अर्थात् बीस का तसा मिला गया जब बाह्य भीर नारी की भेंट हुई । बाह्य में माखीर्षादि दिया भीर नारी ने स्वयं दिखा दिया !

जो केवल ऊपरी सत्रवत्र दिसछाया है जिसे बामने तक का सऊर न है, उसके लिए निम्नलिखित लोकादिग बहुधा सजने में आती है—

कैबर जो पहली तै उतरपा, जोइस को समझो ।

बनजाया बोलै मूर्खी बाले तो डडको ॥

अनक प्रकार की लोकादिगों राजस्वान में प्रचलित हैं । बहुत-सी ऐसी भी कहावतें हैं जिनकी उत्पत्ति का सम्बन्ध किसी घटना-विशेष से है । उदाहरण के लिए निम्नलिखित दो लोकादिगों को लीजिये—

१. जो पेडा तरा लववाल घोड़तै तै लगेी कीतवाल ।

एक व्यापारी के पास ९ क्यूपाण्ड थे । वह उन्हें बेचने के लिए एक नगर में प्रविष्ट हुआ तो वहाँ के अधिकारियों ने कर के रूप में उससे नवों क्यूपाण्ड तो ले लिये फिर भी कर समूह करने वाले चार और बाकी रह गये । कतवाल ने तो उसकी बोड़ी ही छीन ली । बेचारा बैयता-का-बैसता ही रह गया । वहाँ का पासन-श्रवण अयायन्युर्ष हो वहाँ इन उक्ति का प्रयोग किया जाता है किन्तु जब तक उक्त अन्तर्गत कथा की न समझ लिया जाय तब तक इन कहावत का मर्म समझ में नहीं आता ।

२. घोड़ी कडे बाँधू ? कहू जीम कै ।

एक बारहूठी किसी बड़े सरदार के यहाँ ठहरे हुए थे । समोयबत उन्हीं सरदार के पास एक दूसरे समीपवर्ती टिचाने से ठाकर शाहब का भी आगमन हुआ । अपना बाहुल्य दिखाने के लिए समाप्त ठाकर शाहब ने बारहूठी से बड़ी मन्त्रता के साथ कहा कि कभी हम सैबक की सतिपरी को भी पबिष लीजिये । घोड़ी डेर अपने काम की बातें काटे ठाकर मात्र बापन जैसे गये । उन्हें यह स्वप्न में भी ग्यास न था कि बारहूठी मन्त्रबुध ही आ समझे । रग-बीड दिनों की गई डेर बारहूठी अपनी घोड़ी पर सवार होकर ठाकर शाहब के बन्धारे पर जा पहुँचे । बारहूठी का घोड़ी के साथ रैगने ही ठाकर मात्र के होग पगना हो गये । बारहूठी घोड़ी से उतर पड़े और पगाम पाम कर ठाकर शाहब से जय गणीनामकी की की । ठाकर शाहब स्तब्ध रह गये । बारहूठी ने कहा " ठाकर ! हम घोड़ी को कहाँ बाँधू ? " ठाकर शाहब ने आवाज अपनी ग्रीव निराल दी और बोले " इनके बाप लीजिये ! यह उस समय चुन सकती है आज यह नीबल क्यों आती ? "

बहायों में कभी-कभी बड़े सुन्दर अर्थों का प्रयोग मिल जाता है ।

'माया की सो बीजली, होली की सो सस, राजस्थानी की एग प्रतिष्ठ कहावत है जिसमें किसी नायिका क मीथर्व का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वह बापस में की बिजली की तरह अथवा दीपि में होली की ज्वाला के समान है। पूर्वार्द्ध की उपमा में नायिका का बापस्य आर्पण लुफाछिपी अनाधीन करने की शक्ति एक साथ ही व्यक्त हो रही है। संयोग की बात है कि स्वर्गीय प्रसाद भी मे मी कामायनी के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कुछ इसी तरह की बात कही है—

'सिता हो क्यों बिजली का पूत मेष-वन बीध मुलाही रंग।'

एक रूपक का भी मार्मिक प्रयोग देखिये। बालगी को पीरो र पूतमुई की छाती। अर्थात् उस स्त्री का हृदय जिसका पुत्र काल-कबलित हो गया हो बालनी का पेंदा ही समझिये। जैसे बालनी के पेंदे में सँकड़ों छिद्र होते हैं, उसी प्रकार पुत्र-शोक से विह्वला माता के हृदय में भी अक्षय्य छेद हो जाते हैं। वह कभी पुत्र की किसी वस्तु को संलती है स्मरण करती है अथवा दूसरों से सुनती है ता उसका हृदय सतवा विचरिर्ष होकर बालनी हा जाता है। आरोप का अधिरस यहाँ देखते ही बनता है।

आक्षेप अर्थकार के लोकोक्तिगत दो उदाहरण और देखिये—

१ राजा के बेटे केरवी बारबो, म्हे वनू वहाँ ?

अर्थात् राजा क सड़के ने बछिया मारवी मैं क्यों कर्हू ?

२ गुणी बडो क राम ? के बडो तो है सो हो है वन साँवा का देवता नै कग क्साई ?

अर्थात् गुणा बड़ा वा राम ? उत्तर दिया कि बड़ा वा है सो ही है (अर्थात् राम ही बड़ा है) किन्तु यह वाक्य कहे कर साँवों के दबता गुणा को बूट कोन करे ?

उक्त दोनों लोकोक्तिगतों में कही हुई बात का बड़े सुन्दर ध्वन्यात्मक ढंग में निपेक्ष कर दिया गया है। बात कह भी बी गई है और प्रतिपेक्ष भी कर दिया गया है।

कुछ कहावतें ऐसी भी मिल जाती हैं जिनमें आपाततः विरोध विपत्तार्थ पड़ता है। 'भाई बरोबर बरी नहीं र भाई बरोबर प्यारो नहीं' इन लोकोक्ति में एक ही शक्ति में दो विरोधी बातें कह दी गई हैं। वस्तुतः मसो न जायो।' अर्थात् कपुत्र किसी प्रकार बच्चा नहीं किन्तु एक ग्रन्थ कहावत में कहा गया है —

छोटो पोतो छोटो बेटो बीबीबर को बस। -

अर्थात् छोटा पैसा और कपुत्र कमी-न-जमी विपत्ति काल में काम देही देते

हैं। कहावटों में इन प्रकार के विरोधाभास का रोल कर जीवन की आवश्यकता नहीं क्योंकि हमारा जीवन ही अनेक प्रकार के विरोधाभासों से परिपूर्ण है। कहावटें वस्तुतः संपूर्ण सत्य नहीं हैं वे सत्य के लिए संकेतमात्र उपस्थित करती हैं वे शरम सत्य न हाकर पक्ष-निर्णय मात्र का काम करती हैं। जिस प्रकार स्वर्ण-विषेय की मिश्रता के कारण प्रतिबिम्बों में भी मिश्रता या आती है उसी प्रकार रोग काष्ठ और परिस्थितियाँ की मिश्रता के कारण न जाने जीवन-वर्षण में हमें कितने विभिन्न रंग दिखाई पड़ते हैं। सत्य वास्तव में बहुमुखी रेश है जिसके मुखों की इयता का अनुमान तक नहीं किया जा सकता इतना ही नहीं उनका एक मूल आकार प्रकार में दूसरे मूल से बहुत कुछ भिन्न दिखलाई पड़ता है। शरम सत्य क्या है? इस प्रश्न का उत्तर देते-देते तो बड़े-बड़े दार्शनिकों की बुद्धि भी हूँराव हो गई है। स्पीन्गेल्मन ने तो यहाँ तक कह दिया है कि निरपेक्ष सत्य बीसी कोर्न वस्तु नहीं हमारे सब सत्य बर्ड सत्य-मात्र हैं।<sup>१</sup> इसीलिए कहावटों का सत्य भी यदि सार्थक और मार्गकालिक न हो तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। मार्ग प्रदर्शन के लिए कहावटों से ठो साधन का नाम बती है किन्तु कोई उन्हें शरम सत्य का पर्याय समझने की भूल न करे। स्वायत्तता की शक्यता का प्रयोग करें तो हम कह सकते हैं कि वे निरपवाद और निरपेक्ष सत्य का निर्माण नहीं उनका सत्य मानेन और सापवाद है।<sup>२</sup> कहावटों न अविष्यक्त सत्य एक बुद्धिकोष मात्र हैं। भिन्न स्थान से लिये हुए भिन्न में जीने मिश्रता या आती है बीते ही इन संसार की देखने में भी बुद्धिकोष की मिश्रता सर्वत्र मिलेगी और यह एक बुद्धि न बाँछनीय भी है। गणित के  $2 + 2 = 4$  की तरह जीवन का यथार्थ मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। परिस्थितियों आदि की मिश्रता से हमारे जीवन के अनुभवों के मूल्य भी बदलते रहते हैं।

परिस्थितियों की मिश्रता से जब जीवन के मूल्य बदलते रहते हैं तो कभी-कभी कहावटों से हानि होने की संभावना भी बनी रहती है। सामान्य लोक-जीवन में कहावटों का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन जनता के लिए तो कहावटों वेद और शास्त्रों का नाम बनी है। विभिन्न व्यक्ति जिन प्रकार अपनी

1 There is nothing like absolute truth in this world all our truths are half truths—Stevenson.

2 Proverbs are moral universals, not logical universals.

बात को प्रमाणित करने के लिए बह-साम्प्रों का हवाला देता है उसी प्रकार  
 प्राचीन व्यक्ति कहानियों के बहुत सँभार का आशय लेता है । अन्ध विद्वानों से  
 संबन्ध रखने वाली बहुत-सी कहानियाँ भी प्राचीन जनता में बहुतों मुनाई पड़ती  
 हैं बिनास बिपत्ते रहना प्राचीन जनता के स्वभाव में शामिल हो जाता है । कहानियों  
 में ऐसी अद्भुत शक्ति पाई जाती है कि वे प्रयत्नवालों की ओर से अपने प्रति  
 आस्था और विश्वास के भाव उत्पन्न करा सती है किन्तु जिस आस्था के मूल  
 में अन्धविश्वास काम कर रहा हो वह जर्म की ही जड़ सिद्ध हो सकती है ।  
 समय-परिवर्तन के साथ-साथ वहाँ परम्परागत कथियों और रीति-रिवाजों में भी  
 परिवर्तन होना चाहिए, वहाँ कहानियाँ कभी-कभी बाधक सिद्ध होती हैं । हमारे  
 देश में स्वयंसेवक अजीत के स्वयं देने की प्रथा-सी चल पड़ी है । वर्तमान परि-  
 स्थितियों के अनुरूप अपने जीवन को सचि में ढाल कर उज्ज्वल भविष्य की  
 रूपना करना हमें नहीं भाता । अतीत से प्रेरणा प्राप्त करना बुरा नहीं किन्तु  
 इसका भ्रान्त रहना चाहिए कि अजीत हमारी उत्पत्ति के मार्ग में रोड़े न बटकाने  
 पावे । कहानियों की आशा-सिद्धि पर हमारी परम्परागत कथियों के स्तूप विरकाण-  
 तक प्रतिष्ठित रहते हैं । इस दृष्टि से कुछ कहानियों में वह गतिशीलता नहीं  
 मिलती जो पल-पल परिवर्तित और विकसित होते हुए जीवन का अनिबाध बंग  
 है । कभी-कभी तो वे पुराणकथी मनोवृत्ति का प्रतिनिधित्व करने लगती हैं  
 जिसमें आधुनिक जीवन का स्पन्द नहीं मिलता—इसलिए वा निश्चेष्टता एवं  
 निर्विषयता अथवा अज्ञान की प्रतीक-मात्र रह कर लोक-जीवन के समुचित विकास  
 में बाधा पहुँचाने लगती है । विचार-स्वार्थत्व की भावना को भी इस प्रकार की  
 कहानियों पनपने नहीं देनी क्योंकि अधिकतर कहानियाँ आदर्शात्मक हैं । वे व्यक्ति  
 के कर्तव्य पर तो जोर देती हैं किन्तु व्यक्ति को समाज में भी कुछ विशेषाधिकार  
 प्राप्त होने चाहिए—इस संबन्ध में कोई उल्लेख वहाँ नहीं मिलता । वे एक प्रकार  
 से मुसला रख देती हैं ऐसा मुसला जो बाधा आराम के जमाने में बना था । जीवन  
 के प्रति नये दृष्टिकोण को वे ग्रहण नहीं करने देती—मतिमा को जीवन के नये  
 नये मार्गों की ओर उन्मुख नहीं करती । बातावरण की एकतरफा जड़ता का  
ही इसका नाम है । निष्क्रिय भाव से बातावरण को अपना लेना सर्वोत्तम का  
 लक्षण नहीं है । हमारे माँसों की मम्यता में पुस्तकों का स्वाद नहीं के बराबर  
 है । कल-कौशल कृषि मो-नाम्न बोटों गावों अँगो आदि की थकी और लीज  
 के सम्बन्ध में प्राचीन जनता कहानियों पर ही निर्भर रही है । युति-परम्परा  
 में कहानियों की समृद्धि में बड़ा योग दिया है । कहानियों की अधिकता बाँधों में

ही देखी जाती है । ग्राम-जीवन में परिवर्तन बहुत कम होता है मध्यमता का आलोक भी वही धीरे-धीरे पहुँचता है किन्तु नागरिक जीवन में नूतन-मे-नूतन विचारों का परस्पर आदान प्रदान होता रहता है । नागरिक जीवन में बुद्धि की काट-छाँट और कतरबौत बहुत चलती है इसलिए वहाँ विरसेपन की प्रधानता से कहावतें भी उतनी नहीं सुनाई पड़ती । दार्शनिक धर्मों में भी वहाँ विरसेपन की प्रमुखता रहती है बाल की मातृ निकाली जाती है कहावतों का प्रयोग सामान्यतः देखने में नहीं आता ।

मात्र के इस बुद्धिवादी युग को देखते हुए कहावतों का महत्त्व भी बहुत उजझल नहीं दिखाई देता । इस मानिक युग में तो इतिहास के सम्बन्ध में भी इस प्रकार के आश्चर्यजनक परिवर्तन किये जा रहे हैं जिनकी सहायता से नैती बर्षा पर उतनी निर्भर ही न रहे जायगी । बर्षा और स्रोती संबंधी जन बहुत-सी कहावतों का मुख्य भी सम्बन्ध इस युग में न रहे जायगा । इसलिए इस बात की नितांत आवश्यकता जान पड़ती है कि बढ़ती हुई सम्पत्ता के इस युग में भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त कहावतों का संकलन किया जाय क्योंकि सम्पत्ता और लोक-साहित्य में परस्पर विरोध देना आता है । सम्पत्ता की बुद्धि के साथ साथ लोक-साहित्य जो अनुभूति पर आधित रहता है क्षीय होने लगता है ।

राजस्थानी कहावतों के अध्ययन करने से भी इस प्राण की सम्पत्ता और संस्कृति पर अच्छा प्रकाश पड़ता है । कहावतों के रूप में प्रचलित विद्वत्प्रतिष्ठित वाद-प्रतिवाद को देखिए—

मरद तो मूछपाल बंकी, मन बंकी घोरिया ।

सुरहल तो लीगाल बंकी, पीर बंकी घोरिया ।

मर्दान् मरं ता मू छीं बाला ही घेण्ड है रानी बाँके मेवबाली गाय गीर्नी बाली मवा पीरी अछे मुर्नी बाली घेण्ड होनी है । इन उक्ति को सुनकर राजस्थानी संस्कृति का लक्ष्य प्रतिनिधित्व करने वाला सुरहल इसका संशोधन के रूप में प्रतिपाद उपस्थित करता है—

मरद तो अन्धान बंकी कूट बंकी घोरिया ।

सुरहल तो दूबार बंकी, लेंज बंकी घोरिया ।

मरं ता बही है जो जवान का पनी हा नारी बही है जो बीर प्रगतिनी हवे, माय बही है जो रूप देने वाली हवे और बोड़ी बही है जो लेंज बनने वाली हवे । इस उक्ति में प्रतिज्ञा-पावन और बीर-जननी का देना उच्च आरती अभिप्रेत

हुआ है। राजस्थानी शीर्ष के मन्थ में कही हुई टाड की यह प्रसिद्ध उक्ति इसी-  
 लिए तो कहावत के रूप में प्राम' उद्धृत की जाती है। 'इका म देपी मापणी'  
 सोरी देती हुई मातृ की यह वाणी राजस्थान के घर-घर में प्रसिद्ध है और सोम  
 हुए राजस्थानी जीवन में आज भी प्राण फूक देने में कितनी सबल सिद्ध हो  
 सकती है।

कहावतों में स्त्री-जाति व प्रति भाव शकून-मन्त्राधी बहुत-से विश्वास  
 छवि और बर्षा-संबन्धी अनेक सिद्धांत जैती के मन्त्र में कहावतों की अधिकता  
 उंट-मैस जाति के पर्याय शब्दों का आश्रय कल्या-अशुभ संभव में मनोवृत्ति  
 जातिगत विशेषताएँ जादि अनेक बात ऐसी है जिनसे राजस्थानी संस्कृति पर  
 प्रकाश पड़ता है। संस्कृति के मन्त्राश्रय इन कोकोचितमा में छिपे पड़े हैं जिनके  
 अनुसंधान-अन्वेषण और तुलनात्मक अध्ययन द्वारा राजस्थानी संस्कृति के बहुत  
 से तथ्यों का बड़ा ज्ञान होता है वहाँ भारतीय संस्कृति की अक्षयता पर भी  
 हमारी दृष्टि गयी बिना नहीं रहती। भारतीय संस्कृति की अक्षयता पर आज  
 तक के इतिहासकार चाहे काब नबेह किया करे सच्चा इतिहास तो लोक-  
 साहित्य में सुरक्षित रहता है जिसके द्वारा विधिया का ज्ञान चाहे न हो पाष  
 तथ्यों का ज्ञान अवश्य हो जाता है। इस दृष्टिकोण को लेकर कहावतों का  
 अध्ययन और संग्रह नितांत वाञ्छनीय है। यूरोपीय भाषाओं में इस प्रकार के  
 प्रयत्न हुए हैं भारतीय भाषाओं में भी इस प्रकार के प्रयत्न की आवश्यकता है।

कहावतों के प्रस्तुत संकलन की अभिकावत कहावतों मैंने सुप्रसिद्ध साहित्यवेदी  
 पं० शारदामल्लजी शर्मा के रजिस्टर से ली है। पंजिजी के वात्सल्यमात्र होने  
 का दौरा मुझे सदा से प्राप्त रहा है। इसलिए उन्हें बन्धुभाव न लेकर उनसे तो मैं  
 आशीर्वाद की ही आकांक्षा रखता हूँ। कहावतों के अर्थ-निर्णय में मुझे पं० रघुपास-  
 जी शर्मा से विशेष सहायता प्राप्त हुई है। लोक-साहित्य के मर्मज्ञ पं० श्रीलालजी  
 मिश्र बड़ी हीनी सुझावों से भी मैंने पूरा लाभ उठाया है। उक्त दोनों सम्प्रदायों  
 का मैं अत्यन्त आभारी हूँ। दस प्रसंग में श्री शारदामल्लजी कानोडिया के नाम  
 का उल्लेख विशेषतः आवश्यक है। उन्होंने इन कहावतों की पंक्तिविधि बड़े ध्यान से  
 पढ़ी और मूल अनेक पत्र तिलके द्वारे उन्होंने कहावतों के बहुत से रूपान्तर  
 और संशोधन प्रस्तुत किये और अनेक स्थानों पर चिन्त्य अर्थों की आर भी मेरा  
 ध्यान आकृष्ट किया। इसके लिए मात्र धन्यवाद लेकर उनसे उन्मत्त नहीं हुआ जा  
 सकता। प्रसिद्ध भूषण-नेता श्री मोहन भाई भट्ट से मुझे सिरोंही की कहावतों  
 का संग्रह प्राप्त हुआ जो परिशिष्ट में दिया गया है। इसका समालोचन की अनुमति



ही देखी जाती है । आज जीवन :  
 आलोक भी बस बीरे-बीर पहुँचा  
 विचारों का परस्पर आपान-मदा  
 फाट-छाट और कतरखीठ बहुत  
 से कहावतें भी उठनी नहीं मुन  
 की प्रमुखता रखी है बाग  
 सामान्यतः देखने में नहीं

आज के इस बुद्धिवा  
 उज्ज्वल नहीं दिखाई दे  
 भी इस प्रकार के आ  
 लेती बर्षा पर उन्नी  
 बहुत-सी कहावतों  
 इस बाग की मि  
 युग में भारतीय  
 और लोक-गीतों  
 मात्र मोक्ष

राज

संस्कृति

बाद-गर्भा

— कवि-रामदास

## राजस्थानी कहावतें

३

१. अर्धाभुज की साहसी, घटाद्योप की राज ।  
जहाँ सासक अन्धाधुन्ध सामन करते हैं वहाँ अन्धकार का ही साम्राज्य छाया रहता है ।
२. अंबर के बेगली कोनी काय ।  
ये आकाश को सिया नहीं आ सकता ।  
कल उबारी कोनी मिल ।  
कल उबार नहीं मिलतो ।  
य अकल न जाई एक करोड़ रुपिये किमनिया ।  
कल कोई के बाप की कोनी ।  
बुद्धि किसी को बनीनी नहीं ।  
कल बड़ी के भैस ।  
कल बड़ी या भैस ? अर्थात् पगु-बल से बुद्धि-बल ही घेष्ठ है ।  
टिप्प० हिन्दी काय के सम्पार्क थी बिश्वम्भरनाथ लखी के मतानुसार उक्त कहावत का प्रकृत रूप है "अकल बड़ी कि बहम ?" बाग को समझना कष्ट है झूठी बतवाह करना अस्था नहीं । ये "अकल बड़ी कि भैस" को कहावत का विवृत रूप मानते हैं ।  
(४ हिन्दी काकोनिक कोष पृ० ५) "गुजराती कहेवत संग्रह" में "अकल बड़ी के भैस ? यह रूप मिलता है ।  
कल बिना छोट उभाया किर ।  
बुद्धि न होने से छोट भंसे पाँच किरने है अर्थात् मूर्ख बुद्धि न होने के कारण वाचनों का प्रयास नहीं कर पाते ।  
कल से सुवा पिठायो ।  
कल से रावा को पहिचाना ।  
बम्पु की बुद्धि से समझी ।  
नि० अकल न अस्था पोठानीमे । (गुजराती)

देकर उन्होंने मुझे बहुत अनुपुहीत किया है। सुप्रसिद्ध घोषक विद्यान् श्री अमर चंद जी महटा मुझे कहावतों संबंधी कार्य के लिए निरन्तर प्रेरित करते रहे हैं और बड़ी जवाबदा से अपने प्रश्न सुझाव करते रहे हैं। इसके लिए मैं उनका बड़ा कृतज्ञ हूँ।

जगत में मैं श्री कश्मीरिवासी विद्वान् के प्रति अपना हार्दिक आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिनकी प्रेरणा से मैंने कहावतों के संग्रह सम्पादन और अभ्यवस का कार्य प्रारम्भ किया। उनके संरक्षण और भास्साइन को मैं अपने जीवन का करदान मानता हूँ। आज तो कहावतों का अनुशीलन मेरे प्राणों का सम्पन्न बन गया है।

मेरे आभार्य वि० क्यामविहारी ने कहावतों के बर्गीकरण करने और पांडु लिपि को टंकित करने में मेरा हाथ बँधया है जिसका स्नेहपूर्वक स्मरण मुझे हर्षित करता है।

इस ग्रन्थ के प्रस्तुत करने में जिन-जिन विद्वानों, मित्रों मित्रियों आदि से सहायता मिली है उनका व्यक्तिगत उल्लेख संभव नहीं इतकिये उन सब के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करना मैं अपना परम पुनीत कर्तव्य समझता हूँ। बंगाल हिन्दी मण्डल ने श्री सुंदर रूप में ग्रन्थ को प्रकाशित करवा कर मुझे सब तरह से उपकृत किया है।

पित्तली  
२६ जनवरी, १९६१ }

—कट्टियालाल उद्दस

# राजस्थानी कहावतें

३

- १ अंघाबुंघ की साहबी घटाडोप को राज ।  
जहाँ घामक अंघाबुंघ घामन करते हैं, वहाँ अन्धकार का ही साम्राज्य  
घाया रहता है ।
- २ अंबर के पेगली कोनी लामे ।  
पूटे माकास को सिया नहीं जा सकता ।  
अकल उबारी कोनी मिले ।  
अकल उबार नहीं मिलती ।  
मि० अकलस न जाई एक कराइ बपिये किमनिया ।  
अकल कोई से बाप की कोली ।  
बुद्धि किनी की बपीनी नही ।
- ३ अकल बड़ी से भेत ।  
अकल बड़ी या भैम ? अर्थात् पनु-बल से बुद्धि-बल ही घेष्ठ है ।  
टिप हिन्दी कोप के सम्पादक श्री विरबन्धरनाथ लखी के मतानुसार  
उपरो महावत का प्रकृत रूप है "अकल बड़ा कि बहम ?" बाग को समझना  
अच्छा है सूटी बरबाद करना अच्छा नहीं । वे "अकल बड़ी कि भैम" को  
महावत का विद्वत रूप मानते हैं ।  
(द हिन्दी सांख्यिक कोप पृ ५) "मुजरानी कहेवत मग्रह में 'अकल  
बड़ी के भैम ?' यह रूप मिलता है ।  
अकल बिना अँठ उबाया फिर ।  
बुद्धि न होने में अँठ जमे पाँच फिरने हैं अर्थात् मूर्ख बुद्धि न होने के कारण  
बाबनों का प्रयोग नहीं कर पाए ।  
अकल से खुदा पिछाओ ।  
अकल से लुधा को पहिचाना ।  
बस्तु को बुद्धि से समझा ।  
मि अकलस ही अकल पीछलीये । (मुजरानी)

८ मरुआ रोहन बायरी, राखी सरबन न होय ।  
 पी ही मूल न होय तो ग्ही कुलंडी ज्योय ।  
 अद्ययनीया पर रोहिणी नदब न हो रक्षी-अग्यन पर भवण नराज न हो  
 और पीण की पूषिमा पर मूल नदब न हो तो सुमार में विपति आवे ।

९ अगस्त ज्ञया मेह पूमा ।  
 अमस्य तारा उत्रय होने पर वर्षा का अन्त समझना चाहिये ।  
 मि० उदित अगस्त्य पंच-अस्र सोळा (राजपरितमालम)

१० अण्णमबुडी बाणियो पिण्डमबुडी आट ।  
 तुर्तबुडी तुरकड़ो बामन सम्भवाट ।  
 बनिया दूरदर्शी होता है आट को बुद्धि बाद में आती है । मुसलमान तुरन्त  
 खाड़ केता है बुद्धि के नाम ब्राह्मण सफलका होता है ।  
 कथा० अण्णमबुडी बाणियो पिण्डमबुडी बह्य ।  
 तुर्तबुडी तुरकड़ो मुकको मारै बम्म ॥

११ अये अवे ब्राह्मणा नही नाला बरजन्ते ।  
 सब कामों में ब्राह्मण आये चूता है बिन्नु कहीं नदी-नाला आया तो वह  
 पीछे ही सता है अर्थात् ब्राह्मण सतरे से दूर रहता है ।

१२ अजगर को घालबिया में बेरासाई त्पार है ।  
 बिबाहादि के अजगर पर 'स्वीते' में जो अजमेरी एक राज्या हैता है उसके  
 लिए जरकारी कपवा तैपार है ।  
 टि० अजमेरी एक इपने की कीमत कलशार से आधी लगगी जाती है ।

१३ अदबयो बोरो उषार वे ।  
 त्रिम बाहरे की कर्जदार में एकम अटक गयी है वह उत समूल करने के  
 लिए कर्जदार का और उषार देने की नीति अस्तिपार करता है ।

१४ अठे किता काबर जाम्य है ?  
 अर्थात् यहाँ काम नहीं मिलेगी ।  
 क० अने के काबडिया के है ? ई में के काबडिया काई है ? ई में के  
 काबडिया तारै है ?

१५ अठे मुड़ पीलो कोनी अजबा इतो मुड़ पीलो कोनी ।  
 यह बहावण उन व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो बहुत गरम या बहुत  
 सीधा नहीं हाना । तालर्य यह है कि यह आरमी ऐसा पीया नहीं है कि  
 कोई उन ठण से अथवा ऐसा गरम नहीं है कि कोई बहे बैसा ही करते ।

## राजस्थानी कहावतें

- ८० पीछे मुड़ का ताड़-नाड़ कर चीटियाँ से जा सकती हैं किन्तु कड़ी-सी मेली हो तो चीटियाँ उड़ाकर नहीं से जा सकतीं ।
- २६ बड़े चाप बन्धी छठे की चाप ।  
 बन्दे मनुष्यों की चाह जैम इम साब में होती है जैसे ही परमात्मा में भी ।  
 इसीलिए परमात्मा क बर जब उनकी आवश्यकता होती है व अल्पानु में ही बुला लिय जाते हैं । तात्पर्य यह कि सत्पुरुष कीर्तनीही नहीं होते ।  
 मि Those whom gods love die young  
 बड़े ही रेबड़ को रिबाड़ो, बड़े ही भेड़या की घुरी ।  
 यहाँ ही भेड़ों के रहने का स्थान है और यहाँ ही भेड़िये की मौत है ।
- २ बचीबूकी बार भारी  
 मोके पर तनिक भी बमारबानी करने से मुकसान हो जाता है ।
- १९ बगवोली में दोख बीमें गति न मोख ।  
 वा निरपराध पर बाप लपावे उस गति या मोस कुछ न मिले ।  
 मि० दुलमी से कीरति बहै पर की कीरति सोय ।  
 तिनके मुह ममि सागिहै मिटिहै न मरिहै भाय ॥  
 भवमांग्या मोनी मिले, मांमी मिले न मोख ।  
 बिना मांमे मात्री भी मिल जाते हैं और मांमे पर मौत भी नहीं मिलती ।  
 बचमिले का से बती है ।  
 भोग न मिलने पर बड़ाचय का पावन स्वय हो जाता है ।
- २ भवसमस की कुछ नहीं समसवार की मौत ।\*  
 मासमस अपनी जिम्मेवारी को महसूस नहीं करता ।  
 बरपड़ी बिद्या घुई बिद्या घुबे सरीर ।  
 बरपड़ी बिद्या दुख दनी है और बिना सरीर को बलाती है ।  
 बनहीणी होमी नहीं होमी होय ता होय ।  
 जो होना है वह हा कर रहना ।  
 क होनी ता हाकर रहै र कई बनहीणी नहि होय ।
- १५ अमियू नाबे अमियू बूरे अमियू तोड़े ताम ।  
 मल के बल पर ही नाच-नूर और राग-ज्य मूलने है ।
- २६ अब तो बीरा तर्पे बीगो जिबीई मर्रे बंमो ।  
 \* मि० चबवा चानरु बतर नर, तिन प्रति रहत उषाम ।  
 पर पूरू मूरख नरी मरा सुनी प्रियिराब ॥

इस कहावत के पीछे निम्नलिखित कथा कही जाती है—

एक दुग्गि ने बुढ़सवार पे अपनी पोटली से बत्तने क लिए कहा । बुढ़सवार ने यह कह कर इन्कार कर दिया कि घोड़े के सवार और बुढ़िया माई का क्या साब ? सवार ने कुछ आगे चल कर सोचा कि अच्छा हाता यदि बुढ़िया की पोटली में से सेता । उसमें जो कुछ है उसे तो स्वायत्त कर सता । यह सीट पडा और बुढ़िया से कहने लगा “ मा माई ! पोटली दे दे तुझे कष्ट हाता होया मैं घोड़े की पीठ पर सेता चलू गा । ” बुढ़िया के दिल में भी यह सबबुद्धि जानूत हो गई थी कि जसो अच्छा हुआ जो मीने अपनी पोटली बुढ़सवार को न दी । कहीं यह सेकर चम्पत हा जाता तो फिर क्या था । मुझे अपनी पोटली से हाथ खाना पडता । किसी अनजान का विश्वास ही क्या ?

बुढ़िया ने उत्तर दिया “ अब तो बीरातम केँगो जिफोई मर्भे केँयो । अर्बानू हे मर्द ! अब तो जो तुम्हें कह पया वही मुझे भी कह पया ।

कहा जाता है कि बुढ़िया बीरे-बीरे चल कर बुढ़सवार के (जो रास्ते में माराम करता हुआ पछा) पहुँचे पहुँच गई ।

२७ अडे तडे का एक रुपया अठे कडे का धान। बार

इकड़म तिकड़म बाठहि जाना धूँ धाँ जाना प्यार ।

अडे तडे वालों की कीमत एक रुपया है 'अठे कडे का बारह आना इकड़म तिकड़म ( मराठी ) की कीमत आठ आने से ज्यादा नहीं पर " धूँ धाँ " बोलने वाले मुजराती की कीमत केवल चार आने ही है ।

२८ अभापियी टाबर लुहार में बसै ।

अजाया बचचा लुहार के दिन कठना है ।

लुहार के दिन विष्णु आदि बगते हैं जिससे वह बंचित रह जाता है ।

मन्दमामी लुहारनर में लाम नहीं उठा पाता है ।

२९ जनरो तो न भरतो देख्यो, जागत देख्यो मुरी

खोहर तो ये सुतती देखी, नाछ बुतारै कूड़ो

भायें हूँ पाछो जसो नाच जसो लंदूरो ।

नाम रख लने से ही नाम के अनुस्य बूज नहीं जा जाने । नाम तो बलाने

बर को होता है ।

टि० इस पद्य के सामे त्रिन कथा का सम्बन्ध है उसके अनुसार एक जाट

की स्त्री की त्रिनके बति का अपुताध्वजक नाम था लंदूरा । यह भावा-

नाला और गरीब था। पेटे बस्त्र पहने रहता था। आत्मी को उसकी सहेलियाँ कहा करतीं "दुनिया में जाकर तुमने क्या कुछ देखा? इस मजार में बमरा (अमरसिंह) मूरा (मूरसिंह) तथा चौधरी और बहुत-से मक्कीबायी हैं। उनकी स्त्री बस्ती तो किसना मुल पायी?" एक दिन जाट की स्त्री अपना घर छाड़ कर निकल गई। एक रात में किसी रात को देखने पर उसे मानस हुआ कि "अमरा" घर गया। जाग बनी तो एक आत्मी बीइटा हुआ दिखाई दिया। उसक पीछे दो काठीयारी युवक आगे थे। मानस हुआ कि बीइने वाले का नाम 'मूरा' (मूरबीर) है। और जाग बलने पर एक दुर्गी मनुष्य दिखाई पड़ा। पता चला कि उसके भाइयों ने उससे 'चौधर' (चौधरी का अधिकार) छीन लिया है। कुछ दूर और आगे बनी तो देखा कि एक पौड्यावर्षीय युवको कूड़ा कुहार रही थी जिसका नाम बा काठा (कक्की)। वह उनी समय भर मौन बनी। सहेलिया द्वारा कारण पूछने पर समने ऊपर के पत्र बहे से बिनकाभावाय यह है कि अमरा (अमरसिंह) को ता मैंने मरने देगा मूरा (मूरसिंह) का मरने देखा चौधरी के अधिकार को दिलने हुए देगा और काठा (कक्की) को कूड़ा कुहारते हुए देगा। नाम में क्या रखा है? "बंदूरा" नाम ही सबसे अच्छा है।

दि० १ अमरा तर म्हे मरता देखा भावत देखा मूरा ।  
 गीराँ तो पाबर बुर्ग जमम मरा पड़दूरा ।  
 अमर नाव ता मरता देखा भावत देखा मूरा ।  
 बान्दू पुबास्यो टाट बराई तिछयी मार कूड़ा ।  
 बागे में बाठा मठा नाम भवा बंदूरा ॥

- अम्बर को तारो ह्राव न कोनी दूई ।  
 आवाण का ताप ह्राव न मही दूता ।
- १ अम्बर पीलो, में सीलो ।  
 बर्षा चतु में आनमान पीणा हा तो बर्षा बन्द पड़ जाती है ।
- ५ अर्घ्या ही रीझाँ रोला करली" "र अर्घ्या ही बाबर्षा जीवनी करली ।  
 यहाँ तो मित्रियों में ही हल्का बगरी रहेंगी और बतियि यों ही भोजन करते रहेंगे ।  
 भीखने बाने भीकते रहेंगे और करने बाने भीख ही करेंगे ।



- ३३ अरजम जसा ही फरजम ।  
 जैसा पिता है वैसा ही पुत्र है ।
- ३४ अरबावतां अँट लई ।  
 अँटों की बीज पुकार के बावजूद भी उन्हें लाभ दिया जाता है ।  
 किसी की बीज पुकार पर भी ध्यान न देना ।
- ३५ अस्ता अस्ता और सस्ता  
 सिप्टाचार के अतिरिक्त कुछ लेना न देना ।
- ३६ असलैसा बूठा, बीदां घरे बपावपा ।  
 यदि अरलेसा नकाश में बर्पा हो तो डाक्टर हकीमी के घर बचाई बैठे अपात्  
 रान घुब फैलते हैं ।
- ३७ असवार तो को भी ना पब ठाडां करवी ।  
 फिस्ता यों है कि एक भीरव को कुछ डाधू जबरदस्ती उठा कर अँट पर  
 छिमे जा रहे थे । अँट तेजी से दीड़ा जा रहा था । रास्त में उस भीरव  
 का एक परिचित मिला पया । उसने पूछा "बरी तू ऐसी सवार कब से  
 हो गयी जो अँट को इतने जोरों से भगा रही है ?" तब उसने उत्तर में  
 ऊपर की कहावत कही की जिसका अर्थ यह है कि मैं सवार तो नहीं थी  
 जबरदस्तों ने मुझे सवार बना दिया ।
- ३८ असाईं भ्हे असाईं म्हारा लपा  
 बां सै टोपी न म्हारै मगा ।  
 हम भी ऐसे ही और हमारे सम्बन्धी भी ऐसे ही उनके टोपी नहीं हमारे  
 कुरता नहीं ।
- ३९ असी रातां का असा ही लडका ।  
 ऐसी रातों के ऐसे ही प्रातःकाल होते हैं ।  
 क० (१) बडी रातां का बडा ही लडका (२) इमी गंदां का इना ही नाब ।
- ४० अतो अमबाम्यु मोला कोनी अतो जूनी अतां में जाव ।  
 अनवातिया ऐसा मूलक नहीं है जो भूला ही गाय अराने जाय ।
- ४१ असी अरत बुरा हुया तो भी मन अरां नै रह्या ।  
 अस्ती बर्ष पूरे हो गये तो भी मन भाँवर में लपा रहा ।  
 बूढ होने पर भी बानना बनी रही ।
- ४२ अहारे अ्योहारे लग्या न कारे ।  
 घोरम और अ्यवहार में लग्या नहीं करनी चाहिए ।

आ

- ४३ आँख काग को प्यार आंगल को करक है ;  
 चुमी और बेबी में बहुत अन्तर होता है ।  
 सत्य और झूठ में बहुत अन्तर है ।
- ४४ आँख गई संसार पयो काग गया हुंकार गयो ।  
 आँख से ही संसार है और काग से ही अहंकार है ।  
 बपिर को न सुनने के कारण अहंकार पैदा नहीं होता ।
- ४५ आँख फड़के रहणी, लात घमूका सहणी ।  
 स्त्री की बाहिनी आँख फड़कने पर कोई सबट सहना पड़ता है ।
- ४६ आँख कड़ुके बाई, के बीर मिले के साईं ।  
 यदि स्त्री की बाई आँख फड़क तो या तो भाई मिले या पति मिले ।
- ४७ आँख फुड़ाई मूँड मुंडायी घर को छेरयो द्वार ।  
 शोग्युं बोई रे बूबना भावेल न बूहार ।  
 एक बाबाजी ने किसी से रुपये उधार से लिये । रुपये न लौटाने की नीयत से उन्होंने अपना बेप बबक किया एक आँख फुड़वा ली मूँड मुंडा किया घर का द्वार भी बुरी तरह कर दिया किन्तु फिर भी उनको अपने कार्य में सफलता नहीं मिली । इस पर किसी ने ऊपर का बोहा कहा था । ओ दोनों बीन से बसा आय उनके लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।
- ४८ आँख मीठ्यां अंबेरो होय ।  
 आँख मूँडने पर अंबेरा हो जाता है अर्थात् दुनिया के दुखों की मात्र से तटस्थ हो जाता ।
- मि० १ आँख फूटी र पीर मिटी ।  
 २ आप मरपां जुम परसै ।  
 आँख्यां बेबी बरसराम कदे न झूठी होय ।  
 प्रत्यक्ष बेबी हुई बात कभी झूठी नहीं होती ।  
 आँख्यां में पीठ बड़े नाँव निरपानीनी ।  
 आँखें तो नेत्र-मल से लिप्टा है और नाम है मूयनयनी ।  
 आँख्यां से आँपी, नाँव नैचलुज ।  
 आँख का अन्धा नाम मयनमुज । हिन्दी की यह कहावत राजस्थान में भी बहुत प्रचलित है ।

## राजस्थानी कहावतें

- ३३ अरजत जता ही फरजत ।  
 जैसा पिता है वैसा ही पुत्र है ।
- ३४ अरडावता डंट नव ।  
 डोंगों की दीन पुकार क बावजुद भी उन्हें छार दिया जाता है ।  
 किसी की बीन पुकार पर भी ध्यान न देना ।
- ३५ अस्ता अस्ता कीर तस्ता  
 गिप्टाचार के अतिरिक्त कुछ लेना न देना ।
- ३६ अस्तौला बूढा बँदा घरे बचावना ।  
 यदि अस्तौला मझम में बर्पा हो तो डाक्टर हकीमों क पर बचाई बँटे बर्बाद  
 रोग लूब फेंकते हैं ।
- ३७ अलवार तो की पी भा एन ठाई करवी ।  
 किसी मों हे कि एक बीरत को कुछ डाकू नबरबन्दी उद्य कर डंट पर  
 किये जा रहे थे । डंट देखी मे बीड़ा जा रहा था । रास्ते में उस बीरत  
 का एक परिचित भिड गया । उमल पूछा "अरी तू ऐसी सवार कब से  
 हो गयी जो डंट को इतने जारा से मया रही है ?" तब उसने उत्तर में  
 ऊपर की कहावत कही थी जिसका अर्थ यह है कि मैं सवार तो नहीं थी  
 नबरबन्दी ने मुझे सवार बना दिया ।
- ३८ असाई म्हे असाई म्हाय लगा  
 बां के बोपी न म्हाय समा ।  
 हम भी एसे ही और हमारे सम्बन्धी भी एम हो उनक टानी नहीं हमार  
 कुरता नहीं ।
- ३९ असी रातां का असा ही तड़का ।  
 ऐसी रातों क ऐमे ही प्रात-काल होत है ।  
 क० (१) बडी रातां का बडा ही तड़का (२) इसी रातां का इसा ही मांष ।
- ४० असो मयबाम्पु मोलो कोनी अको भूखो मलां में बाय ।  
 भगवानिपा ऐमा मुख नहीं है आ भूखा ही बाय बचाने बाय ।
- ४१ अस्सी बरत पूरा हुया ती बी मन बरत में रह्या ।  
 अस्सी बरत पूरे हो गये तो बी मन बाबर में लया रहा ।  
 बूढ़ होने पर भी काउला बनी रही ।
- ४२ अहारे धोहारे लज्जा न कारे ।  
 रोदन और अहारे में लज्जा नहीं करनी चाहिए ।

भा

- ४३ भाँख काम को क्यार भाँवल को करक है ।  
सुनी और देखी में बहुत अन्तर होता है ।  
सत्य और झूठ में बहुत अन्तर है ।
- ४४ भाँख सई संसार गयो कान गया हुंकार गयो ।  
भाँख से ही तयार है और कान से ही अहंकार ह ।  
बधिर को न सुनने के कारण अहंकार पैदा नहीं होता ।
- ४५ भाँख कड़ूक बहनी, सात घमुका सहनी ।  
स्त्री की बाहिनी भाँख फड़कने पर कोई मकट सहना पड़ता ह ।
- ४६ भाँख कड़ूक बाई के बोर मिले के चाई ।  
यदि स्त्री की बाई भाँख फड़के तो या तो भाई मिले या पति मिल ।
- ४७ भाँख फुड़ाई मूँड मूँडापो घर को कर्यो द्वार ।  
बोम्बू बोई रं बूबना आवैत न जुहार ।  
एक बाबाजी ने रिस्ती से रुपये उधार ले लिये । रुपये न लौटान की नीयत में उन्होंने अपना घेप बख्त किया एक भाँख फुड़ाकी मूँड मूँडा लिया घर का द्वार भी बूगरी तरफ कर लिया किन्तु फिर भी उनको अपने कार्य में संकलता नहीं मिले । इस पर किमी न ऊपर का बाहा कहा या । जो दोनों हीन में पला जाय उसक लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।
- ४८ भाँख मीठ्या अंबेरो होय ।  
भाँख मूँड पर अंबेरा हो जाना है अर्थात् दुनिया क दुःखों को भाँख में छटस्व हो जाना ।
- मि० १ भाँख फूटी 'र पोर मिनी ।  
२ भाँख मरघा जय परली ।  
भाँख्या बली परसराम कदे न झूठी होय ।  
प्रत्यक्ष देखी हुई बात कभी झूठी नहीं होगी ।  
भाँख्या में गीठ पड़े भाँख मिरगानेयो ।  
भाँखें तो नेत्र-माल स लिप्ट है और नाम है मूमनयनी ।  
भाँख्या से भाँधी, भाँख संजसुल ।  
भाँख का अन्धा नाम मयनमुल ! हिन्दी की यह कहावत रामस्वाम में भी बहुत प्रचलित है ।

- २ आँचरिया घूँ नूँ परँ सोनी हूँ ।  
अँचुरियों से नामून अलग नहीं होते भाई-भाई अलग मानून पड़ते हों तो क्या ? मौका पड़ने पर वे एक हो जाते हैं । आत्मीय अपने हैं मनमुटाव वाले कितना भी हो ।
- ३ आँठ में आयोड़ो लो दूरँ ।  
अबसर का फायदा उठाने से ही स्वार्थसिद्धि होती है ।  
दुटने के अनुरूप अबसर उपस्थित होने पर लोहा दूटता है ।
- ४ आँटे भाई मरँ बिसाई ।  
पकड़ने के अनुरूप अबसर उपस्थित होने पर ही बिसाई मरती है ।
- ५ आँ तिसा में लेक कोनी ।  
इत तिसी में लेक नहीं अर्थात् यहाँ कोई सार नहीं ।
- ६ आँचा आनी डील बाजँ आ डमडमी क्या की ?  
अन्धे के आँके डोल बज रहा है फिर भी वह पूछता है कि मह डमडमी कैसी बज रही है ? डोल की आवाज सुन कर भी वह उसे डमडमी की ही आवाज समझता है । उसने जर्मबद्ध नहीं तो क्या प्रज्ञाचक्षु भी नहीं ? अर्थात् आन सूझ कर अमजान बनना ।
- ७ आँचा आमे रोब अपवा बीया लोबँ ।  
जो अन्धे के आँके रोता है वह अपनी आँखा को खोता है क्योंकि रोते हुए को अन्धा देख तो सकता नहीं ।  
ज्ञान-शून्य के आँके रोगा व्यर्थ है ।
- ८ आँचा की मन्धी बहुरा को बटको ।  
राम सुझावे तो झूट नहीं फिर ही पटको ।  
अन्धे के हाथों की पकड़ और बहुरे का बटका परमात्मा सुझावे तो अन्धे ही झूटे अन्धका नहीं जाहे फिर ही क्यों न वे मारा । बहुरे को विश्वास पर भी नहीं सुनता इसलिए वह क्यों कर छोड़ने लगा ?
- ९ आँचा की मन्धी राम उड़ावे ।  
अन्धे की मन्धी मन्धान् उड़ाते हैं अर्थात् निर्बल का परमात्मा सहायक है ।
- १० आँचा नँ तो लाठी बाजँ ।  
अँधे को तो सहारा चाहिए ।
- ११ आँचा पीली कुत्ता बाय ।  
वहाँ अन्धे पीसते हैं वहाँ कुत्ते खाते हैं अर्थात् यहाँ प्रबन्ध का अभाव है कोई

देख-रेक करने वाला नहीं है।

भाँपा में कापो राब।

भग्नों में कामा राजा।

भाँपा सुसरा से कर्वाकी साज ?

बन्ने इबसुर से कमी लज्जा ?

भाँपी आई ही कोनी सुंसाठ पैली ही माबगी।

बाँबी ( दुफाल ) बनी यहाँ तक पहुँची भी नहीं सनसनाहट पहले से ही होने लय गई।

किमी काय के होन स पहले हो डिङोरा पाटमा।

मि मरी तो जाब ई कानो र मृत भी होगी।

बाँबी भस बर में बर

बाँबी भस का इस बात का ज्ञान नहीं रहता कि बहुज्बार बर रही है या बर।

वहाँ किमी के द्वारा अन्धाधन्ध मुकमान पहुँचाया जा रहा है वहाँ इस कहानी का प्रयोग किया जाता है।

भाँपी मा पुत की माबो नीज बर।

बन्नी मा पुन का मुह नहीं बेल पायी।

भाँपी की भाँबी किबाड़ है पापड़।\*

बन्ने के लिए तो किबाड़ ही पापड़ होते हैं।

बाँबी के ज्ञान ताबय की भार।

भग्ना माबन की बहार को क्या जाने ?

भाँबी बाँडे तीरनी घरकी में ही बे।

भग्ना पिठाई बाँटा है और अपने घरवालों को ही बे देता है।

बहु स्वार्थ मित्र करता है अन्धेपन की मोल में। दूसर उस पर पक्षपात न जायेप नहीं समा मवते।

भाँपी बत जाती क्यूं करे पाँची।

नेती की जतु जा गई है जब लेती करन में बेर क्यों करते हो ?

भाँपी ही छाप में घर की बिरानी बन बैठी।

छाप लेने आई थी बर की मालकिन बन बैठी !

\*यह कहना शायद अधिक उपयुक्त होगा "बातों के भाँबी किबाड़ ही का क्योंकि भग्ना बाँबी किबाड़ को पापड़ नहीं समझ मवता।

- ७२ भाए लाडी जारो घामा कह पुँछ ई जारें में तुझई हूँ ।  
जब किसी से कोई काम करने के लिए कहा जाय और वह उत्तरे लिए पहुँचे ही से तैयार बीठा हो तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।
- ७३ भाक को कीड़ा भाक में, डाक को कीड़ा डाक में ।  
भाक का कीड़ा भाक में प्रसन्न रहता है और डाक का कीड़ा डाक में असीए जमीर को अपने गगनभुम्बी महल में जो आनन्द मिळता है वही तरीक को अपनी सापड़ी में मिलता है ।  
अपने-अपने व्यवसाय में सबको आनन्द आता है ।
- ७४ भाक में ईख फोग में बीरो ।  
भाक में ईख और फोग में जारा वेदा हो गया ।  
जब बुरे कुरु में किसी सज्जन का जग्म हो तब इस उक्ति का प्रयोग होता है ।
- ७५ भाक सीबे पन पीपल कोनी सीबे ।  
भाक को सीबता है पीपल को नहीं ।  
कुपारों को देता है सुपारों को नहीं ।
- ७६ भाकास में बिजली चिमटी पबेड़ी जाल बाबे ।  
भाकास में बिजली चमकती है पबेड़ा बुकती झाड़वा है ।  
जतरा खी हो और कमजोर दिल का आदमी बबरा जाय ।
- ७७ भाकास में पूरै जना भापके ई मूँ पर पड़ै ।  
भाकास में बूकने वाले का बूक जसी पर पड़ता है ।  
सज्जन को कलंकित करने की इच्छा करने वाले स्वयं ही कलंकित होते हैं ।  
र० कोई सुरख पर बूकै ता भापके ई मूँ पर पड़ै ।
- ७८ भाकर रामजी के बर न्याक है ।  
बाबिर भगवान् के बर तो स्वाय होता ही है ।  
र० रामजी के बर दर होनै सके है, अबेर कोनी ।
- ७९ बागळी बाल नै ई पानी कोनी ।  
अवली पानी वर्तमान बाल के लिए ही पानी मही बर्बाद वह जाने और ठोके कर ही क्या सकता है अपनी वर्तमान स्थिति को ही संभाल ले तो बहुत है ।
- ८० भापके से पाछलो मळो ।  
अविध्य से मूठ काछ जच्छा रहता है क्योंकि अविध्य तो अविचिप है ।  
मूठकाछ में जो प्राप्त हो गया वह हो ही गया ।

- ८१ आग आग न गैर्यां पानी ।  
न आगे आग है न पीछे पानी खपति वह सर्वथा अनाप है ।
- ८२ आग आग न पीछे भीटकी ।  
पीते हुए रखने को न कोई घर है मृत्यु के बाद कोई अग्नि-संस्कार करने वाला नहीं है अर्थात् वह सब तरह से अनाप है ।  
मि० गाँव में घर नै रोही में खेत ।
- ८३ आग भंटे पाछ रे घट्या बम्पा कागर से ले ।  
जब किसी को रुपया उधार देना हूा तो पहले उसके नाम लिख कर फिर रकम देनी चाहिए जिससे हिसाब में पड़बड़ न हो ।
- ८४ आयो बारो, पीछो म्हारो ।  
आपके आगे हमारी पीठ बाहे जो कीजिए ।  
मि० बारी मोगरी म्हारो मुंड ।
- ८५ आ घाय तो डौलबा सोपी ही पी ।  
यह छाछ तो बिखेर देने योग्य ही पी ।  
निरूपयोगी वस्तु के नाश पर खेद न होना ।
- ८६ आज मरौ काल मरौ, मरपा मरपा किरां  
से प्यालो बलमलां जना बलड़ा हुया किरां ।  
यह किरां पोस्टी की उचित है जो बिना पोस्त पिये निर्बीज-ना रूपा है और जो पोस्त का प्याला मिच्ये ही मस्त होकर अपने को बर-भद्र मानता है ।  
ब० आज मरौ काल मरौ मरपा मरपा ई किरां  
पोल् कबोल्लं जद पिचां तो बलड़ा हुया किरां ॥  
राजपूतों में अमल पीकर ममा करने की रिवाज थी ।  
अतिथि-संस्कार तथा विवाहादि अवसरों पर अमल पिला कर ममा कराया करते थे ।
- ८७ आज मरपो दिन हुसरौ ।  
जो मया सो मया ।  
(मि०) (१) आज मरपो ठकके हुसरौ दिन (२) आज मरपो काल बारा दिक्
- ८८ आज मरं जकं ने काल कर आरै ।  
जो आज शुबार्ल है वह कल तक प्रतीक्षा कैसे करे ?
- ८९ आज हुमां जर काल् जमां ।  
आज जो हम पर बीत रही है वह कल तुम पर भी बीत सकती है ।



- आज ही मौखियो मूंड मुंडायो आज ही जोला पड़या ।  
बाबाजी ने आज ही मूंड मुंडाया आज ही मोले पड़े ।
- १ भाटो काँटो धी यड़ो खुस्ते केसा नार ।  
बाघो भलो न बाहिनी स्थानी बरख सुनार ।  
भाटा काँटा धी का यड़ा दिवना स्त्री भेड़िया बरख बीर सुनार, ये न  
बाएँ बच्छे न बाएँ । यात्रा में सर्षना निपिछ है ।  
क काँटो छाँटो धी यड़ो खुस्ते केसा नार ।
- २ भाठ पूरबिया मो खुस्टा ।  
पूर्व के रहने वाले भाठ बाह्यनों के बीच नो खुस्ते होवे हैं अर्थात् वे स्वपाकी  
होते हैं ।
- ३ भाडा आया मा का चाया ।  
सहोदर भाई ही सकट के समय सहायक होते हैं ।
- ४ भाङ्गु से तो जाय मरं से उठा मरं ।  
मूर्ख आदमी या तो अधिक सा सेता है या अधिक बोस उठासेता है जो उसके  
लिए चातक सिद्ध होता है ।  
मि० बामण सा मर, जाट उठा मरं
- ५ भाङ्गु आस्यः हाट न ताखड़ी न बाट  
मूर्ख दुकान करने चला बीर तराजू बीर बाट है ही नहीं ।  
मूर्ख का काम अव्यवस्थित होता है ।
- ६ भाडे विन से बास्योडो ही चोचो ।  
सामान्य दिन की मपजा छोटा-मोटा त्यौहार ही अच्छा ।  
क भाड दिन से बास्योडो कवेई स्याऊ ना ।
- ७ भाण पाँच को बीर १ पाँच को छोरी ।  
पाँच का तो छोकरा कहलाता है बीर जहाँ विवाह के लिए जाय वहाँ बर  
कहलाता है ।
- ८ भारमा सो परमात्मा ।  
जो आत्मा है, वही परमात्मा है ।
- ९ भाबनबाई की मेह भर पावचूँ आयो रई ।  
संबकाळ की बटा बरसे बिना नहीं जाती और शाम का जाया हुआ मेहमाव  
भोजन के बिना नहीं जाता ।
- भाबस्यी की नाया बिरला की चाया ।

मनुष्यों की माया और बूझों की छाया अच्छी होती है। जहाँ मनुष्य अधिक होते हैं वह जगह अच्छी समझती है जैसे अधिक पत्तों वाला बूझ छाया देने के कारण।

१ आदर का बरबं बाय झुंफड़ी सोला काय।

आर्द्रा नक्षत्र में हवा जैसे ठी झुंफड़ी झुकने को बर्षात् मकास में भर छोड़ना पड़े।

२ आदरा मर साबड़ा पुनरबसु भर तलाव।

न बरस्यो पुर्छं तो बरसे ही बरसा बुर्छं।

आर्द्रा में बर्षा हो तो बड़बड़े पानी से भर जायेंगे। पुनर्वसु में बरसे तो ठाम्बा भर जाय और पुष्य नक्षत्र में न बरसे तो फिर मुषिकस से बरसमा।

३ आब पाणी ग्याब होय।

बेईमानी का फल मिला ही जाता है। इस पर निम्नलिखित कथा कही जाती है—एक बुढ़िया बी जो बूझ में आबा पानी मिला कर बचा करती थी। एक दिन एक बन्दर आया और बुढ़िया की रुपयों की बीली उठाकर ले गया। नदी के किनारे बैठ कर वह एक रुपया तो बूझ में डाल देता एक रुपया बुढ़िया की तरफ फेंक देता। इस प्रकार बुढ़िया के पास बितने रुपय बीली में थे उससे आबे रुपये ही उसे मिले सप भाग बूझ में बह गये। आबा पानी बूझ में मिलाने का फल उसे मिला गया।

४ आयाक सोब आयाक जायें अर बाता का रुप बीटाई लायें।

बात " कहने वाले बातों आरम्भ के पहले उसको भूमिका में उक्त कहावती बातों का प्रयोग करते हैं।

५ आया में बेई बेबता आबा में खेतरेपाल।

जाने में बल देवी बेबता और धामे में अकेला बेबपाल।

जहाँ पर कोई आबा भाम तो केवल अपने किय रखते और रोप आबा अन्य सबके लिए छोड़ दे जहाँ इस उक्ति का प्रयोग होता है।

६ आबी छोड़ एक न बाबें बाकी आरो भुंहु से जायें।

जो आबी को छोड़ कर पूरी रोटी को लमे वा प्रयत्न करता है उसकी वह आबी भी मुंह से बनी जाती है।

७ आबे खेठ अमाबस्या रवि आबिमतो खीय।

बीज जो बगरो ऊपती तो लाल भरेला सोय।

उत्तर होय तो अति जलो बजान होय बुकाल।

रवि भाबे ससि भाबमें तो भापी एक तुमाल ।

जेठ की जमावस्था को जहाँ मुर्य अस्त होता है उस जगह को याद रखो । यदि जेठ सुबि द्वितीया को अम्बरा उस स्वात से उत्तर में है तो जमाना अच्छा होगा । यदि दक्षिण में है तो अकाल पड़ेगा और उसी खास स्वात पर है तो जमाना हलका होगा ।

१८ भाबे माह कार्बे कामल बाह ।

भाबे मास मास से कम्बल का रखको । भाया प्राय मास बीतने पर सन्ध्या के समय ही सर्पों रह जाती है ।

१९ भापी बास्यो अंसली भापी पस्यो छाज ।

सर्गाट सार्टे घब गई, मबरी मबरी पाज ।

एक बार जब अकाल पड़ा तो किसी किसान को बिचस होकर खेत के किण्व ही ( बहुत कम मूल्य में ही ) अपनी स्त्री को बेच देना पड़ा । भाया जम तो अंसली में रख किया भाया छाज में । इतना ही बच मिला । अब जब बाबल बरबटा है तो किसान उससे बीरे बीरे परबने के किण्व कह रहा है ताकि वह व्यपित न हो । अब जाहे बर्षा होती रहे उसकी स्त्री ठा गई ।

२० भापी बरती में भापी बारने ।

भाया बरती में भाया बाहर जपति इसके रहस्य का कूठ पता नहीं जलवा ।

१ भा गई कावा चोर्न की बार बार नहीं होर्न की ।

मह कचन-सी कावा बार-बार नहीं मिकेगी ।

मनुष्य-बैह दुर्लभ है ।

२ भाप भापकी मूछाँ के से ताब दे हे ।

सब अपनी-अपनी मू छों के ताब देते है ।

सब अपना स्वार्थ सिद्ध करते है ।

३ भाप भापकी रोदियाँ नीचे से आँच देवे ।

सब अपनी-अपनी रोटियों के नीचे आँच देते है ।

सब अपना स्वार्थ सिद्ध करते है ।

४ भाप भापके बाँके पापी से मस्तत हु ।

अपने-अपने बाने-बानी में सब मस्त है ।

५ भाप भापको भी से ने प्यारी ।

अपनी बान सबको प्यारी है ।

६ भाप जभाया कामड़ा गई न धीरे डोड ।

अपने किये हुए कर्मों के लिए सब को दोषी नहीं ठहराना चाहिए।

११७ आपका फाइदा भी सँभालें।

अपना पेट सही पाकते हैं।

११८ आपकी एक फूटी को कुछ कोनी पड़ोसी को दोनों फूटी चाये।

उक्त कहानी पर निम्नलिखित कहानी कही जाती है जो बहुत प्रसिद्ध है —

एक आधमी ने देवी से यह वरदान प्राप्त कर लिया कि उस जिस बीज की इच्छा हो वह उसे अनायास सुरक्षित मिल जाय। देवी ने वरदान देते समय यह शर्त रख दी थी कि उसे जो प्राप्त होगा उससे दुममा उसके पड़ोसी को भी प्राप्त हो जायगा। अर्थात् वह आधमी अपने आराम की बीजें मारने लगा उसे वे मिलती यही किन्तु उसके पड़ोसी को भी वे ही बीजें दूनी मात्रा में मिलने लगी। यह देखकर वह वरदान प्राप्त करने वाला ईर्ष्या से जल उठा। आखिर जब उससे सहा नहीं गया तब उसने माँग की कि मेरी एक बीज फूट जाय। उसकी एक बीज फूट गयी और पड़ोसी की बीजें। फिर उसने माँग की कि मेरे घर के सामने एक कुत्ता हो जाय। इच्छाप्रकट करते ही उसके घर के सामने एक तथा पड़ोसी के घर के सामने दो कुत्ते ही गए। बेचारा पड़ोसी अपना तो पहले ही हो गया था अब घर के दरवाजे पर दो कुत्ते बन गये। एक दिन घर से बाहर निकलते समय वह कुत्ते में मिर कर मर गया। तब वही वरदान प्राप्त करने वाले के जी-में-जी आया।

११९ आपकी कोल में सँभालें।

अपने-अपने चेंबर हैं।

१२० आपकीसकी सात ह कोनी बेट की रहयाँ को कुछ है।

अपनी वस्तुओं मार। होने का कोई दुःख नहीं है, ईर्ष्यायुक्त बेट के पास उन्हीं वस्तुओं के मुझे प्रथम रहने का दुःख है। किसी ईर्ष्यायुक्त देवरानी के सम्बन्ध में उक्ति है।

१२१ आपकी गली में कुत्ता मार।

अपनी गली में कुत्ता भी रोए होटा है।

१२२ आप की भाय गया ने आप बघाई।

अपनी गरज के लिए पहले को आप बनाटा है।

अपनी गरज के लिए छोटे-से-छोटे व्यक्ति को भी गरज करनी पड़ती है।

दि० आपकी गरज रामचन्द्रजी पर नै आप कहयो।

- १२३ आपकी छाय में कोई लाली कौमी बतावे ।  
 अपनी छाछ को कोई लट्ठी नहीं बतलाता ।  
 अपनी बस्तु को कोई बुरा नहीं बतलाता ।
- १२४ आपकी छोड़ पराई तर्क आरंभ और कं बन्द ।  
 जो अपनी छोड़ पराई की ओर दृष्टि रखता है उस समय का आनात सङ्गा पड़ता है ।  
 जो आपकी छोड़ पराई तर्क से सब ज्ञान गंध कं बन्द ।  
 जो अपनी छोड़ पराई रखता है उसका सब बरबाद हो जाता है ।
- २५ आपकी ज्ञान उभाड़वां आप ही लाली भरें ।  
 अपनी ज्ञान को गन्ध करने से बुरा को ही लम्बित होना पड़ता है । अपने  
 बर की बुराई प्रकट करने से बुरा को ही शर्मिलता होना पड़ता है ।
- २६ आपकी बराई और पराई आपकी ।  
 उसके यहाँ अपनी-पराई का कोई भेद-भाव नहीं है ।
- २७ आपकी माँ में शकल कृष्ण बतावे ?  
 अपनी माँ को कोई शक्ति नहीं रखता ।  
 अपनी बस्तु को कोई बुरा नहीं बतलाता ।
- २८ आपके लाली हीरक में दूसरे के लाले भीत में ।  
 अपने पर चोट पड़ती है तब तो दुःख में लक्ष्मी है दूसरे पर लक्ष्मी है ती  
 मृगो बीमार में लक्ष्मी है ।  
 दूसरे के प्रति कोई सहाय्यमूर्ति न होने से सब में न का प्रयोग करते हैं ।
- २९ आपको छोड़ सारंग सारंग जो गया को बुरा  
 अपने छोड़ को भोवो । जो के लक्ष्मी  
 अपने किए हुए का फल घबाने के जो मरति ई जाय नहीं ।
- ३० आपको टको टको, दूसरे को टको टको लक्ष्मी ।  
 अपनी बस्तु को बड़ी समझे और दूसरे की बस्तु को गण्य ।
- ३१ आपको बिभाड़ या बिना दूसरे को कौमी लुभरें ।  
 अपना बिभाड़े बिना दूसरे का सुचार नहीं हो सकता ।  
 परोपकार करने के लिए स्वार्थ की छोड़ना पड़ता है ।
- ३२ आपको तो आपको और बिराभू लोभ ।  
 अपना अपना ही है और परामा परामा ही है ।

१३३ आपकी ह्रास अवभाव ।

अपने ह्रास से जो भोजनार्थ पदार्थ जाता है वह चाहे जैसे खाओ अर्थात् कोई रोकने वाला नहीं । घर की व्यवस्था में पूर्ण आजादी है ।

१३४ आप एकजी कातरे मारें चेला न परमोध सिखायें ।

स्वयं पुस्त्री लो कातरे मारते हैं और शिष्यों को उपदेश देते हैं ।

← क० आप मुसजी बँपन खायें, चेला न परमोध सिखायें ।

१३५ आप कुबन्तो पाँखियो से सुख्यो अजबान ।

स्वयं सुबता हुआ बाह्यज मजमान को भी से हुआ ।

१३६ आपने उजर्जे कोनी, दूसरों की माने कोनी ।

खुद को कोई बात नहीं मूसती दूसरों की मानता नहीं ।

१३७ आप मालो लो कप जलो ।

आ स्वयं जला है उसके लिए संभार जला है ।

१३८ आप मर्यां गुय बरलें ।

अपनी मृत्यु हुई लो मालो संभार में प्रलय हो गया ।

← १३९ आप मर्यां बिना कुरप कठै ?

अपने मरे बिना स्वयं क्या ?

अपने ह्रास से काम करने पर ही काम पूरा पन्ता है ।

१४० आप में अकल अनी बीलें दूसरें कर्न बन घबू बीलें ।

अपने में अकल अधिक दिखलाई पड़ती है, दूसरों के पास बन अधिक दिखाई देता है ।

१४१ आबर लैर उबार है ।

जमी जिसकी साब हो उमी के अनुसार उबार मिलता है ।

१४२ आ बलर मर्न मार ।

हे बल ! आओ, मुझे मारो ।

जन्मभूमि कर विपत्ति मोल लेता ।

१४३ आप कँ अची नहीं बेल्या कँ घची नहीं ।

आजमान के मोह नहीं होयें और बेव्या के पति नहीं होयें ।

नि० मुक्त कँ अनी ना आनय कँ घची ना ।

← १४४ आपा की ली बीजली हीली की ली जल ।

दिनी भाषिका के मोन्दरु का बर्नन करते हुए कहा गया है कि वह भारत में की दिवनी क नमान सया दोषि में होनी की स्वाठा के समान है ।

- ११३ आपकी छाय में कोई छाटी कौमी बतावै ।  
 अपनी छाछ को कोई लट्टी नहीं बतलाता ।  
 अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं बतलाता ।
- ११४ आपको छोड़ पराई तरफ आबे जोसर के बरके ।  
 जो अपनी छोड़ पराई की ओर दृष्टि रखता है उसे समय का आघात सहना पड़ता है ।  
 क० आपकी छोड़ पराई तरफ तो सब जान्य पैर के बरके ।  
 जो अपनी छोड़ पराई रखता है उसका सब बरबाद हो जाता है ।
- ११५ आपकी जाय उघाड़्या आप ही जानां मरे ।  
 अपनी बंधा को गन करने से बुर को ही कश्मिब होना पड़ता है । अपने घर की बुराई प्रकट करने से बुर को ही कश्मिबा होना पड़ता है ।
- ११६ आपकी पराई और पराई आपकी ।  
 उसके वहाँ अपनी-पराई का कोई भेद भाव नहीं है ।
- ११७ आपकी मा नें आकब कृष बतारै ?  
 अपनी माँ को कोई आकिस नहीं कहता ।  
 अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं बतलाता ।
- ११८ आकबे लामे होके भेँ दूसरे के लामे भीत में ।  
 अपने पर भोट पड़ती है तब तो हुरम में लपटी है दूसरे पर कमती है ती मूलो बीबार में कपनी है ।  
 दूसरे के प्रति कोई सहानुभूति न होने से सब को न का प्रयोज करते हैं ।
- ११९ आपको छोड़ आंभर लामर जो पयाँ को बुज  
 अपने छोड़ को भोभो ।  
 अपने किए हुए का फल भोगने के माँ मरति ।
- १२० आपको टको टको, दूसरें को टको टकुसकी ।  
 अपनी वस्तु का बड़ी समझे और दूसरे की वस्तु को तबन्ध ।
- १२१ आपको बिबाड़ या बिना दूसरों को कौमी लुबरै ।  
 अपना बिमाड़े बिना दूसरे का सुभार नहीं हो सकता ।  
 परोपकार करने के लिए स्वार्थ को छोड़ना पड़ता है ।
- १२२ आपको तो आपको और बिरानू भोग ।  
 अपना अपना ही है और परामा पणया ही है ।

१३. आपकी हाथ जगमगाए ।  
अपने हाथ से भी मौजनादि मनाया जाता है, वह चाहे जैसे काजो बर्बाद  
कोई रोकने वाला नहीं । घर की व्यवस्था में पूर्ण माबारी है ।
१४. आप मुकड़ी कातरा मारें बेका नै बरपोर तित्तारै ।  
स्वयं मुकड़ी तो कातर मागत हैं और पिप्यों को उपदेश देते हैं ।
१५. आप मुकड़ी ईपन जारै बेका नै बरपोर तित्तारै ।  
स्वयं आप मुकड़ी ईपन जारै बेका नै बरपोर तित्तारै ।
१६. आप दुबला पाँड़ियो ले दूष्यो जगमान ।  
स्वयं दुबला हुआ बापूण जगमान को भी ले दूबा ।
१७. आपने उपरं डोनी, हुसरं की मारं डोनी ।  
घुड़ को कोई बाध नहीं मूमती हुसर की मानता नहीं ।
१८. आप मत्तो तो जप जलो ।  
वो स्वयं भला है उसके लिए संभार भला है ।
१९. आप मरुमां जप परलै ।  
मरुती मृत्यु हुई तो मालो मंगार में प्रलय हो गया ।
२०. आप मरुमां बिना सुरग कठे ?  
जपने मर दिना स्वयं कहाँ ?  
जपने हाथ में काम करने पर ही काम पूरा पड़ता है ।
२१. आप में अकक घधी बीलै हुसरं कर्न जम घणुं बीलै ।  
जपने में अकक अधिक दिखलाई पड़ती है हुमरे के पाग बन अधिक दिखलाई  
देता है ।
२२. आबक लैर उघार है ।  
जैनी विगरी सात हो जमी के अनुसार उघार निगता है ।
२३. आ बलरु जर्म मार ।  
हे बैल ! काजो मुझे मारो ।  
जलबुझ कर विपत्ति मोल लेता ।
२४. आम के जधी नहीं बेम्पा के घधी मरी ।  
आमजान के मोक नहीं होयें और बेम्पा के बन्दि मरो इत्या ।  
जि० मूलक के जधी ना, आमज के जधी ना ।
२५. आमा की सी बीकरी, होभी की मो मज ।  
जिनी मायिका के लोचन का बदन करने हुए ही बना है कि वह बाइल  
में जो विजनी के जमान ठपा होयि में होयि के जमान के उपाय है ।



मि बिजा हो ज्यों बिजली का फूस में बन बीज मुलाबी रंग ।  
( कामायनी )

- १४५ आभा राता मेहु भाता आभा पीला मे लीला ।  
यदि आकाश में सलाई बिलाई पड़े तो खूब बर्षा हो यदि आसमान पीला  
बिलाई दे तो बर्षा की कमी हो ।
- १४६ आम खाना क पेड़ गिचना ?  
आम खाने या पेड़ बिनने ?  
मनुष्य को अपने काम से मत्तकब रचना चाहिए ।
- १४७ आम नीबू खानियो कंठ भीष्या खानियो ।  
आम नीबू और बरिया इनको बचाने से ही रस मिलता है ।
- १४८ आम फल नीबो भई अरंड अकासी जाय ।  
जब आम फलता है तो नीबे की ओर झुकता है और एरंड आकास में जा  
रहता है ।  
सम्बन्ध जब बढ़ता है तो मम्य होता है और दुर्जन इतराता है ।
- १४९ आया की समाई बच गया की समाई कोली ।  
मनुष्य काम को तो बर्बाद कर लेता है पर हानि को नहीं ।
- १५० आमी गुगा खड़ी बकरी घुमा नादी ।  
माह दुप्ला मबनी के बाद प्राय बकरियाँ बूब देना बन्द कर देती हैं ।
- १५१ आयो भेत निबायो कूड़ा मेल पंबायो ।  
गरम बँब मास आया तो फूहड़ ने भी स्नान करके अपनी मील बोई ।
- १५२ आयो रात पयो परनात ।  
रात को आया और प्रातःकाल बका गया ।  
जब कोई सुरत-सुरत चला जाय तो इस उक्ति का प्रयोग होता है ।
- १५३ आरिपड़ा छब जोय कर समय अताऊं तोय ।  
भाङ्गुको जुग रेलसी छठ अनुराधा होय ।  
हू किमान ! बर्षा के भव यागो को देख-माक कर मैं तुम्हें एक ही योन बतला  
बेता हूँ । यदि माघपद महीने की पछौ के दिन अनुराधा मकर हो तो  
अच्छा बसना होता है ।
- १५४ आ रे मेरा अस्पष्टपट्ट । ने तने चाटू तू मने चाट ।  
हू मेरे स्पष्टपट्ट । आओ मैं तुम्हें चाटूँ और तू मुझे चाट ।  
दो निरुद्धे व्यक्तिषों का समापन निरर्थक होता है ।

- १५५ मारें राह्या राड करी ठाला बँह्या के करी ।  
हे भगड़ा माल केने वाले मामा भगड़ा करें जाबी बैठ क्या करें ?
- १५६ बाऊ कं भाव को के बेरो ।  
बो जिन काम को करता हो मही, उसे उलका क्या पठा ?
- १५७ बाल पड़ तो खेचूं मालूं, लुक पड़ें पर बालूं ।  
जमाना होमा तो वहाँ रहूँगा खेचूँगा-बाऊँगा मीज रुबूँगा बलाम पड़ा  
तो जवने पर चला जाऊँगा । दूसरे की बिचलि म हिस्सा न बँटाने वाले  
और केवल लुक में लीरी होने वाले व्यक्ति की मनोवृत्ति का चित्रण है ।
- १५८ आला बँबे न आपरै लुका बँबे न कोहें के बाप छे ।  
बह इस तरह क मकर लिखता है जो बह स्वयं नहीं पड़ सकता । लिखने  
के बाद बड़े-से-बड़ा बाचक भी उन्हें नहीं पड़ सकता ।
- १५९ आ के बड़ोसल झूंपड़ी मिल उठ करती राड़ ।  
आबो बमड़ बूहारती, लारो बमड़ बूहार ।  
हे यदोसिन ! अपनी झोंपड़ी रका । अब तक काम में मैं तुम्हारा हाथ  
बँटती थी तुम्हें आजा अंगिन ही बूहारना पड़ता था । मैं अब यहाँ की  
तब प्रतिदिन मुझने कसह करती थी । अब मेरी अनुपस्थिति में सारा जीवन  
बूहार ।  
मि० राड़ से बाड़ मलो ।
- १६० आबो मीपा काजा खाबो, बिसपिल्ला शर हाप बुबाबो ।  
आबो मीपा छान उठाबो, हम बूड़ा कीई ब्याप बुलाबी ॥  
एक मिर्ची से जब लाना खाने के लिए बहा गया तो व सुरक्षित बिसपिल्ला  
कह कर तैयार हो गये किन्तु उन्नी मिर्ची से जब छप्पर उठाने के लिए  
कहा गया तो बोले—हम तो बूढ़े हैं बिनी अबाम को बुलाबो ।  
मि० काम करन को आलसी भोजन को इतिया ।
- १६१ आलबानी भायबाबी ।  
माभिन में बरी भायबाना के यहाँ होली है ।
- १६२ आताई पुर अष्टमी चण्ड तेवरा छाय ।  
ध्यार बाल भूतो रई जिई पाई र राय ।  
आपाड हृष्या भष्टमी को चण्डोदय के समय यदि बारम्ब हो तो पृथी ह्रींकी  
की तरह चारों महीन पानी चरकता रहेगा ।
- १६३ आताई पुर अष्टमी चण्ड जवस्तो जीय ।

कमलें बँ तो करबरो, मोलें बँ तो लुपाळ ।

जे बंधो निरमल हुबै तो परई मचिस्यो काल ।

आपाङ्क कुम्भा अष्टमी को उदय होते हुए चन्द्रमा की तरफ देखो । यदि वह काँठे बादलों में है तो अमाना ऐछा-बीछा ही होवा । यदि सफेद बादलों में है तो अमाना अच्छा होवा । यदि बादल नहीं है तो बकर अकाल पड़ेना ।

१६४ आसाठे सुद नवमी नें बादल ना बीज,

हुल फाड़ो ई बग बरो बीठा आबो बीज ।

आपाङ्क दुबला नवमी को यदि बादल बीर बिजली न हों तो हुल को तोड़ कर बला बी और बीठे-बीठे बीज बचाठे रहो क्योंकि वर्षा नहीं होगी ।

१६५ आसाई सुद नौमी घन बादल घन बीज ।

कोठा छेर खंछेर हो राखो बरब नें बीज ।

आपाङ्क दुबला नवमी को यदि बादल घने हों और बुर बिजली अमकटी हो तो कोठी खाली कर दो अर्थात् सब अनाज बेच डालो । बीने के लिए सिर्फ बीज और बँक रखो अर्थात् अमाना अच्छा रहेवा इसलिये अनाज को एकदिल करने की आवश्यकता नहीं ।

१६६ आसी अलन छठ, कातर नरती पद ।

मात्र कुम्भा वण्ठी के बाब काठरे प्राय नष्ट हो बाठे है ।

क आयो बंधा छठ कतररो मरती पद ।

१६७ आ सुन्दर मन्दर बला ती बिन रह्यो न आय ।

माता देती आलका रँ दिन पूज्या आय ॥

हे मष्टिके ! आबो मन्दिर बरँ । तुम्हारे बिना अब रहा नहीं जाठा । माता बुद्धा-बोकटा होने की आधिप दिया करती थी आज वे बिन आ पहुँचे हैं ।

१६८ आतू जितर मेह ।

आरिषन के समाप्त होने के पहले-पहले तक ही वर्षा की आशा रखी है ।

१६९ आतोका नर पड़पा ताबड़ा, बीपी होना जाट ।

आरिषन की कड़ी रूप में जेतों में काम करते हुए आठ भी बीपी हो गये । आरिषन में खेती कटती है तो दिन भर खेत में काम करना बड़वा है ।

१७० आलोखी में पिछवा खाली बर बर पाटा स्याई ।

यदि आरिषन में परिषम की हवा बसे तो मूसलाबार वर्षा हो ।

- २७१ आसोमी रा मेहड़ा बीम बात बिनास ।  
 बीरदिया बीर नहीं बिजया नहीं कपास ।  
 आरिजन में यदि बपी न हू तो वो प्रकार से बिनास हू । साड़ियों में बेर  
 न लगे और कपास में रई न हू ।

३

- २७२ इकलक के दोलक के । ( इक लग 'क' अर दो लग 'के' )  
 अकेला एक रहता है दो होने पर कई हो जाते हैं ।  
 एक की सखा १ ही रहती है किन्तु दो एक साथ मिलने पर ११ हो  
 जाते हैं ।  
 मि० इक मत के, दो मत के ।
- २७३ अजपर पूछे बिजपरा कहा करत हो निस्त ।  
 पद्या र्हा ही बूक में हरी करत है चित ॥  
 बाजीपर अजपर से पूछता है कि हे मित्र ! क्या करते हो ? अजपर उत्तर  
 देता है कि बूक में पड़े रहने हैं भयवान् बिन्ता करते हैं ।  
 मि० अजपर करे न चाकरी पंजी करे न काम  
 रास मनुष्य कहि गने सबके बाधा राम ।
- ७४ इजमत की सहमत ही और दुर्ष है ।  
 इजमत का मजा ही कुछ बुराया हावा है ।
- ७५ इजमत भयम की अर कमाई करम की ।  
 किसी के पास बन न भी हा किन्तु लोभ लोचते र्हे कि बन है तो भय  
 के कारण इजमत बनी रहती है । कमाई माय्य से होती है ।
- ७६ इज्जर की मा नी तिलाई ही र्ही ।  
 इज्जर की मा भी प्यामी ही र्ही ।
- ७७ इमै पड़े ली कुबो, उमै पड़े ली जाई ।  
 इज्जर पड़े ली कमा अजपर पड़े ली लाड ।  
 मि० कई मति साथ छद्म दर केटी (गुनगी)
- ७८ इक तापी लो बेटी बाप के ही है ।  
 अभी ली बेटी बाप के यहाँ ही है अर्थात् अभी कुछ नहीं बिगड़ा है ।
- ७९ इक पछताया के बने अर बिड़िया चुम यई सेत ।  
 अब पछताने से क्या हो जब बिड़ियों ने अंत चुम किया ।

- १८० इमरत तो रत्नी ही चोखी, और मय भी के काम की ।  
अमृत तो रत्नी मान भी अच्छां बिप मन भर भी किस काम का ?
- १८१ इसी जाट इस्मा ही पाया  
इसी राज इस्मा ही बाया ।  
ऐसी जाट के ऐसे ही पामे हाते हैं ऐसी दुष्टाओं के ऐसे ही कुज उतपन  
होते हैं ।
- १८२ इस परबाबा का इत्ता ही गीत ।  
ऐसे बिबाहों के ऐसे ही गीत होते हैं ।
- १८३ इसी ई तेरो जानू बानू इतो ई तेरो काम करानू ।  
गुम्हाय जाना-बाना और काम करवाना दोनों ही निहृष्ट हैं ।
- १८४ इसी ई हरि गुज पामो इतो ई संज बजामो ।  
यहाँ हरि-गुज माना और संज बजाना इकसार हैं ।  
यहाँ बिबक का सर्बपा अभाव है ।
- १८५ इस्ती जान का इत्ता ही हीरा, इली भंज का इत्ता ही बीरा ।  
ऐसी जान का ऐसा ही हीरा और ऐसी बहिन का ऐसा ही माई ।

ई

- १८६ ई की पा तो ई नै ही बायो ।  
इसकी माता ने तो इसे ही पीबा किया है अर्थात् यह बहितीय है ।
- १८७ ईसरी ली परमेसरो ।  
हरिदस नामक सुप्रसिद्ध ग्रन्थ के रचयिता ईश्वरदास जी के सम्बन्ध  
में प्रसंशोक्ति है ।
- १८८ ईसानी बीसानी ।  
ईशानयोग में बहि बिजली कमके तो सेती बज्जी होबी ।

उ

- १८९ उबाई बारने जाइ नहीं उबाइ पाँच में राइ नहीं ।  
जिस मकान का बरवाना कुला रहता है, वहाँ जाका नहीं पड़ता  
और उबाइ पाँच में जाइ नहीं होता ।
- १९० उजम्या समहर ना उई ।

— जब समुद्र अपनी मर्यादा छोड़ देता है तो किसी व राक नहा सकता ।  
या अपनी मर्यादा छोड़ देता है उसे कोई नहीं रोक सकता ।

१९१ उठे का मुरवा उठे बर्ल का अठे का अठे ।

वहाँ के मुर्दे वहाँ जन्मे और यहाँ व यहाँ । एक स्थान की। शम्भु जिनी  
अन्य स्थान में काम नहीं दे सकती ।

१९२ उभी गाँव में वीर उभी में सातरो

आधमची रिस लेत बर्ब नह सातरो

माड़ी जेत नमीक उठे हल जोलवा

पुता है करतार फर नह बीलवा ।

जाए की बटी परमात्मा में प्रार्थना करती है हे करतार ! एक ही गाँव

में मेरा मीहर और समुराक दोना हा पवित्रम दिमा में लग हा ताकि

मुबह पर मे राटी लेकर खेत में जाऊँ तब भूप मेरी पीठ हो बीर हो और

माम हो कर बीटू तब भी भूप मेरी पीठ पर हो भरी मापकी चुवा

न कर । अठ क पाम ही तनीया ही जहाँ पर हक मीक बील । नाम त्रिये

बायें और बीको का पानी विकान के लिए दूर न ल जाना व । यदि तू

मुझे इतना-मा ब दे तो फिर मैं बच नहीं दोगूँगी अपना इतन में मेरे

इच्छाओं की तृप्ति हा आयगी ।

“एता दे करतार खेर नह बीलवा” राजस्थान में लोपा के मूल में कहावत

की मीनि ही मुनी जानी है इसीलिए इस लीकोस्मि-नभह में इस प्रकार

की बचिनय उक्तिवा का भी समावेश कर लिया गया है ।

१९३ उत्तर नेता मेरी बारी ।

एक क बाह हुमर की बागी माली है ।

क उत्तर भीबा मेरी बारी ।

१९४ उतारवी लोई के करंगो लोई ।

जब मान-मर्यादा छोड़ दो ता अब जिनो की क्या परबाह ।

ब० उतारवा लोई लोई करवा लगा-लोई ।

१९५ उत्तर बाहर क मियां तू बाहर ।

जब तू में बर्बदाग पा तभी तू बाहर था । अब मैं जूज में उद्धम

हा गया तो मैं अपने को मियां तथा तुम्हें बाहर मकमता हूँ ।

उद्धम होन में जो आम-मत्रोप है उसके सम्बन्ध में गर्वोक्ति है ।

१९६ उत्तमर्ष पातड़ की लोई की लोटी कोना ।

ऊपर उठते हुए इलके पल्लवों का कोई छापी नहीं बर्नात् सभी भापी पल्लवों का साथ देते हैं ।

गरीब का कोई छापी नहीं सभी समर्थ का साथ देते हैं ।

१९७ उस्टी मत गोपाल की, मई सिखलू माय  
काबल में मेवा बरूया, डीठ बिरख री माय ।  
भगवान् की भी उस्टी रीति है बिछने काबुल में मेवे और बब में कटील  
के वेड़ उत्पन्न किये ।

१९८ उस्टी चोर कोतवाल में उई ।

उस्टा चोर कोतवाल को डीटे ।

१९९ उस्टो बिन बूस कर कोनी कामे ।

बब बुरा बिन जाया है तो बहू किसी को पूछ कर नहीं आया ।

बकस्मात् ही बुदिन जा बरता है ।

२०० उस्टो बापी बीला बई ।

बही बगझोनी होटी हो बही इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

ऊ

२०१ ऊँखली में सिर से बिको बमका लें के उरें ।

बिचको कठिन-से-कठिन काम करना है बिघनों से छसे उरने की बाक-  
स्यकता नहीं ।

मि कहत कबीर सुनो माइ छापो सीस बिना तब रोना क्या रे ?

२०२ ऊँई ही बर बिछायो काछो ।

ऊँच रही बी और बिछोना तैयार मिल क्या बर्नात् मनचाहा हो क्या ।

२०३ ऊँचै पड का ऊँचा कापरा ।

ऊँचे किलों के ऊँचे ही बिखर होते हैं । बड़े आबमियों की बड़ी ही बर्तों  
होती हैं ।

२०४ ऊँचै बड़ कर देखो, बर बर जो ही लेखो ।

बिचारपूर्वक देखने से सब बरों की यावरिक स्थिति अपने जीसी हो बरताब है ।

२०५ ऊँचै बड़ बड़ डोली डाकें नहीं परब में बापे ।

राबी बितो घूं कहीं, बरया रूँगी बापे ॥

जो ऊँचे बड़ बड़ कर बीचार डाकें जाती है अपने स्वामी को कुछ पिनती  
नहीं राबब बैठन कहवा है ऐसी स्त्री बब ऐसा करतै-करते बक जायगी

तो अपने-आप मान जायगी । किसी के समझाने-बुझाने का कोई असर उस पर नहीं होगा ।

२०६ अँको भाग कई तर मोड़े बिच पिछमारन बादला दौड़े ।

सारस बड़ मसमान सजोड़े, तो गरियां डाहाबक ताड़े ।

यदि छीप वेड़ की बोटी पर बड़े मेव परिचम दिखा को दौड़ें सारसों के बोड़े आसमान में उड़ें तो गरी का पानी किमारे को टोड़ कर बहेगा ।

२०७ अँट के मुँ में बीरे से के हुबे ?

अँट के मुँह में बीरे से क्या हो ?

२०८ अँट को पार घरती को न आकास को ।

जब किसी की विप्लव की तरह गति हो रही हो तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

२०९ अँट को रोम रँबारी जाय ।

अँट का रोग अँट का व्यापारी ही जानता है ।

२१० अँट जो ज्वाय तो डोपली उतार लिये ।

एक बरबाड़े का लड़का किसी के पास गया और कहने लगा 'मैं आपके अँट खप लाया करूँगा । मुझे दूसरे की अपेक्षा आप बरबाड़े के कुछ कम पैसे दे दिया करें ।' अँट के मालिक ने पूछा कि अँट जो जाय तो ? बरबाड़े ने बड़े तरल स्वामाधिक डंभ से उत्तर दिया "अँट जो जाय तो मेरी टोपी उतार लेना ।" बरबाड़े की दृष्टि में उसकी टोपी से अधिक कीमती कोई दूसरी चीज नहीं हो सकती थी ।

२११ अँट बड़िया ने कुत्तो जाय ।

अँट बड़े हुए को कुत्त ने काट जाया । जब कोई अनहोनी बात हो जाय तो इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

रत्ता के लिए अत्यन्त सावधान रहने पर भी जब किसी पर विपत्ति आ ही जाय तब इसका प्रयोग किया जा सकता है ।

२१२ अँटों न सुहाव्या से के होय ।

अँटों का काम छोटी-छोटी पराङ्गियों से कैसे बच ?

बिचरी आबपयठारें बहुत हों, उसकी अन्न से पूति नहीं हो सकती ।  
मि० अँट के मुँह में बीरो ।

२१३ अँटरी को जायो बिल ही बीरे ।



- बुढ़िया की सन्तान बिल ही जोबती है ।  
 वातिगत स्वभाव नहीं छूटता "स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते ।"
- २१४ अं बात न बोझा है को बाबड़े का ।  
 उस बात को अब बोझे भी नहीं पहुँच सकते ।  
 जो बीत गया वह बीत गया ।
- २१५ अंक रंगे चाबे जाता जाय ।  
 जो उस्ते रास्ते चलता है वह बोझे में पड़ कर हाथि उलझता है ।  
 मि० अपत्यानं तु गच्छन्तं सोदग्रेऽपि विमुच्यते ।
- २१६ ऊजाड़ बोझा फिर असे निरपत्तियां बन होय ।  
 जोबन गयो न बाबड़े मतना सी से जोय ॥\*  
 (पत्नी की प्रवासी पति के प्रति उक्ति)—ऊजाड़ बाँध फिर बस जाते  
 हैं निर्बनों के पास फिर बन हो जाता है किन्तु हे प्रियतम ! जीवन गया  
 हुआ बापिस नहीं आता उस यों ही मत गँवाइये ।
- २१७ अत कयो की बिहूी आई बाँधे बीने राम बुहाई ।  
 कुपुन का पन भाया है राम की सपन है यदि उठे कोई पड़े ।
- २१८ अत कयो बखसन उठे का स्यायो लखसन ।  
 मूर्ख बक्षिन गया तो वहाँ के लखन ल आया ।  
 मूर्ख अबमुन ही ग्रहन करता है ।
- २१९ अत पाँव में अरंड ही कंध ।  
 छोटे घाम में एरन्ड ही पेड़ समझा जाता ह ।  
 निरस्तपाष्ये बेषे एरन्डोऽपि शुभाप्ते ।\*
- २२० अत पाँव में कम्हार ही मल्लो ।  
 निकुट्ट अबषा छोटे घाम में कुम्हार ही मन्गी होया है ।
- २२१ अतां बं के लीप होय है ।  
 मूर्खों के सींग नहीं होते बँसे से पशु ही है ।
- २२२ अरुलती का किता बापजा ?  
 घर को छोड़ कर भन जाने बालो को बड़ेन नहीं मिला करते ।  
 ह अरुलती है और बापजा ई सही ।
- २२३ अरु तो कहरयो पन बीच के पहरयो ।

\* ह जोबन गयो न बाबड़े बिल्ली (वर्से) बाँध जोय ।

ऊपर तो बिज-बिबिज रंग का माफा पहन रक्ता है पर नीचे की भी कठ  
लबर है ?

४ ऊपर बाया घर में मागा ।

ऊपर म मजबूत बनार कठ नहीं ।

२२५ ऊपर राम बड़पो बल है ।

मगवान् ऊपर म मबके बामों को देखता है ।

२२६ ऊंची मूर्त सूतो बाय बंकी बालक करे न बाय ।  
को बडा-बडा मूब-बिमर्जन करता है सोया हुआ माता है उसका बालिक्य  
कमी नहीं जाना ।

२२७ ऊमत कर पुत माड गमावे इंडा कीड़ी बाहर लावे ।

नीर बिना बिडिया रज गृहार्थ तो मेहु बरते बर माहु न मावे ।

यदि धर्मी मे भी पिपल जाय बीडिया भपने जगड बाहर लावे और बिना  
जल बिडिया रत में नहाय ता इतनी बर्पा हापी जो पूज्यी पर नहीं मयायेगी ।

५

२२८ एक जात्र को के मोर्ब के जोरै ।

त्रिभुके एक जीव हा बहु उन क्या तो जोले मीर क्या बन्य करे ? यदि खोले  
तब भी एकाही यदि बन्य कर तब ता फिर जग्या ही है । जिमी के इनसोता  
पुत्र हो ता बहु क्या यव करे ? यदि बहु बल बसे ता बारा बार भन्वकार  
ठा जाय ।

२२९ एक जावरपो हाब लय क्याय पठे तो करतो राजी ।  
जार्न में यदि एर बार मेहु बरत जाय तो किमान प्रमथ हो बाय ।

२३० एक है बल का तूमडा है ।

तू भी क फल की तरजू बानों कटु स्वभाव क है ।

मि० एक ही जेट का फलका है ।

२३१ एक कटोट की रोडो बल उठे ।

रोटी यदि एर ही बार ग्नी रहे ता जग्ने मयती है ।  
इनी प्रचार मनुष्य भी यदि एर ही म्यात पर पडा रहे ता बहु निरा  
हा जाना है । जीवन में नबीनता की जापरयकता है ।

२३२ एक लोडी को टोरो डूब की मरी जाकरी न बिगाड ब ।

एक लोडी को बू ब बर्नत के मब डूब को बिगाड रती है ।

क० एक काचर तो मज बूच बिपाई ।

एक काचर से सी मज बूच भी फट जाता है ।

दुर्जन धारे समाज को बरनाम कर देता है ।

मि० एक मछली धारे तालाब को गन्दा कर देती है ।

२३३ एक फार्सू एक जोड़ो पम मिलामो जोड़ो ।

एक काना बीर एक पंजु बोलों का जोड़ा भयवान् ने मिसा दिया ।

२३४ एक घर तो डाकन ही बाल है ।

एक घर तो डाकिल भी छोड़ देती है ।

बुरे से बुरे व्यक्ति को भी कहीं न कहीं मिहान् रखना पड़ता है ।

२३५ एक घर में बहुमता र बड़ामुक्त से जाय ।

एक घर में जहाँ विभिन्न मत हों वह घर समूह नष्ट हो जाता है ।

२३६ एक जलो दो बाल ।

एक ही जने की बाल दो होती है ।

जब तक संयुक्त परिवार में रहते हैं तब तक तो सब एक है किन्तु भाई-भाई  
बकन होते ही खो हो जाते हैं ।

२३७ एक जने की हुलाई डोर हारै ।

मेठा जमना घूमवार एक होता है ।

२३८ एक जाड़ जाय, एक जाड़ तरसे ।

वस्तु इतनी मजुर है कि एक जमड़ा जब उसका आस्वादन करता है तो  
दुसरा स्वाद के लिए तरसता है ।

२३९ एक डको मैरी गांठी, भयाव जाळं क मांठी ।

मैरी गांठ में एक टका है उससे भयाव जाळं का मांठी ?

मि० ओछी पूंजी से क्या-क्या खरीबे ? मांठी = मैदा का बना हुआ एक  
प्रकार का व्यंजन पकाना ।

२४० एक दिन पावर्षू दूबै दिन अलखावनो तीबै दिन जाप को मुंयावर्षू ।

बतिबि तो एक दिन का ही होता है दूसरे दिन वह अनाधरणीय हो जाता  
है और तीसरे दिन तो उसको वाली देने की इच्छा होने लगती है ।

मि० एक दिन पड़ना दोसर दिन ठेकना तीसर दिन केकना ।

२४१ एक नजो सी कुच हई ।

एक नहीं कह देने से सी कुच दूर हो जाते हैं ।

२४२ एक बसिये से दाड़ी कौन्दा बालै ।

- क पहिये से गाड़ी नहीं चलती ।  
 [हृत्स्य स्त्री एव के स्त्री-पुरुष दो पहिये हैं जिनके मेस से ही यह रूप सुचारु रूप से चलता है ।  
 एक पय उठावे अर दूसरे की बात कोनी ।  
 मनुष्य का जीवन भ्रममयूर है वह एक कदम उठा कर चलता है किन्तु दूसरे कदम का क्या भरोसा ? ईश्वररेच्छा बसोवसी ।  
 मि० साँस जायो 'र नहीं जायो ।  
 ४ एक पत्नी बिन पाब रती ।  
 पति के बिना स्त्रीपाब रतीके दुस्य हो जाती है उसका कोई मूस्य नहीं रहता ।  
 ४५ एक बीहा की वेवा नहीं, 'र घड़ी की फुरसत नहीं ।  
 फुरसत न होते हुए भी एक वेमे की कामरती नहीं है ।  
 ( निष्कल धम के अर्थ में प्रयुक्त )  
 २४६ एक बीड वाली सोम्या 'र बाबा ! तिसाई !\*  
 एक कदम चली नहीं और कहने लगी " बाबा ! प्याम लयी है !"  
 बड़े काम को प्रारम्भ करते ही विधाम की इच्छा करने लगना ।  
 २४७ एक बीहरी लै बस्यां के अयोम्या वाली हो ब्याली ।  
 एक बंदरिया यदि कठ जाययी तो क्या अयोम्या वाली हो जाययी ?  
 २४८ एक बार योयी, दो बार भोगी तीन बार रोगी ।  
 योयी एक बार गौब जाता है भोगी दो बार और रोगी तीन बार ।  
 (४९ एक भेड़ कुई में पड़े तो लें का पड़े ।  
 एक भेड़ कुए में गिरती है तो सभी साब मिग पड़ती है ।  
 ( सम्बानुकरण के अर्थ में प्रयुक्त )  
 २५० एक म्यान में दो तलवार कोनी बटाई ।  
 एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती ।  
 एक स्थान में दो बराबर की शक्तिवाले पुरुषों का निर्बाह नहीं हो सकता ।  
 २५१ एक रती बिन पाब रती को ।  
 प्रतिष्ठा के बिना कोई किसी काम का नहीं ।  
 २५२ एक रोटी अर दो डूक ।  
 बराबर-बराबर बाँट लेने के अर्थ में प्रयुक्त कहावत है ।

\*क० काम तो वाली ई कोनी 'र काका तिसाई

२५३ एक लकड़ी तुगी बर के हुयो ।

एक भेड़ के बसाव में क्या कमी जा गई ?

२५४ एकलौ लकड़ी ना बरल 'र नाय उजाली होय ।

अनेला लकड़ी न जलती है और न उजाला होता है ।

२५५ एक से दो बला ।

एक से दो अच्छे ।

२५६ एक लो एक बर दो लो दो ।

अनेला अनेला ही होता है और दो दो ही ।

२५७ एक हल हस्या दो हल काब तीन हल खेती चार हल राब ।

किसानों की मागी हलसत बनके हकों से आंकी जाती है । करीब चार-पांच बीघ बमीन की खेती एक हल की खेती कहवाती है । एक हल की खेती में ता हैचन ही होना पड़ता है दो हल की खेती काम बलाऊ मानी जाती है तीन हल की खेती खेती नाम की साबक करती है चार हल की खेती हो तब ती कहना ही क्या वह ती राज्य-मुख भोजने के समान है ।

२५८ एक हाथ में जोडो, एक हाथ में गधो है ।

भलाई-बुराई दोनों मनुष्य के साथ ह ।

२५९ एक हाथ लील में एक हाथ कतुमा में ।

बृहस्प को बुरे और अच्छे बिन एक साथ भी भोजने पड़ जाते हैं ।

२६० एक हाथ से ताली कोनी बार्ने ।

एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

लड़ाई अकेले से नहीं होती ।

दो बुरे मिलने से ही बुराई होती है ।

ये

२६१ ऐं बार्ने में घर घबा ।

इस लकड़ी के लिए बर की कमी नहीं बरखि यह सुन्दरी और नुबवती है ।

योग्य पुरुष के लिए उपयुक्त स्वाम की कमी नहीं ।

योग्य पुरुष का बर्बन ही बाबर होता है ।

२६२ ऐं घर घौड़ी आपबा बा ली बीकानेर ।

घाल घनेरो बालस्या, बापूं घूं ना सेर ॥ ————

हे बोड़ी ! वह अपना घर है वह बीकानेर का जहाँ से मैं तुम्हें लाया और

वहाँ जाना जाने को मिला या बास की तो यहाँ कोई कमी नहीं किन्तु  
- जाना एक घेर भी नहीं हुआ ।

हर की आन्तरिक स्थिति बाहरी दिखाने के सवा अनुकूल नहीं होती ।

२६३ ऐरन की चोरी करी करपो सई को बाग ।

ऊपर चढ़ कर देख्य लाम्यो कर आवे बीमाग ।

निहाई वैसे बड़ी वस्तु की ता चोरी की और सई बीसी छोटी वस्तु का बाग  
दिया । फिर भी छठ पर चढ़ कर देखने लगा कि मुझे लेने के लिए बिमाग  
कब आवेगा ।

बाग का बन्ध मरने वालों पर व्यप्योक्ति ।

२६४ ऐ बिचनारा अंक राई बटे न राबिया ।

बिमाता के सिखे हुए अक राई माव भी महीं बटने पाते ।

२६५ ऐसा को तैसा मिस्था बाभन की नाई ।

बो बीनी आसकई, बो आरसी बिबाई ।

जैसे को तैसा मिला मया जब बाह्यम और नाई की भेंट हुई । बाह्यम ने  
आलीबाब दिया और नाई ने सर्वज सिखला दिया ।

जहाँ लेन-देन की कल न हो वहाँ इन लोकोक्ति का प्रयोग दिया जाता है ।

औ

२६६ ओई पूत पटेला में ओई गोबर भारा में ।

पटेक का काम करने में भी यही पुत्र है गोबर भारने के काम में भी यही है  
अर्थात् छोटे-बड़े सभी प्रकार के कामों में यही एक है ।

क ओई पूत पटेला में ओई छाया चुगवा में ।

१६७ ओी क्याँ को टाबर ? जाम बराबर ।

नाम का तो बच्चा है किन्तु माता बराबर है ।

क० बाई टाबर, जाम बराबर ।

१६८ ओयङ्क बंडो क्याँतु ओटी लाबो गिर्न न टोटो ।

यह सड़का मोटा क्याँ है ? इसलिए कि काम-हाथि की धिम्मा नहीं करना ।

२६९ ओीठा की प्रीत कटारी को मरबो ।

झाँचे मनुष्य की प्रीति और कटारी में मरना दोनों समान हैं ।

मि० न मूर्ख जनमपकीं सुरेन्द्रमधनव्यपि ।

२७० ओीठी गोडी नेतकङ्क बई उलाकाँ बग ।

बो ओठी बो करकहो आपन होय अलग्ग ॥

कड़हरे का फूटा बत्तार भी नहीं जानता और नाम ही बिघापर ।

२८९ कड़े लो शक का, सीखे लो नाक का ।

नाई क कउके का लो अन्वय होला है और उस्तरे स कट जाता है बुरा ही । अपना अनुभव बढ़ाने में दूसरे की हाणि की परवाह न करने पर उक्त कहावत का प्रयोग होता है ।

२९० कठे राया भोज कठे पांगसो सेली ।

कहाँ राया भोज और कहीं बंजा तली !

२९१ कठे राम राम कठे टपां टपां ।

दो वस्तुओं में विषमता दिखाने के लिए इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

२९२ कड़वी बोक की कड़वी तुमड़ी भड़सठ तोरण न्हाई ।

गंवा न्हाई गीमठी न्हाई मिठी नहीं कड़वाई ॥

कोई अपनी बधातुगत विशेषता बचवा अपने स्वभाव को छान्ड़ नहीं सकता ।

२९३ कब कब भीतर रामजी ह्यू अकमक में जाय ।

बिच प्रकार अकमक में जान है उसी प्रकार कब-कब में समयान का निवात है ।

२९४ कब नटनी घांस खई कब भोजन पाई ।

कब लो नटनी बाँध अड़ेवी और कब भोजन पावेवी !

भयभीती को अपना काम करने पर ही मोहन प्राप्त होता है । गरीबी के कारण उसके पास मोह्यपदार्थों का सङ्ग्रह नहीं रहता ।

२९५ कब राया भावै कब हाल बहू ।

कब राया जाने और कब हाल बहू ?

टि प्रतीक्षीत्सुका नायिका की उक्ति हो सकती है ।

२९६ कदे बपी बूब पर, कदे गूप गबा पर ।

जब भिन्न-भिन्न प्रकार के दो मनुष्य आपस में एक दूसरे की सहायता करें तब इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है । समय पर एक को दूसरे की सहायता की आवश्यकता पड़ती है ।

टि० मही गूप के दो अर्थ हैं—एक लो बूए की बूब और दूसरे गूप बह जो महीदि से भरी जाकर गवहे पर लायी जाती है ।

२९७ कदे घी प्लुता कदे मूठी बचा ।

कभी बी से, ठर भोजन मिसठा है लो कभी मूठी भर जनों पर ही संवीम

करना पड़ता है ।

मि० बबपिच्छाकाहारी स्वपिबपि च साम्बोहनबधि ( मरुहरि )

२९८ कदे नाब गाडी पर, कदे गाडी नाब पर ।

कमी नाब गाडी पर, कमी माडो नाब पर ।

नाब जो मूज में बनाई जाती है उसे सड़े पर काट कर दरयाब में ले जाते हैं, और कड़ा जब दरयाब के पार उतारा जाता है तब नाब पर चढ़ाते ।

मि० कदे गबी गूग पर, कदे गूग गमा पर ।

२९९ कनकड़ा सोमू बीन बिगाड़ पा ।

निहृष्ट सामु धोनों बीन स गय ।

मि० न बर का न योग ही सब पाया ।

३०० कम्पा फूले, तुल फूले बुरिचक स्पार्बे खरब ।

कम्पा रागि ( भास्विन ) में फूक उत्पन्न हा तुला रागि ( काठिक ) में फूक लने से बुरिचक ( मार्गशीर्ष में ) फसक काटो ।

१०१ कपड़ा फाट मरोधी भाईं जूती टूटी चाल पभाईं ।

कपड़े फट गये और मरोधी भा गईं । ज्योंही जूत टूटे चाल का मजा जाता रहा ।

१०२ कपूत जायो भलो न जायो ।

कपुत समी तरह बुरा है चाहे वह मीरस हा चाहे पीर जाया हो ।

३०३ कबित सोब भाट न, खती सोब भाट न ।

कबित भाट को सोमा देन हैं खेती भाट को सोमा देती है ।

३०४ कबूतर नै कबो ही बीरब ।

कबूतर को कबा ही बिबलाई पड़ता है ।

बीरब अपनी रक्षाप परगनाता के पाम जाता है ।

३०५ कम जालेया पम कम कम्बरे नहीं रहुया ।

कम या लेना मज्जा है किन्तु जात्ममम्मान सोकर रहुना मज्जा नहीं ।

३०६ कमबोर की लुगाईं सबको भीजाईं ।

कमबोर की पत्नी को तब ही मामी बहने हैं ।

मि० गरोब की जोरु नैबी मामी ।

३०७ कमबोर की हिमायती हार ।

कमबोर का पत लेने वाला हारया है ।

३०८ कमबोर बुस्ता ज्यारा देईं मार धानी का पारा ।



कमजोर को मुस्सा नहीं करना चाहिए, नहीं तो पिटने का मज रहता है। कमजोर में मुस्सा ज्यादा होता है और शक्ति न होने से पिटता है।

३०९ कमाई पैस समझें।

अधिक भाव होने पर ही अधिक धन बर्बाद किया जा सकता है अथवा नहीं। पैसी कमाई बेसी ही समझें। कमाई कम तो समझें भी कम और कमाई ज्यादा तो समझें भी ज्यादा।

३१० कमाऊ भावें डरती निरालाई भावें कड़ती।

कमाऊ डरता हुआ जाता है और निकम्मा कड़ता हुआ।  
कमाऊ को गृह-मतिष्ठा का स्वाद बना रहता है।

३११ कमावें बोली हाका खा ज्यादा टोपी हाका।

हिन्दू कमावें हैं और अज्ञेय खा जाते हैं।  
स्वयं की कमाई स्वयं के काम न आवे।

३१२ कमावें जोड़ी करवें घणूं, पैसो मूरत बनने गिणूं।

जो जोड़ा कमाता है और अधिक खर्च करता है उसे अन्वक रत्नों का मूर्च्छ समझना चाहिए।

३१३ कमेड़ी बाज में कौमी जीतें।

पंडुकी बाज को नहीं जीत सकती।  
निर्वल सबक को नहीं जीत सकता।

३१४ करड़ी बावें पागड़ी घुरड़ निम्बावें नरक।

करड़ी पैरें मोचड़ी अन्तरज्या ही दुख ।।  
जो कस कर पमड़ी बांधता है नाकूमा का घुरड़ करकटवाता है और तंब नूते पहनता है उसको ऐसा करने से जो कष्ट होता है उसके लिए वह उत्तरदायी है बिनाता नहीं।

३१५ करवी जित्ती मरनी।

जो जैसा करता है उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है।

३१६ करनी पार उतरनी।

बपनी करनी से ही मनुष्य पार उतरता है।

३१७ करनी जोवें आपकी के बेटो के बाप।

१क० करड़ी बावें पागड़ी घुरड़ निम्बावें नू।

कठनी और मोचड़ी जित निराला नरक तें ।।

## राजस्थानी कहावतें

३७

क्या पिता और क्या पुत्र सभी अपनी-अपनी करली का फल भोगते हैं।

३१८ करस्ता सो भोगस्ता, जोरस्ता सो पकस्ता।  
अपनी करली का फल भोगना पकता है। जो दूसरों के लिए खड़ा खोरता

है वह स्वयं उसमें गिरता है।

३१९ करम कमेड़ी को सो, मन राजा को सो।  
भाष्य तो पंखुकी बीसा और मन राजा बीसा।

भाष्यहीन उदारवृत्ति वाला होकर भी क्या करे ?

३२० करमहीन खेती करे के कास पड़े के बलब मरे।  
कर्महीन जब खेती करता है तब या तो मकाल पकता है या बेल मर जात है। भाष्यहीन के लिए परिस्थितियाँ प्रतिकूल हो जाया करती हैं।

३२१ करमफूटपा न भाषफूटपा ही मिले।  
कर्महीन को भाष्यहीन ही मिलत है।

३२२ करम में घोड़ी लिखी काल कुछ क क्याय ?  
जब भाग में घोड़ी लिखी है तो उसे खोक कर नीत से जा सकता है ?

मि० यदस्मदीयं महि तत्परेपाम्। (पंचतंत्र)

३२३ करम में लिख्या कंकर तो के करे शिबदांकर ?  
भाग्य में यदि कंकड़ मिले हों तो शिबदांकर क्या करें ?

३२४ कर में महती मालपुजा, बीहरो सेती हुया हुया।  
हे मइयी! मालपुजा बनायो बीहरो का तो जैसे-जैसे अपने पाम बपये होते

जायंगे त्यों-त्यों देते रह्ये। बिना अपने पास कुछ हुए, वह भी कहाँ से क्या लेया ?

३२५ कर रं बटा फाटको घर को रह्यो न घाट को।  
कर रं बेटा फाटको, सबघो पी रूप को बाटको ॥

सट्टा करने में या तो इतनी हानि हाजी है कि करने वाला न बर वा रह्या है न घाट का या इतना काम होता है कि वह मालामाल हो जाता है।

३२६ कर के सो काम मजले सो राम।  
काम करने में और ईश्वर के मजद में आत्मस्य नहीं करना चाहिए।

३२७ बर्क मदा को के भाव ? के खोट बाकिये।

किसी ने बूकानवार से पूछा कर्क मीबा का क्या भाव है ? तब उसने कहा—  
बोट जानिए बर्बात् यदि बोट ज्यादा है तो तुम्हें मूस्य भी बिबस होकर  
बधिक देना होगा ।

३२८ कर्म की सगल बार्ज है ।

सब जबह भाग्य का ही अवग्रयकार हो रहा है ।

३२९ करंपो टहल लो पारंपो महल ।

सेवा करोये तो महल पाबोये ।

३३० करंपो सेवा लो पारंपो मेवा ।

सेवा करोगे ता मेवा पाबोगे ।

३३१ कल लू कल बरै है ।

मशीन से मशीन बबारी जाती है ।

मि० कंटकनेव कंटकम् ।

३३२ कलह कलसै मंडे को पाभी नासै ।

बूह-कलह के कारण 'परौडे' का पानी भी नष्ट हो जाता है क्योंकि बर में  
पूट पड़ने के कारण कुएं से पानी काबे कौन ?

३३३ कसम नरे को मोखो कोबी चुपनू साबो होनू चाये ।

पति की मृत्यु का स्वप्न जाने पर भी स्वप्न की सचाई के आत्म के जाने  
पति की मृत्यु का कोई खेद नहीं ।

बुरी जिद के सामने अपनी बड़ी से बड़ी हानि की भी परवाह न करना ।

३३४ कसाई के बाले न बकरी बोड़े ही का ज्याम ।

कसाई के बाले को बकरी बोड़े ही का सफटी है ?

३३५ कसो हाक मारणा कुबो कुबै है ।

केवल हाक मारने से कुर्जा क्योंकिर कुद सफटा है ?

केवल बिस्माने से काम नहीं होता काम तो करने से ही होता है ।

३३६ काई बौबियो केवे 'र काई पूबो केबै ।

देसता है क्या तो गाखी कहता है और क्या पूगी कहती है, बर्बात् देसता  
है क्या होने वाला है ।

३३७ कांठ कटीली साखडी लामे मीठा बोर ।

कंटीली साड़ी के बोर मीठे लगते हैं क्योंकि वे हाथों के अत-बिसय हुए बिना  
सुकम नहीं होते ।

यदि कोई स्वभाव से बच्चा और हृदय का मीठा हो तो उसकी बनावत भी

मप्रिय नहीं होती ।

मि जबान का मुँह फट व्यवहार का मीठा ।

३३८ कटि से कटो मोसर ।

कटि से कटा निकलता है ।

मि० कण्ठेनेव कंटकम् ।

३३९ काँबा पाया कमबका भी पायो गोलाह ।

बूख वाली टाकरां बज्रतें डोलाह ॥

राठीहों को प्याज खाने को मिसा और मोलों ने भी के माल उखाये । हे टाकर साहब ! इसी का फल है कि आपका यह किला डोल बजते हुए हाथ से निकल रहा है ।

३४० काँवे बाला कीलका है उचीं बिजनी ई बास भावे ।

प्याज बास ठिसके हैं उग्ये बिजना उषेन जाय उतनी ही बुयेंब जाती है । बुराई की बिजनी वह में जायगे उतनी ही अधिक बुराई नजर आवेगी ।

३४१ काँबिया पीड़ा ई बल है ।

जा मय को कंधे पर स जाते हैं ने पाड़े ही बजते हैं ।

बंद बोपी को हो मिसला है निर्बोप का नहीं ।

३४२ काँवे पर छोरो गाँव में दिदोरो ।

बंधे पर कडका है और गाँव में हड़ता है ।

मि काप में छोरो गाँव में हेरो ।

३४३ काकड़ी की चोरी र मूकन की भार ।

अपराध का अनुकप बंद किया जाता है ।

३४४ काका जोयो पायो कहू, काका के सारी तो मैं ई गैरा करदी ।

हे जया ! मुझे गमीजल मिका । उत्तर में उमने कहा जये के साथ तौ इनकी ही बहुतायत रहेयी ।

सग के अनुकप ही फल मिसते हैं ।

३४५ काप कहाड़ो कटिल नर काटै ही काटै ।

मुई सुहागो तापुरण साँठ ही साँठ ॥

काँबा बन्हाड़ा और कटिल मनुष्य प काटन ही बजते हैं । मुई सुहागा और मनुष्य ये जोड़ते ही जाने हैं ।

३४६ काप पड़ायो पीजर पबगो क्याहं बेर

सबजायो रामरयो नहीं रहेपी बंद को टड ।

कौबे को पिजड़े में बन्द रख कर चारों बेह पड़ा बिये ममे किन्तु ससकी बुद्धि में कुछ न बैठा।

मि० स्वमाधो कुटतिक्रम ।

३४७ कापला के काछड़ा होता तो उड़ता के ना बीजता ।

कौबों के बड़कोस होते तो उड़ते हुआ के अबस्य दिखलाई पड़ते ।

गुण मरि मनुष्य में हों तो छाऊ दिखाई देते हैं ।

३४८ कापला के सराप सूँ डंठ कोनी मरै ।

कौबों के बाप से डंठ नहीं मरते ।

दुष्टों की दुर्भावना से समर्थों का कुछ नहीं बिगड़ता ।

३४९ कापलो हंस हुली बीबी हो तो माप हाली भी भूमयो ।

कौवा हंस की चाल सीख रहा था अपनी भी भूक गया ।

३५० कापा किसका बम हुई, कोयल किसधूँ सेय ।

बीमइस्या के कारण जग अपनी कर सेय ॥

कौवा किसका बम हरण करता है और कोयल किसको देती है ? केवल बीम अर्थात् मधुर वाणी के कारण ही कोयल मखार को अपना बना लेती है ।

३५१ कापा कृता कृमावसा तीर्थू एक निवास ।

ज्यां ज्यां शेरपां नीतरै र्यां र्यां करे बिनास ।

कौबे कृते और दुर्जन हीनों इकठार होते हैं ये जिस मार्ग से निकलते हैं, वही बिनास करते हैं ।

३५२ कापा हंस न पना जती ।

कौवा हंस नहीं हो सकता गया बती नहीं हो सकता ।

३५३ काच कटीरो नीच जल मोती दूब' र मम ।

इतना उलझा ना मिले लाली करो जलम । ( कये कोइलास जलम )

काच का कटोरा जम्बूजक मीठी दूब और मन से फटने पर आसों यल करने पर भी नहीं मिलते ।

३५४ काच की भट्ठी नाईं माय बरै ।

काच की भट्ठी अम्बर ही अम्बर बलसी है ।

३५५ काबो दूब आटाई काईं तातो दूब जमाईं ।

कच्चे दूब में आमन बिया बाप ता वह फट जाता है, परम दूब में देने से वही जम जाता है ।

- ३५६ काजल से बाँध भारी कौमी हुई ।  
बाँसा में कज्जल का क्या बोस ?
- ३५७ काबी की मारपोड़ी हलाल हो है ।  
काबी को मारी हुई हलाल होती है ।  
मि० १ समरथ को गहि बाप मुघाई  
२ बैदिकी हिंसा हिंसा न मबति ।
- ३५८ काटर के हँस घणों ।  
दूब न देने वाली घाम अपने बछड़े से अधिक प्रेम दिखलाती है ।
- ३५९ काठ की हांडी दूसरी कौमी बड़ ।  
काठ की हांडी दूसरी बार नहीं बढ़ती ।  
बोला एक ही बार दिया जा सकता है ।
- ३६० काठ दूबे सोडा तिर ।\*  
काठ दूब जाता है और पत्थर ठैरता है ।  
जब न्याय—अन्याय का कोई विचार न किया जाय  
तब इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।
- ३६१ काबली भाभी छाय घाल, घालस्युं बही तू सुप्यार भोल बोस्यो मा ।  
हे कानी भोबाई ! जब छाछ तो देना । भोबाई ने उत्तर दिया "छाछ क्या  
में तुम्हें बही बूगी ! तुम मीने बहुत बोले न ।"  
मि० काने बतिये मुड़ ब बड़े सुहावन बोस ।  
जब कोई किसी से माफना मो करे और अग्रिय बचन भी कहे, तब इस प्रकार  
की लाफोबितियों का प्रयोग किया जाता है ।
- ३६२ काबली भेड़ को रघाको ही ग्यारी ।  
कानी भेड़ का रहन-महन ही मलग है ।  
विशिष्ट पुरुषों में स्वान न मिलने के कारण निरुष्ट व्यक्ति अपना संगठन  
बलम कर लते हैं ।  
मि० बल्लो बिलरिया के बल्लों दरा ।
- ३६३ काबिया पाँचपा राज राम । बैली र तेरी दपाम दपाम ।  
हे जाने पंडित ! तुम्हें ममस्कार करता हूँ । उत्तर मिया—रहने दो यह  
दपाम दपाम ।  
सतने बाप को अग्रिय अमिबाहन मो अप्पड नहीं सगला ।
- ३६४ काबी क क्या न खेरी ताई छोट ।

\* क० मिय दूबे लाड़ा तिर ।

काम करने वाला अच्छा लगता है नहीं काम करने वाला सुन्दर और धिय भी अच्छा नहीं लगता ।

३८३ काम नै काम सिबाबै ।

बम्पाब से ही मनुष्य कर्मकर्म हाता है ।

३८४ काम पड्यो बर सेठबी तमेसै बड़या ।

काम के समय सेठबी छठ पर भड़ गये बर्बाद बलग हो गये ।

३८५ काम सरपी जुग बीसरपी, कुनबी बाराबास ।

स्वार्थ सिद्ध होने पर लोभ सबको भूल जाते हैं पइके सन्निहित होने पर नौ असग-बलग हो जाते हैं ।

३८६ कामी के सास नहीं लोभी के जात नहीं ।

कामी अपने पराये का विचार नहीं करता लोभी जाति नहीं देखता ।

३८७ काल कुसम्मे मा बरे, कामन बकरी ऊँट ।

बौ मावे बा किर बरें, बौ लुना बाबै हूँट ।

अकाल बचना कसमन में बाह्यन बकरी और ऊँट नहीं मरते । बाह्यन माँग कर काम निकाल लेता है बकरी इधर-उधर चर कर पेट भर लेती है ऊँट सूखे हूँट चबा कर ही जीवित रह सकता है ।

३८८ काल जाय पन कसक नहीं जाय ।

समय बीत जाता है किन्तु कर्मक मट्ट नहीं होता ।

३८९ काल बापड़ से नीपसै, बुरो बापन से होय ।

रेगिस्तान में अकाल पड़ता है बाह्यन से बुरा होता है ।

बनर नेता बुरा हो तो बुराई की ओर के जाता है ।

३९० काल मरी लालू बाब जायो आसू ।

सास कस मरी और आसू बाब निकसे ।

हादिक शोक न होने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

३९१ काला कर्न बैठपा काठ लायै ।

दुर्जम का संग करने से कसकित होना पड़ता है ।

३९२ काला रै लू मलमल न्हाय तेरी कालूत करे भहि जाय ।

कासे रंग का व्यक्ति कितना ही मल मल कर क्यों नहीं म्हावे उसका धर्म नहीं बचता ।

३९३ काली घली न कोडपाळी ।

न काली अच्छी न कासे धम्बोबाळी ।

पूर्व रूप में हो या अंश में बुराई तो बुराई ही है ।

३९४ काली हुईनी कर्न बैठपां कालूँस लागे ।

काली हुईनी के पास बैठने से कालिल लगती है अर्थात् कमगति से बरनामी उठानी पड़ती है ।

मि० कामस की कोठरी में कैसीहु सयानो जाय

एक रेख काजक की लागिहै पै लागिहै ।

३९५ काल बाबा को कालो बाय कोई कोनी बेख ।

काके बरन का काका बच्चा कोई नहीं बेखता ।

पापी के पाप की ओर लोगों की दृष्टि नहीं जाती ।

३९६ काल के कालो नहीं जाये तो कोठपालो तो बकर ही जाये ।

कामे साँप के यदि काका साँप नहीं पैदा हो तो भी काल बच्चों बासा अवश्य पैदा होता है ।

दुष्ट पिता के यदि बीसी ही दुष्ट सन्तान कदाचित् उत्पन्न न हो तो उसके कुछ कम दुष्ट ही अवश्य ही होंगे ।

३९७ कालो अंक भैस बराबर ।

उसके लिए काका अक्षर भैस बराबर है अर्थात् बहूँ मुँह है ।

३९८ किनें पुइ डीला किनें बानियूँ डीला ।

कुछ पुइ डीला है कुछ बनिया बीला है अर्थात् लोगों तरह कुछ मुटि है ।

३९९ किये किरे जाके बिगडपोई ब्याध भे गार्द किरे क्यूँ ।

जैसे फिरता है जैसे बिगड़े हुए बिबाह में गार्द फिरता है ।

४०० फिरती एक बबूकरो, भोगन छह यमिया ।

कृतिका नसब में बिजली की एक बमक भी पहिले के अपराधुनों को मिटा देती है ।

४०१ फिरपन के बालर नहीं, ना सूरां के सीस ।

बातारा के पन नहीं ना कापर के रोस ॥

रुपय बाखिय की परबाह नहीं करता गुरबीर सिर को हबेसी पर किये खवा है दाखार बान जैसे समय बन को पानी की तरह बहा रेवा है कापर को कभी श्रेय नहीं जाता ।

४०२ किन्नम करी सी सीला न्हे बाजा संयबाड़ा ।

रुपय की सीला तो पयभीला कहाई, हम भी बीसा ही करें तो रूपय कहमाये ।



- ४०३ किसानक बाबा बाजे किसानक रंग लागे ।  
 केसे बाजे बजठे है, केसे रंग सिलठे है ।  
 भविष्य भविष्यत है ।
- ४०४ बीड़ी नै कम, हाथी नै मख ।  
 ईश्वर बीड़ी को उदर-भूति के लिए जहाँ कम नर देता है वहाँ हाथी को  
 मन भर देता है ।  
 छोटे से छोटे प्राणी से लेकर बड़े से बड़े जीव की आवश्यकताएँ ईश्वर पूरी  
 करता है ।  
 मि० बेल बनसीहता हुआ सुकराब हरिलीहता ।  
 मयूरारिचभिता येन स से भूति बिबास्यति ॥
- ४०५ बीड़ी पर के कटक ?  
 बीड़ी पर कैसी फीज ?
- ४०६ बीड़ी सींच तीतर बाय पापी को बन परल बाय ।  
 जो बीड़ियों के लिए सूखा दलिया डाकता है और स्वयं तीतर को मार  
 कर खाता है, उस पापी का बन नष्ट हो जाता है ।  
 जबका कुपन बीड़ी को तरह सचन करता है उसके बन को बुरा खा जाता  
 है ।
- ४०७ कृष् की मांटी कृष् में लाग गया है ।  
 कृष् की मिट्टी कृष् में लग जाती है जबकि जितनी बाय है, वह कृष्ण के  
 पालन-पोषण में व्यव हो जाती है ।  
 मि० बार्द का फूल बाई के ही लाग गया है ।
- ४०८ कृष् लक्ष्मी तो मन नै राख  
 रजसवोष्पादन नहीं करना चाहिये ।
- ४०९ कृष् सी बाड़ी को बचयो है ।  
 बचाव्ह बहु क्या कर सकता है ?  
 मि० कनसा खट की मूली है ?
- ४१० कृष्ता के पाड़ोस से कृष्ती परो साम्यो ।  
 कृष्ता के बड़ीसी होने से पहरा बीड़े ही लग जायगा ?  
 जनायास एता का सावन भिके तो खसी पर निर्भर रहने से काम नहीं  
 चलता ।
- ४११ कृष्ण जेनी बाबा नै जेने खसी की ।

हे कृती ! तुम्हारे स्वामी का ही सिद्धांत है तन्हाउ नहीं । समर्थ यादमी का अनुसर महंभाव दिखाने तो भी समझदार जानसो उसके स्वामी के पीछे उसको धर्म्य समझते हैं ।

४१२ कृती बर्ष घुसत है कं बकड़ें जातर ।

कृती क्यों मोंकती है ? रोटी के टुकड़ों के लिए ।

मोठे आदमी की जकरत भी उसके अनुरूप ही होती है ।

४१३ कृती की पूछ बाटा बरस बबो रही पन बर निकली बर बड़ी की देड़ी ।

कृती की पूछ बाटू क्यों तक बबो रही किन्तु जब निकली तमी देड़ी अपना कोई अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकता ।

४१४ कुमावस आमो मसो न बायो ।

बुद्ध मनुष्य न घर में जग्गा हुआ और न पाहुने रूप न ही आया हुआ मज्जा होता है ।

४१५ कुम्हार की पकी, घर घर लबी ।

कुम्हार की पकी घर घर करती है ।

मजदूर को निरत मय स्वामी की उछाय रूठी है ।

४१६ कुम्हार कुम्हारी न तो कोली जीने, गर्बई का काम मराई ।

कुम्हार का कुम्हारी पर तो बस चलता महा इसलिये वह पये क काम ऐंटा है ।

मनुष्य का सबसे पर बस नहीं चलता इसलिये वह निर्बल पर शोष इसका करता है ।

४१७ कुम्हार नं कह, गर्ब पर बड़ बर ता को बड़े का बाईं बाप बड़े ।

कुम्हार से बड़ बरे पर बड़ने के लिए कहा जाता है तब ता नहीं बड़ता पीछे अपने भाप बड़ता है ।

जो पहले कहने से काम नहीं करता वह फिर छत्र मार कर अपने भाप करता है ।

४१८ कुल बिना तात्र ता कुं बिना तात्र ता ।

कमीन पुण्य ही लज्जागीम होता है और कुं के बिना मुककामा नहीं होगा ।

४१९ कुंमार रे घर में पूरी होरी ।

जो मारे गीब को बड़े बोर हाँडी बनाकर देता है उसके घर में पूनी हाँडी क्यों ? ईँदर की पा की ठिकारी ही रई । उनी ठाणू को यह उपदेशत कहावत भी है ।

- ४०३ चित्ताक बाबा बर्ब, चित्ताक रंग लाने ।  
 कैसे बाने बजत है, कैसे रंग बिलते ह ।  
 भविष्य अनिश्चित है ।
- ४०४ कौड़ी में कम, हाथी में मन ।  
 ईश्वर भीठी को चर-मूर्ति के लिए वहाँ कम तर देता है वहाँ हाथी को  
 मन भर देता है ।  
 छोटे से छोटे प्राणी से लेकर बड़े से बड़े जीव की आवश्यकताएँ ईश्वर पूरी  
 करता है ।  
 मि० येन सनतोहुता हुंया गुकारव हुण्ठोहुता ।  
 समूहविचिता येन स ते वृत्ति विद्यास्पति ॥
- ४०५ कौड़ी पर के कदक ?  
 भीठी पर कैसी फौज ?
- ४०६ कौड़ी लौक तीतर छाव पानी को धन परलै जाय ।  
 जो भीटियों के लिए सूखा बहिया बालया है और स्वयं तीतर को मार  
 कर खाता है उस पानी का धन तप्ट हो जाता है ।  
 बगवा कृपक भीठी की तरह संभर करता है उसके मन को दूसरा खा जाता  
 है ।
- ४०७ कुएँ की माटी कुएँ में लाव ज्वाय है ।  
 कुएँ की मिट्टी कुएँ में कम जाती है अर्थात् बिलनी जाय है वह कुदुम्ब के  
 पासन-पोषण में व्यय हो जाती है ।  
 मि० बार्ड का पूस बार्ड कै ही लाय ज्वाय ।
- ४०८ कुछ कसबा तो मन में राख  
 रहस्योद्घाटन नहीं करना चाहिए ।
- ४०९ कम ही बाड़ी को बचबी है ।  
 अर्थात् वह क्या कर सकता है ?  
 मि० कृपता पेट को मूलो है ?
- ४१० कृताँ कै पाङ्गोस लै कतो पैरो लाप्यो ।  
 कृताँ के पङ्गीही होने से पहरा बाड़े ही सय जायया ?  
 अभावस रखा का साधन मिले तो उसी पर निर्भर रहने से काम नहीं  
 चलता ।
- ४११ कृताँ तेरी जाय के तेरे पनी को ।

हे कुते ! तुम्हारे स्वामी का ही बिहाना हूँ तुम्हारा नहीं । समय आरमी का अनुचर जहमाज दिखावे तो भी समयवार आरमी उसके स्वामी के पीछे उसको अम्य समझते हैं ।

४१२ कुत्ती बपू घुल्ले है के टुकड़ खातर ।

कुत्तो क्यों भीकती है ? रोटी के टुकड़ों के लिए ।

ओछे आरमी की जकरत भी उसके अमुरूप ही होती है ।

४१३ कुत्त की पूँछ बारा बरत बबी रही पन अब निककी अब टड़ी की टेड़ी ।

कुत्ते की पूँछ बारह बपों तक बबी रही किन्तु अब निकसो तभी टेड़ी अपना कोई अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकता ।

४१४ कुमायत आमो भलो न जायो ।

बुरा मनुष्य न पर में जन्मा हुआ और न पाहुने रूप में ही आमा हुआ अच्छा होता है ।

४१५ कुम्हार की गयी घर घर सबी ।

कुम्हार की गयी घर घर सबी है ।

मजदूर को गित नये स्वामी को तकास रहती है ।

४१६ कुम्हार कुम्हारो नें तो कोनी जीत सबई का काम मरोई ।

कुम्हार का कुम्हारो पर तो बरा बनता नहीं इसलिए वह अपने काम रेंदता है ।

मनुष्य का सबल पर बरा नहीं अच्छा इसलिए वह निबल पर मोह इलका करता है ।

४१७ कुम्हार नें कह गये पर चढ़ अब तो को चढ़े ना पाठे आप चढ़े ।

कुम्हार से जब यजे पर चढ़ने के लिए कहा जाता है तब ता नहीं चढ़ता पीछे अपने आप चढ़ता है ।

जो पहले कहने से काम नहीं करता वह फिर सय मार कर अपने आप करता है ।

४१८ कुल बिना आज मा भू बिना राज मा ।

कमीन पुरप ही लज्जाशील होता है और जू के बिना मुक्ताना नहीं हाता ।

४१९ कुंभार रे घर में कुटी हांडी ।

जो मारे मोद को चढ़े और हांडी बनाकर देता है उतक घर में कुटी हांडी क्यों ? ईदर की मा भी गिबारी ही रई । जमी तरह की यह उपरोक्त कहावत भी है ।

- ४२० कूमा सँ कूबो कौमी मिलै, आवमी सँ आवमी मिल ज्वाव ।  
 कूप सँ कूबा मही भिकल्ला आवमी से आवमी भिकल्ला बाटा है ।  
 आवमी का आवमी से कमी न कमी काम पकटा ही है ।
- ४२१ कून किसी कँ भाई, दानू पाणी स्वार्थ ।  
 कौन किसके भाता है अप्रोबक ही सबको भाता है ।
- ४२२ कूरिये न कूर्बे कालिये न कूर्बे ।  
 कुरों का चलन बन नहीं करना चाहिए और कुरा नहीं खोजना चाहिए ।
- ४२३ कूघो पेड़ कबूर लूँ राम करँ सो होय ।  
 कबूर के पेड़ से कव मया अब जो भगवान् करे सो हो ।  
 अब तो किसी दरमा में छोड़ बी है जो होना होमा ही आपमा । अच्छे  
 काम में जोरम उठा कर भी भगवान के भग्नेसे ममुष्य उसमें प्रवृत्त हो  
 पाता है ।
- ४२४ कूरा करसा काम घेहूँ बीरुँ कालिया ।  
 किसान बटिया मनाथ खाते हैं और महात्म वेहूँ साकर मीठ करते हैं  
 अर्थात् यद्यपि किसान परिश्रम करके गोहूँ पैदा करते हैं किन्तु अपना श्रम  
 बुकाने के लिए वे गोहूँ बोहरों को दे बैठे हैं ।
- ४२५ कूर्बे में पड़ कर सूझो कोई भी नौकरी ना ।  
 कूरें में पड़ कर सूझा कोई भी नहीं भिकल्ला ।  
 कार्य के अनुबन्ध फल मिलता है ।
- ४२६ कूबो सोरे बीरुँ काड त्पार है ।  
 जो कूबा खोरता है उसके लिए कडवा त्पार है ।  
 मि साइ खनै जो और को टाको कूप त्पार ।
- ४२७ के कूली कँ यानई माडो काल है ?  
 क्या कृतिया के भरोसे सकट बचता है ?\*
- ४२८ के पीतड़ा के पीतड़ा ।  
 मनुष्य या तो काव्य-रचना से यशस्वी होता है या भवन-निर्माण से ।
- ४२९ के गुजर को दायजी कँ बकरी कँ भेड़ ।  
 गुजर का खोज क्या ? या तो बकरी या भेड़ ।

\* मि० गुजरती कहावत—

हूँ कर्के हूँ कर्के पूब अज्ञानता सकट नूँ भार जेम स्वाव टाणे ।

- ४३० के चारों भेड़ सुपारी सार ।  
भेड़ सुपारी के स्वाद को क्या जाने ?  
मि० बस्वर क्या जाने अवरण का स्वाद ।
- ४३१ के लो घोड़ो बोड़िया में के' स खोर लियो लेय ( के स खोर लेईया )  
या तो बोड़ा घोड़ियों में है या फिर खोर उमे ल ही मये ।  
क० के लो भंसो भंस्या में के खोर लियो लेय ।
- ४३२ के लो फूड़ चाल कोनी र चाले बद मो गांभ की सीम फोड़ ।  
या तो फूड़ चले ही नहीं और यदि चले तो मो गांभों की सीमा को पार कर जाय ।  
अभ्यवस्थित वित्त वाले व्यक्ति के कार्य में व्ययम्बा नहीं मिलनी ।
- ४३३ के नागी बोरे' र के नागी निबोरे ।  
नया स्त्री क्या तो घोए और क्या निबोरे ?  
क० नागी रांड के बोरे' र के निबोरे ?
- ४३४ के कुँक से पहाड़ उई है ?  
क्या फूक देने से पहाड़ उड़ सकते हैं अर्थात् नहीं ।
- ४३५ के बाड़ पर सोनुं सूई ह ?  
क्या बाड़ पर मोना सूजता है ?  
ऐसी बात ही अधिक सम्पत्ति है ?
- ४३६ के बेटी जेठ से सहारुं जाई ह ?  
जेठ के ऊपर ही निर्भर होकर मैने पुत्री को जन्म नहीं दिया है ।  
स्वावलम्बन के धर्म में ।  
क० जेठ के बरोसे बेटी कोनी जाई ।
- ४३७ के बेरो उँट के करोट बीठे ?  
क्या पता उँट बिच करबट बीठे ?  
अविष्य की अवस्थिपता पर ।
- ४३८ के मार बाबल को घाम के मार बेरो को जाय ।  
या तो बाबल की धूप तकलीफ देती है या मनु का मड़का तकलीफ देता है ।
- ४३९ के मार सीरी को काम के मार काटर को जाय ।  
या तो माम के काम में भरपूर है या बूब न देने वाली गाय दुग्धव होती है ।
- ४४० के मोया मरपा क रोजा बडमा ।

क्या मिसा मर गये या क्या रोजा बट गये अर्थात् कभी कुछ नहीं मिंगड़ा ।

४४१ के रोऊं दे बपी ! तू आंगी ही न तनी ।

हे माता ! तुम्हारे मग्ने पर मैं तुम्हारे लिए क्यों कर विनाप करूँ ? क्योंकि तुमने पहनने के बस्त्र तक बहेस में नहीं बिये ।

४४२ केले की सी कामड़ी होती को सी शक्त ।

किसी नायिका के सौंदर्य के सम्बन्ध में कहा गया है कि वह केले की पण्डिका और होती की ग्वाला के समान है ।

४४३ बेस बेस पापी माकास

नहीं बितेरो बेस आस ॥

बेस बेस पानी तथा आकास न बनाता जाता हो तो बितेरा बिज बनाने की आशा ही बेसता रह जाय; जैसे यदि कुछ आवा-जाता नहीं हो तो बिज में बदिगेशन बिखलाना हो तो बहर बन जाय पण्डिका पानी बिखलाना हो और पत्थर बन जाय आकास बिखलाना हो और बन जाय नीला पर्दा-सा ।

४४४ के लख सुहामन के करहु रई ।

या तो सर्वसोभाग्य के सुखों को भागुंभी या निपट बिजवा बन बैठुंगी ।

४४५ के सहरा के उहरा ।

भ्रमूष्य या तो सहरा का माध्यम लेकर ही पल मकटा है या उपवास बट पर निर्भर रह कर ही जीवन बसर कर सकता है ।

४४६ के सोबे बंभी को साप के सोबे की कं माई पन बाप ।

या तो बम्बी का साप विविध होकर छोटा है या जिसके माता-पिता न हों ऐसा बड़का छोटा है बिज पर किसी का बंधन नहीं ।

४४७ के थारी बेके बर में साप के थारी बेटी को बाब ।

या तो बिगता के कारण वह जवता है जिसके बर में साप है या वह जवता है जो बेटी का बाप है । कम्मा के पिता को ही बिगताएँ बेरे रहती हैं ।

४४८ की डूबे रोला 'र के डूबे बोला ।

या तो मूखों के वेषा हाने पर बर की सम्पत्ति का मास होता है या अधिक सम्पत्ति होने से क्योंकि कई भागों में विभाजित होने पर बड़े भायी राज्य की सम्पत्ति भी छिन्न-भिन्न हो जाती है ।

४४९ के तो बंभी वर कोनी 'र वर तो बोलै कोनी ।

पक्षी या तो पहनती नहीं और यदि पहनती है तो खोलैगी नहीं ।

४५० के तो वीक बस्त्र बाल कोनी 'र बाल तो सात पांवा की सीब जोई ।

आससी बैस या तो बसता ही नहीं अगर बसता है तो सात याँचां तक को पार कर जाता है ।

४५१ नै तो बाबलो गाँव जा कीम्याँर जा तो बाबई कोप्या ।

पगला या तो गाँव जाता नहीं और यदि जाता है तो सौन्टा नहीं ।

४५२ कै मोइपो बाँये पागड़ी कै र्है उघाड़ी टाट ।

बाबाजी या तो पगड़ी ही बाँये या नंगे गिर ही रहें ।

४५३ कैर की हूँड टूट ग्यापो मुर्त्तपो नहीं ।

करीम की लकड़ी टूट भस्मे ही जाम पर शुक मही मकती ।

हानि भस्मे ही हो जाम दुपपही अपना हठ मही छोड़ता ।

४५४ कै लई लड़ाकड़ो कै लई अनजाब ।

या तो लड़ाकू लड़ाई करता है या अनजान ।

क० के लई लड़ापती के लई अनजोत ।

४५५ कै हंसा मोती चुगी कै संघन कर क्याय ।

या तो हंस मोती चुगते हैं या संघन ही कर खाते हैं ।

४५६ कोई को हाथ चाले तो कोई की बीम चाले ।

किसी का हाथ बसता है तो किसी की बीम बसती है ।

कोई गाली देता है तो कोई पीट भी देता है ।

४५७ कोई कै बेवण बायला कोई कै बेवण पण्ड

कोई कै बारी करे, कोई कै जाम जख ।

किसी के लिए बेवण बायु-बिकार उत्पन्न करने वाले होते हैं या किसी के लिए हितकर भी होते हैं ।

४५८ कोई गाँव होली का, कोई गाँव दिवाली का ।

कोई तो एक बात कह रहा है और दूसरा उमका उत्तर न देकर अपना बल्लग ही गम अलग रहा है ।

४५९ कोई भी मा का पेट से लीज कर कोनी भाँये ।

कोई भी अपनी माता के पेट में मीज कर नहीं खाता ।

४६० कोई माने न माने, मे तो लाई की मुबा । ( कोई माने ना ताने ना मे लाडो की मुबा )

कोई माने या न माने मैं तो दुबहे की मुमा हूँ ।

मि० १ मानिये न तानिये मे लाडा की मुबा ।

२ माने न माने मैं भी लीगा की गाला ।



- कमा मियाँ मर गये या कवा रोजा बट मये अर्वात् अर्वा कुछ नहीं बियावा !  
 ४४१ के रोऊँ ये जमी ! तू मीची बी न लकी ।  
 हे माछा ! तुम्हारे मग्ने पर मैं तुम्हारे किए क्यों कर बिछाप करूँ ? क्योंकि  
 तुमने पहनने के बस्त्र तक धोख में नहीं दिये ।
- ४४२ केके की ली कामड़ी, होली को लो लल ।  
 किसी मामिला के सौपर्य के संलग्न में कहा गया है कि वह केके की  
 पष्टिका और होली की जवाला के समान है ।
- ४४३ केस बेस पाणी आकास  
 नहीं बितैरो बेस जास ॥  
 केस बेस पाणी तथा आकास न बनाना जाता हो तो बितैरा बिज बनाने की  
 जाया ही बेसता रह जाय जैसे यदि कुछ भाटा-बाटा नहीं हो तो बिज में  
 यदि रेसम बिजसाना हो तो अइर बन जाय गतिधील पाणी बिजसाना हो  
 और फत्तर बन जाय आकास बिजजाना हो और बन जाय मीछा परी-सा ।
- ४४४ के सर्व सुहापन के कटहुँ रंइ ।  
 या तो सर्वसामान्य के सुखों को ओपूगी या गिपन बिजवा बन बैठूँगी ।
- ४४५ के सहरी के बहरी ।  
 मनुष्य या तो सहूर का माधम केकर ही पक सकता है या उपबाऊ लव  
 पर निर्भर रह कर ही जीवन बसर कर सकता है ।
- ४४६ के छोवे बंभी को साप, के लोवे जी के पाई पन बाप ।  
 या तो बम्बी का साप निरिबत होकर सुोवा है वा जिसके माऊ-पिता न  
 हों ऐसा लड़का सोवा है जिस पर किसी का अंकुश नहीं ।
- ४४७ के बार्ब बर्ब बर में साप लै बार्ग बेटी को बाप ।  
 या तो बिल्ला के कारण वह जमता है जिसके बर में साप है या वह जपता  
 है जो बेटी का बाप है । कन्या के पिता को ही बिल्लायें बेरे रखती है ।
- ४४८ के डूबे रोला रै लै डूबे बोला ।  
 या तो मूखों के पैदा होने पर बर की सम्पत्ति का नाश होता है या अधिक  
 सन्तान होने से क्योंकि कई मार्गों में बिमाजिय होने पर बड़े भाई राज्य  
 की सम्पत्ति भी छिन्न-भिन्न हो जाती है ।
- ४४९ के लो रैली रैर कोली रै रैर लो कोले कोली ।  
 पगली वा तो पहनती नहीं और यदि पहनती है तो कोलेकी नहीं ।
- ४५० के लो रैल बल्ल बार्ब कोली र बार्ब लो लल पांचा की लीच फोई ।

- मासगी बैस या तो बल्ला ही नहीं बगर बसता है तो मात गाँवों तक को पार कर जाता है ।
- ४५१ कैं तो बाबला गाँव का कोम्पार का तो बाबई को गया ।  
पगला या तो पाँव जाता नहीं और यदि जाता है तो सौंठा नहीं ।
- ४५२ कैं मोड़पो बाँधे पागड़ी कैं रूँ उपाड़ी टाट ।  
बाबाबी या तो पपड़ी ही बाँधे या नंगे फिर ही रूँ ।
- ४५३ कैंर को दूँट दूँट ब्यागो, कुर्लपो नहीं ।  
करील की सफ़ड़ी दूँट मन्ने ही बाप पर मुँड नहीं मबती ।  
हानि मन्ने ही हो बाप दुराप्रही बपना हड नहीं छोड़ता ।
- ४५४ कैं लई लड़ाकड़ो कैं लई बघबाघ ।  
या तो लड़ाकू लड़ाई करता ह या अनजान ।  
ब० के लई लड़ापनो, के लई बघमोल ।
- ४५५ कैं हुँसा बोनी बनी कैं लयन कर ज्याय ।  
या तो हुंग मोती चुगते हैं या लंबन ही कर जाते हैं ।
- ४५६ कोई को हाथ बाले तो कोई की जीम बाले ।  
किनी का हाथ बल्ला है तो किनी की जीम बल्ला है ।  
कोई वाली देता है तो बार्द पीट भी देता है ।
- ४५७ कोई कैं बंगम बापला कोई कैं बंगम पण  
कोई कैं बाबो कैं कोई कैं बाप बणब ।  
किनी के लिए बंगम बापु-बिकार उत्पन्न करने वाले हुने हे तो किनी के लिए हितकर भी होते हैं ।
- ४५८ कोई पाई हीली का कोई पाई रिबाली का ।  
कोई तो एक बाज बह रहा है और दूसरा जमका उत्तर न देकर बरना मन्ना ही राम बल्ला रहा है ।
- ४५९ कोई भी मा का पैट लें सीप कर कोनी बाबे ।  
बार्द भी अपनी माता के पैट में सीप कर नहीं माता ।
- ४६० कोई पाने न ताने, मै तो लार्डे की मुबा । ( कोई पाने न ताने न मै नन्ने की मुबा )  
कोई माने या न माने मै तो हुन्ने की मुबा है ।  
मि १ मानिये न तानिये मै नाना कैं प्रडा ।  
२ माने न मान मै भी नौ न के बन्ना ।

इस कहावत का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ कोई व्यक्ति किसी दूसरे के घर में बिना अक्षरत ही मासिक की तरह समाहू देने लगे और अक्षरबस्ती अपनी बात बचाने का प्रयत्न करे।

४६१ कोई स्मान मस्त कोई ध्यान मस्त,  
कोई हाल मस्त कोई माल मस्त।  
कोई अपनी शूरत-शक्कल म मस्त है कोई ध्यान में मस्त है कोई अपने हाल में मस्त है तो कोई अपने माल में मस्त है।

४६२ कोड़ी कोड़ी बन चुड़े।  
कोड़ी-कोड़ी बन चुड़ता है।  
मि० १ बूँद बूँद बढ़ो मरे। २ कल कल ही मल चुड़े।  
१ बूँद बूँद सू बट भरें बूँदहि बूँद रिताम।

४६३ कोड़ी कोड़ी करता बी लंक लार्प है।  
कोड़ी-कोड़ी करके भी वनकी बड़ी रासि खर्च हो जाती है।

४६४ कोड़ी चालें डोकरी लंका काई लोज काई चारो खोपयो पुँछे राजा भोज।  
म्हारें से चारें गईं लंका काई लोज पारें लैं बी बाख्यो मत परबाई भोज ॥  
हे बुद्धी स्त्री ! तुम सुक-सुक कर चल रही हो किमके लोज निकालती हो ? तुम्हारा क्या लो क्या है ? बुद्धिवा राजा भोज के इस प्रश्न का उत्तर देती है 'मेरी मुवाबस्ता जाती रही वह बाज तुम्हारे पास ही मे उछी को बूँद रही हैं किन्तु माव रकना वह तुम्हारे पास भी छपा के लिए न रहेगी। इसलिये हे राजा भोज ! गर्ब न कर।

मि० अजः वचसि कि बाले तत्र कि पतितं मुवि  
रे रे भूव न जानाति भर्तं तावप्यमीक्षितकम् ।\*

४६५ कोयल की बलाही में काला हाप।  
कोयलों की बलाही में काले हाप होते हैं।  
तुच्छ कार्य में व्यर्थ के किये पये परिश्रम का अच्छा फल नहीं मिलता।

४६६ कोल वाली कोन्धा 'र तिलताई।  
अनी कोल मर भी नहीं जाती और प्यास छन जाई।

\* मि० गुजराती कहावत—

वीपक पान किरता हंसती कूपक्षिया  
यो बीती तुज बीतयो बीरे वासुक्षिया।

- ० कीज सुनै किज नै कहूँ तजै तो समझ नहिं ।  
 कहबो सुनबो समझबो मन ही को मन माहिं ।  
 कीज सुने किमम कहूँ जो सुनता है वह समझता नहीं । इसलिए कहना  
 सुनना समझना मन-ही-मन रह जाता है ।
- ८ बयूँ जाँबो म्युँतै बयूँ जो बुलाव ।  
 क्या तो अन्धे का निमन्त्रण किया जाय जिसमें उमरु माव एक भीर भावै ?  
 ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिसमें व्यथ का झण्ड बड़े ।
- ९ बयूँ जो जोडो बयूँ सुहार जोडो ।  
 बयूँ जो जोडना बयूँ कुंहाड़ो मूडो ।  
 कुछ तो सोहा बुय कुछ लहार बुय कुछ लकड़ी बिदनी भीर बछ कृत्वाडा  
 बुडिह है ।
- ० कितिका करे छिरकरो रोहिबो काल सुकाल  
 नै भत जाबो मृगशरो हड़ हड़ करतो काल ।  
 भावज कुप्या एकादमी के दिन भयङ्ग बुलिका गझज हा ता गाधारम अकाल  
 पड़ना है भगर रोहिबी गलज हो ता बच्छा जमाना होता है । हे मृगशिय  
 मलज ! तुम एकादमी के दिन कनी न भाना नहीं ता महान् बुभिस पड़ेगा ।



- ०१ अटमल कुतो दायमोँ अय्यो माँठर बूँ ।  
 अकल गई करतार की इता बचाया बयूँ ।  
 लज्जम कता दायमा जया मण्डर भीर बूँ इतको भगवान न क्या  
 बचाया ? क्या उमकी अरल चली गई बी !
- ०२ अर घुघु मुरख नरो लदा सुजी त्रिविराज ।  
 गवा उस्तु और मूख मनुष्य महा मुली रहन है क्वाकि उलको किनी प्रकार  
 की बिम्ता नहीं मगती ।
- ०३ अर बार्ड बिस दाहबूँ ।  
 नया बार्ड भीर मर्पादि दाहिने गुम मममे जाते है ।
- ०४ अरी मजूरो बोका पान ।  
 अण्डा नाम करन बार्डे पूरी मजूरी लेंने ।
- ०५ अल जाई न भल जाई सासरे यई न बू कुहाई ।  
 दिमी मे बछ भिन्न पर ही उमकी हबिस भात्री है समुय्य जाने पर ही  
 लकड़ी बबू बटमाती है ।

- ७९ बल गुड़ एक मात्र ।\*  
 यहाँ बली और गुड़ एक मात्र है ।  
 म्याम-अम्याम का कोई विचार नहीं है ।
- ७७ घाँड़ मली का सं सिररी रोग मली का कोई नहीं ।  
 अच्छे बरत के सब साथी हैं बुरे बरत का कोई साथी नहीं ।
- ७८ बाँ साब ककड़ी तोड़ो तो कैं बे काकर का काम  
 बाँ साब बीबड़ी खाओ तो कैं बिसमिस्ता ।  
 बाँ साहब से जब ककड़ी तोड़ने के लिए कहा गया तो कहने लगे—यह काफिर का काम है । उन्हीं बाँ साहब से जब बिबड़ी खाने के लिए कहा गया तो बिसमिस्ता कह कर तुरन्त जाने के लिए तैयार हो गये ।
- ७९ पाईये र्घुहार, चात्पि-व्यीहार ।  
 न्यीहार को बिलेप मोडन करना चाहिए, और सबसे अच्छा व्ययहार रखना चाहिए ।
- ८० पात्र पर आबली सीरी जय ।  
 पात्र पर अबलि सीपी जाती है ।  
 अपने छिद्र की ओर पक्ष दृष्टि जाती है ।
- ८१ चापू बीपू सेलनु, सोनु खूरी ताब  
 आली बीबी खंपड़ा नामर्बी के पाब ।  
 हे मन्त ! जाना बीबा सेलना और निरिबस्त होकर और मित्रा में प्रयत्न करना तुम्हारा यही काम रह गया है नामर्बी के कारण तुमने सब बीपट कर दिया !
- ८२ चापू मा का हाप को होबो मलाई धीर ई  
 चासमू गीर्ष को होबो मलाई घेर ई  
 बीठनु भापा को होबो मलाई धीर ई  
 छाया मोके की होबो मलाई धीर ई  
 बीसनु प्रेम को होबो मलाई धीर ई ॥  
 मर्बातू बने ही जहर हों मा के हाब से बीपता अच्छा रात्रमार्ग से चलना अच्छा मले ही इसमें धक्कर पड़ता हो परस्पर धीर भी हो तब भी माइया में बैठना अच्छा । मोके की छाया अच्छी चापू करीस की ही नयो न हो, प्रेमपूर्वक बीपता अच्छा मले ही बिमाने वाला जहर ही परोस है ।
- \*मि० अबेर नपरी बीपट राजा टर्के छेर भाजी टर्के छेर बाजा ।

- मि (१) रहिमन मोहि न सुहाय समी पिपावत मान बिनु ।  
जो बिप देइ बुलाय मान सहित मरिबो भको ॥
- (२) जाब मही बाहर नही नहि मनन में नेह ।  
सुझमी तहाँ न जाइये कंचन बरसै मेह ॥

४८३ साजी मन भाती वीरबो जग भाती ।

अपने मन को जो माने वह साजा चाहिए किन्तु बस्त्र से पहनन चाहिए जो दुनिया को अच्छे लगते हों ।

क० जाय सुहातो साजुं र गाब सुहातो वीरजुं ।

४८४ सात अर पाजी, के करे बिभाजी ।

खाद और पानी देना चाहिए, सेटी अच्छी होगी इसमें समयान क्या करेया ? इसमें अनुपाई से क्या होया ?

४८५ साबो बीर को' र बाबो तीर को ।

साना ठो बीर का अच्छा और बसाना तीर का अच्छा ।

४८६ साबो सीरा को'र मिलबो बीरा को ।

साना ठो हृण का अच्छा और मिलना मारि का अच्छा ।

४८७ साय बपी को, गीत नाबे बीरे का ।

हिन्दू स्त्री के लिए कहा गया है पति को कमाई खाती है और मारि का मध बखानती है । ”

४८८ जाय कर सी ज्यानुं मार कर भाग ज्यानुं ( जा कर सो ज्यानुं 'र मार कर भाय ज्यानुं )

साकर सो जाना चाहिए और मार कर भग जाना चाहिए ।

४८९ साये बंकी पाये ।

जो मोहन से उठी के पीत माना चाहिए ।

४९० कारो बेल ही कारो तूमड़ी ।

कड़वी बेल की कड़वी ही तूमड़ी होती है ।

बंदातुगत स्वभाव नही छुटवा ।

मि० कड़वी बेल की कड़वी तूमड़ी ।

४९१ साल पराई लीकड़ी ज्यानुं भुल में जाय ।

दूतरे की साल में वह इन तरह तूम की भेज बना रहा है माना वह भुल में जा रही हो ।

दूतरे की पीड़ा का तनिक भी ध्यान न करना ।

- ४९२ साली लम्बोई लीक्यो हे वही कोणी लीक्यो ।  
 केवळ सेना ही सीला हे सेना नहीं सीला ।  
 नि० वई क वर स विलो भे बी हस्तिनापुर वाले । वर्षात् 'व' अजर मुंह  
 स न निकस जाय इसलिये विलो का नाम भी नहीं सेता ।
- ४९३ सायब का सांघा पायबा का बासा ।  
 वर में तो भोजन ही दुर्मम है तिस पर भी घर अतिथियों का बह्वा बना  
 रहा है ।
- ४९४ घाई पुनु बीधे हुनु ।  
 जो पूरा पेट न भर वर चतुर्घास खाकी रहता है उसकी जामु बुनुनी हो  
 जाती है ।
- ४९५ बिनूर जाय तो शाह पर चई ।  
 जिसे बिनूर जाना हो वही उस उंचे पेड़ पर चड़े ।  
 जिसे काम की आकांशा हो वही सतरा माळ सेता है ।
- ४९६ सिकाया की नांव कोली होय, ब्याया की नांव हो ब्याय ।  
 पराये कड़के को यदि सिकाया जाय तो कोई यग नहीं मिलता किन्तु स्वाने  
 में बरनामी है ।  
 नि० रमाक्षु कोइ न जाने रोबराम्युं ती जाने । (गुजरती)
- ४९७ बीचिये न बबान छोड़िये न बबान ।  
 कमान बीची कि तीर छूटा और जब तीर छूट गया तो अपने हाथ से गया ।  
 उसी तरह बबान छूटी कि पराई हुई । इसलिये जो कुछ करना हो सोच  
 समझ कर करना चाहिए तथा जो कुछ कहना हो सोच-समझ कर ही कहना  
 चाहिए ।  
 नि० १ बबान छूटी र पराई हुई । २ तीर छूट जो बबान छूटी  
 र छूटी ।  
 नि० ३ सुधिम्य बान्धु सुधियार्य मत्तम् । सुधीर्यकालेऽपि न नाति विक्रियाम् ॥
- ४९८ और बीचड़ी बन्धी बांध ।  
 और और सिचड़ी मन्ध बांध में ही बन्धी तरह सीसठी है ।
- ४९९ कुते किकाड़ा पोल पसी ।  
 जहाँ तियरानी अबबा किसी प्रकार की देख-रेख नहीं है, वही पोक  
 बिचलाई पड़ती है ।
- ५०० कुदयो बाप्यो जुना जठ बीधे ।

दिवाकिया बनिया पुराने बही जातों का बेसता है ।

५०१ खेत में खोबे पैली मोडा में खोबे खेती ।

खेत के बीच होकर अगर रास्ता जाता हो तो वह खेत के लिए हानिकर है इसी प्रकार खानु की शिप्या उसके लिए हानिकर है ।

५०२ खेत बड़ा घर साँफड़ा ।

खेत बड़े ही अच्छे होते हैं और घर तंग ही अच्छे होते हैं ।

बड़े-बड़े मकानों की रक्षा के लिए अनेक भक्तों का सामना करना पड़ता है बड़े घर भी बहुत आबाद हों तो वे तंग हो जाते हैं और जनशुद्धि के कारण माँगलिक समझे जाते हैं ।

मि० साजन तो साँफड़ा ही भला ।

उक्त कहावत के दो अर्थ हो सकते हैं—एक तो यह कि सज्जन ही नरबीक रहे वही अच्छा दूसरा यह कि 'सकट भीड़' अर्थात् कष्ट उठाकर भी सज्जन के साथ रहने का मौका मिले तो उसका भी काम उठाना चाहिए ।

५०३ खेत ठुबै तो गाँव से आबूजो ही ठुबै ।

खेत हाँ या गाँव से परिचय में जाना चाहिए जिससे प्रातःकाल खेत में जाते समय तथा शामकाल लौटते समय सूर्य पीठ पीछे रहे ।

५०४ खेती करे बिनाज में प्यारै, बी माँ भाड़ी एक न भावै ।

जो खेती करता है और ब्यापार में मन लगाता है उसके लिए न खेती लाभदायक होती है न ब्यापार ।

५०५ खेती पचियाँ सेती ।

खेती मालिक को निपरानी से ही फलदायिनी होती है ।

५०६ खेती बाबल में हूँ ।

खेती बर्षा पर निर्भर रहती है ।

५०७ खेती सदा सुख देती ।

खेती हमेशा सुखदायक होती है ।

५०८ खेत कोठा में बाणी कुबै में तई भावै ।

खेत कोठा में पानी खुर् से ही आता है ।

५०९ खेत सिन्हाइयाँ को घोड़ा मतबाराँ का ।

खेत निन्हाइयो का और घोड़ा मतबाराँ का होता है ।

५१० खैरात बटै बठै मंगला भावै ही पूँच प्यारै ।

जहाँ खैरात बँटती है वहाँ मिथुक अपने आप ही पहुँच जाते हैं ।



- ५११ लोई नव बटोड़ा\* में नवद को बांध ।  
नव लोई "बटोड़े" में और मान लिया गया कि नवद को ही छोड़ी ।  
नि० नव खोसगी कूब पर नवद ने ई हो छड़ी ।
- ५१२ लोकी मांटी लो में लगी ।  
लोह की मिट्टी लोह में ही लगती है ।  
बितनी माय होती है वह कटुम्ब के पालन-पोषण में ध्य हो जाती है ।  
नि कृप की मांटी कृप में साग प्यास है ।
- ५१३ लोटा काम डेठ लू खीन्वा बर खाली नै मांप्वा बीन्वा ।  
प्रारम्भ स ही बुरे काम किये मांगने पर खाली को बर दे दिया ।  
खाली के साथ-साथ बर में रहने से 'कटाकट' होती ही रहती है, फिर  
उसके पास आने-आने वालों का ठाँवा बना रहता है ।
- ५१४ लोटी पीसो लोटी बेंटी लोटीबर को माल ।  
लोटा पैसा और लोटा बेटा भी समय पर काम आता है ।  
क० (क) लोटी पीसो' र कपूत बेंटी बखत पड़े जावो जाई ।  
(ख) लोटी पीसो लोटी बेंटी अड़ी-मिड़ी में काम जाई ।
- ५१५ लोडली खाट खाड़ला पाया लोडली राँड लोडलाई आया ।  
बुरी खाट के बुरे ही पाने होते हैं, कुप्टा राने के कुप्ट ही उत्पन्न होते हैं ।
- ५१६ लोपड़ी लोपड़ी को मत ल्यारी ।  
प्रत्येक के विषय में अल्प-अल्प बुद्धि मिलती है ।  
नि मुच्छे मुच्छे मतिभिन्ना ।
- ५१७ लोपो अँड बड़ा में बूँड ।  
साय हुए अँड को बड़े में बूँड रहा है । तात्पर्य यह है कि यदि किसी मनुष्य  
की कोई चीज लो जाय उसका मुकसाल हो जाय अथवा यदि वह बुरी तरह  
ठसा जाय तो वह इतना बिकल हो जाता है कि उसे सत्रह-असत्रह का ज्ञान  
मही रहता ।
- ५१८ लोली रं तो पूर जाय ही चल गयाय ।  
यदि गिराक रहे तो उसमें बिपड़े मरे जा सकते हैं ।  
बीमार आदमी अथवा बीधित रह जाय तो मौस मन्वादि स फिर भी पुष्ट  
हो सकता है ।

श

- ५१९ गंगा घरी गंगाबास जमना घरी जमनाबास ।  
 यह कहावत उस सिद्धांतहीन व्यक्ति व लिंग प्रयुक्त हाती है जो वीसा मीका देखता है बसी ही बात कह देता है । यंया गये तो यया का धेष्ठ बठा कर गवायाम बन गये और यमुना गये तो यमुना को धेष्ठ बठा कर यमुना बास बन गये ।
- ५२० गंगा तुलिये में कोनी नाबड़ें ।  
 यंया भिट्टी के छोटे-स बर्तन में नहीं समा सकती ।
- ५२१ गंगाजी को ग्हाबभू बिपरां को ज्योहार,  
 बूब जाय तो पार है पार जाय तो पार ।  
 गंगाजी में स्नान करता हुआ यदि कोई बूब भी जाय ता भी गंगा जैसी पबित्र नदी में प्राय स्वामने से उमकी मुक्ति हो जाती है । और यदि गंगा पार हा जाय तब ता ठीक ही है । इसी प्रकार ब्राह्मण-व्यवहार के सम्बन्ध में सम शिवे । ब्राह्मण को यदि कुछ दिया जाय और वह बापिस न दे सक ता भी पुण्य ही है और यदि वह मीटा व तो ठीक है ही ।
- ५२२ यंजी नाई की के घराब ?  
 गजा नाई की यया परबाहू करे ?
- ५२३ यंजी र जाकरां में कोटें ।  
 यंजा और फिर भी बंकड़ा में लटन के लिए लाकापित है ।  
 मि० यंजी र जाकरां में कुलीब जाय ।
- ५२४ यंडरु कं भरौसें गाओ कोली बालें ।  
 कुत्ते के भरौसे घबट नहीं चलता ।  
 क० कालपी कुत्तो कं पाय ही पाओ बाल है के ?
- ५२५ यंडरुओ तो कुहकुह मरणो घनी कं भाई ही कोनी ।  
 जाता भीक कर मर यया स्वामी को कुछ परबाहू ही नहीं ।  
 मि० कुमड़ो तो पाय पाय भरपो घनी कं भाई हैं कोनी ।
- ५२६ यंडरु नारेंल को के करे ?  
 कुत्ता शरियस का क्या करे ?
- ५२७ यंडरु न बैल बर यंडरु रोब ।  
 रात का एक कत्ते को रोता देखकर सब धन लपट है ।

ब० मया गंगाजी ग्हायाँ कित्ता बोड़ी बोड़ी ई हो ग्याने ?

५४४ मबेड़ा ई मुलक नीत के तो घोड़ा के कुच पूछे ?

यबे ही यदि मुस्क फतेह कर बें तो बोड़ों को कौन पूछे ?

५४५ मबेड़ी चापल ग्याबे तो बा बोड़ी ही चाप ।

मयी चापल काठी ई ता बह पाड़े ही काठी ई ।

५४६ मबेड़े के बैठ के बुरी बई ।

गया ज्येष्ठ के महीने में मस्त हाता हूँ ।

५४७ मबेड़े को मांस तो बार घास्या ही लीब ।

गबे का मांस तो उसमें बार बालने पर ही सीसता हूँ ।

बीबित अवस्था में जो नइ हूँ मुरपु पर उसके मांस तक में स्वभावगत बिपे पता रहती हूँ ।

५४८ मबेड़ी बुरड़ी पर रबी ।

गया बुरे पर ही तृप्त होठा हूँ ।

बुरे मनुष्य की तृप्ति बुरे स्वान पर ही होती हूँ ।

५४९ गबे में ज्ञान नहीं भूतल के म्यान नहीं ।

गबे में ज्ञान नहीं होठा मुसक के म्यान नहीं होती ।

५५० यबो घोड़ी एक भाब ।

गबे और बोड़े का एक भाब होना ।

अहाँ अण्ठे-बुरे का बिचार नहीं होठा वहाँ इन कहावत का प्रयोग होठा हूँ ।

मि० गुड़ बीबर एक भाब ।

५५१ यबो मिसरी को के करे ?

मया मिसरी का क्या करे ?

५५२ मय बड़ी बीज हूँ ।\*

पैय बड़ी वस्तु हूँ ।

५५३ गया कनामत आई देवी बामन जोमे कीर जसेयी ।

कनामत के बाब गबरात भामे उनमें ब्राह्मण कीर-जखरी का भोजन करते हूँ ।

\*मि० १ गम जाना बीज बड़ी हूँ कोई देवो ना गम जाय की ।

२ मम गाना र कम जाना (ये दोनों बातें अण्ठी हूँ)

- ५५४ गया कनायत दूटी भास कामर रीसै चून्है पास ।  
थाठ बीत जाने पर बाहाण भिराग होकर चून्है के पाम बैठ कर हुन्ही होते  
है ।
- ५५५ परबवान की अकल आय बरबवान की सिबकल आय ।  
जिसको किनी बीज की गरज होनी है उसमें उचित-अनुचित का भाग  
नहीं रह जाता जो किसी दर्ब में हुन्ही है उमक चहरे का रंग जाता खता  
है ।
- ५५६ गरबे बिहो बरसै लौनी ।  
जो परबता है वह बरसता नहीं ।
- ५५७ गरीब की लुगाई बगत की भोजाई ।  
गरीब की स्त्री संसार की माचर होती है ।
- ५५८ परीब की हाय बुरी ।  
गरीब की हाम बुरी होती है ।
- ५५९ परीब को बेसो राम ।  
गरीब को मगवान् का महारा होता है ।  
मि निबल के बल राम ।
- ५६० परीबवास की ती हवा-हवा है ।  
परीबवास का तो केवल नाम नाम है वन तो दूसरों का कर्ष होता है ।
- ५६१ गब की चोट बिटा की चोट ।  
बुद के पीटन में बहुत बिषा भानी है ।  
मि० (१) मामूर्तै- पाभिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विपोभिर्तै  
कालनाभयिषोषोऽाम्वाङ्गनाभयिषोगुणा (पार्श्वक महामाप्य)  
(२) गुण कुम्हार भिख कुंभ है गडि गडि काई चोट ।  
मीतर हाथ सहार व बाहर बाहर चोट ॥
- ५६२ मले अमल पुल री हुबै गारी रबि छिरु रे बोली कंडारी ।  
मुत्पत धनक कई बिब सारी (तो) एरपत लयबा अलबारी ।  
यदि अक्षीम गलने सये और बुद में पानी छूटने सये मूर्च और चन्द्रमा  
के चारों तरफ कण्ठन हो और इन्द्रचक्रुप पूरा बिनाई है तो इन्द्र ऐरावत  
हाथी की मबारी पर आये अर्वात् अयधिक बर्षा हा ।
- ५६३ गह्वर साप्यो कोम्या बंगता पैलाई किरगा ।  
बग्न अभी लया ही नहीं बिछुक पहन से ही दबट्टे होने लगे ।

- ५६४ पहनी बाँधी को 'र नसरो बाँधी को ।  
(स्पष्ट)
- ५६५ पाँठ को जाम र 'लोक हंसाई हीय ।  
गाँठ का पैसा जाम और दुनिया हँसे ।  
मि बर की लौज लोक की हाँसी ।
- ५६६ गाँधी बेटा टोटा जाम डेड़ा हुआ कठे न जाम ।  
गाँधी का सड़का मरि नुकसान भी उठाता है तो भी उयका खूँसा हुआ  
तो कहीं नहीं जाता जबकि बाटा सह कर भी वह अपनी पूजी का डपोड़ा  
बुयगा तो कर ही सता है डपोड़ा-बुयगा करने को तो जैसे वह बाटा उठना  
समझता है ।  
मि० पम्पानां पाणिबक पम्प किमस्यै- कौचताधिमि-  
मनेकेन यत्कीर्तं तच्छेतेन प्रवीयते । (पंचतंत्र)
- ५६७ गाँव करे तो पैसी करे ।  
को गाँव करता है वही पगली करती है ।
- ५६८ गाँव को नेपे डेड़ा ही कहरी है ।  
कूठ बेस कर ही पूरी वस्तु का अनुमान लगा किया जाता है ।
- ५६९ गाँव को ठाकुर कोरड़ी मार बी पच म्हे क्यूँ कहाँ ?  
गाँव के ठाकुर ने बड़िया मार बी पर हम क्यों कहे ?
- ५७० गाँव क्यों तुल्यो जार्ये ।  
गाँव में जमा हुआ न जाने कब सीट कर जाये सोमा हुआ न जाने कब बने ?
- ५७१ गाँव गाँव लोचड़ी जर गाँव गाँव गुयो ।  
गाँव-गाँव में घसी के बूझ है और गाँव-गाँव में पूगा है ।
- ५७२ गाँव बसू भूम लुंबारी मार्ये ।  
गाँव तो बस रहा है और भूम लुंबारी भांग रहा है ।  
अधिकारी के लिए यह कहावत प्रयुक्त है जो अबसर को नहीं देखता ।
- ५७३ गाँव बसामो बालिवी पार बई जर बालिवो ।  
बलिवे का बसामा हुआ गाँव मुक्ति के पाम पड़ता है क्योंकि आम तौर  
पर गाँव राजा ही बगाते है ।
- ५७४ गाँव में धर ना रोही में जेत ना ।  
गाँव में मकान नहीं है और जंगल में जेत नहीं है ।
- ५७५ गाँव में पहली भजाड़ो के करवी सामी तारो ।

जब बाँब में ही महामारी फैली हुई हो तो तारा लगने से क्या हुआ ?  
 तारे के अस्त होने को तारा लगना कहते हैं ।

५७६ गाँब टुबे बडे डेडबाड़ो ही हुब ।

जहाँ गाँब होता है वहाँ मंत्रगी होती ही है ।

क० गाँब मेल साल डेडबाड़ो है ।

५७७ पाछ मेल बोल बपे ।

वेड़ के सहारे ही घना बहती है ।

बडे के सहारे छोटे चलने हैं ।

५७८ गाबर की पूगी बाजी तो बाजी नहीं तोड़ जाई ।

गाबर की पूगी बनाई बहु बजो ता बजी नहीं ता तोड़ कर फेंक दी ।

उपेक्षित स्वामी धर्म या मित्रता के सम्बन्ध में स्वाधमयी उक्ति ।

क० गाबर की पूगी बजी जने बजाई नहीं बाजी तो ताड़ जाई ।

५७९ गाब तिको बरस कोनी ।

जो गरजता है बहु बरसता नहीं ।

५८० पाडा को फाचरो र लुगाई को फाचरो कूदमोड़ो ही बालो ।

गाड़ी से फाचर और स्त्री के मिर का जिनता बग आय उतना ही प्रच्छा ।

५८१ गाडा र्क हाडा नहीं र्क ।

हाडा राजपूतों को एक नामा है । बुरा राज्य देबाजी हाडा ने स्थापित किया था । देबाजी के बंधुओं ने बीरता में बना नाम पैदा किया जिसे उपमकन कहावत बनी है ।

५८२ गाडा नै देल कर पाडा का पय सूरगा ।

मकन को देखकर महिप के भी पैर मूज गये ।

५८३ गाडा में छत्रसा को के भार ?

मनट में छात्र का क्या भार ?

५८४ गाडिये सहार को कम मो गाँब ?

गाडिये सहार का कोई गाँब नहीं होता ।

५८५ गाडी उल्लापो पठे जिनायक मनापो के होय ?

गाड़ी उल्ला जाने के पीछे जिनायक का मनाने से क्या हो ?

क० गाडो उल्लापो पाठे बपो का बिनायक ?

५८६ गाडी को पहियो र भारमी की जीम तो घासपो ही बोली ।

पाड़ी का पहिया और भारमी की जीम का बन्नी ही बघी ।

५८७ गाड़ी से 'र लाठी से बच कर रूँ ।

गाड़ी में और दुपारा नवविवाहिता स्त्री से बच कर रहना चाहिए ।

५८८ गाड़ी लौक तो पाड़ी लौक ।

छोटे बड़ों का ही अनुसरण करते हैं ।

• ५८९ गाबड़ मारी पालकी, मैं बड़बपन हासिली ।

गोबड़ ने पालकी मारी जब तो वह बादलों की बरज सुन कर ही हिम्मा ।

इस कहानी की कथा के सम्बन्ध में कहानी संख्या ३९१ देखिये ।

५९० गाबड़ को लावली स बेर बोड़ाई पाले ।

गोबड़ के उतावली करने से बेर बोड़े ही पक जाते हैं ?

५९१ गाबड़ की मारुबोड़ी सिन्धार मार बोड़ाई जाव ।

गोबड़ की मारी हुई सिन्धार को सिंह बोड़े ही खाते हैं ?

उद्योगी पुस्तक दूसरे की आशा नहीं करते ।

५९२ गाबड़ को मोत भावी तो गांव जानो जावी ।

गोबड़ की घामत जाती है तो वह गांव की तरफ भगता है । जब होनहार बच्ची नहीं होती तब बुद्धि विपरीत हो जाती है ।

मि विनासकाले विपरीतबुद्धि ।

५९३ गाबड़ के मूँई ग्याप ।

इस कहानी के पीछे निम्नलिखित कथा कही जाती है—

एक सिंह पित्रके में बन्ध था । कोई ब्राह्मण उबर से जा रहा था । सिंह की

कदम पुकार सुन कर जब ब्राह्मण ने उसे पित्रके से मुकठ कर दिया तो सिंह

ने उसे ही खा जाना चाहा । इस पर एक गोबड़ को ग्याप के लिए मुकरर

किया गया । गोबड़ ने अथ से इति तक पूरी कहानी सुनी । सुन कर उसने

कहा—“बौर तो सब ठीक किन्तु यह बात मेरी समझ से बाहर है कि

सिंह पित्रके में रहा हो यह असम्भव है । मसे करके दिखाओ तो पता चले ।”

सिंह ने कहा “इसमें असम्भव क्या है ? मैं जमी करके दिखाता हूँ ।

सिंह पित्रके के अन्ध गया और जाने ही पित्रका बन्ध कर दिया गया ।

ब्राह्मण ने कहा—“मिरा ग्याप ?”

गोबड़ ने उत्तर दिया “ग्याप हा गया न तुम्हें और क्या चाहिए ? जो

उपकार के बन्धे अपकार करता है उसकी यही सजा है ।

५९४ गाय अर कन्या मैं जिरी हाँकये उरी ही चाक पड़े ।

गाय और लड़कियों का जिधर पला दिया जाय उधर ही उसको जाना पड़ता है ।

५९५ गाय की भैंस के साथी ?

भैंस का गाय से क्या सम्बन्ध है ?

५९६ गाय भा बाटी नीर भाब भाछी ।

जिमके गाय बछिया बछ नहीं बह निदिबन्त छाता है ।

५९७ गाय ग्याये ग्यायी की भू ग्याये भरिषायी की ।

गाय तो ग्याये की कानी चाहिए और बभू अच्छे घराने की कानी चाहिए ।

५९८ गायों गायों बाजबां भाय्यां ही भला ।

गायों भाइयों और ब्राह्मणों से ठी बच कर रहना ही अच्छा क्योंकि इन पर प्रहार नहीं किया जा सकता ।

५९९ गायों में कब गयी रोखो कह मारदे बिलोबनी मोरो ।

गायों में कौन गया ? उत्तर मिला—योरो । बहु तो बूब निकाम कर पी जायगा । तब तो सब चौपट कर दिया ।

क० गायों में कब गया ? कैं गीबो ।

रोखो बरू ना रोखो रोख पड़यो सीबो ॥

अगर रोखा ही गायों को घराने गया है तो मारी गायों कापिस जाने की नहीं । गीबा बिप-सनीप नहीं कछ गायों जरूर खा जायेंगे । अग सीबा रोने का काम है अभी मे रो क्यों नहीं लेती ?

६०० गारड बिना धेर कोनी उत्तर ।

गारडही क बिना माप का बिप नहीं उठरगा ।

६०१ गार में पग गिबरां पर बीठबा र ।

रोबड़ में पीर और गहों पर बीठने को लाकापित ।

६०२ गान्यां से घूमड़ा कोनी होप ।

गानियों में बोरे ही फाड़े निबसते हैं ।

र० गारयां से के घूमड़ा बिबर्न ह ?

६०३ गाबबू अर रोबबू तर्न भाब ह ।

माना और रोना सबको जाना है ।

६०४ घीरुं ग्यायें तो घयीं र प्राय अमीर ।

घरूँ जाना तो है घरी और जाने है अमीर ।

६०५ पीत में गाब जीगो ना रोड में रोबब जीगो ना ।



बहु सब तरह से निकम्मा हू न बहु गा सकता हू न रो सकता हू । न तो जिस पर गर्व किया जा सके न जिसकी मृत्यु ही खोजनीय हो ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयुक्त कहावत ।

६०६ गुजर बटे ही गुजरात ।

( स्पष्ट )

६०७ बुड़ की उली ब रे नहीं बाजिये की बेंदी बच ग्याईगी । \*

कड़की की और से माता-पिता का धमकी भी गई है । बजिये की बेंदी बन जाने पर फिर बुड़ की किसी प्रकार को कमी नहीं रहेगी ।

६०८ गुड़ कौनी मुकमुला करती स्याली तेल उचारो

परीडा में पायी कोनी बलीतो कीनी स्यारो ।

कड़ायो तो माँव कर स्याली पच आटा को कुछ स्यारो ।

गुड़ नहीं है नहीं तो मुकमुला बनाती । तेल तो किसी से उचार ही माँव माँगी । घर के जमादार में पायी नहीं है ईबन मलग नहीं है । कड़ाह तो माँव कर ही से माँगी किन्तु ब्राटे का कुछ बलन हो है । कुछ भी नहीं तो गुड़मुले बनायेभी क्या लाक !

साधनहीन व्यक्ति की काकसा ।

—६०९ बुड़ बाय गुड़ियाणी को पछ करै ।

बनाबने परहेज रखने वाले के सम्बन्ध में यह उक्ति कही जाती है ।

६१ गुड़ मोल्यो हो तो माँची कदेस की बाट स्याली ।

गुड़ खीका होता तो मकिलयाँ कमी की बाट जाती ।

यहाँ मोल नहीं है ।

६११ गुड़ै गुवाई, ओज पापड़े आवै ।

पर्वतीय स्वाग में सेना मली जाती रहती है किन्तु उसे ठहराने या विभाम के लिए किसी समतल भूमि में निवास करना ही पड़ता है ।

( घर के किसी निकम्मे और कमजोर व्यक्ति पर ही उचित-अनुचित सब प्रकार के दोषों का मूढ दिया जाता । )

—६१२ बुड़ बाले जित्तो ही सीठो ।

\* बुड़ रे रे नहीं तो छोटी हो ग्याईगा ।

कड़के ने धमकी दी कि या तो बुड़ रे नहीं तो कड़के से कड़की हो जाईगा ।

बिनाता जबिक मुड़ डाला जायगा उतना ही माठा होगा ।

बिनाता जबिक पैसा देकर काम करवाया जायगा उतना ही मज्जा काम होगा ।

११३ गड़ इक्तियां धो अंगक्तियां ।

बल्लो-बल्लो करके जब लोम गुड़ का छे जाल लपटते हैं तो मुड़ समाप्त हो जाता है और परलने के लिए जब सभी अदुक्तियों में भी लगाने लगते हैं तो वह धा भी चुक जाता है ।

११४ मुड़ तो अंघेरें में बी मीठो ।

मुड़ तो अंधेरे में भी माठा होता है ।

११५ मुड़ बेता मर, बाली और बरूं बेनूं ?

जा गुड़ देने से मर जाय उसे बिप क्यों देना चाहिए ?  
मोठे बालने से काम अपने वहाँ बन्दू क्या बाला जाय ?

११६ गुड़ बिना कितो ओप ?

बिना मुड़ के चौध का बत कैसा ?  
बिदेय कार्य के लिए बिजय व्यक्ति आवश्यक होता है ।

११७ गुन गल पूजा ।

गुनों के अनुसार प्रतिष्ठा होती है ।

११८ गुर-गुर बिद्या तिर तिर बुद्धि ।

गुरु-गुरु के पास बिद्या होती है और बिभाग-बिभाग में मित्र-मित्र बुद्धि मिमती है ।

११९ मुक बल्लो लालबो, दोनूं बल्ले बाब ।

दोनूं बल्लेक दूबसो बँठ पसर की नाब ॥  
बपटी गुड़ और बला दोनों बाब लल्लत हैं पत्थर की नाब पर बड़ कर निरबय हा दोनों कमा न कमी दूब जायेंगे ।

१२० मुड़ स बेला भापला ।

मुड़ स अले बड़ मये ।  
मि० गुड़ ता मुड़ हो रूपा बला घनकर होगा ।

१२१ गुलमुला भाबै पन लेल बडेनूं जाय ।

गुलमुले अचछे लपटी हैं किमु लेल कहीं से जाये ?

१२२ गबाड़ को बायो की नै बाबो की ।

बिज बस्तु के कर्ता का पतान हो वह बिमके छिर लपार्द जाय ? जैसे बिज

बालक के पिता का नाम न माकूम हो वह किसको पिता कहे ?

मि० बेस्या कोरा पुत ज्यू कहे कीन सू बाप । ( कबीर )

६२३ पूंगा तेरी सैन में समझै कल में बीय ।

के पूंगा की माबड़ी के पूंगा की बीय ॥

गूबे के इसारे को केवल बो ही समझ पावे है मा तो गूबे की मा मा मुंभे की स्त्री ।

क पूंगा तेरी सैन में समझै नाई बीय ।

के समझै तेरी माबड़ी के समझै तेरी बीय ॥

६२४ मुंभी रे गीता पावै ।

मुंभी और फिर भी पीता माने की अनिजाया करे ।

६२५ गुगी बड़ा क राम के बड़ा तो हूँ तो हूँ ही पन साँपो से कुन बीर करे ।\*

गुमा बड़ा वा राम ? उत्तर दिया कि बड़ा तो वो हूँ वही हूँ जबकि राम

बड़ा है किन्तु यह कह कर कि राम बड़ा है, साँपो से कीन बीर बावै ? गुगा

साँपो का बेवता समझा जाता है । उसके नाबुस होने पर साँप काटने का

मम बना रहता है ।

ममबद किसी बात को स्पष्ट प्रकट न करता ।

६२६ गुजर किसका पाकती किसका निम कजाल ?

गुजर किसका बासानी है बीर कलाक किसका निम हूँ ?

६२७ गुजर से ऊबड़ मजी ।

गुजर से वो उबाड़ ही मला ।

६२८ पेरधी लोई तो के करेयो कोई ?

जब मर्चाचा छोड़ बी टी कोई क्या कर लेगा ?

६२९ पैस को पन एव में बाप ।

बुराई का पैसा बुराई में खर्च होता है ।

क देख को पन पैस में बाप ।

\* क० गुगी बड़ा क राम ? के बड़ा तो रीब है जिकोई हूँ पन

साँपो से बीर न्यूं बावै ?

जबकि कुम्हार ने कुम्हार से पूछा कि गुगा बड़ा वा राम ? कुम्हार ने

उत्तर दिया कि क्यों सच्ची बात कहलवा कर साँपो से बीर करवाती ही ?

गुगा कुम्हारों का दृष्टिकोण होता है ।

- ६३० पैली राई का गैसा पूत ।  
पगली बीरत क पगले पुप पैदा होतें हैं ।
- ६३१ पैली सारी पैली ।  
पगली सबसे पहले ।  
अयोध्या आरमी का हर काम में टोंग मड़ाना ।  
क० पैली से ही पैली ।
- ६३२ पैली भला न कोत को बड़ी भली न एक ।  
संगित भली न बाप की, साहेब राखी टेक ॥  
पैदा रास्ता एक नाम का भी अच्छा नहीं सड़की एक ही अच्छी नहीं  
आप पिता का भी अच्छा नहीं भगवान् ही टेक रखी ।
- ६३३ गोरुक से मकरा ग्यारी ।  
(सत्य है)  
मि० तीन लोक स मनुग स्यारी ।
- ६३४ पीर की छोरो, राजभू छोरो ।  
पीर किये हुए लगे का रखना बड़ा मजिबुत है ।
- ६३५ गारी का में पीर कर पैर का को भास करे ।  
पीर क अच्छा का नाथ डाल कर गमन्य की भागा करनी है ।  
( छ पको छोड़ कर मछ क की मार उम्नुव होना ) ।
- ६३६ पीरर को पड़ी कूठ की तरवार ।  
पीरर के पड़े पीर राठ की तरवार न कूठ अप मिट नहीं होगा ।  
नम सख्त की शोक बवा प्रमिड है ।
- ६३७ पीरर में ती घोंपला ही पड़े ।  
पावर में तो " पीपये " ( कौट-विद्या ) ही उपम्व होत है ।  
बुने वन में कुलीन मन्त्रान पैदा नहीं होनी ।
- ६३८ पीरो में पुप होवी तो डोलो जाई हू। का मिलेगी ।  
यदि प्रेमनी में पुप होंये तो प्रियतम अपने जान था मिथना ।
- ६३९ गौला कितला मुक करे भोगमपारा बाप ,  
माता द्विप की राखली, सोला द्विप पर बाप ।  
बाप मनुष्यों ग रिमी का मता नहीं ह'ता से ता स्वयं मनुष्यों की मान  
होते हैं ।
- ६४० पीले के सिर टोपी ।

बर्षकर वास पिटने से ही ठीक होता है ।

६४१ गीले को घुर झूत ।

गीले को झूठा से पीटा जाय तभी वह बस म आया है ।

६४२ गोलो र मूक पराय बस आबसे ।

बास अपने स्वामी के बस पर सक्रियता है मूक भी पानी का बस पाकर ऐंठ जाती है ।

६४३ गोहू वाली गुग नै लोबो बोसपी—मेरी भी जात है ।

गोहू गुग की जात देन के लिए बली तो खाँडे ने कहा कि मुझे भी जात देनी है ।

अब किसी बड़े आदमी के साथ याही नाम का बहाना बना कर कोई छोटा आदमी पिछलग्ग के रूप में साथ हो खेता है तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

६४४ प्यारस को फड़रो बारस नै ।

एकबसी को जो उपवास करना पड़ा ठारसी को न्यून भोजन कर उसको कमो पूरो कर डाली ।

६४५ ग्रहण की बात बंगा की बतमान ।

ग्रहण का बाल और गंगा का स्नान प्रशस्त्य है ।

६४६ वह बिन घात नहीं मेव बिन खोरी नहीं ।

बातक ग्रह के बिना मृत्यु नहीं होती और मेव के बिना खोरी नहीं होती ।

घ

६४७ घटतोला मिठ बोला ।

जो कम तोलता है वह नीठा बोलता है ।

६४८ बड़ी को ठिकानुं कानी जर नाम अमरचन्द ।

एक बड़ी जीवित रहने का भरोसा नहीं और नाम है अमरचन्द ।

६४९ घड़े कुम्हार, सरें तंतार ।

बड़े बनाता ठा है कुम्हार और उनमें पानी भरत है और ही खोय ।

६५० घड़ पैल ठीकरा ना पैल डीकरो ।

बड़े के अनुकूल ही उसके संबद्ध टकरे हाते हैं भाँ के अनुकूल ही कड़की देली जाती है ।

६५१ घड़े सुतार, पैरें नार ।

बामुपन सुतार बढ़ता है और उम्ह पहनती है स्त्री ।

- ६५२ घईं ही गहुमो हापी भेर ।  
गहुमा गइ रही पी मंर हो गई ।  
नाम का आरम्भ ता छोटे रूप में हुआ हुआ था किन्तु अन्त में जाकर उसने  
विस्तृत रूप धारण कर लिया ।
- ६५३ घड़ा घूट कर गिरगमू ही हाण जाण ।  
अच्छी बस्तु के लाल होना पर उसके समाप्त की पूर्ति में उससे निम्नधरणी का  
बस्तु हा मिलती है ।  
पहली स्था के बेहान्द होने पर साड़ी से विवाह करने पर यदि वह पूर्व-स्था  
से गुमा में नीचे बजें की जाती है तो यह कहावत बड़ी जाती है ।
- ६५४ घग जायां घघ ओलमा घघ छायां घघ हाय ।  
अधिक बच्चों के होने से अधिक उपारम्भ मिलने है और गाभिया मुननी  
पढ़ती है ।
- ६५५ घज जायां घज नास ।  
सगठान की अधिकता कटुम्ब की एकता का नाम करती है ।
- ६५६ घज बीत सूरजों हारें ।  
यदि विपक्ष में शत्रुओं की समस्या बहुत अधिक हा ता शत्रुवार भी हार जाता  
है ।
- ६५७ घघ बूडा कम हाण ।  
अधिक बर्षों अन्न का नाम करती है ।
- ६५८ घना भीठा में कीड़ा पड़े ।  
अधिक मीठे में कीटा पड़ते है ।  
अति प्रेम में अन्त में कमी-कमी बन्ता बडनी बन्ती गई है ।
- ६५९ घना हैत दूदस का बड़ा लघ कूदस का ।  
अधिक प्रेम अन्त में दूट जाता है ।  
अति अति विस्तारविस्तीर्ण न प्रबलविचरान्पम् ।
- ६६० घपी तीन-पाँच आछी कोग्या ।  
अधिक तीन-पाँच करना अच्छा नहा ।
- ६६१ घपी दारै घना पैट फाई ।  
अधिक दान्या अधिक पट पाइती है ।
- ६६२ घपी सराही खीचड़ी बातों के लिपे ।  
जिसी की अधिक प्रशंसा करने में उसका पत्र हा जाता है ।

- ६१३ बभी लुभी छिपकली चुप-चुप बिनाबर साथ ।  
ऊपर से सीसा-सादा दिकलाई पड़ने वाला ही कमी-कमी बड़ा पाठक सिद्ध  
होता है ।
- ६१४ बभूँ ब्याय बभूँ धभूँ मरें ।  
जो अधिक साता है वह अधिक कष्ट उठाता है ।
- ६१५ धभूँ बल भरुयां धुंभी पड़ें ।  
अधिक बल देने से बन्धी पड़ जाती है ।  
बीबातानी से बीमलस्य बढ़ जाता है ।
- ६१६ धभूँ लिमाचो कामली से गोबर में घाँच ।  
अधिक सवाना कौवा गोबर में ही भोंब बैठता है ।
- ६१७ धर मायो पाबचो रोबतड़ी हँस ।  
किसी स्त्री को दूसरी स्त्री के प्रति उक्ति है यदि अतिथि घर आ जाय  
और तुम रोती हुई भी हो तो भी उस अतिथि का सम्मान-रक्षा के लिए  
गुम्ह हँस कर प्रसन्नता प्रकट करनी चाहिए ।  
अतिथि-सहकार में अपना दुःख दिसा कर अतिथि को चुन्नी नहीं करना  
चाहिए ।
- ६१८ धरकी में मारभूँ जोरां में धारभूँ ।  
धरबाँचो की मारने वाला और जोरा की महायता करने वाला ।
- ६१९ धर का टाबर काला भी सोबना ।  
बपने काने बच्च मो अच्छे सगते है ।
- ६२० धर का टाबर जोर ब्याय बेबता मना मारें ।  
जब किसी बेबता की मसत उठारी जाती है तो जोर बाधि बनाई जाये  
है । उससे एक पक्ष का काम सिद्ध होते है । एक जोर बेबता प्रसन्न होता है  
तो दूसरी जोर बच्चो को मिन्नास खाने को मिच्छता है ।
- ६२१ धर का पूठ दुंधारा डोले पाड़ोतो का मो मो खेरा ।  
धर के पुत्र कँबार फिरते है और पड़ोसिया के यहाँ मौ-मौ भीर हीते है ।
- ६२२ धर का जाबी ई मली ।  
धर की मायो रामो ही अच्छी ।  
विदेश का कमाई ध धर की माबी कमाई ही अच्छी ।
- ६२३ धर की जाँड किरकिरी सार्य गुड़ जोरो की मीठी ।  
धर की बीनी किरकिरी रुपती है और चारी का गुड़ मीठा सपता है ।

६० घर की खोह किरकिरा लागे हाटजों का गड़ मँडो ।

यह कहावत उस दुःखरिज व्यक्ति के लिए कही जाती है जो अपने घर की मुन्दर विवाहिता पत्नी का छोट बग बायाँ भीखों को पसन्द करता है ।

६०४ घर की जाय सब सुख पाय ।

जो घर का धारा है वह सब समी रहता है ।

६०५ घर की शक्ति घर का नै ही जाय ।

घर की शक्ति परधारी का ही जाती है ।

६०६ घर की छीज लौक का हाँसो ।

घर की लजि होता है और लक में हँसो हाँसी है ।

६० घर की हान लोव का हाँसी ।

६०७ घर की जोगी जोगनू आम गाँव की सिद्ध ।

मरने गाँव में किमी की कपन नहीं हाँसी ।

मि० अति परिषदावका ।

६० घर का जोगी जोगना, घर का जती सिद्ध ।

६०८ घर की बेबर घर का पुजारा ।

घर का सब और घर का ही पुजारी ।

६०९ घर गाया रो छीज उसी का केरदा बेटी रो बोनाम क नका खेनदा ।

बालीके सो सिद्ध सिद्ध रा बोलना एता ब करतार कर न बोलना ॥

आज चाहता है कि उसके घर में गाया का समूह हो तथा अपना ही गायाँ स पैना हुए बउड़े पैवार होकर बैस हो जायें । बग की बहुतायत हा मत गाँव के समीप हा । सबसे उसकी बोलचाल बनी रह । यदि परमात्मा उस इतना हा दे तो उस भग्य निमा बन्धु का जकरन नहीं ।

६१० घर गैल बाबनू या बाबना मँस घर ।

घर की बँसी है नियत ही उसी के अनुरूप मानिस्य-गणकार विधा का उच्छता है मेहमान को है नियत के अनमार नहीं ।

६११ घर-घर मँस का चूसा ।

घर-घर मनी की सामान्य भाँविक भिनि है ।

६१२ घर जाए का दिन मिसू क दाँत ।

घर में उत्पन्न हुए क दिन मिसू या दाँत ?

जब डँग की गरीब-दरीक हाँसी पीं हा उनरी उम का पना बीखों से



सगाया जाता था। ओं दो दाँत हूँ चार दाँत हूँ नैसाबर है आदि पचासको काम में छाई जाती थी। एक बार किसी बंधवास में अपना अँट की उम्र कम बतलाई। खरीदार ने दाँत बेचकर कहा कि उम्र इतनी नहीं इतनी है। तब बेचने वाले ने कहा कि यह अँट भरे यहाँ ही पैदा हुआ था इसलिए मझे उसको अम्मतिबि तक पाव है मैं इसके दिन गिनू या दाँत ?

- ६८३ घर तो घोसियाँ का बी बलसी पण सुक अँबरा भी कोणी पावं ।  
घर तो घोसियाँ का भी जसोने किन्तु सुक चूहीं को भी नहीं मिछगा । बे भी घर के घाय जस जापगे ।  
क० घर ता घाँबोरो हो बलती पन तारा तो अँबरा ही को रेबे नी ।
- ६८४ घर तो भायर बल पड़ी पाड़ासय को जोसे पूस ।  
अपन पास सब कुछ होले हुए भी दूसरे की तुच्छ वस्तुओं को भी हड़पवा है ।
- ६८५ घर नै खार्ध सला ।  
साका घर को बरबाद कर देता है ।
- ६८६ घर बलती कीली बीकी डूंगर बलती बीकी ।  
घर में अलसी हुई आग नहीं दिखलाई पड़ती पण पर अलसी हुई बिखलाई पड़ती है ।  
अपने दोषों पर बृष्टि नहीं आती पराव दोष बड़ी अलसी दिखते हैं ।
- ६८७ घर-बार पारा पन तामा कूँचो म्हारा ।  
हे बहू ! घर-बार तो तुम्हारा ही है लेकिन ताले-जाबी के मासिक हम ही हैं ।
- ६८८ घर ब्याह, भू पीपला ।  
घर पर बिबाह है और बहू इतर-उपर हा रखी है ।
- ६८९ घर में अँबेरो तिला की सो रास ।  
घर में अन्नकार इस प्रकार ब्याप्त है मानो तिला की राशि हो ।
- ६९० घर में भाई जोय ठेकी पगड़ी सीबी होय ।  
घर में बच रही आ जाती है वो-टेकी पगड़ी नी सीपी हो पाती है ।
- ६९१ घर में कस्ताको जोई दुताको ।  
घर में तो अमाव के कारण तकलीफ उठानी पड़ती है और बाहर भाप दुसाका जोड़ते हैं ।
- ६९२ घर में कीम्या लेक न ताई रांड मई मुलपला ताई ।

घर में लेन-देन कुछ है नहीं और राई गलतियों के सिने मानाचिठ हो गयी है ।

६९३ घर में नानी बसंत को बीज राई पुत्रे जाया सीज ।

घर में तो भावना का काम भी नहीं और राई अक्षय गर्नीया के उपमंत्र में पया करती है ।

• ६९४ घर में सखी बीवाल में आला

जाज नहीं तो काल दिवाली ।

घर में यदि मामा रहते कम बीज बाबा में यदि बाबा हा ना कमी-क-कमी दिवाला निकल जाता है ।

क० भोत्र छोई बाला र घर लाजो छापा ।

नाम्य यह है कि यदि बीवाल में बहुत-से आप हुए तो बीवाल का मन विगड़ जायगा । इसी प्रकार यदि घर में माली का प्राधान्य हुआ तो उस घर को शान भी गयी हो सकती है ।

६९५ घर मोटो टीटो घनू भोटो पिब को माँव ।

ऐं कारण जब बुझनी ग्हारो रजना ऊपर गाँव ।

पराना बड़ा है चाटा बहुत है पनि का बहा नाम है और राम्य पर माँव है तिमसे अनिय बहुत जाने है इसलिए मैं बुझनी हा गयी है ।

६९६ घर रोषपी सखी भोत रोषी बाला ।

सखी में रोषा हुआ घर और जानों में राकी हुई बीवाल बगबाद हो जाती है ।

६९७ घर बाने की राई भर मोर को बेटो बिरलाई ग्वाल कर ।

दिवाह-संस्कार के बिना घर में लार्ई हुई स्त्री और गौद का लच्छा मुदिकल में हो निजाम करे है ।

६९८ घर लै उठ बन में गया र बन में लपी काय ।

घर में उठ कर बन में गया और बन में जाग लग गई ।

बनाय मन्थ का कुर्माय पाजा नहीं छोपता ।

६९९ घर लै बेटो नीसरी, माँव ऊँच स्या माँव बंधाई स्या ।

बेटो का दिवाह कर देन के बाद फिर बिना घर उमका दामिन्ध महा रूँ जाना बहू जायाज के नहीं रहे चाह पय के घर जाय ।

७ • घर घानो, सेली लूया कर्तु लार्ई ?

घर में जब जानी है तब तानी कपड़ा-सूखा क्यों साथ ? टेढ़ के साथ तो क्या कर जा ही सकता है ।

७०१ घाघरी को सासल नबीक को हो क्याव ।

वी तरह के सम्बन्ध होते हैं एक पगड़ी का दूसरा घाघरी का । पुष्प का माई बेटे तथा बहिन का सम्बन्ध पगड़ी का सम्बन्ध कहलाता है और स्त्री के निमित्त का लेकर जो सम्बन्ध होता है वह घाघरी का सम्बन्ध कहलाता है । घाघरी का सम्बन्ध अधिक प्रिय होता है अर्थात् माता तथा छोटी माई-बहिनों को अपेक्षा अधिक प्रिय समते हैं ।

मि० समुरारि पिमारी सगी जबतें रिपु रूप कटुम्व नयो तब तें ।

(तुलसीदास)

७०२ घाव तो बीरी को सराहिये ।

झनु की बीरता भी प्रशंसनीय है ।

मि० पबं हि सर्वत्र कुर्नैनिधीयते । (रघुवध)

७०३ बिपत बुरघी मूंगा कौ मयि ।

जो मूंगों में ही बिखरा व्यर्थ नहीं गया ।

मि० बी कठे बूमयो ? कह—बीकड़ी मे (बी कहां बिखरा ? उत्तर बिबड़ी में) मष्ट होती हुई वस्तु भी जब अपने ही काम आ जाती है तो इस उक्ति का प्रयोग करते हैं ।

७०४ घी खाबू तो पसड़ी राख कर जाबू ।

जो खाना हो तो इज्जत रख कर खाना चाहिए ।

७०५ घी घास्योड़ी ती मंवेरा में बी छालू कोग्या रेंबे ।

घी परसा हुआ तो मन्त्रकार में भी छिपा नहीं रहता ।

क्रिया हुआ घुम प्रकट होकर ही रहता है छिपता नहीं ।

७०६ घी जाट को तेल हाट को ।

घी जाट का और तेल घुसान का अच्छा होता है क्योंकि जाट क भी में मिला पट नहीं होती और घुसान का तेल पुराना रहने से साठ और घुणकर हाट है ।

७०७ घी सक्कर जब बुध क ऊपर पण्डा

सात नायां के बीच लबाया कण्डा ।

घर में बीचा होय क ठंडी चोलना

एता रे कपटार केर नहू चोलना ।

साहूकार परमारमा से प्रार्थना करता है कि हे बिलोकीनाथ ! मुझे भी दाकड़र और मच्चाई से परिपूर्ण बूम पीने को मिले । सात भाइयों के बीच में सबाये कपड़े पहनने को मिलें । घर में योवन प्रचुर मात्रा में हो और मरी हुई की बजार में अच्छी रहे । इतना तू मुझे दे दे तो फिर कहना ही क्या ।

७०८ धी सुधारें पीचड़ी नाम बहू को होय ।

धी को बबह से पिचड़ी अच्छी लगती है और नाम होता है बहू का । किसी काम के सुधारने का कारण तो और ही हो और यम किसी और को ही मिले तब इस उक्ति का प्रयोग करते हैं ।

७०९ घुरी में पादड़ो ईं सेर ।

कपनी घुरी में भीषड़ भी गेर होता है ।

७१० घूंत बाख्ती तो बाबियो दरमरज में भी घूस दे देतो ।

अमर धर्मराम के यहाँ रिश्कत खस्ती तो बनिया यहाँ भी न चूकता । वह अमर हो जाता ।

७११ घूमटा सँ सती नहीं मुंडाया सँ खती नहीं ।

कोई स्त्री मुंडट निकालने से ही सती नहीं हो जाती और मूठ म डा लेने से ही कोई सग्यामी नहीं हो जाता ।

७१२ घूमरहाली के बिडिया चाये ।

नृत्य करने वाली को नृपुरां की आवश्यकता होती है ।

निस्पकार को औजार चाहिए ।

७१३ घोड़तां के क्या में पादड़ो ही गीत गाव ।

घोड़ा न बिबाह में गोशड़ ही गीत गाने वाले हाठे है ।

७१४ घोड़ी तो ठाव बिल ।

बाड़ी चाहे कितनी भी अच्छी बर्षों न हो यदि वह किसी गरीब के यहाँ है तो सगैरने वाला उसकी अच्छी कीमत देने के भिद्य तैयार न होगा । गृही की उपपन्न अण्ड पर कीमत होगी है ।

७१५ घोड़े के असवार को अर बूडली माई को साव ?

अर्थात् कहाँ पड़नवार का नेत्री में योग्य दीगाने हुए चलना और कर्ना बरिषा का पीटी की तरह गैरक हुए चलना ।

७१६ घोड़े के नाम खड़ीतां पपेको भी पप उठाव ।

घोड़े के नाम खड़ी जाती हैं देर पर क्या भी देर उगता है ।

— मोठा व्यक्ति भी बड़े के सम्मान को देख कर उनके लिए कामायित हो उठता है ।

७१७ घोड़े की लात से घोड़ा घोड़ी हो मरे ।

घोड़े की लात से घोड़ा नहीं मरता ।

समान व्यक्ति बालों के पाश्वरिक्त प्रहार से बिगड़ मुकमान नहीं होता ।

ब० घोड़े की लात से घोड़ा को मरे ना ।

७१८ घोड़ी पास ल गारी करे तो बाप के ?

घोड़ा पाल से दोस्ती कर ले क्या बाप ?

जिसको जिस पेशे से पारिवर्त्मिक मिळता है उसमें रियाजत करे तो निर्बाह कैसे हो ?

ब० मेरा लाल से भारी करे तो बाप के ?

७१९ घोड़ी चापे निकाली में, बावड़तो सी आए ।

काई किसी के पास घोड़ा मांगने गया । बरात की निकाली के अबसर पर घोड़े की आवश्यकता थी । उत्तर मिला—कुछ देर धूम-फिर कर आना ।

अबसर पर काई वस्तु न मिले तो वह फिर किस काम की ?

७२० घोड़ी बीड़ी घोड़ी बीड़ी कुछ चापे ।

बीड़ने वाला बाढ़ा है या बीड़ी यह नहीं जाना जाता ।

न जाने कब किस प्रकार की परिस्थिति पैदा हो चापे ?

७२१ घोड़ी मर्ब मकीड़ी पकड़पा पाळ छोड़े घोड़ी ।

घोड़ा मर्ब और मकीड़ा इनमें से यदि कोई किसी को पकड़ लेता है तो फिर छोड़ता नहीं ।

घ

७२२ बबकू सरबूजे पर पई तो सरबूजे की नास सरबूजे बबकू पर पई ती सरबूजे की नास ।

दोनों और सरबूजे का नास है बबकू का कळ नहीं बिगड़ता ।

हुष्ट का क्या बिमई ? सख्त को ही मुश्किल है ।

७२३ बडती बडानी हर भरपोड़ी बाट कितना बीबन कोनी करे ?

बड़ती बडानी और समृद्धि कितने अबधुन नहीं करती ?

वि० यौवनं ब्रह्मसम्पत्तिं प्रमूर्खमभिनेकता ।

एकैकसम्पत्तर्पाय किम् पत्र चतुष्टयम् ?

७२४ बडती जिहा नै गिरणा सरती ।

जो बड़ेगा सो गिरगा ।

७२५ बना बाब कर कई म्हे बाबक आया म्ही छान पर फूस म्हे तेसी म  
माया ।

बने बबाने हें और कहने हें हम बाबक लाने बाब हूँ छान पर फूस तक  
नहा हूँ और कहने हें हम हबेसी मे माये हूँ ।

पाम में कुछ नहीं और माइम्बर बहुत हूँ ।

७२६ बना बडे बात ना जर बात जडे बना ना ।

बहा बने हूँ बहा बात नहीं और बहा बात हूँ बहा बने नहीं ।

बहुधा कार्यकर्ता को उपयुक्त सामन का जमाव रहता हूँ बहा सामन हूँ  
बहा कार्यकर्ता नहीं ।

७२७ बबू उलस कर कितो भाइ नै फोड़ वेरती ?

जकेला बना भाइ नहीं फोड़ सकता ।

जुद्ध व्यक्ति बच्चा हाकर भी कोई बड़ी क्षति नहीं कर सकता । किन्ती का  
हानि पहुँचाने के लिए भी आसानी में सामर्थ्य होना चाहिए ।

७२८ बतर नै बोगबी मूरल नै सो गनी ।

लक्ष्मी हमारे के पाम बनुर मनुष्यो को बौगुनी दिग्गवाई पवती हूँ, और  
मूर्ख मनुष्य को सी गुनी ।

७२९ बबारी' र राबस आयायी ।

बमारो और फिर वह रतबाम में जा आई ! अब वह अपने को मनुष्य  
गमसती हूँ ।

७३० बसतो को नाब गाडो हूँ ।

बसतो का नाम गाड़ा हूँ अथवा वह काण की डेरी हूँ ।

मनुष्य बसता किरता हूँ तो उसका भाण हूँ पर में बैठ जाण पर काई नहीं  
पूछता ।

७३१ बाब देई अडे बुयो भी त्वार हूँ ।\*

क (क) तू जन साब कई मन मूरल बाब कई बाई बुयो बेनी ।

(ख) बनु तू " " "

(ग) बिरपा " " "

मि जोबनाउटारने जिना मूरा बबलि मानवा (बांमंत्रगी)

गन्धारमा ने जहाँ बाँध ही वहाँ साध-द्रव्य भी तैयार है ।

७३२ पाँच को गह्वर यंत्रक नै मारयो ।

चन्द्रमा का ग्रहण करने के लिए मारी होता है क्योंकि सूर्यग्रहण तो दिन में होता है चन्द्रग्रहण रात्रि को ही पड़ता है इसलिए मित्रारियों के मिशार्थ भूमने के कारण कृतों को भोकना पड़ता है ।

७३३ पाँच सूरज के भी कर्कक लागे ।

चन्द्रमा और सूर्य के भी कर्कक लगता है ।

७३४ पाए बिना पालो पाँख उगता हो उड़ प्याती ।

पक्षी के बच्चों को चाहे नितना पाला पंख उगते ही वे उड़ आस्ये ।

७३५ पाकरी से सूं भाकरी ।

पीकरी सबसे कठिन है ।

७३६ पाकी में पड़ कर सापसो कौनी पीसरी ।

बकरी के या पाटी के बीच में पड़ कर तो पिमना ही पड़ता है अर्थात् बरती और आकाश कभी दो पाटी के बीच आकर कोई साबित नहीं बचता उद्य मृत्यु के मूह में जाना ही पता है ।

७३७ बाम मायें लुपती कतीब बार छिपे ।

चन्द्रमा के भाये सामग्री कितनी बार छिने !

७३८ बाम को के प्यारी काम प्यारी है ।

बमड़ी का क्या प्यारा काम प्यारा है ।

७३९ बालपी को बाम घोड़े की सगाम

संजोपी की बाम कचे न जावे काम ।

बसती का बमड़ा घोड़े की सगाम और यागो का लड़का किसी काम के नहीं होते ।

७४० बालपी में डूब डूबे करमा गी बोल बेबे ।

बलनी में डूब डूबता है और कर्मों को दीप देता है ।

स्वयं मूर्खता करता है और स्वयं में साम्य पर दोषारोपण करता है ।

७४१ बाली बिरवा पुन मलीरी पीली ।

परवा बलने से मलीरी पीली पड़ कर गम जाती है ।

७४२ बालकी की बगर को के ठुई बाअरी की को ली सीबसू ही ।

गरीब का लड़का मूर्ख रहने पर भी धारीरिक धन तो कर ही सकता है अमीर का लड़का अविधित रहने से विद्या के काम से तो बंचित रह

ही जाता है भारीरिक्त धम भी उससे नहीं बन पड़ता ।

७४३ चाबका को लानो छलम्यं ताई जानो ।

जो चाबक जाता है उसमें बल नहीं होता वह केवल द्वार तक जा सकता है ।

७४४ बिड़पिई सुहाय सु रडापो हो बीखो ।

अयोग्य और निकम्मे पति में बीबव्य ही अच्छा ।

७४५ बिड़प-बिड़की की के लड़ाई चाल बिड़ा म भाई ।

बिड़िया और बिड़े की परस्पर ईर्ष्या लड़ाई ? हे बिड़े ! चलो म भाई ।  
हम्यति को लड़ाई स्थायी नहीं होती ।

७४६ बिड़ो को बाँव में लो मय को लकड़ी ।

बिड़िया की बाँव में लो मय का लकड़ा नहीं ममा सकता ।

७४७ बिजा बीपक बेतबे स्वाते गोबरबन डंक कहे है मडडली अथवा लीपरी मय ।

यदि बिजा नमक में दिखायी हो और गोबरबन पूजने के समय स्वाति नमक हो तो डंक मडडली से कहता है कि लूट मय उजरे ।

७४८ बीबड़ी र आज ।

मि० मोंडकी और मुकाम

७४९ बीकणी चाटी का स मगबाल ।

पनवान से सभी काम कुछ करने को इच्छा करते हैं ।

७५० चोकब घई पर पानी की बूद को ठहरा ।

बिड़ने बड़ पर पानी की बूद नहीं ठहरती ।

७५१ चोकब घई पर मूद न लागे बं लागे तो बीठो ।

बिड़ने घड़े पर पानी नहीं ठहरता पर मूद कम मारता है ।

७५२ बील को मांस तो बुटकिया में ही जागी ।

बाक का मांस तो बुटकिया में ही खला जायगा ।

७५३ बसती की सिफार और ग्यारा तोप ।

पुत्रिया की सिफार और ग्यारह तारे ।

७५४ चूडी चूडी को भी लंक सार्ये है चूडी की नित बड़ी है ।

जरा जरा दृष्ट्या करने में बहुत बड़ा समूह बन जाता है क्योंकि नित बड़ी होती है ।

७५५ चूडी जून घड़ा बत पावो का ।

पाम बट नहीं माहम्बर बहुत ।



मि पाव नून बीबाई रखोई ।

७५६ नून को लोनी बाता सूं नर माने ।

घाटे का लोनी बाता स जेमे मान सकता है ?

क० बजड़ा को लोनी बाता स लोनी रीम ।

७५७ नूनइ बीजे बल की नाब पीर को होय ।

नूनरी तो वसा सर्ब करक भोजवी है किन्तु नाम पीहर का होता है ।

७५८ नूते का ज्ञाया तो बिल ई खोबंगा ।

नूह के बन्ध तो बिल हो खोदेंगे ।

७५९ नूते के बिल में छे बैसे समा सकता है ?

नूह के बिल में छे बैसे समा सकता है ?

७६० बेला स्याबी मांग कर, बीठा सार्व महन् ।

राम भजन को नाब है वेठ भजन को पन्ध ।

बेले मांग कर लाते हैं महन्ध बैसे मीत्र उड़ाते हैं । राम-भजन का तो केवल

बहाना है यह सब तो वंट मरने का रास्ता है ।

७६१ शैत बिड़पड़ी साबय सरखड़ा ।

यदि शैत में छोटी-छोटी बूँद गिरें तो भावना में बर्षा बिल्कुल न होवे ।

क० शैत बिड़पड़ा सावन निरमला ।

७६२ शैत पीछने पाक नो दिन तो बरसतो राक ।

हे इन्द्रदेव ! शैत घुस पल के नबरान में तो बर्षा न करे नही तो अकाल

पड़ सामगा ।

७६३ शैत महिने बीज लुकीवे पुर बीलाका केसु बीजे ।

यदि शैत भर बिजली न बिछाई वे तो बीमाक के आरम्भ में बर्षा हो ।

७६४ शैत मास ज्ञासे पल नब दिन बीज लुकीई रक ।

आठम नम नीरत कर बीज जा बरसे जा कुरबख होय ।

यदि शैत के बादल पल में प्रथमा से नबमी तक बिजली न चमके (अष्टमी

और नबमी को नास तीर पर देवना चाहिए) तो नही बर्षा हो बही अकाल

पड़ेगा ।

७६५ शैत मास नै बल अविपारा आठम बचदत हो दिन लारा ।

जिन दिन शरत्क दिन दिन मेह, दिन दिन निरमल दिन दिन जेह ।

शैत के कुरल पल की अष्टमी और नवमी को दिन भर जिन बिषा मे बारक

जावे उसी बिषा में बर्षा अच्छी हो और जिन बिषा में बारक न हो उब

दिगा में बूट को बर्पा हा यानी बर्पा न हागा ।

७६६ बीझो करगो नाम बरयो ।

ओ अन्धा कर गया उसका हमेगा के लिए नाम हा गया ।

७६७ बाटो कादुमा बेलो कोना होय ।

केवल बाह्य आश्चर्यो म हो दिग्ग नही हा सकता ।

७६८ बीटी राक कर पी जानुं ।

यथाऽपि न्यय करना चाहिए नही पी आकर जान का भय है ।

क० धो जानुं तो पमडो राक कर जानुं ।

७६९ बीपडो भर बी बी ।

बुधदा ओर बी-रा । फिर क्या चाहिए ।

पी-दा जमह मे काम हागा ।

७७० बीपडारो टै म कम परतो से ?

बीपडारों के यहाँ म बीन परामा स मबता है ?

आबदार काम के मुताबिक दूमरा क यहाँ म पगेमा सेठ है उनम पगेमा बीन से सकता है ?

७७१ बीर को जड़ बीर ही बाब ।

बार को जड़ बार मे हा दर्बो है ।

७७२ बार को मा घड़ में मुंह देकर रोबै ।

बार को मा छिप कर रोना है क्योकि मबक मामने रात म भेद खुलने का डर रहता है ।

७७३ बीर की मा रो बी कोना सई ।

बार की पी रो भी नही मबतो ।

७७४ बार छै छानी ह पय पय बानी ।

बार चाहे यहाँ बीगी करने की हिम्मत कर लेता है किन्तु जब उसका कोई मुकाबला करणा है ता भग छूटता है ।

७७५ बार क बायली ही बीनी ।

बार क पान मोर्मा ही नही होतो । वह तो ममी बन्पुर्गे दूमरों के यहाँ स ही बुराता है । बार प्रायः बारी का मामान बीपडे के लिए बनडा रणता है जब उसके पान बनडा मही रहता तब इन उक्ति का प्रयास हाता है ।

७७६ बीर बीरी करे पय घर आब मे तो छाब बाले है ।

बीर बीरी तो करता ह किन्तु अपन घर में तो सब बड़ देना चाहिए ।

मि० बाहर टेडी चकल है बाँधी मुँहो छाप ।

७७७ चोर चोरो सँ मयो झूठी बदलप सँ बोझो ई मयो ।

पुसरे क उपदेश से चोर ने चोरी करना छोड़ दिया । एक बार जब उसने पुसरे के जुते बदल लिए तो किमी के पूछने पर उसने जो उत्तर दिया वह इस उक्ति में है ।

भाषत सबसत नही झूठी ।

क० चोर चोरी सँ मयो ता हेराकेरो सँ बी बोझो ई मयो ।

७७८ चोर नै कई नाम साह न कई नाम ।

चोर से कहता हूँ, चोरी कर और साठुकार की कहता हूँ नाम ।

७७९ चोर नै के मारँ चोर की मा नै मारँ ।

चोर को क्या मारे असल में चोर की माँ को ही मारना चाहिए जिससे चोर का जन्म ही न हो ।

पुराई की जड़ को ही जल करना चाहिए ।

७८० चोर वेई सियो से जाओ ताकी लो मेरे करी है ।

चोर यदि संभूक से गया तो से जाओ चाबी ता मेरे पास है ।

७८१ चोरी कर सीना चोरी ।

(सप्ट है)

७८२ चोरो को वन मीरो में जाय ।

चोरी का घन कामगुन नही होता ।

७८३ बीमाले जो गोबर लीपन को, न बापय को ।

बीमाले का गोबर न लीपने के काम जाता है न बापने क ।

७८४ प्यार झूठ सँ मबुरा म्यारी है ।\*

पुनिया क चारों कोनी न इसरी मबुरा म्यारी है ।

मि० मुरारेस्वीय पम्हा

७८५ प्यार चोर चोराली बाबिया के करँ बापड़ा एकला बाबिया ।

चार चोर है और चोरानी बनिये है बेचारे बनिये जबल क्या करे ।

बनियों की कामरता पर शर्म है ।

७८६ प्यार बिना रो जाननी करँ अंबेरी रात ।

चार दिन की चारनी है फिर अंबेरी रात या जावेनी ।

बैजव जलमंपुर होता है ।

क० तीन कोक सँ मबुरा म्यारी ।\*

( ४ )

७८७ छदाम को छाजलो छै टका पंठाई का ।

छाज तो है छदाम का और उसके गठबाने के लिए छ टका ।

७८८ छन में छाज उड़ावे पल में बर निहाय ।

परमात्मा अथ भर में किसी का परोब और अथ भर में बनबान बना दता है ।

७८९ छाज ता बोले तो बोल पग बालभी बी बोले न कं ठोतरती बोज ।

छाज तो बोल सजता है किन्तु बननी क्या बोले जिसमें ? ०८ छिद्र है ।

निर्बोध ना दूसरे को कुछ कह सकता है किन्तु जो स्वयं बोनी हो वह दूसरे को क्या कह सकता है ?

७९० छोकत नामे, छिंकत पीये छींकत रहिये सोय ।

छींकत पर घर कबे न आवे आणी कबे न होय ॥

मीजन पान तथा निद्रा के समय को छींक शुभ मानी जाती है दूसर को घर पर जाते हुए छींकना अनुभ समझा जाता है ।

७९१ छूड़बेड़ा तोर पाछा ओनी भाई ।

कबान से छाड़े हुए तोर वापिस कबान पर गही आउ ।

७९२ छोको बूब तो देखे पग देखे मौपयो करके ।

भकरी बूब तो दही है पर बती है ममना करके ।

७९३ छोली-मोरो कामनी सवली बित की बस ।

छोटो-मागो कामिनी मनी बित को बेल है ।

७९४ छोटी पतनू ही सोगे ।

बितना छोटा है उगना हो लोटा है ।

७९५ छाया छालन बूट उपाइन, अपवपियो मो नाई

एता बेला न करो गहनो काम न आवे काई ॥

मझड़ी छीलने वाला पीर उपाइन बाल ईर आपन आप तथा नाई को बेला नहीं बनाया चाहिए । ये किसी काम को नहीं होने ।

७९६ छोड़ा ही, बंठो बोल ।

चारपाई को 'मुआ' का छोड़ का बाल उम पर बीग बैठ जाओ वह टूटेको गही ।

७९७ छोरा ! तेरो पेट तो बांकी, कट्टु हाई मेर राखी तो ऐं ही में उलसातनुं !

हे छोकरे ! तुम्हारा पेट तो बांका है । उमने मज कर कहा "असाई मेर

राबड़ी तो मैं इसी में उलझा जाता हूँ ।

७९८ छोरा ! पेट क्यों दूबयो ? कं मंटी जाऊँ हूँ ।

हे छाकने ! पेट क्यों टूटा ? उत्तर, मिट्टी खाने से ।

इस बात का उसे पता है और फिर भी ऐसा करता है यही आचरण है ।

७९९ छोरा, बाह मत जाने, बीजली मार देगी, क्यू—ए आटा हाता ना खेत है कह ए तो बीजली का मारबोड़ा ही है ।

किसी ने कहा हे कड़के । बाहर मत जाना बिजली मार देगी ।

कड़के ने कहा ये बागों के कड़के भी तो बाहर खेल रहे हैं इन्हें तो कुछ नहीं होता । उत्तर मिठा ये तो बिजली के मारे हुए ही है ।

८०० छोरी ऐं पाव में चौबर कं कं कह, भई पहलु काचं तो म्हारें खेत सिपज्यो हो सो चौबर म्हारें भी । इजकै बाजरी मेरे काका के हो गई तो चौबर ऊँट बली गई ।

हू छोकरी । इस पाव में चौबरीपन किस के यहाँ है ? उत्तर मिठा—मत बर्ष तो हमारे खेत में खूब पैदावार हुई थी इसलिये चौबरीपन हमारा यहाँ ना । इस साल बाजरा मेरे बचा के यहाँ हुआ इसलिये चौबरीपन भी नहीं बला गया ।

८०१ छोरो बयल में झूँई जंगल में ।

बच्चा बयल में है और उस जगह में बुझा जा रहा है ।

८०२ छोद्यां सँही घर बस क्याम तो बाबो बुडली नपुं स्याबी ?

यदि छोकरिया से ही घर बस पाय तो बाबा बुडली क्यों लावे ?

अ

८०३ जगत की चौर, रोकड़ की बजालो ।

जो जगत का चौर, वही रोकड़ की रखवाणी करने वाला ।

मि बुध की रखवाली बिस्नी के सिपुरे ।

८०४ अरु जोत्यां किसा ऊँट मरै है ?

बाक लघोटने से ऊँट नहीं मरते ।

८०५ अदा बने बडरी अरु जौणां

बादल तल्लिर-पंज बजाला

अबस नील रंग नै असमाणा

अस बरते बल री असमाणा ।

राजस्थानी कहावतें

जब बरगद की जग बड़न लग भोर बाहर का रंग तोहर के पंख क रीमा हो जाय या धाममान का रय बिल्कल नीला हो जाय तो बरगद मूब बनी होगी ।

८०६ जठे बैलें तथा परात उठ नाख छारा रात ।  
जहाँ भात्रम का होम देवना हू बही दिन-रात काम करत क लिए तैयार रहना है ।

८०७ जठे पकें मूसल जठे हो लेम कूसर ।  
जहाँ मूसल पद रहा है मर्पान् जहाँ मूरमा कना जा रहा है वह कमान-सोम का घोसक है ।

८०८ जठे राणाजी बने बठे ही उदेपुर है ।  
जहाँ राणाजी बसत है बहा ठपपपुर है । जहाँ राम है बही मयाभ्या मममना बाहिए ।

८०९ जठे रोडपार जठे घर मार ।  
मनुष्य जहाँ रात्रपार करना है बही उनका पर-वार है ।

८१० अब कर बिल्की तंबरा ।  
जब जब बिल्की तंबरा क ही बबिनार में रही ।  
बिनी का मधिकार छीन भिया जाय तब उसकी पुन प्राणि क लिए यह कहावत गर्बोलिप की तरह प्रयुक्त हानी है ।

८११ जननी जसे तो बोय जस के बाता के मूर  
नातर रहने बांलड़ी बना गबावे मूर ।  
८० जननी जनी ता मजन जग के बाता क मूर ।  
नाही तो भल बांमि रह मनी गंवावे मूर ॥

१२ जब लग तेर पुष्य की बीगयो नहीं करार ।  
तब लग तेरो जाक है बीगय करो हमार ।  
जब तक मनुष्य का पुष्य बाता है तब तक बहु बाहे हमार अबनुम बतल  
ए उमके मब माठ है मर्पान् उसका बाई जठ नहीं बिमाड माना ।

८१३ बबान में ही रत अर अबाव में ही बिल ।  
बीनी में ही रम है और बीनी में ही बिय रहता है ।

८१४ जमी जोर जोर की जोर हवायें मीर की ।  
जमीन और स्त्री पर म अब जोर हू जाना है तब क डूमर की हू  
है ।

८१५ जमींदार क बावन हान हुई ।

जमींदार क बावन हाथ हूँते ह अबीत् उसक बनक जरिय हाते ह ।

८१६ जमीन को सोवणियो र झूठ को बोलणियो संकड़े ली क्यूं भुगते ?

जमीन पर सोन बासा और झूठ बाकने बासा ठीकी क्यों भुगते ?

८१७ जमो भीबड़ी दायनु जइमल माकर कुं

अकल गई करतार की अता बचाया क्यूं ।

जमो—एक विपदा पीर । भीबड़ी—उठी जाति का जीव ।

(मर्ब स्पष्ट)

८१८ जल का थामा पहर कर हर का मंजर देख ।

स्नान करके भववात के धर्मन कर ।

८१९ जल की दूधो तिर कर निकल तिरिया दूधो बहु क्याय ।

जल का दूधा हुआ बच कर निकल सकता है लेकिन जो नारी में बाधकत है वह अवरज दूध जाता है ।

८२० जलम अकारण हो गयो मोरो गले न जगा ।

(मर्ब स्पष्ट)

८२१ जलम को जानो नाम नैबतुअ ।

जन्म का अज्ञा है और नाम नमनमुक्त ।

८२२ जलम को बुझारो मोब सदासुखराम ।

जन्म का बुझी और नाम सदासुखराम ।

८२३ जलम जड़ी र मरप जड़ी वाली कोना डल ।

जन्म-जड़ी और मरप-जड़ी किसी क टाले नहीं टकती ।

८२४ जलम-रात र सेरो रात वाली कोना डल ।

जन्म की रात और विवाह की रात टाकने पर भी नहीं टकती ।

८२५ जसा बोले डोकरा जसा बोले छीकरा ।

जिस तरह बूढ़ बात करते हैं उस तरह के बच्चे भी बातचीत में उन्ही का अनुसरण करते हैं ।

८२६ जसा छारन उछा भोजन ।

जैसे सावन है वैसे ही भोजन मिच्छते है ।

८२७ जसा देव जसा है पुजारा ।

जैसे देव वैसे ही पुजारी ।

८२८ जसो राजा बसी ही परजा ।

जैसा राजा बसी हो प्रजा ।

८२९ बहुर भायवा सो मरेयो ।

जो बहुर भायवा बह मरेया ।

८३० बहुर ने बहुर मारे ।

बहुर बहुर को मारता है ।

मि विपस्म विपर्मिपवम् ।

✓ ८३१ काँ का मरण्या बाबस्याह फलता किरं बबीर ।

बितक बाबस्याह मर जाते हैं उनके बबीर या ही किरते हैं ।

समर्थ स्वामी के अभाव में अनुचरों का दुर्दगा होती है ।

मि० काँ का मरण्या धायवा बाँका के बर बार ?

८३२ जाट बने कछो लरणी बाँटे ।

जा रामो क पेड़ पर चढ़ता है बड़ी लठरों के निवारणार्थ वैभवा का प्रभाव बोलता है ।

८३३ जाय सो पाँव सोँव सो गोब ।

जो अमता है बड़ काम में रहता है जा ना जाता है उम हाणि उडानी पडती है ।

८३४ जाट कई सुज जाटयो हयो गाँव में रैनो अँट बिलई सेमई हाँजी हाँजी कह्यो ।

जाट अपनी स्त्री से कहता है कि हमें ता हमी गाँव में रहना है इसलिये बिना लुरामर के काम नहा चल सकता । यदि कोई यह माँ बहे कि बिन्धी अँट को उगा ल गई ता भी हमें उसका ही में ही मिलाना हागा ।

क० जाट कई सुज जाटयो ई गाँव में रह्यो ।

अँट अँटरो रो गई हाँजी हाँजी कह्यो ।

८३५ जाट की बरो बर जाकोती की लू ।

जाट की लड़की और काकाजी की पपव ।

छांग भी जब ज्यादा नज़ाबत बिताने लगता है तब हम उक्ति का प्रयोग हागा है ।

मि जाट रो बेटी जाकोती गाँव ।

८३६ जाट को ने पत्रमान राबड़ी को क बचवान ।

जाट का क्या पत्रमान ? राबड़ी का क्या पचवान ?



८३७ जाट पंगायी ग्हा भाया के ? कह, खुदाई कुच है ।

जाट से जब किसी ने पूछा कि बंदा-स्नान कर भाये क्या ? तब उसने उत्तर दिया कि यह खुदाई हुई किसकी है ? मैंने ही तो मगा को खुदाया है— मुझसे स्नान करने की क्या पूछत हो ?

८३८ जाट बंयल मत छेड़िये हाट्या बीच फिराड़ ।

रंघड़ करे न छेड़िये जब तक करे बिमाड़ ॥

जाट को बदस में और बतिये को दूकाल पर नहीं छड़ना चाहिए । राजपूत को ता कमी नहीं छेड़ना चाहिए, वह चाहे जब बिगाड़ कर सकता है ।

८३९ जाट बंवाई भाजबो रेबारी सुनार ।

अरे न हुसी आपका कर देखो म्पोहार ।

जाट जामाता भाजबा जंगे का म्पापारो तबा सुनार, ये कमी अपने नहीं हाते चाहे इनसे व्यवहार करके देख लो ।

क० जाट बंवाई भाजबो रेबारी सुनार,

इतरा करे न आपरा कर देखो उपकार ।

८४० जाट अठे ठाठ ।

जहाँ जाट है वही दूब-बही के ठाठ रहते ह ।

८४१ जाट अडुलै मारिये कापलिये नै आल ।

माठ बगर में पाड़िये जोहु हो सो बाले ।

जाट जब तक बयस्क नहीं हो जाता कौवा जब तक उड़ता नहीं सीक लेता तब तक ही ये बस में आते हैं । मोठा पर जब तक बमर आया रहता है तब तक ही सपाड़ता ठोक है ।

८४२ जाट जाट तेरो पेट बांको कह में अं में ई सो रोखे राजकी जलबा म्पुंगो ।

किसी ने कहा हे जाट ! तुम्हारा पेट तो बौका है । उत्तर मिला "मैं इसी में सो गोटो-राजकी उलझा लुना ।

८४३ जाट दूई पोली बार, बाबियों दूई कासी बार ।

बौलीबार दुबने स तात्पर्य पमुबो या दूब के अभाव स है ।

८४४ जाटकी की छोरी र फलकै बिना बीरी ।

जाट को लड़की है फुलका नहीं भिस्सा तो उसके लिए ताराज होती है मानों उसे हमेशा फूलका खान के लिए भिस्सा ही हो ।

८४५ जाट न जामो गुच करे अर्ये न मानी बाहु,

अमच बिड़ो कटापकी अच म्पू रोत्रे बराहु ।

शूकर समुदाय ने जाट का एक खत बाने में महायता दी जब फमस हुई तो भाबी-भापी बाँट भी गई। शूकर चरने से और उन पर चोट पड़नी थी तो वे जम्बू के वेड से जाब को रमड भेज। जाब बच्छा हो जाता। जाट ने उनमें सेव स मिया जम्बू के वेड को कटवा दिया। इसी घटना का लक्ष्य में रखकर उक्त कहावती दाहा कहा जाता है।

२४६ जाट रे जाट ! तेरे तिर पर साड कह मियाँ रे मियाँ ! तेरे तिर पर बोसू कह तुक ली मिसी ना कह बोसू तो मरंगा ।

किमी ने जाट से कहा तेरे मिर पर साट। जाट ने कहा मियाँ रे मियाँ ! तेरे मिर पर कोसू। किमी ने कहा तुक नहीं मिसी। जाट ने कहा बोसू तो मरगा।

२४७ जाय न पिछाय न साडा की मुबा ।

यहाँ कोई अपने जाप की जबरदस्ती काम में अगया बना देता है वहाँ इयका प्रबोध हाता है।

२४८ जाब मारें दानिपू पिछाय मारें चोर ।

बनिया जानकार की अधिक ठमता है और सेव से चोगे होनी है।

२४९ जाटरी पापकी र कीर् बीदपोड़ी की जानू नी ।

जाति की ली जागकी है जोर कहंगे है कि उभा हुआ गाऊमी ही नहीं।

२५० जातें चोर छ मीटा ही चोला ।

जहाँ कुछ भी मिलने की आगा न हा वहाँ कुछ मिलना ही अच्छा।

२५१ जाबब लाया दुर जरी ।

बिना आमल क दूष नहीं जमता।

२५२ जाबो कलकलें मूं जाती करम हीदली सारी ।

वही बने जायो भाग्य भाव जाता है।

२५३ जाबो भाई खी के ओड पोई मायो पोई जोड़ ।

ऊपर जायो कहावत देखिने।

२५४ जाबो काज रही साय ।

बाड़े टायां स्पदे बल जाये साग न जायो पाणि ।

२५५ जायां पहली ग्हाज कितो ?

बच्छा जम्बू हाने न गहूँ ही प्रमूति-स्नान कैमा ?

२५६ बिई माँव नहीं जानू ऊँको पीलो ही बसू पूछनू ?

मिम माँव जाता ही नहीं उमका गग्गा बनीं पूछना ?

को काम करना ही नहीं उसके विषय में पूछताछ धर्म है ।

५७ जिब का पड़या सुमाब' क आसी बीब सू ।

नीम न बीठो होय सीबो पड़' र बीब सू ॥

स्वभाव प्राणों के साथ ही जाता है नीम गुड़ और बी से सीबने पर भी मीठा नहीं होता ।

५८ जितने की ताक कोनी उतय का मजीरा कूटगा ।

जितने की ताक नहीं थी उतने मूख्य के मजीरे फूट गये ।

५९ जितथा पूडा उतनी बल ।

जितने मुह उतनी बातें ।

मि० मुसमस्तीति बस्तुधर्मं पमाहस्ता हरीतकी ।

६० जितो करणी उसो भरणी ।

जो जमा करता है उसको बैसा ही फल मिलता है ।

६१ बीके घर में दुबै गाय सो बमु छाछ पराई जाय ?

जिसके घर में गाय दूध देती है वह पराई छाछ मीने क्यों चायेगा ?

६२ बी हाँडो में सीर नई वा बहतो ई फूई ।

जिसकी हाँडी में सीर नहीं जिसकी कमाई में सीर नहीं वह हाँडी फूटे तो फूटे दूसरे किसी को दुख-बर्ष नहीं होता । कंसूय या सुम जादमी कमाये या न कमाये किसी दूसरे को क्या मतलब है ? इसको एक विपरीत कहावत है 'सखी को कमाई में से का सीर है ।

मि राम विमुक्त सम्पति प्रमुताई । जाय रही पाई किनु पाई ।

(कुम्भीवास)

८६३ बी की आई बाजरी ऊँकी भरी बाजरी ।

जिसका अन्न जाय उसी की सुखामय की जाती है ।

८६४ बी की बून ऊँकी पुत्र ।

जिसका बून उसी का पुत्र ।

८६५ बी को बाप बीजली से मरे बी कपूली से बरे ।

मि दूर को राजेदो काम नै बूँद-दूँद पीरे ।

८६६ जो नै देख्या ताप जाई बी ही निगोदुबी व्याजय भाई ।

जिसको देखते ही स्वर जाता है वही निबोड़ा विबाह करने के लिए जाता है ।

- ६७ जीबड़ियां बुर ऊनईं जीबड़ियां घर होय ।  
 कटु माया से घर उबरइ जाने हैं मपर माया से घर बस जाने हैं ।
- ६८ जीमड़ली मेरी भासपतास कबकोला का मेरो काइसो कपास ।  
 मेरो जोम बाह जो मन्मत्त बक बेनी हैं और दूमरा मे हाया का प्रहार सहता  
 पड़ता हैं मेरे लाइले कपास को ।  
 मि रहिमन जिहवा दाबरी कह गई मय्य पनास ।  
 भाप तु कह सीतर गई, जूनी खान कपास ॥
- ६९ जीम्यां पाछे चल होय है ।  
 मोजन करने के बाद बस को जाती है ।
- ७० जीम्यार पातस फाड़ी ।  
 मोजन किया और पतस फाड़ दी ।
- ७१ जीब को जीब सागू ।  
 एक प्राणी दूसरे के प्राणों का प्राहण होता है ।
- ७२ जीबतड़ा मही बान, मर्यानें पकबास ।  
 जब जीबित से तब तो उनका कस नहीं दिया मरन पर उनके लिए पकबास  
 बनावे जाते हैं ।  
 मि० (क) जीबत पिता को फरी न मेबा मर्या पाछे काइ मवा ।  
 (ख) जीबत पिता को पूछी न बाय मर्या पाछे बाबन भात ।  
 (ग) जीबत पिता के रह्या न मेइो मर्या पाछे बीनों हइो ।  
 (घ) जीबत पिता मे जगमरंगा मे पिता पूबावे गंगा ।
- ७३ जीबतां लाग का, मर्यां ताबा लाग का ।  
 जीबित माय का या मरन के बाद मबा लाग का हो गया ।  
 हाबी के लिए प्रयुक्त कहावत ।
- ७४ जीबती लोकी जीम्या गिरी जाय  
 जीनी हुई मरनी का निगसा नहीं जा मरना ।  
 जान-बूझ कर कोई कुछ काम नहीं किया जा सकता ।
- ७५ जीबंगा नर तो करंगा घर ।  
 मनुष्य जीना खूपा ठा पर भी बना एगा ।
- ७६ जीबी बात को कहियूं जीबी हुंकारा बीनियूं ।  
 हुंकारा देने से ही बात का रंग ममता है बन्यबा नहीं ।
- ७७ जी हाडी में लाव बी में हो छेर करे ।

जिस हँडिया में चाप जसी में छेद करता है ।

८७८ जुगत जाननू हूँती जेक कोनी ।

मुक्ति जानना हँसी-बेच गही है ।

८७९ जुप बेच जोरूँ हूँ ।

जमाना बेच कर बीना है ।

समयानुसार जसना चाहिए ।

८८० जुप फाट्याँ स्यार मरूँ ।

मेद से ही नाश होता है ।

संगठन टूटने से ही नाश होता है ।

८८१ जूती जालीपी कतीक, बहु बीमारी जाबिये ।

जूती कितने दिन जरू जायेयो ? उत्तर मिला बेहोँ बीमारो जेही हातो है । बीमारी होने पर जूती काम में नही ली जाती पड़ी रहती है ।

८८२ जे दूबया तो डोडा ।

यह पगना सम्पन्न है यहाँ दूटे तो भी टोडे दूटे ।

मि० समवर सूक्या तो भी मोर्जा सूबो ।

८८३ जेठ गम्भी सूजर पड़यो ।

ज्येष्ठ में अगर बर्षा हो तो सूजर पक जाता है क्योंकि ज्येष्ठ की बर्षा से बाजरा अधिक होता है ।

८८४ जेठ जी की पोख में जेठ जी ही पोई ।

(स्पष्ट)

८८५ जेठ बीती पहली पड़बा जो अम्बर बरछरुँ ।

आस्ताइ सायन काइ कोरो भावरुँ बिरला करी ॥

आपाइ की प्रथमा की यदि बाबक गरजेना वा बर्षा हाँ तो आपाइ और भाबन मास सूबे जायेये और भाबा में बर्षा होपी ।

८८६ जेठ मू गा लबा सूँगा ।

जेठ मान में महुँवाई हो तो बर्ष मर सस्ता ही रहेया ।

८८७ जेठा अन्न बियाडिया पूरुम लै पड़बा ।

अदि ज्येष्ठ को पूबिया और आपाइ की प्रतिपदा को छीटे पड़ें तो अपमसुन समझना चाहिए ।

८८८ जेठा जेठा भाई बराबर ।

मनसे बड़ा लड़का भाई के समान होता है ।

- ८८९ बेटा बड़ा र बेटा बाबरा राम दे लो पाई ।  
प्येष्ठ सड़का बीर ज्येष्ठ मास में बड़ा हुआ बाबरा भाग्य से ही मिसठा है ।
- ८९० बेंबा घास्या हाप जमा ही जागिया,  
बदमौड़ी भूपाल क दूह्या जागिया ।  
राजा रुष्ट होने के बाद बीर बनिमा तुष्ट होने पर बेंब में हाप वाले लो समझिये कि घायब ही कुछ मिले ।
- ८९१ बेर सैंई सेर हुया करे हें ।  
छाटे बच्चों को ज्येभा नहीं करनी चाहिए, वे हो आसन्तर में बलवान् हो जाते हैं ।
- ८९२ बेंबड़ी बसग्या पन बल कोनी ज्ञाय ।  
रस्ती बल जाती है किन्तु उसकी पें नहीं जाती ।
- ८९३ बेंबो बाई घुघरी बेंका गाई पीत ।  
धो मिसका जाता है वह उसी के पीत पाता है ।
- ८९४ बें को डाड, बें की ही मोघरी ।  
उसी का मित्र, उसी के बूते ।  
उसी को वस्तु से उसी का मुकसान अबना उसी के वीमे से उसकी राबत करना ।
- ८९५ बेंतलरे बिना कितो रातोडुयो ?  
जैतलरे के गोत्रों के बिना रात्रि-जागरण व्यर्थ है ।  
राजस्थान में स्त्रियाँ विवाहादि के उपलक्ष में रात्रि-जागरण किया करती हैं । जसमें जैतलरे का पीत अबसय भाया जाता है । इस अवसर पर देवताओं के मौमसिक गीत गाये जाते हैं ।
- ८९६ बें तू परैयो छोड़-मरोड़ में निकलुगी कौडी पौड़ ।  
बाबरी ( अन्न विमेष ) की जकिन है यदि मुझे खो-जैन बार हन में देकर छोड़-मरोड़ होणे लो में इतनी बड़ु पो कि अन्न के खंडार में भी नहीं ममा मझुपी ।
- ८९७ बें बग बीनं कावतो आपो रीज बांट ।  
अगर पन जाया बिगमनाई पड़े लो आबा बांट देना चाहिए ।
- ८९८ बें बाभ्या तेरे पड़ गयो डोडो बड़ुग्या धी का कोडा में  
लौर घांड का भोजन करने धो भी डोडो डोटा में ।

हे बनिये ! यदि मुकसान हुआ तो भी क्या ? बी के कोठे में पुस बा बीर खाइ का भोजन कर, समझ जेना टोटे में यह टोटा बीर सही ।

९९९ बी मीन्धी ना कलकड़ो तो क्यों खेरें हाथी सलकड़ो ?

कर्म की संभ्रान्ति के दिन खमर बर्पा न हो तो हल खोतना ख्यरें ही क्योंकि अकारण पड़ेगा ।

९०० बी रिज तारे बाप को तो छाडा मूंज बुहाय ।

हे किसान ! अगर पिता के खान को बुकामा चाहते हो तो मापाइ में ही मूंज बो दो ।

९०१ बीसा कंसा बर जला, बीसा जला बिबेस । (स्पष्ट)

रू० इसा ही कता बर मजा इसा ही परबेस ।

९०२ बीखरें घड़ें को बीखरी अबाय ।

कमखोर बड़े की बीसी ही आबाय ।

९०३ बी बीड़ी सी तोड़ी ।

बी जोड़ता है उससे बीज दूट भी जाती है । यह कहावत ईस्वर के सम्बन्ध में भी प्रयुक्त होती है । पति-पत्नी को में स एक न रहे तो कहते हैं "जिन जोड़ी उन जोड़ी को तोड़ी ।"

९०४ क्यासा साह से शायर बिबड़ी ।

अधिक साह से बन्ने बिनइ बाते हैं ।

मि० साहसे बहुबो दोपास्तावन बहुबो गुना ।

९०५ क्यू-क्यू बड़ी हुई क्यू-क्यू पत्थर पड़ें हैं ।

क्यों-क्यों बड़ा होता है त्यों-त्यों बुद्धि पर परवर पड़ते ह ।

९०६ खर बाचक अर पावनी भोयो मंगलहार ।

संभव तीन कराय दे कहे न मासी द्वार ॥

खर, बाचक अतिथि बीर अपने-बीसे उधार मंगने बाबा यदि इनको तीन बार सचम करा दिया जाय तो ये फिर कभी द्वार पर न आवेंगे ।

ॐ

९०७ अजत बिद्या पजत खैती ।

बिद्या रटने से बीर खैती परिश्रम से सफल होती है ।

९०८ मजड़े ही मजड़े खैरी कीन्ही तो देख ।

तुम दूसरों से ही मजड़ते ही अपने अजयुज तो देखो ।

- १०९ समयको भर में बचाव जितनी ई बच ।  
समझा और मों इन्हें बाहे जितना बढ़ाया जा सकता है ।
- ११० सट काड़ी पट बाई ।  
तुरत-तुरत काम करने पर इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।
- १११ झलकत सूं सोनू कोनी होय ।  
झलकने वाली वस्तु ही सोना नहीं होती ।  
मि० All that glitters is not gold
- ११२ झूठ की बागलें ताई बौड़ ।  
झूठ की छत्र तक बौड़ होती है झूठ अधिक नहीं चल सकती ।
- ११३ झूठ बिना समयको नहीं, बूझ बिना पड़ो नहीं ।  
योगों ही अथवा सम्बन्ध हों वा झगड़ा किस बात का ? जो में एक झूठा होता है, तभी झगड़ा होता है । तरामु में तोड़ने के लिए जी बड़ा करते हैं जसमें रेश से बड़ा करने में सब से ठीक रहता है ।
- ११४ झूठ बोलचालों र घण्टी पर सोबचियाँ संकड़ेंको क्यूं भुप्यी ?  
झूठ बोलने वाला और घण्टी पर सोने वाला तभी क्यों योगे ?  
मि० झूठ बोलने में सरफा क्या ?
- ११५ झूठी राज जाली रहानी न दासी पापी ।  
व्यर्थ ही मेहनत की झूठ भी नहीं मिला यही तक कि जली हुई घानी भी नहीं मिली ।
- ११६ झूठे की के पिछाच ई बी सोगल साय ।  
झूठे की क्या पहिचान ? उत्तर, वह नीगम्य जाता है ।
- ११७ झर ने झर मारै ।  
बिप से बिप का नाप होता है ।  
क० ? झर से झर मरै ० काँटी न काँटी कई मि० बिपस्य बिपकीपयम् ।

ठ

- ११८ टका दाई से जी मुर कूंदी खोड़गो ।  
दाई टके से गई और कूंड की फोड़ मई बर्नान् यह पापक है और इसका पग्य व्यर्थ ही हुआ ।  
मि० १ दाई दांड मांपत का ई सेपी ।  
२ भाइयों की भुनी के निद जायो है ।



- ११९ टर्क की हांड़ी कुड़ी पंडक की बात पिछानी ।  
हमारी तो बोड़ी सी हालि हुई किन्तु दुष्ट के स्वभाव का पता चल गया ।
- १२० टर्क-टर्क म्यूत हूँ ।  
बात-बात में झगड़ते हूँ ।  
बो प्रविस्पर्द्धियों के सम्बन्ध में उक्ति हूँ ।
- १२१ इपकब सामो टामरी, धीजब सामो जाट ।  
कपी शत्रु में बरीब का छप्पर चुने क्या और खाट भीजने कपी ।
- १२२ इककी हुंती एक न बार, तीरब मारब होम्बो खार ।  
पैठा-टका पाठ में नहीं हूँ और विवाह करने के लिए तैयार हो गये ।
- १२३ इकको सामो न पातड़ी घर में नू बड़कबे आ पड़ी ।  
बन्धु-पस के बचपान होने के कारण घर के पिता को बहू लाने में कुछ भी  
स्वय नहीं करना पड़ा ।
- १२४ डांडो क्यूं ही ? कैं सांड ही । मोबर क्यूं करो ? कैं मरु का जाया ही ।  
परजते क्यों ही ? सांड ही । मोबर क्यों करते ही ? गाज से पैसा हुए ही ।  
बैसा मीका देखे बैसा हो जाला ।
- १२५ टाडी कैं घर नैं खेरता के बार जाले ?  
छप्पर के घर के द्वार को बुमाले में गया देर लकती हूँ ?
- १२६ डाबर हूँ बच बडी का काम कतरै ।  
हूँ तो बच्चा किन्तु बड़ों की भी बकमा दे सकने में समर्थ हूँ ।
- १२७ डाबरा की बोली बुरी, बार में मार बोली बुरी ।  
बहुत से बच्चों का शत्रु बच्चा नहीं पर में बहुत सी रिजनों के होने से  
भी फलहू बढ़ता हूँ जबका घर में बधिर स्त्री बुरी हूँ ।
- १२८ दुकड़ा दे दे बड़का पास्वा, लीब हुआ अब मारब बाल्पा ।  
दुकड़ा दे-बकर बड़कों का पाठन-बोवब किया अब वे बड़े हुए तो बारीक  
बाले ।  
कृत्यम्न माधितों के लिए उक्ति ।
- १२९ दूद पाई बालो, उड़ बजा मोर । बी मरी, जंभाई बीर ।  
बाली दूटने पर मोर उड़ गया । सड़की के घर बाले पर बामावा की  
बाबबमत नहीं होती ।
- १३० दूटती आकास ली बालो कोली लारी ।  
दूटती हुए आकास के फाई आषार-स्तम्भ नहीं कबाया वा सफया ।

१३१ दूटी की दूटी कोनी ।

जब मायु शप नहीं रह जाती तो कोई क्या काम नहीं देती ।

१३२ दूटी नाड़ बुझानो आयो दूटी खाट बलिहर छापो ।

दूटी हुई मदन बुझान की मूषक ही और दूटी हुई खाट से प्रकट होता है कि घर में बख्शता छान्नी हुई है ।

ठ

१३३ ठंडी लोह ताता न काटे ।

ठंडा लोहा गरम लोह को काटता है ।

दोसमस्यत्र मनुष्य अपने शीतल से दूसर की उग्रता का दूर कर देता है ।

१३४ ठंडेरें की बिल्ली लुङ्गली लें कोनी डरें ।

ठंडेरें की बिल्ली आवाज न नहीं डरती ।

अभ्यस्त का मम नहीं सताता ।

१३५ ठपां कै ठय पावसा ।

ठपां के यहाँ ठय हो महमान हाउ है ।

१३६ ठपां ठय ठगापां ठाकर ।

केने वाला ठय और देने वाला ठाकर कहलाता है ।

१३७ ठांपर कै हेज बन्नु भापीरी कै लेज बन्नु ।

दूब न देने वाली निकम्मी माय बछड़े के प्रति अधिक स्नेह करती है और जिसके पीहर न हो वह अधिक मस्तगी है ।

१३८ ठाकर जाया ए बुकरानी ! बुलें भाग न बँई पापी ।

हे ठाकरानी ! ठाकर जाये है किन्तु न बुझे में भाग है और न अलापार में पापी । ठाकर के महान् बख्शता का बचन है ।

१३९ ठाकर यया 'र ठय रहया रहया मुलक रा खोर ।

। वै ठाकरानी मर गई अबती ठाकर और ॥

( लच्छा है )

१४० ठाकर ली कुँल मांडपोड़ी की बुती ।\*

ठाकरानी मरान के बाहरी काठक पादर-भाग पर बिजित भी बुत हाउ है ।

\* एक मेठ ने अपना हवैली के द्वार के एक पादर भाग पर एक जमादार की लकड़ी बगवानी । एक ठाकर ने उस लकड़ का पूजा—“मेठ माह्व कह क्या है ?” मेठ ने कहा—“यह आरके बाबाजी का बिज है ।” ठाकर ने कहा “तब उनका भाग बिज के नीचे लिखवाये ।” मेठ ने ऐसा ही किया । कई बरों बाद ठाकर

- क० १ सोत ली कूल मंडपोड़ी ई बुरी ।  
 २ सातू ली कूल मंडपोड़ी ई बुरी ।

१४१ ठाकुर भई बी बाबू सनगलै बरकरा ।  
 सीरोही तरवार भहे तिर बरकरा ।  
 बाता सांभी बांत क बैल पकसया ।  
 एता बे करतार केर क्या बाबबा ॥

एक बारब परमात्मा से प्रार्थना करता है हे परमपिता ! ठाकुर जो भिजे  
 वह बहुत ली बातों का भावकार हो कबिता समझ सके । सिरोही की  
 तरवार बकरी पर बलती रहे । जब बाल परोसने का समय बाये तो सबसे  
 पहले मुझे ही भाऊ भिजे । यदि इतना सा नू प्रवान करे तो फिर मुझे और  
 कुछ नहीं चाहिए ।

१४२ ठाकरा अत भई । कहु, पयां ही बाबू है ।

किछी ने कहा ठाकुर साहब ! आपके यहाँ तो सब निकम्मे निकले । उतर  
 बिबा निकम्मे अब भी निकल ही रहे हैं ।  
 मि० बालो छोरी ली अत भयी ! कं गयां ही बाबू है ।

१४३ बाकरा की बाबर बीकर है ? कहु, भाई रे सातू रे बी बाबू है ।

हे ठाकुर ! आपके लगान क्या है ? उतर, भाई के साले के दो बच्चे हैं  
 बर्बात् न मेरे, न मेरे भाई के कोई सवाल है ।

१४४ बाकरा क्यू पाबो, कहु रोबन में ही कोनी बाबा ।

हे ठाकुर ! कुछ पाबो । उतर, रोने से कुरसत भिजे सब न !  
 क० स्वामी जी हरजस कोनी पाबो । कौ—रोने त बाबा लोक ।

१४५ बाकरा बल बाबो हो कहु, बा ही कुतां हूं बीती है ।

हे ठाकुर बली का रहे हो ठाकुर उतर देता है वह भी कुतों से छीनी है ।

१४६ बाकरा बैर बलत कडे, कहु, बैर बलत तो म्हे हो हा ।

ने सेठ के यहाँ आकर बुझा "आपके यहाँ कोई बीटी तो नहीं हुई ?" सेठ ने  
 कहा "नहीं ।" ठाकुर ने कहा, "मेरे बाबा पहरा दे रहे थे बीटी कैसे होती ?"  
 इतने बपों का मीरा हिसाब कर दें । सेठ ने कहा "हिसाब कैसा ? मैं बिज  
 मिटवा दू ना । ठाकुर ने कहा "तब भी इतने बपों का हिसाब तो कर दें ।"  
 सेठ को बिषय होकर हिसाब करना पड़ा । तभी से वह कहावत बल पड़ी कि  
 ठाकुर ली कूले पर बिबिठ भी बूच हीठा है ।

हे ठाकुर ! मर बकल अर्बन् बिआका पड़ने जादि क समय आप कहीं जाते हैं ?  
उत्तर, मर बकल ठो हम हो हैं मरपन् इमार ही कारण आका पड़ता है ।

१४७ ठाकुरां बोड़ी ठेका तीन बेसी । ठाकुर पार तो पल ही ठरुं जाती,  
बोय तो एकली बेसी ।

हे ठाकुर ! बोड़ी तीन उछाल मांगेगी । उत्तर, ठाकुर पार तो पड़ली ही  
उछाल पर नीचे गिर पड़ेगा वा उछाल तो बोड़ी अकली देगी ।

१४८ ठाकुरां ठाका बिआक ? कमबोर का तो बंदी ही पड़या ही ।

हे ठाकुर ! आप कितने बलवान हैं ? उत्तर, कमबोर के तो पूरे पड़ु हैं ।

१४९ ठाकुरां बोला आपया भीर भायो हो कह, भाग भाग तो बोला सिपा है,  
गहीं तो कार्का में ही मार गेरता ।

हे ठाकुर ! आप के बाल मफर हो गये भीर भगते हैं ? उत्तर भग-भग के  
हो तो सफर तक पहुँच है नहीं तो कार्का में ही मार डालते ।

१५० ठाकुरां पूबो पतली बीछे है ? कह लाग्यां बेरो पड़तो ।

हे ठाकुर ! कलाई पतली दिखाई पणती है । उत्तर, रूपने पर पता चलैया ।

१५१ ठाकुरां, ब्याया क कंबारा ? कह आबा । आपया क्यू ? कह न्हे तो त्यार  
हो आपलो मिक ब्याय तो पूरा हो ब्याबा ।

हे ठाकुर ! आप बिबाहित है या अविबाहित ? उत्तर, आने । आने कैसे ?  
हम तो सीयाग है कोई मड़की बने बाबा मिक आप तो पूरे बिबाहित हो  
जाये ।

१५२ ठाकुरां आपो किआक ? कह, गैल की मार बाबिये ।

हे ठाकुर ! आप कितने भग बकल है ? उत्तर, पीछे जो मार बाबिये ।

१५३ ठाकुरां मरघा सुब्या ? कह हाँवरत लडया ही नो ।

ठाकुर माहूब मुना आप स्वग मिबार पय । उत्तर, प्रत्यक्ष न सड़ा हैं ।

१५४ ठाका का दो बाँदा ।

मबल क दो हिस्से हाण है ।

१५ ठाई के पत को बोबी-बोबा बजाला है ।

मणिगानी के बन को कोई जाँचम मही ।

पि० ठाई क बल क प्रस्ता बजाला है ।

१५६ बाहे को ठीगो तिर पर ।

मबल का मडू तिर पर रहना है ।

१५७ ठाई को डोको डोग में बाड़े ।

सबक का विनका भी काठी को चाड़ सकता है ।  
 सबक अनुचित भी करे तो जो निर्बल को मुकता पड़ता है ।  
 सबक की हस्की वस्तु भी निर्बल की जोरदार वस्तु से भारी होती है ।

९५८ ठाड़े हीचे का बोय पैसा ।

सबक और निर्बल के दो मार्ग होते हैं ।

९५९ ठाड़ो नारं जर रोबक भी कौम्या से ।

सबक मारता भी है और रोने भी नहीं देता ।

९६० ठाली ठुकरायी को पेई में हाव जाय ।

बेकार बीठी हुई ठुकरायी अपनी वस्तुमा का संभालती है ।

९६१ ठाली बीठी ठोकरी घर में जाय्यो पाड़ो ।

बेकार बीठे रहने से बचना ही बन्धा ।

९६२ ठाली बीठपा सू बेगार भलो । ( ठालक से बेगार भलो )

बेकार बीठे रहने से बेगार करना ही बन्धा ।

मि १ ठाली बीठयो पल पूयल होय ।

२ साथे बिजरी तो साथ कुहारी ।

९६३ ठिकाले डाकर मुबीने ।

राज्य से ही ठाकुर को प्रतिष्ठा होती है ।

९६४ ठिकाले से ई डाकर जायं ।

राज्य से ही ठाकुर कहलाता है ।

९६५ ठोकर जात हुंस्वार होय ।

मनुष्य ठोकर जाकर ही होधियार होता है ।

रू पड़ पड़ ई अतवार होमा करै है ।

४

९६६ डर तो बन्दे जायं को है ।

डर तो अधिक जाने में है ।

९६७ डाकम जर जरल बडी ।

डाकिन और "जरल बडी" और भी मर्यकर हो जाती है ।

मि० १ मिलीप जर नीम बडी ।

२ करेलोंद नीम बडपी ।

९६८ डाकम बेडा से क से ?

डाकिन बच्चे सेटी है या बेटी है ? बर्नात् सेटी है ।

बुरे आत्मी से मछाई की भाषा नहीं को वा सख्ती ।

१६९ डाकियां के ग्यामी में नूतारों का मठका ।

डाकिनियों के महीं जब विवाह होता है तब वे निमंत्रितों को ही निमत्त बाटी हैं ।

१७० डाकियां से पांश का नन्ना के छाता है ।

डाकिन पांश के बच्चों को मन्नीभाति जानती हैं ।

१७१ डाडी के लाग्यां आपसी पहुमां बुसाबै ।

सब पहुके अपने स्वार्थ को देखते हैं ।

मि० सर्व स्वार्थ समीहते ।

१७२ दिग्बरो के पांश में घोड़ी को के काम ?

दिग्बरो के गाँव में घोड़ी का क्या काम ?

१७३ झूँवर बड़तो पाँवलो, सीस अणीत्री भार ।

धिर पर बहुत सा बोझ लाए कर पंशु परंत पर बड़ता है ।

१७४ झूँपर तो देख ना का ही होय है ।

परंत तो देखने के हो होते हैं ।

१७५ झूँपर बलती बीरै पनां बलती कोनी बीरै

पहाड़ पर बलती हुई आग बिलाई बेंतो है, पैंरों बलती हुई नहीं ।

दुष्टों के शोष को देखता है अपने शोषों को नहीं ।

मि० झूँ पर बलती लाय, बीरै धारो ही अपत

आबलती निअ पाय एतो न सूरी राजिवा ।

१७६ झूँगरां नै धम्या कोनी होय ।

परंतों को छाया नहीं होतो क्योंकि उनसे ऊँचा कोई नहीं होता ।

महापुरुषों को मदर करना साधारण आवसिनों का काम नहीं वे अपनी

मदर स्वयं ही करते हैं वा ईश्वर उनकी मदर करता है ।

१७७ झूबतो तिबाली नै हाय घालै ।

झूठा हुमा मनुष्य धैबालों का आशय सेता है । विपत्ति में पड़ा हुमा मुञ्च

के मुञ्च बस्तु का सहारा लेता है ।

१७८ झूमको धामे ती बखामै ।

झूम को रानी यदि कुछ जाने ठानी तो कुछ धम का बचन कर सख्ती है ।

१७९ झूम नाय-नाय बरै, बनीरुं के बरै ही लोम्या ।

सूम माना कर मर जाता है, स्वामी को बरत-सो भी परबाह नहीं ।

क० सूमड़ो रो-रो मरयो बनी के बर्षे ही कोनी ।

१८० सूमची रे रोबक में ही राग ।

सूम की स्त्री रागिनी में ही रोती है ।

क० सूम की रोबे बी राग में है ।

१८१ सूमां आडी डोकरी, बकवां आडी मीस ।

बुझिया सूमां के मार्ग में और मीस बकवां के मार्ग में बाधक ही जाती है ।

१८२ डेड बड़ो " र डीबबाबू पाठे ।

बर में तो कुछ है नहीं और डीबबाबू को पानी पिलाना चाहता है ।

१८३ डेड डेड को नपरी में डारि डेड बायो है ठनीयो ठगावेयो नहीं ।

जिस नपरी में डेड डेड रखा है वहां बड़ाई डेड बाबबा है वह उसे ठोकर ही ठगावेगा नहीं ।

१८४ डोकरी बुसाब केका ? बामे-बवे का ?

हे डोकरी ! ये मसान किसके हैं ? उत्तर—जी बल्ले-बल्ले हैं उनके ।

१८५ डोकरी र राज कबा कीब ।

बूडा को राजनीति से क्या काम ?

४

१८६ डकपोड़ी मत उबाड़ और भू बर तैरो ई है ।

बहू ! डकी हुई बस्तुओं को तो उबाड़ना मत और जैसे बर तुम्हारा ही है ।

बर का परीक्षास न करना ।

१८७ डवां खेटी, डवां न्याय ।

डंव से हो खेटी होती है और डंव से हो न्याय होता है ।

१८८ डक्यो घाडी तुयो मारी ।

। स्वार तो बिहना में हो है बर नोजन कंठ को घाटी को पार कर गया फिर मिट्टी ही है ।

१८९ डीगा कतरा हो बलाले पतासी एक घामू ना ।

— कहानी यों है कि एक बाबनो किसी बूकानदार के पास एक पीसे का बठाया लेने गया । बूकानदार बठाया ठोकने लगा तो घाहक ने कहा "एक डीपी तो और बाल । इस पर बूकानदार ने उत्तर दिया "डीगा तेरो मन ही बितरत बलाले पतासी घामूना एक ।"

इस कहावत का प्रयोग उस व्यक्ति के किये होता है जिनसे बात चले बितर्क

करवाओ किन्तु निहाम किसी को नहीं करता ।

- ११० डेढ़ को मन नहपावई में ।  
डेढ़ का मन निरूप्य बरतवों में रूढ़ा ह
- १११ डेढ़नी और रामल का भाई ।  
डढ़नी और रामबास में था भाई । अब किसके बचकर ।
- ११२ डेढ़ न सुरग में भी बेवार ।  
डेढ़ को स्वर्ग में भी काम करना पड़ता है ।  
नि डेढ़ ने सुरग में ही बिसाई कोनी ।
- ११३ डेढ़ रे साथे पाप 'र जोमो भाबे जागली भर कर बाबो ।  
डेढ़ के साथ छऊ कर भोजन करो या मंगुलि भर कर चबडो एक ही बात है ।
- ११४ डेढ़ रो फस्तो लयाबो, भाबे बावै पड़ो ।  
डेढ़ का कपड़ा स्वयं करो या मले लगा कर मिनी एक ही बात है ।
- ११५ डेढ़ों की सुरसील लुं बाब जोड़ा ही भरै ।  
( कायसा के छराप सू अंत कोनी भरै )  
डेढ़ों के सोमने स पयु नहीं मरते ।
- ११६ बोसी का डूंगर बीरना होता तो नारलीस का कुत्ता कबेत का बाढ ज्यसा ।  
बोसी के पहाड़ बरि बिचने होते तो नारलीस के कत्ते कमी के बाढ जाते ।  
बोनी के पहाड़ पर ब्यवन ज्यवि का सामम है जा नारलीस के पाँच मीस  
की डूरी पर परिचम में स्थित है ।

ठ

- ११७ लंगी में कुछ संघो ?  
जब पैसा पाय में नहीं रूढ़ा तो कोई माय नहीं देता ।  
नि० से होई-होई का सीरी है ।
- ११८ तड़के तो ह्यो बकाबक । कहु, कं के ? कहु या भो लीको है । - १/१  
कल तो नूब मिछाई चड़ेमो । डूमरे मे पूछा किमके मही ? उत्तर दिया,  
यह भी मन्गी बात है ।
- ११९ तरवार की घाब भर क्या, बात की कोनी भरै ।  
तरवार का घाब भर जाया है बात का घाब नहीं मरणा ।  
नि० १ मोह लबी तरवार न लाये, बीम लनी तरवार जितो ।



२ तरवार को घाब भर ज्याम पज बोली की घाब की भर ना ।

३ पीछी को घाब भर ज्या बोली की कोनी भर ।

१००० तर्ज तो हूँ पर ऊपर टांग मेरी ही है ।

कृष्णी में चित्त भर विमा नबा है किन्तु फिर भी अपनी हार स्वीकार नहीं करता । कहता है, नीचे हूँ तो क्या हुआ ? टांग तो मेरी ही ऊपर है ।

१००१ तब की काबो न सासर की माजी न कटेई बोड कोनी ।

उने पर जा रोटी कच्ची रू खाती है तथा जो स्त्री ससुराल से नप जाती है इन दोनों का कहीं ठीर ठिकाना नहीं रहता ।

१००२ तई चढ़े न बाड़ जाय ।

जब घर में जाने वालों की संख्या अधिक हो और घाब ही हो बारिखप तो जाने वाले उने पर से ही रोटो ले लेते हैं इस घर से कि कहीं न भंगित न रह जाय ।

१००३ ताप्पा तेरे मांज बात बाई है, कहू, मेरी बातो बी कठे है ।

हे कोपीन ! तुम में दुर्जन्य आती है । उतर, मेरा निवासस्थान तो देखो ।

१००४ ताप्पू कुचतो पोसाका में ।

कोपीन कोई पोसाक बोड़े ही है ?

१००५ तावा पाबो सं कठी बाड़ कल ?

परम पाती से बाड़ मही जक सफटी ।

केवल जोब भरे भाक्यों से किसी का अनिष्ट मही हो सकता ।

१००६ तस्तो बाई छामा तोबे बीको बंध पिछोकड़ रोबे ।

जो वरम भोजन करता है और छाया में सोता है उसका बंध से कमी पाला मही पड़ता ।

१००७ ताली काप्पा तालो जुलै ।

बाबी से ही ताला जुळता है ।

युक्ति से ही काम होता है ।

१००८ ताबलो छी बाबलो ।

जो सीपठा करता है वह पानक है ।

१०१ तिरिया चरित्त ब बाबे कोप जसम मार के सती होय ।

स्त्री के चरित्त को कोई नहीं पहचान सकता ।

स्त्री अपने पति को मार कर भी सती हो जाती है । इस सम्बन्ध में

। भीरु-कथा प्रसिद्ध है ।

- १०१० तिल देखो तिलों की पार देखो ।  
तिल देखो तिलों की पार देखो अर्थात् बैर रखना ।
- १०११ तीज त्योहार बाघड़ी के डूबी गणगौर ।  
तीज के बाद जल्दी-जल्दी त्योहार आते हैं गणगौर के बाद चार महीनों तक त्योहार नहीं आते ।
- १०१२ तीजां पाछें तोरड़ी हीली पाछें बूंड,  
कोरां पाछें चुनड़ी माग लसम लें बूंड ।  
तीज के त्योहार के बाद यदि कोई बस्त्रादि भेजे और होनी के बाद होनी के उपलक्ष में कोई चीज भजी जाय भाबर फिर लेने के बाद यदि चुनटी भेजी जाय तो सब व्यर्थ है । समय पर ही कोई बस्तु काम देती है ।
- १०१३ तीतर के मुँई कस्तल है ।  
अगर तीतर गुम बाकठा है तो अन्धा धकून समझा जाता है ।  
समाज का कोई विविष्ट व्यक्ति जो कह दे बही भ्रामाधिक है ।  
इस कहावत का प्रयोग उस समय होता है जब दो आशयियों का शब्दात्पंचायत या अशक्त में बला जाय । तात्पर्य यह है कि जब तोपंच जो कुछ कह दे बही ठीक है अथवा हाकिम जो कुछ फैसला कर दे बही मात्तम है ।  
मि० १ पच कर दे सो म्याय । २ हाकिम के मुँई म्याय है ।
- १०१४ तीतर छोड़ बपी में बीया भटकी हो गया भीराला ।  
भटकी ने तीतर पाल रखे थे अब उन्हें बग में छोड़ दिया तो भटकी निमित्त हो गये ।  
क० तीतर छोड़ बपी में पाग्या, भटकी हुवा भिराला ।
- १०१५ तीतर वंछी बावली, बिबबा अजल रोज  
बा बरसै बा घर करे ई में मोन न पैल ।  
यदि तीतरवंपी बदनी हा और बिबबा रबी की आँख में काजल की रेखा दिखाई दे तो समझना चाहिए कि पहनी तो अवश्य बरसेपी और भूमती अन्नम ही नया पति करेगी इसमें कुछ भी संदेह नहीं ।
- १०१६ तीज तेरा घर बिबरें ।  
तीज तेरह होने से घर बिबर जाता है ।
- १०१७ तीज पुताया तेरा माया मई नाम की बापी,  
रापो अतन पू कहें जो बाल में बापी ।  
तीज बनावे और तेरह जायन । अब जतनी ही बाल में काय नहीं चल

सकता । इसलिए बाल में पानी से बेना चाहिए ।

- १०१८ तीन सुहानी तेरा बाली, बाँटल बाली सतर जणी ।  
तीन मीया की पपड़ियाँ हैं जिनके लिये ११ बालियाँ और उन्हें बाँटने के लिए ७० रिजियाँ । इतना माइम्बर ।।
- १०१९ तीसरे सूखो आठवें मकाल ।  
प्रति तीसरे वर्ष वर्षा का अभाव प्रति आठवें वर्ष मकाल । राजस्थान के लिए उचित ।
- १०२० तुरकनी के राज्पोड़ा में के कसर ?  
मुसलमान स्त्री के अश्राफि पकाने में कोई बूटि नहीं रखती क्योंकि वह बीच-बीच में बच्च कर परीक्षा कर लेती है ।
- १०२१ तुरकनीरे कात्पीड़े में ही फ़िरकड़ो ।  
मुसलमान रिजियाँ जहाँ कातने में सिद्धहस्त होती हैं बरि उनके काते सूत में मोटा बंध आजाय ता यह बनहोनी बात होपी ।
- १०२२ तू आँदीली ने जलखीली बपूकर होम अटाव ?  
जहाँ बीनों अपने-अपने हठ पर अड़े र्हें वहाँ कैसे निबाह हो सकता है ?
- १०२३ तू ई गाँव को बीबरी तू ई तम्बरवार ।  
तू ही गाँव का बीबरी तथा-तू ही तम्बरवार है ।
- १०२४ तू बपू साडो उममनी तेरे सेबीबाको साव ।  
मेरी लाकड़ी लड़की ! तू उमम क्यों है ? नाका बालन करने बासा तुसे पति के रूप में प्राप्य हुआ है ।
- १०२५ तू जगानी में पाबियो तू बेस्या में भाव ।  
तेर ज़िमाये मेरे बीमर्द में पत्थर पड़ियो रै राव ।  
एक बार एक बेरवा ने पुष्य सूटने के छोम से एक ब्राह्मण को निर्ममित करने का निश्चय किया । उसने अपने बाप को जगानी के रूप में प्रकट किया । कोई ब्राह्मण ता उससे यहाँ गया नहीं । तब किसी भांड ने ब्राह्मण की बेधमूया बनाकर उसका निमंत्रण स्वीकार कर लिया । अब भांड भोजन कर चुका तो बेरवा ने उससे कहा कि बर्मोत्पार्जन की दृष्टि से मैंने बाब एक ब्राह्मण को निर्ममित किया था । इस पर उस भांड की जमित है कि बरि तू जगानी है तो मैं ब्राह्मण हूँ बरि तू बेरवा है तो मैं भांड हूँ । बी बराबर के अहम व्यक्तियों के पारस्परिक व्यवहार पर जमित ।
- १०२६ तू डाल-डाल में नाम-नाम ।

तुमसे अधिक मैं बालबाज हूँ जर्नात् तुम्हारी बालों को घनी भाँति घम  
सटा हूँ ।

मि० तुमि बेकाठ डाले बाले आमि बेडाइ पाताम पाताम ।

२०२७ तूँ की राणी मैं की राणी,

कून भरै पैडे की पाणी ?

जब पर का कोई व्यक्ति अपन हाथ से काम नहीं करना चाहता तब इस  
उचित का प्रयोग किया जाता है ।

२०२८ तू धाई दिग एक बार ता म आळं दिग अट्ठ ।

तू म्हाँ से करड़ी रहै तो म्हेँ बी करड़ा अट्ठ ॥

यदि तुम मेरे पाम एक बार आओ तो मैं आठ बार आऊँ । यदि तुम दूर  
रहो तो मैं भी अट्ठ की तरह अठोर हूँ ।

२०२९ तू जानूँ मैं जोड़ी राम मिलायो जोड़ी ।

तू काना है और मैं लँगड़ा हूँ । मयबानूँ मे अन्नी जोड़ी मिलारै हूँ ।

२०३० तू बालें तो बाल निवोइया मैं तो रंपा ग्हाळंयी ।

१। तुम बली तो बको, मैं तो गगा-स्तान बनने जाऊँगी ।

२०३१ तू रोबे हूँ छाल मैं सं बूमब भाई कै उपातो की कै अँ स्याळं ।

तू छाल न मिलने से बुझी हो रहा है मैं यह पूछने के लिए भाई हूँ कि उभार  
कहाँ से काळे ?

२०३२ तेरा मेरा बी गेला ।

तुम्हारे और मेरे अलग अलग राप्ते हैं ।

२०३३ तेरो भाँज मैं तासूँ पूँ हूँ कापर बना ठुण ।

तुम्हारी आँस में तासूँ भीक रहा हूँ बापर मत होना ।

२०३४ तेरो मेरो बीनो मैं ईँ को जलें ना ।

हम दोनों की बालबाल में ही नहीं पण्डी ।

२०३५ तेरँ ह्योइय मैं म्पूरो हूँ कइ मेरे तो लपला डारै मेइया हूँ ।

तुम्हारे छोटे बच्चे का निर्ममण है । उत्तर मिला तुम बड़ का निर्ममण  
दा या छोटे का मेरे तो छोटे-बड़े सभी बच्चे अझारै तेर खाने बाने हूँ ।

२०३६ तेस तो मित्पा मैं सं हो बीकलवी ।

तेस ता तिलों मे ही निकलपा ।

२०३७ तेस बल जाती बल, नाँव रिवा की होय ।

तेक बलजा हूँ बली बलखी हूँ किन्तु दीपक का नाम होता है । लोप कहते हैं दीपक बल रहा है ।

मि० तेक बल बली बल, नाम दिने का होम ।

बेटा तो पीरी बल नाम दिने का होम ॥

१०३८ तेल बाकवा घँक पूजा ।

तेल और बिसाये हुए मोठ से बोक की पूजा होती है ।

१०३९ तैली की बीरु सृखो क्यूँ जाय ?

तैली की स्त्री अहुरसबा तैक का टाठ रहता है बसा-भूसा क्यों जाय ?

१०४० तैली तू बल अतरौ हुई बसीले जोय ।

बानी से बली बल उतर गई, तब वह ईश्वर के योग्य हो गई ।

घ

१०४१ पारो म्हारो बीली में इतरो ही करणक ।

तू तो कसूँ करेस्ताँर हूँ कसूँ बरबल ॥

गुम्हागी और मेरी बीली में इतना ही अन्तर है । जिसे मैं बरबल कहता हूँ उसें तुम फरिस्ता कहते हो । बरबल बल घब को कब में से निकाल लेता है वो मुसलमान कहते हैं फरिस्ता इसे बिहिखत में ले जा रहा है ।

१०४२ पारो पतार, म्हारो सिबवार ।

मासिक बिस कपडे आदि को पुराना समझ कर उतार फेंकता है वह गरीब गीकर-बाकर के लिए म्हागार का काम देता है ।

१०४३ बाबर की बाबर ही किला गाँव बसे हूँ ।

पुत्र-कामना करने वाली मुर्खी सिबवाँ धनिवार के बिन दूसरी के घर में जाय स्या देवी है किन्तु हर धनिवार को देना पड़े ही होगा है ? अन्ध विश्वास के अनुसार ही यदि अनिष्ट होता जाय तो सवार कैसे बसे ?

१०४४ बीबी बबो बाबे घबो ।

बीबा बना अधिक शम्द करता है ।

जिनमें गुन नहीं होते वे ही बड़-बड़ कर बातें करते हैं ।

मि संपूर्वं कृन्नी न करोति शम्दन् अर्द्धो बटो बोवमुनीति नूनम् ।

विश्रान्तुःकोनो न करोति गर्बम् पूर्वविहीना बहु अल्पयसि ।

१०४५ बीबी संस पराई कूँक से बाबे ।

बीबा संस पराई कूँक से बनता है ।

जिसमें नाँव की बुद्धि नहीं होती वह स्वतः कोई कार्य नहीं कर सकता ।

दुमरा बैसा कहता है वह बैसा ही करता है ।

६

१०४६ दयाबाज दूजु गर्ब बीतो चोर कबाय ।

बोलेबाज बीटा चोर तथा बनूय सं मब दून जनत है ।

१०४७ दगो फँकी लगो नहीं ।

बनाबाज किसी से भी दगा करने से बाज नहीं जावे ।

१०४८ दबी घूसी कान कटावै ।

मि० दबी बिल्ली घूहों से कान कटाव ।

१०४९ दपड़ा को लोभी बातों से कोमी रीसं ।

बन का लोभी बातों से मस्तुष्ट नहीं हो सकता ।

१०५० दमड़ी का छाया पुजापार भवाई ।

पैसा पीड़ा आश्चर्य बहुत ।

१०५१ दलाल के दिवाला नहीं म्हुबीत के ताका नहीं ।

दलाल के दिवाला नहीं होता ममजिप के ताका नहीं होता क्योंकि मस जिप में रखा ही क्या है जो ताका लगाना जाय ?

१०५२ दसां बाबड़ी बीसां बाबला

तीसां तीखो चालीसां बोको ।

पचासां पाको साठां बाको

सतरां मूमो अस्ती मूमो ।

बर्षे मांगो लोबां ती मांगो ई मांगो । \*

अर्थात् दस बर्ष की अवस्था तक तो बच्चे का लाड-बुझाव होता रहता है उसके बाद बीस बर्ष तक अन्तर्द्वेष की अवस्था रहती है तीस बर्ष तक तीक्ष्ण की अवस्था है, सत्पंचान् चालीस तक ममजरायी की मज्जती अवस्था है फिर पचास तक ज्ञान-आर्ति अनुपम परिपक्व हो जाता है साठ बर्ष की अवस्था में पूर्ण कर वह पचने लगता है ६१ में ७० तक जनक प्रवार के मूल ( वर ) बचने लगता है तत्पश्चात् मम्मी बय की अवस्था

\* पाठान्तर—सतर में मूलनी अम्मी में कटनी

मम्मे में माया मो में ता उठ भागो जो भागो ही भाया ।

गुफ्या = अर्द्धरिप योग्यता । गुफ्या = मुक हुए गरीर बाता ।

( पाठान्तर भी ब्रजभाषा आरन्दिदा के मौख्य में प्राण )

तक मंथो म पकूठा पर कर लेती हूँ फिर \* बर्ष की बबस्वा तक वह देह की सुध-बुध मूल कर लने की तरह रहने लपटा है और ९० क बाब १० बर्ष तक तो संसार से बिबाई ही बिबाई है कभी भी महाप्रमाण के लिए भिमग्गज भा सकता है ।

- १०५३ बात बरती बामनो बारी और बरबान,  
ये पाँचु बबूबा बुरा पन राखै भगवान ।  
बाँग बरती बामनो बारी और बरबान व अलग से प्रारम्भ होने वाले ये पाँचो बहुत बुर होते हैं भगवान ही दम्बत रखे ।
- १०५४ बात बलाई डूब जगाबी, लो कीली बर्षे ।  
बाँत भले ही डूब जावो कोई लोहा नहीं बचा सकता ।
- १ ५५ बातला कसम को रोबता को बोरों परै न हूँसता को ।  
बतुल पति का न रोले हुए का पठा लगता है न हूँसते हुए का ।
- १०५६ बाई से पेट जानो कभी ।  
बाई से पेट छिवा नहीं है ।  
जब ऐसे मनुष्य से कोई बात मुत्त रखने की चेष्टा की जाती है जो सब रहस्य जानता हो तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।
- १०५७ बाता रे मंडारी को पेट कर्म ।  
बाता पान बेता है मंडारी का जी बुझता है ।  
क० बाता रे मंडारी को पेट फाटै ।
- १०५८ बाता से सूम जलो को लट रे उतर देय ।  
जब कोई बातार किसी को बेने के लिए बचन तो बेता है सेने/जाता है तो टाकता रहता है तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है । इस प्रकार के बातार से सूम अच्छा है जो शीघ्र बचाव तो व बेता है ।
- १०५९ बाहुबुधारा नें कागसिया को के काम ?  
बाहुबुधारे में कर्षों का क्या काम क्योंकि बाहु पकी सफाबट रहते हैं ।
- १०६० बावो असो सारो बाहुयो के जान विन नै दिन भाई रही ।  
बावा ने ऐसा बिबाह-मुहूर्त निकाला कि बराब उसी दिन भाई रही । किसी अनुमान के हूबहू सच्चा सिद्ध होने पर इस उक्ति का प्रयोग होता है ।
- १०६१ बावो भी जायो म्हारी हूँसनी सूबस्यो ।  
पूर्वजों का पीग्व बिलकाने के लिए वह उक्ति है ।
- १ ६२ बाग की बाझी का बात कुन बेस्या ?

को बलिमा दान में मिलती है जयक दान नहीं देने जाते ।

३०६३ बाले बाले झोर-झाप है ।

प्रथेक दाना भी भाग्य में लिखा हुआ ही मिलता है ।

३०६४ बाले बाले लम्बा लीकदार, ये बाई ! परताप तुम्हारा ।

किरी ने बूढ़ के साथ अपनी लड़की का विवाह कर दिया जिसने झड़की के पिता का बड़ा स्वायत्त-सरकार हान लमा । जाने को बाल-नाग मिससे लये । इस पर उसकी अपनी लड़की के प्रति उक्ति है ।

३०६५ बाले लहा उदास ।

को लौकर है परतम्भता के कारण बह सदा उदास रहता है ।

३०६६ दिन जाया राख्य करे ।

जब समय जाता है तो राख्य जैसे धक्का-गांभी भी वास्तु-वक्त्र की लपट में आवाते हैं ।

३०६७ दिन करे तो बीरी कोम्पा करे ।

जो समय करता है वह बीरी भी नहीं करता ।

मि० दिन देख नहीं मजते मजिदाप किमी जल का मुख मोग कभी

( मारने लक्ष्मण )

३०६८ दिनों को भूखीकी लंगवा घरो मा ग्याप तो भूखीको कोभी बात्रे ।

मूबह का मुला हुआ मदि मरि को घर मा जाय तो मूला हुआ नहीं कहाना ।

३०६९ दिन बातां बार कोनी लाये ।

समय को जाते घर नहीं लपटी ।

मि १ दिनका जाय ताकी भूँ बैता ।

२ दिवस जात मदि लायहि बास । ( भुखी )

३०७० दिन दीर्घ न कुछ पीसै ।

जब तक भूप नहीं निजन्वी फूट्ट पीयना प्रारम्भ नहीं करती ।

३०७१ दितां का दिवस लाईवार है ।

दिने का मायी निष्ठ है ।

मि० में तमरे किनोक लार्पु ? के—तू तेरी जातना में है पूछ के । तू तमरे ही पूछ के ।

३०७२ दिस्ती की कमाई दिस्ती में लवाई ।

दिस्ती की कमाई दिस्ती में ही लवे कर ही । दिस्ती लखीनी जयद है

इसलिए वही की कमाई वही जड़ जाती है । मि० भई की कमाई



मूँछ मुंडाई में गमाई । मड़वा जो कुछ कमाता है वह मूँछ-मुंडाई में खर्च हो जाता है ।

१०७१ बिल्ली में रङ्ग कर भी भाड़ झोंकी ।

क० बारा बरस बिल्ली में रमा' र भाड़ झोंक्या ।

१०७४ बीपक की जाँची नहीं बल बल मरै पर्यय ।

पर्यय बस-बस कर अपने आपको बीपक पर म्यौंछावर कर देता है बीपक को इसकी परमाह ही नहीं ।

१०७५ बीबा बीली पंचमी, बी छत्रि भूक पड़त ।

बिबना बिबना बीबना, म्युंया नाथ करत ॥

कार्तिक सुबी ५ को मूँछ नक्षत्र में यदि छत्रिबार हो तो नाम बिबना बसुना महंगा हो ।

१०७६ बीबा बीली पंचमी, मूँछ नक्षत्र होय

अप्पर से हाथां छिरे, भीख न वाली कोय ।

यदि कार्तिक सुक्ला पंचमी को मूँछ नक्षत्र हो तो अकारण पड़ेगा । अप्पर हाथ में लेकर फिरने पर कोई भीख तक नहीं देगा ।

१०७७ बीबा बीली पंचमी, लौम सुधुर पुब मूँछ,

अंक क्ये है नइइली, निपचे सारुं सुख ।

कार्तिक सुबी पंचमी को यदि मूँछ नक्षत्र में छोम बृहस्पति वा शुक्र हो तो छारों किसम का नाम सुख उपजे ।

१०७८ बीबाजी का बीबा बीठा,

काबर बीर मतीर मीठा ।

बिबाली के बाद काबर, बेर, मतीरे मीठे हो जाते हैं ।

१०७९ बुझा की जाँची नाथ सरासुखराम ।

है तो बुझों का मांडार बीर नाम है सरासुखराम ।

१०८० बुनिया की बीभ कुछ पकई ?

बुनिया की बीभ कीम पकड़ सकता है । वह तो जो चाहेगी कहेगी ही ।

१०८१ बुनिया बुरजी है ।

( स्पष्ट )

१०८२ बुनिया देईं अती कहरे ।

बुनिया बीबा देखती है बीबा कह देती है ।

१०८३ बुनिया में कुछ बीत ?

दुनिया को कौन जीत सकता है ?

१०८४ दुनिया पराये सुख डूबली है ।

दुनिया के शीघ्र डूबनों के सुखों को देख कर चलते हैं इतकिये वे हीर्ष्यामि  
में चलते रहने से डूबसे हो जाते हैं ।

१०८५ दुनिया में दो पटील है दो बेटी, दो बाल ।

दुनिया में दो ही पटील है या ठो बेटी या बाल जो सदा डूबनों के बचीन  
रहते हैं ।

१०८६ दुनिया है अर भतलल है ।

दुनिया में सिबाय स्वार्थ के और कुछ नहीं है ।

१०८७ दुश्मन की किरपा बुरी, भली सैन की प्राप्त,

बाईंग कर गरमी करे, अर बरसप की प्राप्त ।

घबु की दृषा की अपेक्षा मित्र की डाँटकपट अच्छी है । बायल संभकर  
अब बर्नी होती है अब बर्पा की आधा होती है ।

१०८८ डूबकर की मोरङ्गी हावां बरली मोरङ्गी ।

बागड़ बागड़ आरुमी, बीरुमी तो बाहंगी अर व्यारुमी ।

डूबकर की स्त्री हाप पर की मोरुगी के समान है । उसका बहुत आदर  
होता है । उसकी दृष्टा-भुक्ति में बाया वाली बाय तो वह मारने बचपा  
स्वयं मारने की बमकी देती है ।

१०८९ डूब बर्पा का पावकां छाछ नै बलबाबपा ।

डूब-खी बाके मेहुमान काछ बीना पसल नहीं कखे ।

१०९० डूब की डूब, वाली की पापी ।

जब यथोचित व्याप कर दिया जाता है तब इस उचित का प्रयोग कखे हैं ।

टि० इस कथावत कैपीछे जो लोक-कथा कही जाती है, वह अत्यन्त प्रसिद्ध है ।

१०९१ डूब बुंधार्य भावङ्गी, भाव बाय की होय ।

असल में तो भाता डूब पिलाती है और भाव भाव का होता है ।

१०९२ डूब पीती बिलाई मंडकङ्गा में जा बङ्गी ।

डूब पीती हुई बिल्ली बच्चों में जा पङ्गी बर्बायू मीन से जीवन म्पटीत  
कारने बाते पर आकस्मिक छंफट जा पङ्गा ।

१०९३ डूब बेचो भाई पूत बेचो ।

डूब बेचना और पूत बेचना समान है ।

डूब बेचना निषिद्ध समझा गया है ।

- २०९४ डूय भी बोली, जाम भी बोली ।  
यह भोजन-भासा है इसके लिए डूय भी खरबे है और छाछ भी छठेर है ।
- २०९५ 'डूय' भी राक' जुहारी भी राक ।  
दम्बल भी बनी रहे पैसा भी बना रहे ।  
ऐसा काम जिसमें बागों में किसी का बुरसान न हो ।  
मि सोंप भी परज्माय साठी भी न दूट ।
- २०९६ डूय हाली की साठ बी सहनी पड़ें ।  
जो माय दूय देन बाणी होती है उसकी साठ भी सहनी पड़णी है ।
- २०९७ डूवकी ली बरबाटी हो हीरक ।  
डूव लो करने के लिए ही होयी है ।  
सार्वजनिक वस्तु सब के उपयोग के लिए होती है ।
- २०९८ डूबल पर दो लखे ।  
डूबले पर दो लखते हैं ।
- २०९९ डूबली बर दो साड़ ।  
तिर्बल पाय-बीह ही और दो आपाड़ मात्राय लो उनके लिए बर्पा के अभाव में और भी मुश्किल हो जाती है ।
- २१०० डूबली खोती बनी न मारें ।  
अस अस पैसा हो लो खोती करने काल को मुकसान बढाया पड़ता है ।
- २१०१ डूयली भीरु डूयरा की जाम से बोले ।  
अब किसी के यहाँ पाय अथवा पैस लो ही किन्तु डूय बहुत कम देती हो लो उस बर वाले डूयरो के यहाँ छाछ के लिए भी नहीं जा सकते ।
- २१०२ डूयली बेट देवरा बगबर ।  
कमबोर बेट ( पति का बका मारि ) देवरा के बगबर लगना जाता है ।  
पब में उच्च होने पर भी कमबोर का आरद लही ।
- २१०३ डूर का डोल लुहाबबा लय ।  
डूर की वस्तुएँ अन्धी अमठी है ।  
मि = डूर का पहाड़ सुरंगा लार्प ।  
डूरवा पर्वता-रज्या ।
- २१०४ डूर बंधाई पूक बरोबर, पाब बंधाई आरौ ।  
पर बंधाई पब बरीबर, बाबे जितनी लारी ।  
बामाला यदि डूर रहे लो वह पूक-सदृश समझा जाता है । अथवा बड़ा

- बाड़-बाड़ होना है और बहु भाग्यवश नहीं जान पड़ता। यदि बहु उमी  
 शीब में रहने वाला हो तो उमका भाया जावर घट जाना है और यदि  
 उमका घर में ही रहने लगे जाय तो बहु गण उमका सपना जाना है और
- १०५ इमरीं लई परीं ध्यार जाटीं पर कमर जुल ।  
 इमरा क पर बाग खाना पर कमर काया की जाती है ।  
 इमरीं क मही अधिक भाइम्बर किया जाना है ।
- १०६ इमरीं की मात लूतड़ी की घड़ में जाय ।  
 इमरा का बम कारबाही में व्यय किया जाना है ।
- १०७ इमरीं पर बुरी बोनी बना माय पर ई पड़ ।  
 जो इमरीं का बुरा सोचता है उमा का मजिष्ट हाना है ।
- १०८ इमरीं की धाली में घो घर्नु बीली ।  
 इमर की धाला में जो अधिक शियमाई पड़ता है ।
- १०९ देन्ने नीजां बालनी गोडां ।  
 धाली में दहन का तथा वेरी में बन्द रहने की गरिब रहत ही मृग्यु हो  
 जाय ता मुतर है ।
- १११० देज पराई चुपड़ी मत लतबाई जो  
 मृग्यो-मृग्यो जाय कर ठंडो पाया घी ।  
 पराई चुपड़ा हुन गीरी देव न भयत वा म लान्द म कर कमी-मृगी  
 या कर तथा ठंडा पाता पीतन वा कष्ट पर पाम है मीम मन्त्रु रह ।
- ११११ देव पराई चौपड़ी पड़ मर बईमाव  
 दो घड़ी की सरया सरमी छाठ पहर माराम ।  
 पराई चुपड़ी लई गीरी को दण कर उम पर दू दण । घीरी देव व निष्ट  
 ना मजिदत हाता पनेगा किन्तु छिन्नु बाडा पहर माराम म घीरीमे ।
- १११२ देव्या ल्याल सुषाय का दिना रबाया रंय  
 पामबादा मनी कर तेनी बई लूरय ।  
 रंयकर का लल देगा । उनको भी क्या विचित्र जाना है कि पामबादे  
 ता मन्त्रा करत है और तथा घीरीं पर बडन है ।
- १११३ देव्या-देवी सार्व जोग छीरं काया बंधे रोय ।  
 बा इमरा की बना-देवी योग मिड करना है उमरा मनीं मान हो  
 लगना है और राग बड जाना है ।

- १११४ बेक्या बेस बंपाला बांत लाक मूं काला ।  
बपाल के सोन पान अधिक लाते हैं । इसलिए उनके बांत लाक रण्डे हैं,  
उनके मुंह का रंग प्रायः काला होता है ।
- १११५ बेक्यो नहिं बैनरियो कल में जाकर के करियो ।  
जयपुर की प्रशंसा में कहा गया है कि यदि जयपुर नहीं देखा तो मनुष्य-  
भरीर धारण करके क्या किया ।
- १११६ बैजू जर भरजू बराबर है ।  
किसी कृपण के लिए दूसरे को कुछ देना मरण-मुह्य है ।
- १११७ बैसा नै सेबा नै रामजी की नाव है ।  
देने-लेने के लिए कुछ नहीं है ।
- १११८ दे रं बाइया असीत में के बेड, मेरी आत्मा ही बेपी ।  
हेपंडित ! बासीबाइसो । उत्तर, मैं क्या बासीबाइसू मेरी आत्मा ही बेपी ।
- १११९ बैब जिताई पुजारा ।  
जैसे देव जैसे ही पुजारी ।
- ११२० बैब बेकमार जात पूरी हुई ।  
देवता के दर्शन हुए और देव-यात्रा पूरी हुई ।
- ११२१ बैबां लै बागा बडवा होम है ।  
देवताओं से वागव बढ़े होते हैं ।  
क० बैब लै बागव बडो ।  
वि० खोरी नै साझकार कोणी सके ।
- ११२२ बैठ खोरी, परबैस भीष ।  
परबैस में भीष भी मांगी जा सकती है क्योंकि वहाँ कोई बागने वाला  
नहीं होता अपने देव के सब स्थान परिचित होते हैं । इसलिए वहाँ खोरी  
जासानी से की जा सकती है ।
- ११२३ बैल जिताई भेस ।  
जैसा देव वैसा भेस ।
- ११२४ बैसी कतिमा बिलापती बोली ।  
कृतिमा तो बेबी है और बिलावपी बोली बोसती है ।  
मि बैसी डारबी पूरबी जात ।
- ११२५ बो लो बून का भी बुरा ।  
दो लो बून के बने हुए भी बरे होंत है ।

क० दो लो माली का भी बुरा ।

दो लो मिट्टी के बने हुए भी बुरे होते हैं ।

११२६ दो बाबा की खातर घोड़ी बेची जायगी के ?

तुमने घोड़ी को दो बाने खिला दिये इसीलिए घोड़ी बेची पोड़े ही जायगी ?

११२७ बोनू हाथ मिलाया ही बुने ।

बोनो मोर से कुछ बुकने पर ही समझीता हाता है ।

११२८ बोपती लो कुंमारी बीलें नानी का लो-लो फेरा ।

( स्पष्ट है )

११२९ दो बुरा बुराई हुबै ।

दो बुरे मिलने से ही बुराई होती है । यदि एक बुराई करे और दूसरा शास्त्र  
रहे तो मगड़ा नहीं हो पाता ।

११३० दोय दोय ग्यंद न बंधसी एकै कंबू ठाय ।

एक ठाम में दो-दो हाथी नहीं बंध सकते ।

११३१ दोय मूला दोय कातरा दोय डीडी दोय ताब ।

दोयों की बाढी जल हरै दोय बीसर दो बाब ॥

यदि माघ के प्रथम दो दिना में हुवा न चले तो चूहे पैदा हों तीसरे-चौथे  
दिन हुवा न चले तो पकरीले कीड़े हों पाँचवें-छठे दिन हुवा न चले तो  
टिड्डी-दल हो सातवें-आठवें दिन न चले तो बुकार पंजे नवें-दसवें दिन  
जानवर पैदा हों ११वें १२वें दिन न चले तो जहरीले कीड़े और

११३२ दोय लड़े जठे एक पई ।

जहाँ दो लड़ते हैं वहाँ एक नीचे गिरता ही है ।

११३३ दोलत लू दोलत बने ।

दोलत से दोलत बढ़ती है वेसे के पास पैसा जाता है ।

११३४ दो साधन दो बाबबा दो कातिक दो मा

बाडी—दोरी बेच कर, माघ बिलावण जा ।

जिस वर्ष भाद्रपद माघ कातिक और माघ के दो महीने पड़ेमे घस वर्ष  
भयंकर भकाव पड़ेगा । पशु भादि बेच बने पड़ेमे और अनाज धरीर कर  
रखना पड़ेगा । पैदावार कुछ नहीं हावी ।

घ

११३५ बड़ी को तिर हुला दियो डींग की जवान कोनी हलाई ।

पड़ी भर बजन बाधा धिर तो हिका दिया किन्तु एक हीगे भर बजन वाली बबान नहीं हिकाई गई ।

११३६ बनी की कोच बबान गई जा मड़ी आपकी ।

। पति की कोच बबाने गई पो किन्तु जा पत्नी अपनी ।

एक अगर्भ को पुर करने क प्रयत्न में बही दूसरा जनम हो जाय वही इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

११३७ पनी रे बनी म्हारा निबन घनी ।

तु बीठ्यां म्हारें चिन्ता घनी ।

किसी स्त्री की अपने निर्बन पति के प्रति चिन्ता है हे निर्बन स्वामी ।

। तुम्हारे हाथ पर हाथ धरें बीठे रखने स मुझे बड़ी चिन्ता हो रही है ।

११३८ बन का दौरा मकर पचीस चाड़े दिन हो कम आसीत ।

तेरह दिन बन संक्रान्ति के और पचोस दिन मकर के द्रष्ट प्रकार हो कम आसीस अर्थात् ३८ दिन तक बाड़ा बोर से पड़ता है ।

मि० बन के पन्द्रह मकर पचीस चाड़ा चिन्ता दिन आसीस ।

११३९ बन लेती चिक आकरी ।

खेती चम्प है नौकरी को भिन्नकार है ।

११४० बन बामबा बहुया छाती कूटा रूखा ।

बहुय क लोग से बहु को बुर से बाये, चिन् पर कितना ही चिन्ता है ।

११४१ घन घनिमा की गुथाल के हाथ में लम्बी ।

घन वा स्वामी का है म्बाक के हाथ स तो लकड़ी है चिन्ता बहु पशुओं को हाँकता है ।

११४२ बनबन्ता काँटी लम्बी, स्हाय करी सब कोय

निरबन पड़यो पहाड़ लू बस्त न पुछी कोय ।\*

बनबान के यदि काँटा भी लुभ जाता है तो सब महाप्रा क भिय बीड़ पड़ते हैं किन्तु निर्बन यदि पहाड़ स भी गिर जाता है तो उस कोई नहीं पूछता ।

११४३ बनबान की के बंजूल भर गरीब को के दातार ।

क० भावबान के काँटी पड़यो पूछत है सब कोय ।

निरबनिडू बूंगर से गुड़यो पूछे नाही कोय ॥

(बीरकिसी कीँटी बात ही क्या बर की बोक तकभी बात नहीं पूछती ।)

धनवान का क्या संजूस ? क्योंकि वह पीछेवाला है कमी न कमी कुछ बही देता है और गरीब का क्या बाजार ? क्योंकि उसके पास अब धन ही नहीं तो वे कहाँ स ?

११४४ परतियां लोबभियूं संकयेंक बयूं मुपरी ?

पृथ्वी पर छोटे बाला तंभी क्यों मोये ?

११४५ परती परं सरक गयाए, ठंका पांभ बटेगा ए ।

हे पृथ्वी ! कुछ लिमक बामो चौकीन इपर बइना चाहने है । अधिक छद्म-छद्मीने इस प्रकार आकाश में चलते हैं मानो पृथ्वी पर पैर ही नहीं रखते ।

११४६ बरम की बड़ सबा हरी ।

बमें की बड़ सबा हरी रूठी है ।

११४७ बरम को बरम बरम को करम ।

अब स्वार्थ-परमार्थ दोनों भिड हों ।

११४८ पान पुराणा पुत्र नया, तू कलबन्नी मार ।

बीवी पीठ तुंग की सुरप निसानी चार ॥

पुराणा पान नया बी कलबन्नी स्त्री भाइ की पीठ य चार स्वर्ग क भिम्ह है ।

११४९ बानी धन की भूमी क साका की ?

बानी ( किमी स्त्री का नाम ) धन की भूमी नहीं स्पर्धा ( होइ ) की भूमी है ।

११५० बाया तेरी छा राबड़ी तेरे पंडकड़ा से तो बड़ाए ।

काई किमी से यहाँ छाछ माने गया । वहाँ छाछ तो बड़ा पटी भी कते और भीकन सये । इन पर उमकी उकिन है रहने दे तेरी छाछ इन कुत्तों । ता मुझे बचा ।

कमी के पास महायथाय जाय और उमी को लबर विपति बड़ने की बावका हो उम प्रसंग की उकिन ।

गयो जाइ गाड़ी रो बार\* काई ।

गया जाट बछ-न-बछ काम करना ही है परि काम न होतो गाड़ी का बाप ही काइता है ।

\*बार—बाई धर्म रज्जु



मि० ठाली न बैठ कुछ किया कर, यदि न हो कुछ काम तो जाना उभेड़ कर सिवा कर ।

२१५२ बायो बचनू पेड़ी हाका पग करै ।

वेही एक आनवर-विधेय होता है जो राशि में ऊपर की ओर पैर करने से होता है इस तरह से कि कहीं आकाश न टूट पड़े मानो आसमान की रक्षा का भार उसी पर है ।

परीब जाहमी यदि सहसा अधिक सम्पन्न हो जाय तो वह किसी को नहीं बरता ।

२१५३ बायो मीर, मुखो कमीर, मर्यां पाछे मीर ।

मूलसमान के लिए कहा गया है कि वह वृष्ट हो तो मीर कहलाता है मूखा हो तो कमीर कहलाता है, मरने पर पीर कहलाता है ।

२१५४ बायो रांपड पग हरे मुखो तजे पिराम ।

वृष्ट राजपूत बन हुए करता है और मूखा प्राण देता है ।

२१५५ बीबीड़ी के छाय हीबीड़ी मर क्याय ।

दुबारी गाव के साथ बिना दुबबाबी को कोई नहीं पूछता ।

२१५६ बीचूं बैस को, हो भांसे सेर ही ।

दुग्ध आदि के लिए तो बैस ही रखनी चाहिए, चाहे वह बैस सेर दुग्ध ही क्यों न हो ।

२१५७ बीरे बीरे ककरद, बीरे सब कुछ होय

मासी लींवे तो बढ़त पत भावां कब होय ।\*

हे ठाकुर ! बीरे-बीरे सब कुछ होता है । मासी चाहे बी बढ़ी से सींवे । किन्तु यद्यु जाने पर ही कुछ सर्वेय ।

२१५८ भूतु कायां बिलो पेड भरै ?

भूल जाने से पेट नहीं भरता ।

२१५९ भूलु बाणी, राख छाणी ।

बिना बगह सब कुछ निरर्थक हो वही इस उक्ति का प्रयोग होता है

२१६० बेला की म्यूताए, पान के बांन बांन ।

राजस्थान में विवाहादि के अवसर पर मित्रवर्ग व सम्बन्धी कर्त्त

\*मि० छनै पंचा छने कन्वा छने पर्वत लंभनम् ।

छनीबिद्या छनीबित्त वबैतानि छने पर्व ॥

तरफ से लड़की या बर के पिता को बन्दूक के रूप में कुछ नगद सहायता दी जाती है जिसे म्यूता नामना कहते हैं। जो सहायता देने वाला है उनके पास देने को तो कुछ है नहीं किन्तु अपने आप को इस प्रकार धिक्काते हैं मानों वे ही सर्वोत्तम हों।

११६१ बेलें की हाँडी फूटी बंडक की बात पिछानी।

नि० बर्क की हाँडी फूटी बंडक की बात पिछानी। —

(सप्ट)

११६२ घोड़ी में सब जघाड़ा है।

बानी के भीतर सब मने हैं अर्थात् दोष सभी में होत हैं।

११६३ बोबर से के तेलक घाट, ऊँक मोगरी ऊँके लाठ।

जहाँ बानों ही बुरे हों कोई किसी से कम न हो वहाँ इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है।

११६४ घोड़ी की हाने पयो जाय।

बोध का बम नीच लाता है।

११६५ बोबी के घर में बड़गा बीर, दुम्पा और ई बीर।

बोबी के घर में बोये होते हैं तो दूबरों का ही हानि उठानी पड़ती है।

११६६ घोबी के बसो जाहे कुम्हार के पयो ती लखती।

गया जाहे घोबी के ही या कुम्हार के उम ठा बदना पड़ेगा। मजदूर को मजदूरी करनी ही होगी है।

११६७ घोबी को गधो घर की न घाट की।

घोबी का गधा न बर का रहना है न घाट का।

११६८ घोबी की पयो स्वामी की गाय

राजा की मोकर, तीनुं पत्ता से जाय।

घोबी का गधा मापू की गाय और राजा का मोकर, फिर दूमरे नाम क नहीं रखे।

घोबी के गध को मिठ बच्चों का ही भार उठाना पड़ता है मापू की गाय का जिघा में प्राण रोटी आदि गान को मिष्ठी रहनी है और राजा का मोकर दूमरों पर राब मोहन का भारा हा जाता है।

११६९ घोबी बेटा जान-ला, घोडी न पट्टा।

घोबी का लड़का दूमरों के बँदपबक बरन पट्टन बर बना-जना दिग्गता है।

११७० बोबे पर दाम लार्ने।

सफ़ेद बस्त्र पर ही बध्ना रुपाया है ।  
 पहले से ही जो कर्कश है उस पर यदि एक कर्कश और कम पाव तो  
 उसे इस बात की चिन्ता भी परबाह नहीं रखती किन्तु यदि किसी प्रतिष्ठित  
 मनुष्य पर कर्कश कम पाव तो उसका मरण हुआ जाता है ।  
 मि० संभावितस्व चाकीतिर्मरणावतिरिच्यते । ( पीठा )

न

- २१७१ नंदी परती बंधनी—बद ब्य होन निभाल ।  
 नदी-तट पर स्थित कुछ चाहे वह मष्ट हो जाता है ।
- २१७२ गई तो दिन पुरानी सी दिन ।  
 वस्तु गई तो बोझे ही दिन रखती है अन्त में तो वह पुरानी होकर ही रखती  
 है ।
- २१७३ नकड़ा बेव सुरदा पुजारा ।  
 बीसे बेव बीसे ही पुजारी ।
- २१७४ नकड़ा, नाक कटी कह मेरी तो सबा गज बची ।  
 निर्लज्ज को लज्जा नहीं आती ।
- २१७५ नकटी-बूची को बीची असम ।  
 ( स्पष्ट )
- २१७६ न कोई की राई में न कोई की दुहाई में ।  
 वह अपने काम से काम रजता है ।
- २१७७ नखरो नायक की बतलावनों ध्यामन की ।  
 नखाकत तो नाइन की ही अच्छी होती है क्योंकि बर-बर धूमने के कारण  
 वह चतुर हो जाती है और बातचीत सभी की अच्छी है ।
- २१७८ नगद नाचा बीन बरने काचा ।  
 यदि पास में नगद रुपये हों तो काने दुबड़े का भी आसानी से विवाह हो  
 जाता है । वन से क्या सिद्ध नहीं होता ?
- २१७९ नगरा में तुली की जाबाब कुन सुने ?  
 नकदारखामे में तुली की जाबाब कौन सुनता है ?  
 बाह्य बड़े आवमियों की बलती है वहाँ छोठों को कौन पूछता है ?
- २१८० नट बिद्या था ज्याय पच अट-बिद्या कौली आवे ।  
 नट बिद्या था जाती है लेकिन नाट की बिद्या नहीं आती ।
- २१८१ नखद की नखबोई वस्तु सपाकर रोई

पाँके फिर कर देखयो तो सशो न लोई ।

मनद का मनवाई कछ महीं सबदा । देखने म ता यह मन्बग्य-भा लयता  
है किन्तु बास्तव में कुछ नहीं ।

२१८२ नब कोई नबद न बीनी ।

यदि नब लो जाय तो यह समझ लिया कि मनद को देदी ।

२१८३ नबी किनार बैठ की बपू न हाथ पखाले ?

मरी क किनारे बैग कर हाथ क्यों नहीं धो सेत ?

किसी रूपक क प्रति उक्ति है हे रूपक ! अगर तुम्हारे पाम धन है ता  
दान क्यों नहीं करते ?

२१८४ न लो मन तैस हीय न राधा माने ।

जब कोई मनुष्य ऐसी रात पर काम करने के लिए कहे जो असम्भव हो  
तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

२१८५ न भेदे काकड़ो लो बपू डेरे हाली साकड़ो ?

हे किसान ! अमर कर्म-सकामि के दिन बर्षा न हो तो तुम क्यों व्यर्थ में  
हल जोतत हो ? कर्म-संश्रमि के दिन बर्षा न होने से दुमिष पड़ता है ।

२१८६ नयी बीबन काठ की मुडा ।

( स्पष्ट है )

२१८७ नयी बलद लूटी लोई ।

नया बैल लूटा लोइता है ।

नया आदमी शुरू में भूलें करता है ।

२१८८ नर मानई, प्रीड़ो बाबेरे ।

आकृति प्रकृति में पुत्र्य मानुसुत का अनुकरण करता है और भाड़ा पितृ  
बल का । मि मा पर पुत्र पिता पर घोड़ा सोक-वेद मा बतलाता ।

२१८९ नर में नई भागलो पंचेक में काग ,

पानी मालो काठलो तीरू बागाबाग ।

मनुष्यों में नई भागल होता है पशियों में बीबा और जसबरा में कछुआ  
ये तीनों भागबाग होते हैं ।

मि० नरपां मापिती कूर्त पशियां शैव बायस ।

२१९० नबदा न नबकी मार के मार करतात ।

जबरदस्त को या तो जबरदस्त ही मार सकता है या ईश्वर ।

११९१ नाँव बग्गमा नै लें राम-राम करे ।

द्वितीया के बग्गमा को सब नमस्कार कय्ये है क्योंकि वह बम्बुदव का घोसक है ।

प्रथममख्यतपायमुत्थितं प्रतिपञ्चम्रमिष प्रजा नृपम् ।  
( किरातार्जुनीयम्, द्वितीय सर्ग )

• ११९२ नाँव बेब की छष्ट पूजा ।

बन कोई दुष्ट समयमाने-बुझाने से भी अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता वह उसको ठोकने-पीटने से ही काम चलाता है ।

११९३ नाँव की खोरी, प्याज और रोटी ।

नाम्य अच्छा न ही वो प्याज और रोटी खाने को मिलते हैं ।

• ११९४ नाँव पंगामर, ग्हास कीनी उमर में ।

नाम तो है पंगामर किन्तु उमर में कमी स्थान ही नहीं करता ।

• ११९५ नाँव तो बंधीबर, आस कीनी अलमोरी बजानू ही ।

नाम तो है बंधीबर, किन्तु अलमोरी बजाना ही नहीं जानता ।

११९६ नाँव बापली, फिर दुकड़ा भांगली ।

नाम तो है बापली ( लुन्टा ) किन्तु पीटियों के दुकड़े भांगली फिरती है ।

११९७ नाँव मोटा घर में रोटा ।

नाम बड़ा है किन्तु घर में तपी है ।

११९८ नाँव राखे गीतका के भीतका ।

अनुष्य का यय बिरस्थापी रहता है या वो काम्य-निर्माण से या प्रथम बनाने से ।

११९९ नाँव लिङ्गवीबर, कसी कीनी छिबान ही ।

नाम तो है कछमीबर, पास में एक छराम तक नहीं ।

१२०० नाँव किर्मा हिरण खोका होम ।

उसके प्रथाप का मारुच छायाहुका है उतका नाम लेने से ही हिरण संगड़े ही जाती है ।

१२०१ नाँव सेबा न पाणी बेबा ।

उसके पीछे न उसका नाम लेने बासा है न कोई पानी लेने बासा है ।

१२०२ नाँव बिद्याबर, आस कीनी कसको ही ।

नाम तो है बिद्याबर किन्तु ककहटा भी नहीं जानता ।

१२०३ नाँव छीतकवस्त, दुर्वासि-तो बराली ।

माम ठो हूँ धीवलबास भीर हूँ दुर्वास-सा कौपी ।

१२०४ नाँव हजारीसास घाटो प्यारा सँ को ।

माम ठो हूँ हजारीसास भीर बाटा हूँ ११० का ।

१२०५ नाई की परत नुंबा में हूँ ।

नामून काटने में ही नाई की चतुराई की परीमा होती है ।

१२०६ नाई बाई बँध कसाई इग को सुतक कर न जाई ।

नाई, बाई बँध और बगार्, ये सदा सदास समसे जाले हैं इनका सुतक कमी नहीं जाता ।

• १२०७ नाई नाई बास कताक ? कहूँ सजमान ! मूँई बाग मा ग्याप हूँ ।

हे नाई ! मेरे सिर पर कितने बाल हैं ? उत्तर, ममी मामने मा जाते हूँ ।

• १२०८ नाई बामग मुत्तो जात देस हूँ हूँ करतो ।

नाई, ब्राह्मण और कुत्ता ये तीना अपनी जाति बाकी की देस कर हूँ-हूँ करते हैं ।

१२०९ नाई हालो ठोलो बागिया हालो टक्को ।

एक नाई किसी बगिये के यहाँ हजामत बनाने गया । जब वह हजामत बना चुका तो उसने बगिये को टांग को एकबार अपनी अंगुलि की प्रभिय से बजाया । यद्यपि इससे बगिया मन ही-मन रुष्ट तो बहुत हुआ तथापि उसने नाई को उसकी करतूत का फल बगाने के उद्देश्य में इत्थिम हथ प्रकट किया और उसे एक टका मों कर दिया । वही नाई एक दिन किसी ठाकर के यहाँ हजामत बनाने गया । बगिये से पुरस्कार मिल जाने के कारण उसे तो हजामत के बाद टांग बजाने का चस्का पड़ गया था । इस लिए पुरस्कार के लिए सामायित होकर ठाकर के सिर पर भी उसने अंगुलि की प्रभिय को आजमाया । ठाकर ने इसे अपना अपमान समझा और तुरन्त ही तलवार हाथ में ले नाई का सिर पड़ से अलग कर दिया ।\* इस प्रकार जब किसी का उसके करतूत की मजा दिसवाने के लिए कुछ प्रतापन बैर करमाग को और प्रवृत्त कर दिया जाता है तब उसका 'ग्याप' का प्रयोग किया जाता है ।

— १२१० ना कोई सँ बीसती, ना कोई सँ बीर ।

\* वि० टोकर लालो हजामती, आप्पुं भलुं इनाम ।

सिर छेराप्पुं हजाम नुं अमी बगियेकी बाप ॥

बहु ठट्ठन हूँ न किसी से घबुठा न किसी से मित्रता :

१२११ मागा का रामजी परो कर गेला होबो करे हूँ ।

बबमास ईस्वर से भी नहीं बरते । ईस्वरीय मर्माका का उस्संपन्न करते हुए भी उन्हें कुछ शिश्किबाहुट नहीं होती ।

मि० राम को सिर पर कै सेती ।

१२१२ नापाई को झाल तुरीं ।

बबमास से सब दबते हूँ ।

१२१३ नापा को काय में के दारै ?

नये का भाग में क्या बले ? अर्थात् जब नये के घर में भाग लगती है तब उसके घर में बस्वादि न होने के कारण उनका कुछ नहीं बिबड़गा ।

मि० बाहिरी कलै को काय में के दारै ?

१२१४ नागी के बोरे बर के निचोरे ?

नागी क्या बोरे और क्या निचोरे ?

१२१५ नागी बुधो से ले अंजो ।

क० (क) नागी राम से बडो ।

(ख) नागी राम से नी बुरो ।

मि० बुदा करती सी करे नागी तत्काल कर बे ।

१२१६ ना घर तेरा ना घर मेरा एक दिन होया अंजल डेरा ।

क० ना घर तेरा ना घर मेरा ( यहाँ ली ) अंजल रत बमेरा हूँ ।

१२१७ नाबय ई नाभी जब बूयद क्या की ?

जब नाचना ही स्वीकार किया तब लग्ना कैसी ?

१२१८ नाभू क्या ? नागभू बाकी ।

मि० नाभ न जाने आपन टेड़ा ।

१२१९ नाबरजी बेल बबो । कै बल म्हां तापी ही हूँ ।

किसी ने नपुंसक को बारीबाद दिया तुम्हारी बग-बदि हो ।

उत्तर भिठा बस मुस पर ही इतिमी हूँ ।

१२२० नाबुरसिये की सुगाई अगत की मोजाई ।

धामध्वहीन की स्त्री सारे संसार की मोजाई होनी हूँ ।

१२२१ नाजी नाब बिना रह क्याय काअल-टीकी बिना कोनी रब ।

हिनका अन्न बिना रह जाता है किन्तु कज्जक-टीकी बिना नहीं रहता ।

१२२२ नाई टाकन बलद बिफाबन तू मत जानै जाई साबन ।

एक बार जापाङ्ग में बर्षा हाकर फिर बीस पन्चीस दिन तक जोरों की हवा बसती है जिसमें लेंटी की बहुत तकमान पहुँचता है। एसी हवा राजस्थान में "भासली" नाम से प्रसिद्ध है।

किन्ती की संभावना के प्रति उचित है।

१२२३ नादान की बीस्ती जोर का अंजाप ।

नादान की बीस्ती प्राणा के लिए एक प्रकार का अंजाप है।

१२२४ नादीरी का मो खेरा ।

जिसके लिए किसी वस्तु का अंजाप हुआ है उसका उस वस्तु के लिए अधिक चाव रखा जाता है।

१२२५ नादीरी के लोटी हुयी राखू उठ-उठ पापी पियो ।

जिसके पास कमी लोटा नहीं था जो खान के लिए तरसनी थी उसका पास जब भोजन हो गया तो उसने रात में कई बार उठ-उठ कर पानी पिया।

१२२६ नादीरी के हुई खटोरो पापी पी-पी हुई पयोरो ।

नादीरी को अगर दूध वस्तु प्राप्त हो जाती है तो उसका वह आकरमकता से अधिक उपयोग करती है।

१२२७ नादीरी की कलम आयो दिन में बीजा बीयी ।

जिस स्त्री का पति कमी उस समय भी नहीं देता था जो पति के लिए तरसा करती थी उसका पति जब आगया तो उसने दिन में बीजक अनाया।

१२२८ नादा बिनय नबीक, उमरावा आबर नहीं ।

बीं ठाकर में ठीक, रस में पड़नी रात्रिया ॥

जो राजा मोछे मनुष्यों का आनंद करता है मरवालों का नहीं उस राजा को मुझ में सब पना बन आयया। उक्त पद्य रात्रिया का सम्बोधित करने कहा गया है।

१२२९ नादी कमय करे डूयनी नै उंड ।

नादी तो दूसरा पनि करनी है और बांहिनी को दंड भिजना है।

क० नादी कलम करे अर डूयनी उंड मरे ।

अनराय कोई करे और दण्ड जिमी और का जिने ।

मीड करे अनराय जोड और पारे फलभोग ।

(मुल्मीरास)

१३१ नादी रांड बंभारी भरनी डूयनी का मो—मो फरा ।



जो छीटा बाबमी अपने बड़प्पन की खेती बघारता है उस पर बहु समय कसा गया है ।

१२३१ नार्ने लो गध फाई कोम्पा एक नख ।

दान आदि के सम्बन्ध में खेती बघारना भीर देना-करना कछ नहीं ।

क० नार्ने बखो फाई बोड़ी । मि० लंबा हैला खौली बीक ।

१२३२ नामी खोर मादूयी जाम नामी ताहू कमा जाम । ( स्पष्ट )

मि० नामूद बाब्यो कमा जाम नामूद खोर मादूयी जाम ।

१२३३ नार्पा की जनेत में सब ई ठाकर ।

जहाँ अपने हाथ से कोई काम नहीं करना चाहता नहीं इस उचित का प्रयोग किया जाता है ।

मि० हजाम की बरात में सभी ठाकोर ।

१२३४ मारमोस की जाम पढीकड़ो बार्ने ।

अपराध कोई करता है और फल किसी और को मिलता है ।

१२३५ मारो का मुंडा कृष्ण बीया है ?

सिंहा के मुँह किसने धोये है ?

१२३६ मारी को ली एक बी खौखो, सुरी का बारा बी के काम का ?

सिंहनी का तो एक भी बच्चा बच्चा मूकरी के बारह भी किस काम के ? एक बीर पुत्र जनेक कामरों से बच्चा है ।

१२३७ मारी नर की जाम ।\*

नर रत्न भी मारी कपी जाम से ही उत्पन्न होते हैं ।

१२३८ नाहर ने रजपूत ने रेकारे री जाम ।

सिंह और राजपूत " तुकार " की ही गान्धी समझता है । अर्थात् इसमें बहु अपमान अपमान समझता है ।

क० रजपूत से रेकारे की गाम ।

१२३९ निकमो नाई पाटका मुँडे ।

निकम्मा नाई मैस के बर्बा को मू डता है ।

१२४० निकसी होका खड़ी कोठा ।

बात मुँह से निकलते ही सब जगह फैल जाती है ।

१२४१ निकासी की बखत मोड़ी आबे कं किरतो ली आबे ।

\*मि० मे न नारियाँ छीपियाँ इनका मोड न ठीक ।

ना जाने किस कोल में छिया रत्न अवगत ॥

बर के बिबाहार्थं गुप्त कर्म में अपना गाँव में निजकने को निकामी कहा जाता है। निकामी के समय जुसूस निजकता है त्रिममें बर घाँड़ पर बहता है। निकामी के लिए कोई किन्मी न पाम घाँड़ा मापन गया। उत्तर मिना कि बोझो बेर घूम बर फिर आता। अबबर पर मावस्थर बन्तु न भिने तो बहु फिर किस नाम की ?

१२४२ मोचो कटुयो कीचो बेसग हासो जायो।

जब किन्मी न अपनी भाँवें तीची कर सी तब उसके लिए दानन बाया बन्ध क तुफ्य है।

१२४३ मोत गैल बरकत है।

ईमानधारी में ही बल की वृद्धि होती है।

१२४४ नीम तल सोगल या जयाय पीपल तल अद जयाय।

पर-पर पर झूठ बासने बाय के सम्बन्ध में यह उक्ति है।

१२४५ नीम न भीठो होय तीचो गुड़ पीब से

त्रियका बह्या तुमाक क जाती जीब से।

पी और गुड़ में माकने पर भी नीम मीठा नहीं हो सकता। स्वभाव भी प्राणा के साथ ही छूटता है।

१२४६ बेसी-बड़ी साथ बासे।

भलाई-बुराई ही मनुष्य के साथ जाती है।

१२४७ नेम में निमेल घटे सीप में मजरो घटे।

नेम पल भर में ही भिन्ने बागा है और बिदाई में कबल समझाए की वेर है। जब कोई काम तुरन्-तुरन् होने वाला हो तब उस लाकारिण का प्रयोग होता है।

१२४८ नेम निमाणा बय ठिजाया।

निवम और बम नियमी और परी न पाम ही एने है।

१२४९ मोकर प्राय ठोकर।

मोकर को ठाकरें मानी पड़ती है।

\* १२५ मोकर मालिक का हों क बीमण का ?

मालिक ने बीमण को मन्वारी मारि और उम बहुत रसायित करी। उमने मोकर के सामने कहा— बीमण बहुत बला है। मोकर न पर ही परी— मित्र पर मरुट बरा है। राज का मालिक का दुया पट और गबज उमन मोकर में कहा— बीमण बहुत बरा है।" मोकर न पर उत्तर दिया

बाक-बागुमें व्यथित होता है। प्रायः लालीच बचुर होते हैं।

मि० बिना पड़घोड़ी दायमो पड़घो—पड़घो मीड़।

१२६१ पड़घो तो है पल मुच्यो खोनी।

पछा ठा है पर पड़ कर मनन नही निमा।

१२७० पतली छाय खाटा से बयुं खोने ?

निश्चित काम के प्रलोभन में पड़ कर निश्चित काम को नहीं छोड़ना चाहिए। छोटी बीज को धर्य नहीं खोना चाहिए। छोटी बीज है तो छोटे काम में भा जायगी नष्ट क्या की जाय ?

मि० पतली छा खाटे से खोई गयी।

१२७१ पर घर लानी पूम ज्यूं जाई पर लानी कित्त जाल्य ?

पर-नाए प्रसन्न के बेय छ जाती है किन्तु अपनी पत्नी कहाँ जाय ?

१२७२ पर नारी वनी सुरी तीन ओर छ जाय \*

बन छोई जीवन हूँ पल पंचा में जाय।

पर नारी पत्री छटी के समान है। बहू तीन ओर से जाती है।

१ बन हीन होता है। २ यौवन का नाश करती है।

३ लोकापवाद होता है।

१२७३ परमाते येह बंहरा लाने सीला बाव

बंक कई हे भइबली, काला लया सुभाव।

इक नइबली से कहता है कि यदि प्रातः काक में बायल भागे जा रहे हों और सायंकाल में ठण्डी हवा चले तो अकाल पड़ेगा।

१२७४ परमाते येह बंहरा बोकारा तापल,

रजूं तारा निरमला बेजा करी गछल।

यदि प्रसन्न-काक में बादल बीड़ें बोपहर को न्युप ठेग हो और राधि को निर्मल आकाश में ठारे बिछाई दें ता है धिप्य। उस बेय को छोड़कर अन्यत्र चलना चाहिए क्योंकि वहाँ अकाल पड़ेगा।

१२७५ परमात्मा बचदेखी है।

परमात्मा बहुत देने वाला है।

१२७६ परमात्मा के काम में क्या को पूछनु ?

\*क० पर नारी वनी सुरी तीन ओर से जाय।

बन छोई जीवन हूँ, अस्त परक के जाय ॥

परमार्थ के काम में क्या पूछना ? अर्थात् यह ठा बिना पूछ ही करना चाहिए ।

१२७७ पराई काई लीचड़ी गहूँ भेस्यो बीच ।

परामशोत्री की सारी स्वतंत्रता मारी जाती है । वह अपने प्राणों का भी स्वामी नहीं रह जाता ।

१२७८ पराई बाकी में घी घर्नु बीछी ।

दुमरे को पानी में घी अधिक बिछासाई पड़ता है ।

१२७९ पराई पीर परदेस बराबर ।

पराई पीर की अपेक्षा की जाती है । परदेस के आदमी की यदि कोई चिन्ता करे तो पराये दुःख की करे ।

१२८० परया पूत कमाई मोडाई घाले ।

पराये पुत्रों से कमाई की मांगा करना व्यर्थ है ।

१२८१ बराबी मास चाप निरास, आपकी मास भोग बिलास ।

जो दुमरे की आम तरुता रहता है उसे निरास हुना प्यता है किन्तु जो सहायता आदि के लिए किसी की अपेक्षा नहीं रखता किनी की बात नहीं देखता, वह सब भानस्य मनाता है ।

१२८२ परत निरी छूट परबाई ऊँचे पडा छटा बड़ माई ।

साँसे नाम कर सरसाई घर निर छोला इग्न बचाई ।  
बहि पूब से हुआ बस और बिजली की बमक में बाबरु बडे तथा मय हरा होने लगे वा भूमि और परंत का वर्षा तृप्त करे ।

१२८३ बहला बाबा घुमरी, दाई गाबा गति ।

जो बहले अपना पेट भर के दुमर का नाम करत है वहले अपना स्वाध मिठ करके परार्थ में प्रभूत हात है ।

१२८४ पहला बाबाजी मुन्दर घना खेर टाट मुंहाली ।

एक ठा बाबाजी मुन्दर बहुत और फिर मुठे मुडा लिया ।

१२८५ पहला मित्त कर बाई देव भूल पर्या काणद स लेप ।

जो बहले मित्त कर पीछे किनी को रुपये उपार दता है उनके हिमाध में भूल नहीं होती ।

१२८६ बहली बहरे जिनी घमसाऊ कोनी बाई ।

जो बहले बह देता है वह अधिक धाने बाछा नहीं बहलाना चाहे फिर कितना ही क्या न गावे ।

१२८७ पहली पड़वा वाली तो बिन भैंतर की वाली ।

बनर जापाड़ कुल्हा १ के दिन बहुत जोर से बाबळ नरजे तो ७२ दिन तक बर्पा नहीं होती ।

क० पहली पड़वा वाली दिन बहुतारो वाली ।

१२८८ पहली पेट पूजा फेर काम हुआ ।

पेट-पूजा सब से पहले है कोई भी दूसरा काम उसके बाद में जाता है ।

१२८९ पहली रूहो मू तो तमिषो खाती बर्पू ?

पहले यदि तुम सतर्क रहते तो तुम्हें हानि क्यों होती ?

१२९० पहली रोहण बल हरे बीबी बहोतर नाप

तीबी रोहण तिन हरे बीबी समन्वर नाप ।

यदि पहली रोहिणी में बर्पा होने लगे अकाल पड़े दूसरी में ७२ दिन बर्पा न हो तीसरी में बास का अकाल पड़े और चौथी में मूसकापार बर्पा हो ।

१२९१ पहली सुख गीरोगी काम्या । डूबो सुख हो घर में माया ।

तीबी सुख पुत्र अधिकारी । बीबी सुख पतिवर्ता भारी ।

पाँचवाँ सुख राज में पाता । छठी सुख सुस्वाने जाता ।

सातवाँ सुख बिद्या पकवाता । ए सातौं सुख रज्या बिवाता ।

पहला सुख है गीरोक शरीर, दूसरा सुख है घर में ऐश्वर्य का होना तीसरा

सुख है अधिकारी पुत्र चौथा सुख है पतिव्रता स्त्री पाँचवाँ सुख है राज्य

में काम-काम छठा सुख है सुस्वान में निवास सातवाँ सुख है पकवायितो

बिद्या । बिवाता ने उक्त सातों सुखा की सृष्टि की है ।

१२९२ पाँगली अर परबल लाली ।

है तो संवड़ी और परबत पार करने का मनसूबा बामली है ।

१२९३ पाँचली डाकन घरका नै ही जाय ।

संवड़ी डाकन अपने घर बासा को ही जाती है क्योंकि वह घर नहीं सकती ।

१२९४ पाँच आंगळियाँ पूँच्यो भारी ।

एकता में भर है ।

१२९५ पाँच पंच कूटो पटवारी बुल्का कैस बुराई भारी ।

धिरतो फिरती बातच करे, बका पाप से कीड़ा मरे ।

पाँच पंच कूटा पटवारी पटाई स्त्री का अपहरण करने बाधा तथा भूमता

क्रिस्ता पत्नी बनन बास्ता य इतन पाती होने है कि इनक पाप से कीन भी मर जाते है ।

१२९६ बाँच पंच मिल कीजे काज हारे जीते भावे न लाज ।

पाँच भावमी मिल कर काम करते है ता हार जीन म लज्जा की प्रतीति नहीं होंगी ।

त्रि० न गमस्याप्रतो गच्छेत्, मित्रं कार्ये मम पदम् ।

यदि कार्यविपत्ति स्तान् मन्वरस्तत्र ह्यभ्यन ॥

१२९७ पाँच सात की लाकड़ी एक जग की भार ।

सब काम को बँटा है तो काम मारी नहीं जान पड़ता । यदि पाँच-सात मिल कर बाँस का आयम में बाँस लता इनक हिस्से म तो एक-एक लकड़ी जाती है यदि न बाँटे ता एक क लिए बहु भारम्बरक हो जाता है ।

१२९८ बाँसू जायसी एक ती कौनी होय ।

पाँचों कोणलियाँ एकमार नहीं होतीं मर्बलू सब भाई समान नहीं हान ।

१२९९ पाँसू भाई पाँच ठोड, मोको मायाँ एक ठोड ।

सभी तो पाँच भाई पाँच स्वामा पर अल्प समय है किन्तु दान् भादि में बाकमक के बचसर पर एक हा जाने है ।

१३०० पति में हुमाँत क्या की ?

जा एक ही पक्ति म बैठे है उनक साथ हुमगे तरह का बर्ताव नहीं किया जाना चाहिए ।

१३०१ पाँच उमार्क जायसी कोडीबत्र बंगाल ।

पनी-गरीब सभी मरने के समय नय पैर जायस ।

१३०२ पाँवरी कुत्तो पदबाल की बत्ताली ।

मिठाई भादि के पाम पाँवरी कुत्ता सामा नहीं देती ।

१३०३ पाँवरी कुत्ता पूँछ में कोणलियो ।

कुत्ता क पाँच का रोम हान पर पारीर के सब बाल उगद जाने है । अतः जब कुत्ता पद बाल ही नहीं ता कपे का क्या काम ?

१३०४ पाँवरी लाँह मारनेल की माहो ।

पाँच बानी अँनी रोय क कारण दुयस हा जाती है इसलिए वा बहुत दूर तक चलने में असमय हा जाती है ।

१३०५ पाँवरी लाँह पदबाल की भुन्नी ।

पाँवरी अँनी की मिठाई जोन पिछाये ?

१३०६ बाँधरी लाँड यलाती कुँधी ।

पामामुक्त कंणी की पीठ पर सुन्दर बीन घोभा नही देती ।

१३०७ बाँधरी लाँड कहागरजी को भाड़ी ।

कंटी को पाँव रोम हो रहा है और उसको सेकर साहार्गक तक का भाड़ा निरिबल किया जा रहा है ।

१३०८ पाणी हानो पड़नी करके

बन्ध में पहले बर्द होता है ।

बोयी अपने बोय की बात सुनता है तां जने बभती है ।

मि १ सठे प्रहारा तिपति ।

२ बोर की बाली में तिनका ।

१३०९ पाई को घर बराई जाई को राम बेडी ।

महिय से अधिक काम लिया जाता है और बुरे की छत्रों के प्रति माता-पिता बीसी सहानुभूति नहीं दिखाई जाती । इसलिए इन दोना का भयबागू हो माकिक है ।

१३१० पाणी तो निबाय में जाय ।

पानी डालू जमीन की ओर ही जाता है ।

१३११ पाणी पीकर के आत बूछनी ?

पानी पीकर फिर क्या आति पूलना ?

१३१२ पाणी पीई छाव लागय कीई जाय ।

पानी छान कर पीना चाहिए और विवाहादि पन्थन्य मन्की तरह बेन भास कर करना चाहिए ।

१३१३ पान पड़ती मू कहुँ लुग लक्ष्म बगराय

इबका बिछड़या कब तिलां बुर पड़या जाय ।

गिरता हुआ पता कड़ता है कि है लक्ष्मर । अब बुर भा पड़ या पता नहीं बिछड़ने पर फिर कब मिसना हो ।

१३१४ पानी पाला पावता अलट सूं माई ।

बर्पा पाला और बाइछाह उतर दिया छ ही जाया करने है ।

१३१५ पाप की पाण भाये बिना कोनी रेब ।

पाप अपना प्रभाव बिबलामे बिना नहीं चूता ।

१३१६ पाप को पड़ो भर कर पूई ।

पाप का बड़ा फूटे बिना नहीं चूता । पाप बन्ध में प्रकट हो ही जाता है ।

पाप का मंडाफोड़ हो ही जाता है ।

मि० पाप को घड़ो कूटवाँ बिना कोठी रँबे ।

१३१० पापी की मन में पाप बसे ।

पापी के मन में पाप बसता है ।

१३१८ पापी को धन परले जाय ।

पापी का धन लपट हो जाता है ।

मि० पापी को मास अकारण जाय डाँड भरै के नीर छे जाय ।

१३१९ पापी नाब खबोबे ।

एक पापी अपने पाप की वजह से नाब को से डूबता है ।

मि० एक पापी नाब को से डूबता मँसपार में ।

१३२० पाब धून खोबारै रसोई ।

धून तो केवल पाब भर है और ऊपर के कमर में रसोई ।

मामान सोड़ा है और आइम्बर बहुत ।

१३२१ पाब बीषा घरती जी में अझाधी म्यारो ।

मिर्छ पाब बीषा घरती है उसमें भी गौपर-भूमि अलग रानी है । किन उपज क्या होगी लाक ।

१३२२ विरवा पर पिछवा छिरै घर बीठी बनिहार करै ।

हवा जब परवा स पिछवा चलने लगती है तो बहुत जारो की बर्षा होती है ।

१३२३ विब बिन कित्ता सिहवार ?

प्रियतम के बिना त्यौहार किस काम के ?

१३२४ पित्तारी की तो चाकण कीई लाबो ।

पीतले वाली तो चककी पीतले समय जो कुछ बबाल बही उसके लिए लाभ है ।

१३२५ बीपल तल्लं ह्रीं भर कर कीकर तल्लं नद ग्याय ।

पीपल के वेद के नीचे किसी बात के लिए 'ह्रीं' कह देता है और 'बबूल के वेद के नीचे 'ना' कह देता है ।

१३२६ पीरवाँ की आल करै, बकी भाईङी न रोबे ।

जहाँ से कुछ मिलने की आशा न ही वहाँ से आना रखना व्यय है ।

१३२७ नीरां स्वाब दांतली, घरं बहाड़ी जाय ।

पीहर ने दाँवी लाठी है और घर की कुहाड़ी तो रानी है । जहाँ लाभ



बोझा और हानि अधिक होती है, वहाँ इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

- १३२८ पोसा की खीर है।  
घन की महिमा है।
- १३२९ पीसे कर्न पीसी भाबे।  
पैसे के पास पैसा जाता है।
- १३३० पीसेपी सो तो पिछाई लेपी।  
जो काम करेगी वह सबकुटी भवस्य लेगी।
- १३३१ पीसे हाली को बोदो झुंजनिपू से खोलें।  
पैसे वाली का कड़का बिल्लीनों से खरता है।
- १३३२ पीसो पास की हथियार हाथ को।  
पास में हुआ पैसा और हाथ का हथियार ही समय पर काम करते हैं।
- १३३३ पीसो बीसां के कोली जागी।  
पैसा पैदों के नहीं लगाता।  
बन कामना सरस काम नहीं है।
- १३३४ पीसो माई पीसो बाप पीसे बिना बड़ो सन्ताप।  
पैसा ही माता है पैसा ही पिता है पैसे बिना बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है।
- १३३५ पीसो हाथ को मीठ है।  
पैसा हाथ का मीठ है।
- १३३६ पुजारी की पाबड़ी, अंटबाल की बीब।  
बेजारा की मोबड़ी पड़ी पुरानी हीय।  
पुजारी की पगड़ी अंटबाले की स्त्री बन्ध के जूते में पड़े-पड़े पुराने हो जाते हैं। पुजारी गंगे घिर मंदिर में रख कर पूजा-याठ करवा रहता है इसलिए उसे पगड़ी बांधने का बचसर नहीं मिलता अंटबाल किराने पर बाहर बाठा रहता है, इसलिए स्त्री के साथ उठना नहीं रहता। रोनी काट-सेवन करता है इसलिए जूते पड़े मूखड़े रहते हैं।
- १३३७ पुरानी बहल अर बिमकषा मारा।  
गाड़ी पुरानी होने के कारण जीम हो रही है और बीज बीजने वाले हैं यह बड़ा पार कैसे लपेया ?
- १३३८ पुल का बाया मोती निपडी।  
बचसर पर किया हुआ काम ही फलवानी होता है।

क० बखत का बाया मोती नीरबी ।

१३३९ पूछता नर पंडित ।

पछते-पुछते मनुष्य पंडित हो जाता है ।

१३४० बूत का पय बालभै ही बीरवारै ।

बास्याबस्या में ही बालक के मविष्य की कल्पना कर ली जाती है ।

१३४१ पेट की आग बुझती सी बुई ।

पेट की ज्वाला एकदम शान्त नहीं होती ।

स्त्री का बर्षा भर बाय तो बुद्ध धीरे-धीरे शान्त होता है ।

नि० काठवा की आग बुझनी सी बुई ।

१३४२ पेट की आग नै है ।

जब पेट भर जाता है तो "नहीं" कहता ही पन्था है ।

१३४३ पेट के बरं की भाषा न के बरं ?

पेट के बरं का मसलक की क्या पता ? अर्थात् घुमने के रव को दूसरा नहीं जान सकता ।

१३४४ पेट दूई तो गोवा नै भारी ।

पेट टूटता है तो घुटनों पर ही बांग पड़ता है अर्थात् अपना कपाज अपने को ही मारि होता है ।

१३४५ पेट विरोत बंधु अन्नमान ।

पेट पुरोहित है और मू ह यजमान है ।

१३४६ बैरब से घायरी ई कोन्वा नाथ सिनपारी ।

पहनन के लिए लहंगा ही नहीं है और नाम है शृंगारिणी ।

१३४७ बोता नू की राबड़ी, बीपता नू की सीर ।

मीठी लागी राबड़ी पाटी लागी सीर ॥

पाते की बहू की राबड़ी भी बगली समती है और पीहिते के लडक की सीर भी बगली नहीं बगली बगलिक बंग पीने की बहू न बसता है ।

१३४८ बोका से बोका हुवा पिडत हुवा न कोप ।

टाई अक्षर प्रेम का बई तो पिडत होय ॥

केवल पोप पड कर को पलिन नहीं हाता । जो प्रेम से बडाई अक्षर पड केता है नहीं पडित है ।

१३४९ बोटी भाषत नून विन, रोहिब (विन) आतामीअ ।

सबब बिना सकुबियूं बयूं बाबै है बीज ?

ह किसान । अगर पीप की जमावत्या क दिन मूस लसब न हो और बीजास की असायतुपीया को रोहिनी लसब न हो और भावनी पूजिमा के दिन सबब लसब न हो तो खेत में क्यों ब्यर्ध में बीज बोते हो ? क्योंकि अकाल पड़ेगा । फ

१३५० फलको बेट को बालक पेट को ।

फुसकों की बेट में से फूलका कैसा निकले और पेट में से बालक कैसा निकले कुछ पता नहीं बलवा अचना बेट का फुसका बच्छा होता है और पेट का बालक ही निहाक करता है ।

१३५१ कामल मर्ब भर ब्याह कुगारै ।

काल्पुन में होली के समय पुरुषों को उच्छू बाल और बिबाह में स्त्रियों को उच्छू लल देखा जाता है ।

१३५२ कामल में ली बीगयो बै बाबेपी बाल ।

काल्पुन में यदि हुवा बलने लगे तो बीगली सरी पड़ती है ।

१३५३ काबी बाबरो रेसल को नाको ।

फटा हुवा झूँगा पहल रखा है और रेसल का नाका सदा रखा है ।

१३५४ फटे नै लीमे ना बरै नै नगलै ना तो काम कय्यां बालै ?

फटे हुए को यदि छिछाया न जाय रुठे हुए को यदि मनाया न जाय तो काम कैसे बले ?

१३५५ काक्या कपड़ा मत देखो घर दिल्ली है ।

फटे हुए कपड़ों से ही इन्हें सीधे-साधे न समझना वैसे ये बड़े पहुँचे हुए हैं ।

१३५६ फाड़बियै नै सीमबियूं कोनी नाबई ।

यदि एक मोर छीने बाळा कपड़ा छीता बळा जाय और बूसपी और फाड़ने बाळा कपड़े फाड़ता रहे तो छीने बाळा बाबिर कहीं तक सिंये ? वहाँ बेहद लर्ब होता हो वहाँ कमाले बाळा कहीं तक कमाले ?

१३५७ छिरे सो बरै, बंप्यो मूलां मरै ।

भूमने बाळा बरता है और बेंबा हुमा मूलों मरता है जबलि जो परिभम करता है वह कमा जाता है और जो निकम्मा होकर घर में बैठ जाता है वह मूलों मरता है ।

१३५८ बूकब बुगती बीब कोम्या निबली रही ।

यह फू क देने सीप्य बीम चुप नहीं रहती बलसंत बाहे जो बक बेती है

बिमका दुप्परिनाम मोगना पड़ता है ।

क० बाकब बोगी बोब निबती बोगी रेबे ।

१३५९ कूटे लाहू में त को लीर ।

जहाँ कूहू कूटता है वहाँ सभी को कुछ न कुछ मिलता है ।

क० लाहू कूटे कठे पीरो खिरे ई ।

१३६० कूटया भाज फलीर का, नरी बिलम दून क्याय ।

नाग्य कूट जाय तो फलीर की नरी बिलम भी कुल जाती है ।

१३६१ कूटपी मड़ी बबाज सं पिछाणू जाय ।

पूरा बड़ा बाबाज से बहसान किया जाता है क्योंकि उसकी भाषा ही सोनी-सोनी होती है ।

१३६२ कूड़ ( रांड ) की कोरी ताई उषफ्त ।

भाबर फिरने तक कूहड़ की पसल्य खूबी है जबकि वह भाबर फिरने के समय भाबर फिरने के लिए इन्कार कर सकती है ।

दुजम ऐम मोके पर भी इन्कार कर देता है ।

• १३६३ कूड़ के घर हुई कुंवाई कुता मिल बास्या रेबाड़ी ।

कार्म कुर्त सीग्या दून करा ती ली बम बकती कूच ॥

कूहड़ के घर किबाड़ लग गये । इसलिए काली ने मिलकर रिबाड़ी जाने का निश्चय कर लिया क्योंकि घर के किबाड़ बन्द हो जाने पर अब वे अन्दर नहीं जा सकेंगे । इतने में जाने कुते ने एकदम रोव कर कहा "हमें रिबाड़ी जाने का कष्ट नहीं उठाना चाहिए । कूहड़ के घर में किबाड़ तो बन्द ही गये हैं किन्तु वह उसको बन्द करने का कष्ट नहीं उठायेगी । इसलिए हम पहले की तरह बिना किसी दर के अन्दर प्रवेश करते रहेंगे ।

१३६४ कूड़ की मेल कामल में उतर ।

कूहड़ की मेल फास्युन में उतरती है क्योंकि फास्युन में गर्मी के कारण अब वह बरेशाल हो उठती है तब स्नान करने के लिए बिबरा होती है ।

१३६५ कूड़ बाले ली घर हार्ने ।

कूहड़ जब बाहर जाती है तो ली घर हिम जाल है । ली परों तक उसका कूहड़पन प्रकट होता है ।

१३६६ पूना कुलपो, संल का रिम भूस्ली ।

पूना जब बर में आ गई अपने सामने बिन्नी को बरनी ही नहीं । पिछे

बिन अब उसे माद नहीं रहे । दम हो जाने पर जीग मरीची को भूल जाते हैं ।

१३६७ फेरों के बखत कन्या तिसाई ।

माँवर फिरने के समय कन्या प्यासी अर्थात् आवश्यक कार्य पहले कर लेना चाहिए, ऐन मौके पर नहीं ।

१३६८ फेरों के बखत बाबी बाज बनीर खावा नें पोती ।

जब विवाह के बखत काम करने का अवसर आता है तब बाबी को करना पड़ता है और विवाह के उपरान्त में जब जाने का अवसर आता है तब पोती खैरार रहती है ।

१३६९ फोख के मगाड़ी, थोड़े के पिछाड़ी ।

फोख के भगाड़ी जतप रहता है और थोड़े के पीछ जतप रहता है ।

१३७० जोग आलो बी बर्न साधू सूबी भी लई ।

आरंभ फोग भी बकता है और साधु चाहे किठनी ही सीबी क्यों न हो फिर भी बहु को दुष्ट-भला कहती है ।

१३७१ फोख को, बागी अरु प्युह को पोछो बखू करडो होय है ।

फोख में आये लड़ने वाले को बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है और विवाह के पीछे कन्या के पिता को विवाह में काम करने वाले कर्मचारियों को रपमा-पैसा बुकाने में तथा उनको सन्तुष्ट करने में अधिक से अधिक ध्यान करना पड़ता है ।

ब

१३७२ बंधी मारी लाल को सुस्ली बीसर प्याय ।

सयुक्त परिवार में रहने से प्रतिष्ठा बनी रहती है, भाइयों के अलग-अलग होने से इज्जत जाती रहती है ।

१३७३ बंधी मूठी लाल को सुस्ली मूठी राख की ।

किसी के पास चाहे दम न हो किन्तु दूसरे यह समझते रहें कि वह धनी है तो प्रतिष्ठा बनी रहती है । अम सुछने पर प्रतिष्ठा जाती जाती है जबवा पैदा होते समय बच्चा अपने बहुमुख्य अधिकारी को छिपावे हुए छदार में आता है और मृत्यु के समय आली हाथ जाता आता है ।

१३७४ बकरी छोड़पी डाक, अँट छोड़पी आक ।

डाक को छोड़ कर बकरी तब कूट या लेती है, इसी प्रकार आक को छोड़ कर अँट तब कूट या लेता है ।

- २३७५ बकरी बूब तो है पच बे भौगनी करके ।  
भारत से लाचार होने की बजह से काम का मजा खोकर  
काम करने पर यह उक्ति नहीं जाती है ।
- २३७६ बकरी रोबे जीब नै कसाई रोबे जांत नै ।  
बकरी अपने जीब को रोटी है कसाई अपने मांस को रोठा है ।  
बकरी मोचती है मर गई कसाई बेकठा है मांस धोड़ा ही मिसा ।
- २३७७ बकरे की मा कर ताई खेर ( कुत्तल ) भनारै ?  
बकर की मा कर तक कसस भनारै ? उगकी कभी न कमी बलि दे दी  
जायगी ।  
मि० तिहुं नैब यजं नैब व्याघ नैब न नैब न ।  
अजातुत्रं बलि दद्यात् वैशो दुर्बलपातकः ॥
- २३७८ बसत बस्यो आप पच बात रं ब्याप ।  
समय बसा जाता है किन्तु बात रह जाती है ।
- २३७९ बजत नहीं बिपत्रं जकी बामिपू संभार ।  
बहु बनिया मूल है जो मौके पर ब्यापार नहीं करता ।
- २३८० बगल में लोटी नाम गरीबदास ।  
बगल में ठा आप छोटा रगते हैं भीर नाम ह गरीबदास ।
- २३८१ बटोड़ में से तो रूपता ई मीबतु ।  
झड़ों के डेर में से तो कंठे ही निकलते हैं । निघ कूल में कुशीन उत्पन्न नहीं  
हो सकता ।
- २३८२ बडका जीता तो खोज भली हो ज्याती ।  
एक पुरुष ने कहा यद्यपि मैं कम कमाता हूँ किन्तु छिर भी खाने-पीने  
में यदि धुगे कुछ व्यय न करना पड़ता ठा मेरे पास आज सम्पत्ति का डेर  
कम जागा । इन पर दूसर ने उत्तर दिया कि यदि तुम्हारे सब क सब पुरुष  
अब तक जीवित रहने लगे तुम्हारे यहाँ एक बड़ी से बड़ी सेना न तैयार  
हो जानी ।  
क० बडका जीता तो कितनी खोज कौनी भेनी हो जयानी ।
- २३८३ बड़े लोगां के काम होय है जांत नहीं ।  
बड़े लोग मुनी हुई बाल पर बिरबास कर लते हैं क्योंकि वे स्वयं जाँच  
पड़ताक नहीं कर पाने ।
- २३८४ बट्टी नू का बट्टा भाग छोटी बनड़ो घबो लुहाव ।

बर यदि छोटा हो और बड़ बड़ी हो तो बड़ के बूढ़ होने पर भी वह मुका ही खेगा इसलिए बर की ओर से स्त्री को अपनी मृत्यु तक सीनाम्य प्राप्त होता खेमा ।  
वह उचित राजस्थान के बाक-विवाह के प्रेमियों पर बरिष्ठान होती है ।

१३८५ बड़ा की बड़ी ई बात ।

बड़ो की बातें भी बड़ी ही होती है ।

१३८६ बड़ा बरों का बड़ा ई बारणा ।

बड़े बरों के बड़े ही डार होते हैं ।

१३८७ बड़ी बड़ी बात बगल में हाथ ।

बातें बड़ी और पास में कुछ नहीं ।

१३८८ बड़ी राता का बड़ा ई लड़का ।

बड़ी रातों के बड़े ही प्रातःकाल होते हैं ।

१३८९ बड़े पांव बाँझ, बड़ा लानू बाँझ ।

मनुष्य को अपने परिश्रम का ही फल मिलता है फिर भी वह अपनी जात नामों की वृत्ति के लिए हवाई किछे बाँधता रहता है ।

१३९० बड़े फेंकों का बड़ा डाला ।

बड़े फेंकों की बड़ी ही सामार्य होती है ।

१३९१ बड़ो बड़कला बाबियू काँसी और कसार ।

ताता ही में लोकिये ठंडो करे बिकार । \*

बड़ा बड़कला बनिपा काँसी और कसार, ये ठंडे होने पर बिकार करते हैं परम ही तभी इनका उपयोग करना चाहिए ।

१३९२ बनिपा लिखे कई करतार ।

बनिपा इस तरह की अपाठ्य लिपि में लिखता है कि उस समयान् ही पढ़ सके ।

\* मि बड़ो पकोड़ो बाबियू, ठाणो लीजे लोड़ जर्बातू बड़ा-पकोडा परम-परम ही बख्शा लपता है । बनिपा भी जब परमी पर जाया हुआ हो उकठाया हुआ हो मजमन्य हो भातुर हो किसी काम को करने की उम्मीद प्रकृत इच्छा हो उस समय ही उससे स्वार्थ सिद्ध हो सकता है उस अवसर का काम उठाना चाहिए, अन्यथा वह कुछ निहाल करने वाला नहीं होता ।

- २३९३ बन्नी बन्नी बानियू ।  
बनिया बन्नी हुई बात को बना लेता है ।
- २३९४ बनी बन्नी बन्नी बन्नी बन्नी बन्नी ।  
हल काड़ो इंसान करो ऊमा चाबो बीज ॥  
भापाइ इप्पा बन्नी को यदि बाबल और बिजली नहीं बिलकारी पड़े  
तो है किन्नाम । अपने हल को तोड़ कर उसका ईसन को तरह उपयोग  
करो और लड़े-लड़े बीज बचाते रहो क्योंकि बकास पड़पा ।
- २३९५ बनी को मिर नीचो ।  
बुराई करने वाले का मिर नीचा होता है । जालिर उसको सज्जित होना  
ही पड़ता है ।
- २३९६ बनी राम बर ।  
बुराई करने वाले का भगवान् से बैर होता है ।
- २३९७ बरली बरली छोड़ो बरली ।  
यदि बरली नशान में बर्पा होवे तो पति अपनी स्त्री को छोड़ भागे बर्पात्  
बकाल पड़ने से विवेक जाना पड़े ।
- २३९८ बलक ब्याबे तो कोनो बूबा तो होय ।  
बैस प्रसन्न तो नहीं करते किन्तु बूझे तो होते ही हैं ।
- २३९९ बलवां बली घोड़ा राज बरली सुपरं परत्या काम ।  
बैली से लयी और बोड़ी से राज्य सम्भव है तथा बरली से ही पटया काम  
सुबरता है ।  
टि० बरसती हुई परिस्थितियों में यह उक्ति सर्वांगत सानू नहीं होती ।
- २४०० बल बिना बुध बापड़ी ।  
बल के बिना बुद्धि बेबारी अकेली क्या कर सकती है ?  
शारीरिक बल तथा मन-बल के बिना अकेली बुद्धि क्या करे ?
- २४०१ बार्म तीतर, बार्म स्याल बार्म सर बौल बसराल ।  
बार्म पू पू घमका कर ( तो ) लंका को राज बिनीतल करे ॥  
तीतर का बायां बौलना गुमाक का बायां जाना गधे का ओर से बायां  
बौलना उस्तू का बायां बौलना ये दून लक्षण समझे जाने हैं । बिनीतल  
को ये शकन हुए ये इमलिए बलको लंका का राज्य मिला ।
- २४०२ बांका रहज्यो बालमा बांका बाहर होय ।  
बांकी वन में लाकड़ी, काट न लकड़े कोय ॥



## राजस्वामी कहावतें

- हे प्रियतम ! बाँके खुला बाँकों का ही भावर होता है । बग में देखी  
सकड़ी को नहीं काटा जा सकता ।
- १४०३ बाँसड़ी के आगे आगे की पीड़ ?  
बन्ध्या प्रसव-पीड़ा को क्या समझे ?  
मि० १ न हि बन्ध्या विजानाति पुत्रीप्रसववेदनाम् ।  
२ बाँस कि बाग प्रसव के पीछ (पुलसीदास)
- १४०४ बाँस ब्याँस तो कौनी बूढ़ी तो होय ।  
बाँस प्रसव तो नहीं करती किन्तु बूढ़ी तो होती ही है ।
- १४०५ बाँस कर जाना जर सुरप में जाना ।  
जा बाँस कर जाता है वह स्वर्ग में जाता है ।
- १४०६ बाँधी कौला पीड़ा बकसे है ?  
बाँधी कहाँ से थोड़े बकसीस में दे दे ? थोड़ी का मासिक तो राजा है । बाँधी  
तो बाँधी मात्र है । वह थोड़े बकसीस में नहीं दे सकती ।
- १४०७ बाँधी बूझों का पय थोड़े पय जापका को बोया जाय न ।  
बाँधी बूझों के पैर जो देती है किन्तु अपने पैर उससे नहीं बोये जाते ।
- १४०८ बाँघ्यो तो बकर ही को रँबी न ।  
बाँघ कर तो बंस को भी नहीं रल सकते ।  
1 किटी से जबरन काग नहीं लिया जा सकता ।
- १४०९ बाबू लखो न बाहिबो, स्याली जरल सुवार ।  
111 भेड़िया जरल और सुनाद, ये तीनों न बाँधे लखो और न बाहिने ।
- १४१० बाँस जड़ी नटवी कई हुयां न नटियो कोय ।  
में नट की नटवी हुई नट तो नटवी होय ॥  
बाँस पर जड़ी हुई नटवी कह रही है कि किसी के पास बाग देने की पीड़ी  
बहुत भी सामर्थ्य होने पर वह इन्कार न करे । बाग न देने से 'न' कहने  
से भी नटनी हुई । (स्लेप भी है) मैं नटने से (नट का काम करने से)  
नटनी हुई बर्बात पूर्वजन्म में बाग न देने का फल मैं अब भोग रही हूँ ।  
1 जो नटता है बाग नहीं देता है उसे जाने के जन्म में नटनी का नाम भावना  
पड़ता है । बाग की महिमा नाई गई है ।  
टि० इस उक्ति के सम्बन्ध में जो लोक-कथा है वह अत्यन्त  
परिद्ध है ।

- १४११ बाई का फूल बाई के ई लायया ।  
जित कार्य से जो आयस हुई वह उमी कार्य के निमित्त भय गई ।
- १४१२ बाईजी पेट में लें तो नीकल बा बल हांडी में से कोनी नीकल या ।  
राजपूती के वही जब सडको पीरा हाठी भी तब बहुत में भियन राजपूत पीरा होते ही उसको एक हंडिया में रख कर उसके मुह को जोर से बन्द कर देने से जिससे बम घुट जान के कारण सडकी की मृत्यु हो जाती भी । उस हंडिया को जतल में स जाकर माफ़ देते थ । इस पर यह उक्ति है ।
- १४१३ बाईं लोबणो लो घनी ई बग आँख में फूलो ।  
बाईं मन्दर तो बहुत ही किन्तु अंग में फूला है ।
- १४१४ बायल की बाबल पाबनी एक डाली के लूँबी लुमगया ।  
बायल ( एक परी बिजय जो बृह की छोटी बालिया को पत्तों से पकड़ कर नीचे की ओर सटकता रहता है और मुह द्वारा ही जो अपना मल निशर्जन करता है ) के वही मेहमान के रूप में बाईं हुई बूसरी बागल में बहा में कहाँ रहीं ? उत्तर मिसा "मिरी तरह लू भी बटक जा ।"
- १४१५ बाछड़ो लूँटे के पाब बूई ।  
बछडा लूँटे के बल कूरता है ।
- १४१६ बाबरी ललिया, लीठ कलिया ।  
बाबर लुप में बड़ता है और मीठ कलिया में ।
- १४१७ बाबे अबला पय छ प्रबला ।  
अबला कहलाती है किन्तु स्त्री बाग्गल में प्रबला है ।
- १४१८ बाबे डाबर, बाय बराबर ।  
बच्चा ठो नाय माय का है आमे में निमी स कम नहीं ।
- १४१९ बाबे पर टान आबे ।  
बाज पर टान मानी है ।
- १४२० बाड़ के लहार बूब बर्ये ।  
कमजोर ममप्य भी आयस पाकर बड़ता है ।
- १४२१ बाड़ छत में लाय । \*

\*पूरा वच—बाजा बंई पीत मै रोवै किच दिव बाब ।

बाड़ लगाई छत में बाड़ छेत मै लाय ॥

मि० कल्याणं तत्र किं नृपारसको यत्र नद्यतः ?

१४२२ बाड़ में मूत्पां कसो बेर नीकल ?

बाड़ में मूख बिसजन करने से बोड़े ही प्रतिधीव सिमा वा सकटा है ?

१४२३ बाड़ में हाथ घालव लं तो कांटो हुी जारै ।

बाड़ में हाथ लगाने से वा कांटे ही चुभते हैं अर्थात् दुष्ट के संसर्ग से कष्ट ही ग्रहणा पडता है ।

१४२४ बाबिबा की नांड बुरी कातिक की छांड बुरी ।

बनिया एक बार इन्कार कर देने पर फिर नहीं बैठा इसलिए उसका 'मही कहुना' बुरा है । काठिक की बर्षा कागो हुई फसल की हानिकारक होती है ।

मि काठी की मेहु कटक बराबर ।

१४२५ बाबियूं के लो बांड में रे के जाट में रे ।

बनिया या तो मुस्लिम का कोई अवसर माने पर बैठा है या बीमार होने पर बाबिक कार्यों में व्यय करता है ।

१४२६ बाबिये की बेटी नं मांस की तुबाव की के बेरी ?

बनिये की कड़की मांस के स्वार की क्या जाने ?

बिसका बिससे सम्बन्ध नहीं बहु उस वस्तु के बारे में क्या जाने ?

१४२७ बाबियो जाट में ली बामन ठाठ में ।

बनिया यदि बीमार होता है तो फिर ब्राह्मण के ठाठ है क्योंकि ऐसे मौक पर जप-तप आदि के लिए बहु ब्राह्मण की निपुणता करता है ।

१४२८ बाबियो ठाठ में लो बामन जाट में ।

बनिया यदि ठाठ में रहता है तो धर्म-कर्म के प्रति बहु उदासीन हो जाता है इसलिए ब्रह्मण के कारण बेचारा ब्राह्मण कम्बवत् अपना जीवन व्यतीत करता है ।

१४२९ बाबिबी मेवा की कंज है ।

बनिया मेवे का बुल है अर्थात् उससे सजी की कुछ न कुछ प्राप्त होता ही रहता है ।

१४३० बाब्यो सिद्ध, पड़े करतार ।

बनिया इस तरह के असार निबता है कि उन्हें बुदा ही समझे ।

१४३१ बाठ की बाकनूं नर संयोग की पीबनूं ।

सयोगवद्य काम होने पर इस उक्तिका प्रयोग किया जाता है ।

- २४३२ बाठ में हुंकारो फीज में नपागो ।  
बाठ में हुंकार देने से मानस्य भाठा है फीज में नपाड़ा बजने से कड़ने बाकों की जाग आठा है जिससे वे दूने उत्साह के साथ युद्ध में प्रवृत्त होते हैं ।
- २४३३ बाठा रीसे बाबिर्षु पीतां से रजपूत ।  
बामय रीसे लाडुबां बाकल रीसे भूत ॥  
बनिया बाठों से राजपूत गीठों से ब्राह्मण लड्डियों से तथा मूठ बाकलों से पीसता है ।
- २४३४ बाबल कर गमों करे जरे बरसभ की मास ।  
मायमान में जब बाबल छाकर तपन हो जाती है तभी बरसने की आशा बँसती है ।
- २४३५ बाबल को छाया से कें विन काम सर ?  
बाबल की छाया से कितने गिन काम चल सकता है ?
- २४३६ बार तो राबभ का है कोनी भास्या ।  
किमी तरह का दुरायह करना किसी को मोना नहीं देता । गर्भ में पुर रहने वाले राजसराय राबभ को भी बन्ध में इस संसार से कूच कर आना पड़ा ।
- २४३७ बाबल में विन बीसैं, फूड़ बल न बीसैं ।  
बाबलों में जब तक सूख छिपा रहता है तब तक फूड़ विन बढ़ा नहीं समझती ।
- २४३८ बाब बनोरें पीली जाय खेरें कें बजल बाबी जाय ।  
मुश्किल ठो बड़े और दुर्जय पर, फूसे-फूसे बच्चे बुगटे हैं ।
- २४३९ बाप कें धन छीत को बेटी नें बेबी रीत को ।  
एक लड़की ने अपने पिता से कहा "आपके ठो मुक्ठ का मास आठा है, छिर मुसे दहेज में इतना कम क्यों दिया जाता है ?" पिता ने उत्तर दिया "मेरे पाठ चाहे धन कैसे भी जावे लड़की को तो हिमाच का ही मिलेया ।"
- २४४० बाप को मारपो जानै पुकारे पय मा को मारपो को नें पुकारे ?  
पिता यदि पुत्र की पीठे ता पुत्र माँ के पास पुकार करता है किन्तु यदि माँ ही जमे पीटने लगे तो वह किसे पुकारे ?
- २४४१ बाप बराया बाछड़ा बाप पयाई बीत ।  
कें चार्ननी बापड़ी बेंड़ घरीं की रीत ॥

कित्ती कड़की के बर्ब करने पर बूतरे की उक्ति है तुम्हारे बाप ने तो बछड़े चराने तुम्हारी माँ बूतरों से "चराई" (चराने का मुख्य) बसूक करती रही। ऐसे निकृष्ट कृक में उत्पन्न तुम कभीन बरों के रीति रिवाजों को क्या समझो !

- १४४२ बाप न मारी लूंपड़ी बेटो गोल बाब ।  
बाप ने तो लोमड़ी भी नहीं मारी और बेटा तीरंदाज बन बैठा । जो लम्बी-चौड़ी हाँकता है उस पर ध्यंघ कसा गया है ।
- १४४३ बापमुई कहो चाहे मामुई ।  
वह बनाव है उसके न माँ है न बाप ।
- १४४४ बाबाजी की शौली में खेबड़ा ही नीकर पा ।  
बाबाजी की शौली में मूज के रस्ते ही निकले ।
- १४४५ बाबाजी की बाबाजी तरकारी को तरकारी ।  
एक बाबाजी का नाम बैंगनबास था बिसेसेकर ऊपर की उक्ति कही गई है ।
- १४४६ बाबाजी, चारा ही चरना को परसाव है ।  
एक बाबाजी एक बलिये की दूकान पर गये । बलिया पा कंबूम । बाबाजी से प्रतिष्ठित स्वागत करना उचित था । बाबाजी ने अपने बूते सीढ़ियों पर रख दिये । बलिये ने अपने गीकर से बाबाजी के बूते बंध डालने का इमारा किया और उन पैसों से बाबाजी के लिए मिठाई मंगायी । बाबाजी ने कहा मिठाई ठा बहुत अच्छी बनी । बलिये ने कहा "बाबाजी यह आपके चरनों का ही प्रसाव है ।"
- १४४७ बाबाजी बूनी तपो ही ? कहू माया काया बाब है ।  
बाबाजी ! बूनी तप रहे हैं ? उत्तर, "मैया मेरी काया ही जानती है ।"
- १४४८ बाबाजी बछड़ा घेरो । कहू बछड़ा घेरता तो स्वामी क्यूँ होता ?  
कित्ती ने बाबाजी से बछड़ हाँकने के लिए कहा था कहने लगे "बदि बछड़े हाँकते तो साबू क्यों बनते ?"
- १४४९ बाबाजी बजन कोन्पा करो । बज्जा रोबध में ई कोन्पा पाव ।  
बाबाजी ! बाप मजन नहीं करते ? उत्तर बज्जे रोमै से ही फुरसठ नहीं मिलती ।
- १४५० बाबाजी बें गुन होती तो आवेस करगियां घना ।

बाबाजी में यहि गुण होंगे तो आदेश " कहने बाने मक्कों की कमी न होगी ।

१४५१ बाबाजी संज तो सुबियाँ बजायी कह देव को ना देव के बाप को टका नो काट्या है ।

बाबाजी ! आज तो घल सदा से जन्मी ही बजाया । उतर, घब न देव का है न देव के बाप का है नो टके बेकर मैंने लरीया है मैं जो बाहूँ छो करे ।

१४५२ बाबाजी सक्रम तो पाई ऊपर स राज रमाली ।

बाबाजी पहले ही बहुत सुन्दर से ऊपर स विभूति रमा ली ।

१४५३ बाबो मायो बाये बाहे छान फाड़ कर ही मायो ।

बाबा जाना पाहिए, बाहे छप्पर फाड़ कर ही मायो ।

१४५४ बाबो बाबे न ताली बाजे ।

फिती बाबा ने कहा मैं आठे तब ताली बजा देना किन्तु न बाबा लीट कर बाया न ताली बजी ।

अनस्य ऋषि की बहु कथा भी अत्यन्त प्रसिद्ध है जिसमें जाप्टाग प्रणाम करते हुए अपने दिव्य विष्णुचक्र को अगस्त्य ने तब तक घाही लेटे रहने के लिए कहा था जब तक वे दक्षिण स न लीट आये किन्तु अगस्त्य फिर कभी लीटे ही नहीं ।

निष्कल प्रतीया के अर्थ में प्रयुक्त कहावत ।

१४५५ बाबो गयो नो दिन नो जाया एक दिन ।

बाबा नो दिन के लिए जहाँ दूररी जगह गया । इसलिए पर में मोजन की बचत हुई किन्तु एक ही दिन नो मेहमान एक मात्र आगये ।

१४५६ बाबो गयो बीज नै, सिद्धा चारपाँ जायो ।

बाबा बीज मारने के लिए गया था किन्तु जब मिट्टे पतने का भी समय आ गया तब लीटा । किसी को किसी काम के लिए भेजा जाय और बहु बहुत बेर करने वहाँ स जाये तब इस लोकोक्ति का प्रयोग होना है ।

१४५७ बाबाजी का बापला के मूजर की पीड़ ।

बाबाजी के दास्तों में बा तो मूजर है या पीड़ ।

१४५८ बाबो भरपो डीलली बाई रह्यलतीन का तीन ।

बाबा की मृत्यु हुई कचर एक लड़की बीया हुई पर में तो बही तीन के तीन रहे ।

- १४५९ बाबो से ने लड़े, बाबा ने कुछ कई ?  
बाबा सबको बोप बेठा है बाबा जो बाप कीन रे ?  
बड़े छोटी को बोप रे सकते है छोटे बड़ों को नहीं ।
- १४६० बाबो सीबे से घर में टोप पसरै अं घर में ।  
बाबा साठा तो है इत घर में और टोप फैलाता है उस घर में ।  
उक्त कहावत उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो केवल अपने बेटे के लिए बहुत बड़ा स्वाम रोकता है ।
- १४६१ बामन कहूँ छूटे बलद बहूँ छूटे ।  
बाह्यन कहूँ शकता है बैक जमीन पोठना है ।  
मि० बामनल हि बाह्यनामा ।
- १४६२ बामन कुला हाबी, कदे न बात का सापी ।  
बाह्यन कुल और हाबी कमी अपनी जाति वालों का साथ नहीं देते ।
- १४६३ बामन की ह्याप में भोना की कबोलो हूँ ।  
बाह्यन कभी भुला नहीं रह सकता । किसी-न-किसी तरह मान कर भी अपना निर्वाह कर लेता है ।
- १४६४ बामन तो हुलल को बुझावन को बर्नी है ।  
बाह्यन का स्वार्थ तो केवल पाभिब्रह्म करवाने तक है बाद में घर-बच्चे चाहे शोभित रखे वा न रखे क्योंकि उसकी शक्तिमा तो मिल ही जाती है ।
- १४६५ बामन नाई कूकरो, बात देख घुराय ।  
कामन कागो कूकड़ी, बात देख हरबाय ॥  
बाह्यन नाई, कुला अपनी जाति वालों को देख कर घुराते हैं जब कि कावस्थ कीबा और मुगा अपनी जाति वालों को देख कर ह्वित होते हैं ।
- १४६६ बामन ने बी बुड़ी बाब पुन हुयो न बालद जाय ।  
बाह्यन को किसी ने बुड़ी बाब बान में देयी । जतसे न तो देने वाले को पुष्य हुआ और न बाह्यन की शक्तिता ही गई ।
- १४६७ बामन ने रे बुड़ी गाय बर्म नहीं तो बालद जाय ।  
बाह्यन को यदि बुड़ी गाय बाब देने में बर्म न होता हो तो भी पैसा करके बानी अपने शक्तिप से तो मुक्त होता ही है ।  
क० बामन ने रे बुड़ी गाय पुन हो घर को बालद जाय ।

ब्राह्मण को बुझी गाय बान में देने से धर्म भी हो और धर का वाटिभ भी बका जाय ।

१४६८ बामन न साठ बरस ताई तो बब माबे कोग्या पछे जा मर ।

ब्राह्मण को साठ बप तक तो बदि नही जाती और फिर उसकी मृत्यु हो जाती है ।

मि० बामन का बेटा बाबन बप तक पीया ।

१४६९ बामन बचन परबान ।

ब्राह्मण का बचन प्रामाणिक होता है ।

१४७० बामन बचन परमाथ । संघाजी की सोइकी माय करके जाय ।

ब्राह्मण का बचन प्रामाणिक समझो । जाट और ब्राह्मण की प्रसिद्ध कथा की और संकेत है ।

१४७१ बामन रो भी लाइये ।

ब्राह्मण विष्टाम-प्रिय होता है ।

१४७२ बामन से बामन मिस्यो पैलता बलम का संस्कार ।

देन-लेन न कुछ नहीं नमस्कार ही नमस्कार ।

पूर्वजन्म के संस्कारों से ब्राह्मण से ब्राह्मण की भेंट हो गई । दोनों के पास नमस्कार ही नमस्कार है लेने-देने के लिए कुछ नहीं !

१४७३ बामन हापी बइपी भी मार्ग ।

ब्राह्मण हापी की मबारी भी कर ले तब भी मार्गने की आरत को नहीं छोड़ता ।

१४७४ बामन हीर को बुर को न पीर को ।

बहीरा की वृत्ति वाला ब्राह्मण मुद अबबा पीर किमी का नहीं होता ।

१४७५ बामनियू बतलायो लैरा लाग्यो जायो ।

ब्राह्मण का बिगी बान के लिए पूछन पर फिर वह बच प्राणि की भासा ने पीछ हा सता है ।

१४७६ बाटडी की घोड़ा हाली हुई ।

एक बार एक जिमी ठाकर कयही जाया जाया करने से । वहाँ उनकी बड़ी आजमगल हुनी थी । बार एक बई बाटडीपुर को कहा करने ठाकर साहब कभी ता हम बंदे की सोइकी भी पबिब जाजिये । एक दिन पूमने पूमने ठाकर बार एक के यही पर्वन गये । ठाकर ने पूछा “ सोइकी कहाँ बापू ? ” बार एक ने उत्तर दिया “ इत मेरी दुष्ट जीम के बाप जिमने यह भूक



हो गई कि उतने बिना सोचे-समझे बालको निर्मलित कर दिया ।

३४७७ बारास पाँच की छोटी लाडू बिना बीरी ।

बाहर पाँच की रहने वाली मझकी यह भी लड्डू खाने के लिए रुक रही है मानो सवा ही उसे लड्डू खाने को मिस्रते हों ।

३४७८ बारास बरस ताई बेड़ी में रहपी पड़ी ताई बोड़ी ही तुड़ाती ।\*

बाहू बरस तक कंद में रहने के बाद जब मुक्त होने वाला है इसकिए बड़ी भर के लिए निकल भागना कहां तक उचित है ?

\* ३४८९ बारा बरस से बांस ध्याई पुत ल्याई बांगलो ।

बाहू बरस के बाद तो बन्ध्या के पुत्र उत्पन्न हुआ और वह भी पंगू !

\* ३४८० बारा बरस से बाबो बीसपी बीसपी " बड़े अलाक " ।

बाहू बरस के बाद बाबा ने अपना मौत भग किया और कहा ही यह कि अलाक पड़ेगा । "

३४८१ बालक देखे हीयो, बूबो देखे लीयो ।

बालक तो हृदय देखता है प्रेम को पहचानता है और अकस्मा में बड़ा मनुष्य किम हुए काम को देखता है । उसे काम बाहिये वह केवल भाव का भूजा नहीं ।

३४८२ बालक राजा सैइये डलती लखे छाये ।

बालक राजा का सेवन करना चाहिए क्योंकि उसके शीर्ष जीवन की आधा रहती है । डलती हुई छाया का सेवन करना चाहिए क्योंकि वहाँ फिर पुन नहीं जाती ।

क० बालो राजा सैइये डलती लीये छाह ।

\* ३४८३ बाल बीसपी मुरवा हलका कोली हीय ।

मुरवा के मरीर से बाल अलग कर देने पर वे हलके नहीं होते ।

३४८४ बाल लीनु काम लीई ।

वह स्वर्णभूषण अला देने योग्य है जो काम छोड़ता है ।

३४८५ बाबबा का कला पाँच म्बारा हीय है ?

पापकों के कोई अलग बाँव नहीं होते ।

३४८६ बाबला मरवा जोलाद छोड़या ।

\* क० बारा बरस तो काठ में रयी \* बड़ीक की ताई वन तुड़ा कियो ।

क० बाबो बीसपी बीनी, बीसपी कोली \* बीसपी तो 'मरका' में बाई । "

जो पायल से भर गम और अपने पीछे मन्तान छोड़ गये ।

२४८७ बाबली 'र' मूर्ता लदेड़ी ।

पपली तो पहले ही पी छिर भूठ और पीछे लग गये ।

२४८८ बाबली भर भांग पीली ।

पायल पहले ही या सब मग और पी ली ।

२४८९ बाईं तो लूंचे ।

जो जैना बोला है बीसा काटता है ।

२४९० वाली बच्चे ब कता जाम्य ।

बहु निभन है यही भोजन बचता नहीं इन्हें। बायीं भोजन को कुने ला जाये ऐसी नीबल जाती ही नहीं ।

२४९१ बाड़ी बी ललही करही जो करही ।

जो कुछ बोया है वह काटेगा । जो करेगा वह भोगेगा ।

२४९२ बिदिया तो भीती ।

जा काम हो गया जमी में लाभ समझना चाहिए ।

२४९३ बिदराजन में रहते तो राधे गोबिन्द कहती ।

जा बुन्दावन में रहेगा वह राधे गोबिन्द बोयेगा ।

२४९४ बिपड़ी तो कली बिगड़ी बाबाजी तो तिड का तिड ।

यदि घाट हुई तो खेती घाट हुई बाबाजी तो तिड के तिड रहे ।

२४९५ बिडवाया बल भाये ।

प्रोत्पादनाय जब विनी की प्रगना की जाता है ता उस व्यक्ति में बल का मचार हो जाता है ।

२४९६ बिबड करता बाबिया और करेला रीत ।

व्यापार ता बनिव करेने और भोग तो भौच बरके मगना नाम बिपाड़ केने है ।

२४९७ बिजनी लाम्यो बाणियू, भूटी लापो गाय ।

बाबड़े तो बाबड़े महि दूर निकल पयाय ॥

व्यापार में जैसा हुआ बनिवा दूमरा क मोर्तों में करने बायीं काय अगर बाणिस भाये ता कामे बही तो ये दोनों बनने काम में लय ही रहने है ।

२४९८ बिना लम्हा आकाब कहपी है ।

आबाग को आचार-सुम्हों की आबरवबता नहीं ।

- १४९९ बिना ताल तनूरी कौनी बाजें ।  
बिना ताल के तम्बूरा नहीं बजता ।
- १५०० बिना तेल बिबो कौनी बसै ।  
बिना तेल के दीपक नहीं जल सकता ।
- १५०१ बिना पकपीड़ी बायमो, पकपी-पकपी भीड़ ।  
बिना पका हुआ बाहिमा पके हुए गौड़ के बराबर होता है ।
- १५०२ बिना पीरि को छोटी चाहे जिसे नुस्र जाय ।  
बिना पेरि का छोटा चाहे जिनकर नुस्रक जाता है ।  
बिसका कोई निरिषय सिद्धान्त न हो ऐस मनुष्य के सम्बन्ध में कही गई उक्ति ।
- १५०३ बिना बलवां नाड़ी कौली चाली ।  
बिना बँडों के पाड़ी नहीं बजती ।  
बिना साम के कार्य सिद्ध नहीं होता ।
- १५०४ बिना बाप की छोटी बिनड़े बिना माय की छोटी ।  
बिस लड़के का बाप न हो वह बिगड़ जाता है, और बिस लड़की के माँ न हो वह लड़की बिगड़ जाती है ।
- १५०५ बिना मन का पाचवां चाली की घालू क तेल ?  
कोई स्त्री मन ही मन किसी मेहमान के लिए कह रही है जो उसे बज्जल नहीं जगता " मैं तुम्हें भी खिलाऊँ या तेल ?
- १५०६ बिना किले पारि नहीं बड़ी बस्त की भोग । \*  
बड़ी बस्तु का भोग बिना भोग्य में किले नहीं मिलता ।
- १५०७ बिना लून का राबै साम बिना पेच का बाबै पाच ।  
बिना कंठ का बाबै राग, न साम न पाग न राग ।  
( स्पष्ट है )
- १५०८ बिल भर की छोकड़ी, नज भर की चीन ।  
मि छोटे मुद्द बड़ी बात ।

\* मि १ सकल पदारथ है जपमाड़ी । कर्महीन नर पावठ नहीं ।  
( तुकड़ीपाठ )

२ कर्म कित्वा सोइ पारि जी ।

३ भूतल योग पदारथ बहुता । कर्म हीन नर पारि नहीं ।

- १५०९ बिनीपख बिना मेव कुच बताव ?  
बिनीपख के बिना मेव कौन बतावे ?
- १५१० बिरठा बड़ बिरकाट बिराजे स्याह सचेत लाल रंग साज ।  
बिजमल पवन कूरिया बाजे, घड़ी बलक महि मेहु पाजे ॥  
यदि गिरगिट वेड़ पर बैठ कर बामा लफेर भोग साक रम बारण करे  
और बाबु उत्तर-पश्चिम से बसे तो घड़ी दो बड़ी म मेहु भायगा ।
- १५११ बिरडिबे को गारड़ कौनी ।  
कोई गारड़ी बिरडिबे ( एक छोटा बिडीर क बराबर जहंगोला मप )  
का इलाज नहीं कर सकता ।
- १५१२ बिसाई को मन मलाई में ।  
बिसाई का मन मलाई में रहता है ।
- १५१३ बिल्ली में कड़े बंगल पाता देख्या ना ।  
बिल्ली तो बूढ़ों को मारती ही रहती है ।  
बुरे से कमी भला नहीं होता ।
- १५१४ बिल्ली बनारिया तो बघाई करे पय गांव का कत्ता करण रे जद मर ।  
बिल्ली बाजार में नीर करण को इच्छा तो बहुत रखती है किन्तु कत्ते  
ऐसा नहीं करने देते ।  
कमजोर को प्रबल के भागे नहीं बचनी ।
- १५१५ बीपड़पीड़ा तीबख कोनी सुबर ।  
बिगड़े हुए बच्चे नहीं सुबर पाते ।
- १५१६ बीपे-बीपे भूत भर-बिलसर्-बिलसर् साप ।  
बीपे बीपे की दूरी पर भूत रहने हैं और बिलसे बिलसे की दूरी पर साप  
रहने हैं । राजस्थान क सम्प्रदाय में इस उक्ति का प्रयोग हुमा है ।
- १५१७ बीजली को मारपोड़ी बसका से करे ।  
बिजली ने आहत हुआ मनुष्य बिजली को बमक मात्र से ही डर जाता  
है ।  
पि० दूय का जला छाछ को फूँक-फूँक कर पीता है ।
- १५१८ बीरबा दिन नहु बाबड़ी मुबा न बीबे कौय ।  
बीठे हुए दिन बापिल नहीं भाने और मर जाने पर फिर कोई जीवित  
नहीं होता ।
- १५१९ बीप के भूँड ही लाल कई जद जवली के करे ?

बर में ही यदि बम न हो तो बटावो क्या करें ?

मुझिया को ही हिम्मत न हो तो डुमरे क्या करें ?

१५२० बोन तो बापो ई कोनीं र फेरों की त्पारी ।

बर तो बापा ही नहीं और जोकर की त्पारी ।

प्रमुख स्मरित क नामे बिना कार्य बिधेय सिद्ध नहीं हो सकता ।

१५२१ बोन ती बडो बन्नु । के और ना बडो होपो बाप हूँ जब ती बन्नी करो ।

कहा जाता है कि एक बड़ी उम्र का दुस्वहा विवाह करने के क्षिप्त गया ।

जब वह जोकर छेने बैठे तो कन्या की माता अपनी लड़की को लाने में

कुछ आयापीछा करने लगी । देर होते देख कर बर-पस बालों ने पूछा,

मायरा क्या है ? बिस्मय क्यों हो रहा है ?" इस पर कन्या-पस बालों ने

उत्तर दिया " बर जबिक उम्र का है उतसे कैसे विवाह करें ?" तुरन्त

ही बर-पस बालों में से किसी ने कहा " क्यों-क्यों देर कर रहे हो क्यों-

त्यो बर और भी बड़ा होता जा रहा है ।" जब तो बन्नी करो ।

१५२२ बीन बजब र्से रह पर, दूह पया सब तार ।

बीन बिचारी के कर, गया बधावचहार ॥

बीना बजने से रह गई उसके सत्र तार टूट गये । जब बजाने वाला ही

बसा पया तो बेचारी बीना क्या करे ?

१५२३ बीन बीनकी छोटा-मोटा, घर में कोनी वाली-कोटा ।

यद्यपि बर बिचन है तथापि छोटे-बड़े सब घीन्टीन है ।

१५२४ बीन बीनकी साबदान , बर में कोनी बाब बान ।

आडम्बर बहुत है तिल्लु पर में उसके बनुरूप कछ भी नहीं ।

• १५२५ बीन मरो पार्व बीनकी बामन को टक्की त्पार ।

बर-बन्नु बाहे जीवित रहे या न रहे बाह्यन को तो अपने नेय के वैसे धिक्

हो जाते हैं ।

क बामन को टक्की बठे न जाय ।

१५२६ बुच बाबनी, मुक्कर लाबनी ।

बुचवार के दिन हुक भोतना बाहिए और शुक्रवार के दिन फसक काटनी

बाहिए ।

१५२७ बुदाले की बाबै बायता नै पची प्यारी लानी ।

बुदाले को सन्तान माता-पिता को आत्यधिक प्यारी बनती है ।

१५२८ बुच बिन बिटा बाबडी ।

बादमी पड़ तो से किन्तु यदि गाँठ की अथवा उमक पास न हो ता उसकी बिद्या निकम्मी है। बिद्या स तात्पर्य यहाँ कबल पुस्तकी बिद्या स है।

१५२९ बुरी बुरी बामक के सिर ।

बुरी-बुरी का उत्तरदायित्व बाह्यको पर लगाया जाता है ।

१५३० बूधी बाकरी चौड़ियी मुबाल ।

बिना बालों की बाकरी और लंगडा ग्वाल दोनों का अच्छा मेल मिला ।

१५३१ बूडां बरकत होय है ।

बूडों की सहायता से ही मनुष्य कार्य में सफलता प्राप्त करता है तथा सुख-सम्पत्ति की वृद्धि होती है ।

१५३२ बूडा गिध्या न बालका लड़को गिध्यो न सांस ।

बच बच की मन रासतई, बेग्या रह्यी बांस ॥

न बूड देला न बालक न यही देला कि प्रात काल है या सायकाल  
बन-बन का मन रखती हुई बेरया बांस रहु गई ।

१५३३ बूडो बडेरो मर ब्याय बर के लागर लुगी हो ब्याय ।

बूड की मृत्यु होन पर उसके स्थान को वृत्ति होगी ही है ।

१५३४ बूडली के घर में तार आ बड़यो । ( बूडली के घर में खोर बड़यो )

किन्ती सीधे-माये मनुष्य के यहाँ अगर किन्ती दुष्ट वा प्रवेय हो जाय तब  
इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१५३५ बूडली न पापड़ बेततां बीला बिन होया ।

बूडिया को पापड़ बलते हुए बहुत बिन हा मय ।

निमी अनुमदी के सम्बन्ध में इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१५३६ बूई बाप ने मर बूई बैल न बाहले बनो ही योडो ।

बड़े बाप और बूड बैल स जितना काम से मिया जाय जतना ही पाडा ।

१५३७ बूडो हो चाहे ब्याग हत्या ताई काम ।

एक राजा न ताई रखी " जा पहाड पर से बूड बर अपने प्राण दे दगा  
उसे एक इमार रुपये पुरस्कार मिलवा ।" एक मनुष्य ने घन स्वीकार कर

ली । बहु किन्ती बूड की लेकर पहाड पर जाया । राजा ने कहा " बूडने  
की गर्न तो तुमम हुई बी । इस बूड की क्यों लाये ? उत्तर में उसने कहा

मुन्हें तो हत्या से काम है । जो पहाड से बूडेगा उसकी मृत्यु मकाम  
होयी बहु चाहे बूड ही या जवान हो ।"

- १५३८ बुर का लड्डू खाए तो बी पिस्ताई न खाए तो बी पिस्ताई ।  
 मेहँ के बून में सिर्फे बूड़ या बीनी मिला कर बिना बूठ के बी लड्डू बनाने  
 बाटे है वे बुर क लड्डू कहलाते है । उनको खाने बाबा भी पछतावा है  
 क्योंकि उनमें घुत्तारि के बभाव के कारण स्वाद नहीं होता । न खाने बाबा  
 इनमिण पछतावा है कि न खाने वे कितने अधिक स्वादिष्ट हों । नहीं  
 कहीं बुराबा भी इन लड्डुओं में मिला दिया जाता है ।
- १५३९ बीई कसिया बीई ताज काल करी तो करस्पी बाब ।  
 नहीं सामान तैयार है कल की तरह काम में जुट जाबी ।
- १५४० बेईमान का पीड़ा मेरान में बरै ।  
 ( स्पष्ट है )
- १५४१ बेटा खाया बालक स्याया, बेटा हुया स्याया, बिराहा हुया बिराहा ।  
 बहुत से पुत्र उत्पन्न होते है तो पढ़के तो घर में बखिरता जाती है क्योंकि  
 बच्चों के पासन-पोषन शिक्षा-बीसा आदि पर बहुत व्यय करना पड़ता  
 है किन्तु जब बड़के छयाने होकर बनोपाजन करने के योग्य हो जाते है  
 तो बाखिरप उस घर से बिदा ही जाता है ।
- १५४२ बेदिया की मा रापी, भरै बुझापे जापी ।  
 जब तक कन्याओं का विवाह नहीं होता तब तक घर का सब काम वे  
 करती रहती है इसमिण माता राजी-सद्दुघ हुकूमत बलाती रहती है ।  
 माता के बुडा होने पर सब लड़कियाँ तो समुराज में रहती है, इसमिण  
 माता को सब काम अपने हाथों करना पड़ता है ।
- १५४३ बेटा घर बलक बूड़ी कोनी वैरपी ।  
 बेटा और बीन हमेसा बन्धन में रहते है ।
- १५४४ बेटा जान बमारी हारपी ।  
 बेटा पैदा करके पगम प्यार ही खोया ।
- १५४५ बेटा रई जान सँ नई तो रई न सापी बाप सँ ।  
 बेटा ना तो स्वतः ही मर्वाबा का पालन करती है, नहीं तो वह अपने पिता  
 की बात भी नहीं मानती ।
- १५४६ बेटा कती सातरै जाननै बेटा कती म्यारी होप नै ।  
 लड़की समुराज खाने के लिए कटती है और लड़का समुक्त कुदुम्ब छोड़  
 कर बखन होने के लिए कटता है ।
- १५४७ बेटा कसिया ना टर्न, बीया अंत मुलाय ।

भाग्य में लिखा हुआ नहीं टलता ।

१५४८ बेभाता का घास्योड़ा भाँक डल कोण्या ।

बिभाता के लिखे हुए अंक नहीं टलते ।

क० राई पटे न तिल बर्ष बेभाता का लेख ( अंक )

१५४९ बी बिड़कली और देल बी भरड़ रे उड़ क्याय ।

यहाँ तुम्हारा बघ नहीं चल सकता ।

अन्तर्गत क्या कहा जाता है कि साँपों को मट्ट करने के लिए एक बार राधा जनमेजय ने ब्रह्म किया। बानुकि सर्प अपनी रक्षा के लिए किसी राहू में जाता गया और ब्राह्मण का रूप धारण करके रहने लगा। एक ब्राह्मणी से उसने विवाह भी कर लिया। ब्राह्मणी एक दिन पापी भर कर ला रही थी। अब वह अपने घर में प्रविष्ट हुई तो गरुड़ एक चिड़िया का रूप धारण करके उसके बड़े पर आ बैठा। बड़े पर बीस पड़ने से ब्राह्मणी ने अपने पति को पुकारा और बोली " एक चिड़िया बड़े पर बैठी है जिससे मैं तो बची आ रही हूँ। इसको किसी तरह उड़ाइये न। हम पर गरुड़ की उड़ित है वह चिड़िया और देखी जो इस प्रकार उड़ा देने से भरड़ शब्द करती हुई उड़ आयी। "

१५५० बैठनियाँ में बैठियूँ, जागतवाँ नै जाँ ।

बैठने वालों में बैठने वाला और भगने वालों में सबसे जाये ।

१५५१ बैठती बाबियो घर पठती मालिन सत्तो बेबै ।

गुरु-गुरु में ब्रह्मण खोलने वाला बनिया और बीच घर घर जाने वाली मालिन सत्ता बेबती है ।

बनिया पैठ जमाना चाहता है और मालिन बने हुए सीरे को निपटाना चाहती है ।

१५५२ बैठी सूती डूमबी घर में घास्यो घोड़ी ।

आराम ने जीवन बिगाठा हुआ अब कोई मनुष्य अनावश्यक विवक्ति मोल से लेता है तब इन उक्ति का प्रयोग करते हैं ।

१५५३ बैर की कितनी राँड को होय ना ?

बघ की क्या मृत्यु नहीं होती ? बैर की रती क्या विषया नहीं होती ?

१५५४ बैर की बरु कोनी ।

बहन की कोई दबा नहीं ।

क० रोय की तो दबा हो गया बघ बैर की दबा कोनी ।



- १५५५ बंरामी रो काम कबे न मारबे काम ।  
 बरगी का सड़का कोई काम नहीं जाता बर्बाद वह निहृष्ट होता है ।
- १५५६ बैरी मृत बुलाइया कर भायाँ से रोत ।  
 भाप कमाया कामड़ा, रई न बीबी होत ॥  
 भाइयों से क्रोध करके शत्रुओं को निर्ममित किया । करतूत तो सब अपनी ही हैं बैर को दोष देना व्यर्थ है ।  
 जब बैरी को करने वह सहनी ही पड़ेगी भाइयों का सहयोग नहीं मिलेगा ।
- १५५७ बोई कुहाड़ी जर बोई बंसो ।  
 जब कोई अपनी जायत नहीं छोड़ता तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।
- १५५८ बीबी जर भूनड़ा चाबै ।  
 बन्तहीन स्त्री और बने बवाने के लिए कारागिरि ।
- १५५९ बीड़ा घड़ा उबाड़ा पानी नार सुलझबी कम्पी चाबी ।  
 बाना चाबै पीसली चाबै पत्ता पीसली ।  
 हे पथिक ! जब इस स्त्री के घर में संविष्ट बड़ा है बिना डफा हुआ पानी है पीसली हुई जब यह धाने चपटती है और पत्ता बहीटते हुए चपटती है तब तुमने इसे सुलझबी कैसे समझ ? मैं सब लगान तो फूहड़ स्त्री के ही ।
- १५६० बील लोई बाछड़ा बीबी ।  
 बी बछड़ा बोलने की सभाह देना है उछी की बोलने के लिए कहा जाता है ।
- १५६१ बीलो बूझी बीली न के रांम्यो हूँ होली न ?  
 बहिर मपनी बहिरा स्त्री से पूछता है कि तुमने होली के दिन क्या पकाया है ? दोनों के बहिर होने के कारण महाँ कीव कित्तकी सुनेया ?
- १५६२ बीस्या जर लाइया ।  
 बोलते ही पता चल गया कि वह कित्त कोटि का है ।
- १५६३ ब्या करपी काई बीसहूँ बी डंकेँ जोसहूँ बी डंकेँ जोसहूँ ।  
 जब एक दूसरे के पीछे अपने को छिपाने की चेष्टा करता है तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।
- १५६४ ब्या बिगाड़ें बी बचा के मूजी के मेह ।  
 बी पीसो जरबे नहीं, बी बड़ाबड़ बेह ॥

बिबाह दा से ही बियड़ता है या तो कंजूम मे या बर्पा मे । कंजूम एक वंसा  
जर्ब नहीं करता और बर्पा बड़ा बड़ प्रहार करके सब चौपट कर देती है ।

१५६५ ब्याया नहीं तो अनेत ली गया हों ।

हम बिबाहित नहीं हैं तो क्या हुआ ? बरान ठा पय हूँ ।

हमने यह काम न किया था क्या हुआ ? दूमरा का कर्त तो क्या है ।

मि परध्या न पी पम खाने ली गया हुआगु ।

म

१५६६ मंगय सर भीटपो जाय ई कोम्या ।

है तो मयिन और कितो का सुभा हुआ जानो हों नहीं ।

१५६७ मंकार हाक कुतं को-सी हुई ।

एक कत्ता साबु के मंकार में बुम गया । बाबाजी क पट्टी धरा ही क्या  
या ? शिष्य ने कहा बाबाजी मंकार में क्या बुम गया । बाबाजी  
ने उत्तर दिया “ कुते को मंकार में ही बन्द कर दो । कत्ता माया या  
खाने के कोम में बन्द अलग हो गया ।

वहाँ कोई कुछ प्राप्ति की जाया मे जाय और उमे उकटा अनिष्ट नहूया  
पड़े वहाँ इस लोकोक्ति का प्रयोग होना है ।

\* १५६८ ममत अगत कुँ ठपत ।

नामधारी ममत मंमार को टपने हूँ ।

१५६९ ममतजरो जायो कं नै जाय कंबै ?

बेरया का पुत्र किम मयता मित्त बहू ?

मि० गुबाड़ को जायो कं नै जाय कंबै ?

१५७० मयवान लो बासना का भूजा हूँ ।

मयवान लो बासना मे भूजे हूँ ब्यसं मि बाइम्बर मे क्या ?

१५७१ मयवान बे अना छप्पर प्याड़ 'र ई दे दे ।

परमात्मा देना चाहें तो छप्पर प्याड़ कर ही दे देता हूँ । देने क लिए उमक  
की माग हूँ ।

१५७२ मयवानिपू इतो भोली कोम्या को भूजे पाया में जावंगो ।

मयवानिया ऐसा बेबहूक कहा है जा मूम ही मारें चारने बना जायया ।

क० मयवानिपू इतो भोली कोम्या जो भूजे हो मैभी में जावयी ।

१५७३ मटियारी पलोबब कठे सै लयाव ?

मटियारिन कुकरो में अपने घर का गन्नापन वहाँ मे लयाव ? ककरो

बेसठे समय जो लुम्क चुन खाव में लगाया जाता है, उसको पकोबन कहते हैं। जो रोगी बेचने का व्यापार करती है वह पकोबन क्यों लगाये जिससे स्वार की अचिक्ता के कारण राटी दुगुनी चार्ई जाय।

१५७४ मड़भुंगी की छोरी अर केसर का तिलक।  
बने भुंगने वालों की लड़की के केसर के तिलक सोमा नहीं बेटे।

१५७५ महरा की घर लावसी की घर रिम की छिद्र।  
महा उनके घर लनेमी जहाँ अद्रि-सिद्धि का निवास है अर्थात् मुहूर्त और लकून बलना धनधान के लिए है, मरीब के लिए नहीं।  
क० महरा की लै लावसी की लै रिम र सिब।

१५७६ मला जाया ए बापड़ी के भाइ अर के कापड़ी।  
तुमने या ता माटों को अन्न त्रिया या घेरी बजाने वाली को।

१५७७ मला मली प्रियमी से।  
पुम्बा पर एक से बढ़ कर एक महापुरुष है।

१५७८ भल को बजत ई कोम्बा।  
भलाई का समय ही नहीं रह गया।

१५७९ मलो जावमी जापकी मलाई से उरै नापी जानै घेर से उरै।  
मला भावमी अपनी मलाई से भरता है और बरा समझता है कि वह मुझ में उरता है।  
नि० सरना भरतो घर से बड़ नापी जानै घेरे से उरै।

१५८० मलो करता बुरी होय है।  
मलाई करते बुरा होता है क्योंकि बमाना ही ऐसा है।

१५८१ मलो कर मली होयो, लोबी कर लकी होयो।  
मला कर मला हाया सीषा कर, नफा होगा।

१५८२ मबली का लेख की इत ना।  
नाय में लिखा होकर रहता है।

१५८३ भाबड़ी के कांटा की आगई ताई बीर।  
भाबड़ी (एक छोटा गोसुरक पीषा) का कांटा अपने सद्गम स्वान तक ही मरीर के अन्दर चुम सकता है अर्थात् वह बहुत छोटा होता है।  
परिमित साधन वाला मनुष्य किसी का बड़ा अहित नहीं कर सकता।

१५८४ नाय मबल है सहज पच कहरी मुसकल होय।

धोम लागता तो सहज ही किन्तु गधे की छटपों को सेकना मुश्किल है ।

१५८५ भांग भाई भूषड़ा सुकफो भाई थी ।

हाक मंगी बूतिया कुली हो तो पी ।

(स्पष्ट है )

१५८६ भाई कं मज भाई बापी बिना बुलाये भाये भायो ।

यदि भाई भाई को मज स चाहता है यदि परस्पर हार्दिक प्रेम है तो बिना बुलाये ही भाई भाई के पास जाता जाता है ।

१५८७ भाई को भाई बेटी है ।

भाई का भाई बेटी होता है । उदाहरणार्थ एवम-विभीषण कीरव और वाइव ।

१५८८ भाई नै भाई कोली सुहाबै ।

भाई को भाई अच्छा नहीं लगता ।

१५९९ भाई बड़ो न भय्यो, लबलं बड़ो बपय्यो ।

न भाई बड़ा है न भैया एवम बड़ा बपया है ।

१५९० भाई बेटी तो ब्याबै ना मर कतर छोई ना ।

भाई अपने भाई की लड़की के साथ विवाह तो नहीं करता किन्तु उस से भी बड़कर अनिष्ट कर डालता है ।

यह वापार भाइयों के सम्बन्ध में उक्ति है ।

१५९१ भाई भूरा लेंबा पूरा ।

जब निमन्त्रण में योग्य-व्यक्त डीक पर्याप्त ही रहा हो और भोजन कर लेने के बाद अवशिष्ट भी कुछ न बचा हो तथा निवृत्तियों की असली स्थिति का पता भी न चले तब इस उक्ति का प्रयोग करते हैं ।

१५९२ भाई री भीड़ भुजा लूं गो भायै ।

भाई की कमी भुजा स पूरी नहीं होती ।

१५९३ भात बाटी जोल टाटी, राम बेयो बाल, बाटी ।

पी कट गई शींपही का बरबाज रास को भयवान बालबानी याने की हैव ।

१५९४ भायां का बलिया, रंबी कीट, हीयर बलिया ।

भाय की बलिहारी है पनाई भी तीर और हो गया बलिया ।

१५९५ भाय्यां पाटे काफई को भी बरद ई है ।

मुझ में पीर दिवना कर भागना बापर पुण्य का कथन है किन्तु एक

- बार पृथ मे पीठ बिलाकर जो जो फिर पृथ के लिए उम्मुल हो जाटा है वह भी सूर ही कहलाटा है ।
- १५९६ माँ से भाँठी भिड़ पाँ बीजली बिमलै ।  
पत्थर से जब पत्थर भिड़टा है तब परम्पर संघर्ष के कारण बिजली-सी बमकती है ।
- १५९७ माँ की गयी घर-घर सरी ।  
फिरादे की गयी घर-घर करती है ।
- १५९८ भाब की घर भाई, अर सातरं जबाई ।  
बहिन के घर रहन वाले भाई और समुदास में रहने वाले बामाता की प्रतिष्ठा नहीं होती ।
- १५९९ भाब की भाई गंडक सातरं बुंवाई पंडक । ( स्पष्ट )  
१६०० भाब जाँक जाँक करे ही बोरो लेन न ही जायवी ।  
बहिन 'जाँक जाँक' कर रही थी भाई लेने के लिए ही आ गया ।  
नि अर्थ की र बिछाई जावगी ।
- १६०१ भाब राठ कडूवी, कराठ नहीं सडूवी ।  
हे बहिन ! उचित समयका कर्कमी अनुचित नहीं ।
- १६०२ भाबकी की बत मली मली घटा बरसलत ।  
भाब भास की अनु मच्छी ह बरसतो हुई घटा मली है ।
- १६०३ भाबरवे बय रेलती छड अनुराबा होय ।  
बंक कहे हे मडूबली करो न बिला कोय ।  
भाब में सब बमह बपाँ होती है । यदि भाईकी बरी ९ को अनुराबा मलन हो तब बक मडूबली छ कहूटा है कि सोच मग करो ।
- १६०४ भाबू की छा भूताँ नै कातिक की छा भूताँ नै ।  
भाब के महीन की छाछ भूताँ को वा अर्बात् वह हातिकारक है और कातिक की छाछ भूताँ को वा क्यारिक वह हितकर है ।  
क० स्पार्ल की छा भूताँ नै । बीजाते की भूताँ नै (कलती नै)
- १६०५ भाब की भाई ले करे ?  
भाब में भाई क्या करे ? व्यवहार तो व्यवहार ही रहेगा ।
- १६०६ भाब राखी सो भाई ।  
जो मातृ-भाब रहे वही भाई है ।

- १६०७ भील बिल मीडणा अर पोत पैल रंग ।  
पैसी बीबार होती है उसके अनुरूप ही बिबकारी होती है कपड़े का पैसा  
पोत होता है उसक अनुरूप ही उस पर रंग चढ़ता है ।
- १६०८ भील बिल मीडणा आप ही आप आ ब्याब ।  
पैसी बीबार होती है उसके अनुरूप मंडन अपने आप हो जाता है ।
- १६०९ भीलड़ा नाम कि पीलड़ा नाम ।  
नाम या ठी भवत-निर्माण से होता है या काम्य-निर्माण से ।
- १६१० भील नै जोबे आला घर नै जोबे सालो ।  
आला बीबार की नुकसान पहुँचाने आला है आला यदि घर में रहने लप  
नाम ठी घर की बरबाद कर देता है क्योंकि उसकी बहिन उसको लूच  
देती रखती है ।
- १६११ भील ल बंडार कोनो नर ।  
मिया से बंडार नहीं भरता ।
- १६१२ भीम्या कान हुआ अलनाक ।  
हम कान तक बल से जीवे और ह्मपाय स्नाम हुआ ।
- १६१३ भुवाँ मिस तिम्ये अर भलीबी मिस दिपे ।  
भुजा के बहाने से सेमा चाहिए और यह मेरी भलीबी है यह समझ कर  
देना चाहिए ।  
मनुष्य को सेने के नाक-नाक देना भी चाहिए, केवल सेना-ही-सेमाठीक नहीं
- १६१४ भू आईं लालू हरबी, बयाँ लाली अर परबी ।  
बहु पर में आईं सास प्रसन्न हुईं । बहु ने ब्याठी सास के चरण सुपु, खोड़ी  
जलनी पगीसा हो गई ।
- १६१५ भूग के लपावण कोनी नीर के बिटावण कोनी ।  
भूग में रस्ती-भूनी रोगी भी अच्छी लगती है जब नीर जा रही हो तो  
बिरतों की आवश्यकता नहीं होती ।  
पि० त्रिभूजिनि में नीर बनेरी तबिया और बिछीना गया रे ।  
(स्त्रीर)
- १६१६ भूज न बेक बूठया आत ।  
भूग यह नहीं देगती कि वह बात जुड़े है । भूजा आरभी नामसे जो कुछ  
जा जाता है उसे ही बिना बिबारे ला लेता है ।
- १६१७ भूजा की बाबडपारी बच भूजा की को बाबडू ना ।

- निर्धन फिर भी उद्यत हो सकता है किन्तु झूठा नहीं ।
- २६१८ मूबा के जात कोम्पा ।  
 जब अत्यन्त मूख सग रही हो तो जाति का विचार नहीं किया जाता ।
- २६१९ मूखे के तो बाली में पड़वा ही इमान आये ।  
 मूखे का कैबल बाणों से क्या हो ? उसे तो जाने को मिस बाय तनी उसकी वृत्ति हा ।
- २६२० मूखे घर की छोरी घर फलक बिना बोरी ।  
 बरीर घर की लड़की है जिसे बाजरे की रोटी भी नही मही होती ।  
 उसी को अब पुत्रका नहीं मिस रहा है तो मुरा मान रही है ।
- २६२१ मूखो ठाकर आक बाये ।  
 (स्पष्ट है)
- २६२२ मूखो तो पाया पतीये ।  
 मूखे को ठा वृत्त होने पर ही विश्वास होता है ।
- २६२३ मूखो पूछे ज्योतसी, पायो पूछे बंद । \*  
 मूखा ज्योतिषी से पूछता है कि उसके भाग्य में बन जिखा है या नहीं ?  
 जो सम्पन्न है वह आवश्यक-अनावश्यक डाक्टर-बैचों की दवा लेता  
 रहता है ।
- २६२४ मूखो बालय सोये घर मूखो जाट रोये ।  
 मूखो बाब्यो हंसे ' र मूखो रांयक कमर करे ॥  
 मूखा ब्राह्मण विमान्यन की प्रतीक्षा में सोता रहता है मूखा जाट रोता है,  
 मूखा बनिवा जिसकी बुष्टि एकमात्र काम की बीर रहती है हंसता है  
 और मूखा राजपूत धिकार के लिए कमर करता है ।
- २६२५ मू घर तेरे स्हार पब राखिये डरयो-दुम्बो ।  
 हे बहु ! घर तुम्हें सौता जाता है किन्तु इसे रखना बन्ध ।
- २६२६ मू घरियाई की, घर पाय न्याये की ।  
 बहु कमीन घर की जानी चाहिए और पाय न्याये की (बंजन-रज्जु)  
 होनी चाहिए ।
- २६२७ मूता के लाहुजा में इलायची को से तुबार ?  
 बनि क लिए लहुबु बनाये ती स्वाह के छिये इकाजकी कीन डाकता है
- \* र मूखो पूछे ज्योतसी पायो पूछे बंद ।

- १६१८ भू बरोत्सा जार्यगा बिन मारे मर ज्यार्यगा ।  
जो इबमुर पुत्रबबू के हाथ स भोजन करया वह बिना मारे मर जायगा  
क्योंकि वह अपने पति को जितना बूतादि लिखायी है उतना इबमुर को  
कभी नहीं खिलायेगी । इसलिए कस्त भोजन स वह निबल होता जायगा ।
- १६१९ भू बछेरा बीकरा, नीमदिमा परबाण ।  
बहु बोझों के बन्ने और बच्चों के मरने बुर का प्रमाण बयस्क होने पर  
ही मिलता है ।
- १६२० भूल को टकटो भूल में गयी ।  
भूल का पैसा भूल में ही बछा गया ।
- १६२१ भूंय्यो बामब भेड़ छाई, भार्ये लाम ली राम-गुहाई ।  
एक बार भूल हो गई अब भाले कभी न रुक्ये इस भाव को प्रकट करने  
के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग होना है ।
- १६२२ भेड़ की काठ पगा लल-लल ।  
भेड़ की काठ पैरों के नीचे ठक जाती है ।
- १६२३ भेड़ जातीच नै पीने ।  
भेड़ लटीफ पर विश्वास करती है ।
- १६२४ भेड़ पर ऊन कृष छोई ?  
भेड़ पर ऊन कौन छोड़ता है ?  
परीस का बल कोल अबरन अपहरण कर लेते हैं ।
- १६२५ भेड़ बमतपी पूंछड़े में माला ।  
भेड़ मकल बत गई और पू छ में डाल ली माला ।
- १६२६ भेजल राभी बोरवी रात्यु सिट्टा लोड़ती ।  
भेजल राभी (एक पत्नी वाला छाटा कीट जो मारिबन क महीने में पमल  
को हानि पहुँचाता है ) चोरी करने बाबी है वह रात भर मिट्टी को  
गुफमान पहुँचाती रहती है ।
- १६२७ भेल भौडा कइलै ही ।  
इफ्टई हाने पर बर्तन कुदकवे ही है जयान् मयुक्त परिवार में जहाँ भब  
एक छाब रहते हैं जयडा हो ही जाता है ।
- \* १६२८ भंत जान बालरी बजाई तो गौबर को इनाम ।  
जहाँ गुफाहक न हो वहाँ सम्मान की भागा लगना म्य है ।



निर्बल फिर भी उग्रत हो सकता है किन्तु झूठा नहीं ।

१६१८ भूषा की बात कीया ।

अब अत्यन्त भूषण लय रखी हो तो आति का विचार नहीं किया जाता ।

मि० भूषण न देखें बात-कुबात ।

१६१९ भूषे की ती बाली में पड़पा ही इमान आये ।

भूषे को केवल बातों से क्या हो ? उसे तो खाने को मिल जाय ठनी उसकी वृष्टि हा ।

१६२० भूषे घर की छोरी घर ककई बिना बोरी ।

बरीब घर की कड़की है जिसे बाबरे की रोटी भी मसीब नहीं होती ।  
उसी को अब पुकना नहीं मिल रहा है तो बुरा मान रखी है ।

१६२१ भूषो ठाकर आक आये ।

(स्पष्ट है)

१६२२ भूषो तो बाबा पतीये ।

भूषे को तो वृष्ट होने पर ही विरवाठ होता है ।

१६२३ भूषो पूछे ज्योतसी, बापो पूछे बंद । \*

भूषा ज्योतिषी से पूछता है कि उसके माध्य में बन सिखा है या नहीं ?  
को सम्मम है वह जागरणक-बनावरमक डाक्टर-नेचों की रवा केता  
रखा है ।

१६२४ भूषो बानन लोभे घर भूषो जाट रोवे ।

भूषो बाण्यो हुंसे ' र भूषो राण्ड कमर कसे ॥

भूषा बाह्य निमग्नन की प्रतीका में होता रहता है भूषा जाट रोठा है,  
भूषा बनिवा जितकी वृष्टि एकात्मन काज की जोर रहती है, हुंसेवा है  
और भूषा राजपूत विचार के लिए कमर कसता है ।

१६२५ भू घर लेई रहारें पब राखिये इन्पो-भूम्यो ।

हे भू ! घर तुम्हें सौंवा जाता है किन्तु इसे रखना बन्द ॥

१६२६ भू परिवारने की घर गाय ग्याये की ।

बहु कलोन घर की काली बाहिए और गाय ग्याये की (बंभन-रज्जु)  
हाली बाहिए ।

१६२७ भूता की आहुती में इलायची को के सुवार ?

बकि के लिए लड्डु बनार्ये तो स्वाद के लिए इलायची कौन बालता है ?

\* र भूषो पूछे ज्योतसी बापो पूछे बंद ।

- १६२८ भू परीस्या खार्पणा बिल मारें पर ग्यायंपा ।  
जो स्वमुर पुत्रबभू क हाथ से भोजन करेगा वह बिना मार मर जायगा  
क्याकि वह अपने पति को जितना पृथादि खिन्नाती है, उतना स्वमुर को  
कमी नहीं खिलायेगी । इसलिये स्वसे भोजन स बहु निर्भल होता जायगा ।
- १६२९ भू बछेरां बीकरां, नीपदियां परबाण ।  
बहु बौड़ों के बच्चे और बच्चों के भस्म बुर का प्रमाण बयस्त होने पर  
ही मिलता है ।
- १६३० भूल की टक्को भूल में पयो ।  
भूल का पैसा भूल में ही बला गया ।
- १६३१ भूंस्यो बाम्ब भेड़ जाई, भायें चाप तो राम-बुहाई ।  
एक बार भूल हो गई, अब भागे कमी न करूँगा इस भाव का प्रकट करने  
के लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग होता है ।
- १६३२ भेड़ की साठ पयां तल-तल ।  
भेड़ की साठ पीरों के गीब ठक जाती है ।
- १६३३ भेड़ जखीर नै पीरें ।  
भेड़ खटीक पर बिरबाध करती है ।
- १६३४ भेड़ पर ऊन कुन छोटे ?  
भेड़ पर ऊन कौन छोड़ता है ?  
गरीब का बल लोग जबरन अपहरण कर लेते हैं ।
- १६३५ भेड़ जगतची पूछई में माला ।  
भेड़ बस्त बन गई और पूछ में डाल ली माला ।
- १६३६ भेभल रापी जोरडी, रात्यू सिद्धा लोड़ती ।  
भंभल रापी (एक पंखों वाला छोटा बौट जो आम्बिन क महीन में फमल  
की हानि पहुँचाता है ) जोपी करने जाती है वह रात घर मिट्टों को  
नुबसान पहुँचाती रहती है ।
- १६३७ भेळ भांडा बुझके ही ।  
इच्छे होने पर बर्तन सुझने ही है अर्थात् संवस्त परिवार में जहाँ सब  
एक साथ रहते हैं सबड़ा हा ही जाता है ।
- \* १६३८ भेत भायें बीसरी बजाई तो घोबर को इनाम ।  
जहाँ घुमसाहक न हो वहाँ सम्मान की भागा रगता व्यर्थ है ।

१६३९ भंस आपको रंग को देखे ना, छल न देख कर बिरहे ।  
 भस अपना रंग तो नहीं देखती छाले को देख कर चौकटी है ।  
 दुर्जन अपने दुर्गुण नहीं देखता दूसरे को अपने से भी बखतर तथा मर्यकर  
 समझता है ।

१६४० भंस को पोटी सूकती तो सूके ।  
 बगवान यदि निर्जन भी हो जाय तो भी गरीब की अपेक्षा तो वह अधिक  
 समृद्ध ही रहता है ।

१६४१ भंस बाल से पारी करे तो के पाव ?  
 भंस बहि लखी से दोस्ती करे तो क्या लाभ ?  
 बाग्यर बहि रोशियों से दोस्ती करके छगसे कुछ फौस न के तो क्या लाभ ?

१६४२ भंस मरणी तो भरणी जोर को सबड़को तो भार ही लियो ।  
 (स्पष्ट है)

१६४३ भंसो बीडो बाकरो बीबी बिषवा मार ।  
 ये प्यारक नाड़ा लला मीठा करे बिगाड़ ॥  
 भंसो भेड़ा बकरा और बिषवा स्त्री ये चारों दुबले-मठले ही बच्चे हुए  
 पुष्ट होने पर ये बिगाड़ करते हैं ।

१६४४ भोईं डालूँ का राम बखाला ।\*  
 जो सीधे-साधे हैं उनकी मगवान् रलबाजी करते हैं ।

१६४५ भोळा गरम को धोलो है ।  
 यह सीधा-साधा नहीं गरम डाले वाला है ।

१६४६ भोलो निम दुसमन की गरम पाल ।  
 नादान दास धनु का काम करता है ।  
 क० भोलो सैव दुसमन की गरम धार ।

म

१६४७ भोली मर बीटयो जाय ई कोम्या ।  
 ता बिकारयो और किसी के हाथ का कूबा हुआ कापी ही नहीं ।  
 बिर के अगाड़ी बाबा के पिछाड़ी ।  
 बिर के जागे और जाने के पीछे रहना चाहिए ।  
 हाथो चाये जिन्दायो बिड़ायो चाये बिजाबी ।  
 मुझे मिन रहस्योबाटन के कारण कमी-कमी दुसमन का-या काम  
 कर डालता है ।

मंडाबा और बिड़ाबा बानों कस्बों के नाम हैं। किसी ने इन दोनों नामों को लेकर छन्द क्रीड़ा की है कि "मंडाबो" कहो चाहे "लिखामो" कहा एक ही बात है। इसी प्रकार बिड़ाबा" कहो चाहे "बिजाबो" (नाराज करो) कहो एक ही बात है।

१६५० मंडी एक 'र मोडा घना।

मठ एक है और साबु बहुत है।

१६५१ मंहपो रोबै एक बार संगी रोबै बार-बार।

जो मंहपो बानों पर बीजें खरीबता है वह एक बार नष्ट उठाता है किन्तु सस्ती बीजें खरीबने वाले को सदा हीराम होना पड़ता है।

१६५२ मकोड़ी कह, मा ! मैं गुड़ की सेली उठा स्वार्ज कह कड़तू कानी बैल।

मकोड़े ने अपनी मां से पूछा 'क्या मैं गुड़ की सेली उठा लाऊँ ?'

मां ने उत्तर दिया "तुम अपनी कमर की धोर लो वेलो।"

क० 'कड़तू कानी बैल' के स्थान में 'डोल लो इलो ई है !'

१६५३ मजूरी में के हजूरी ?

जो परिश्रम करके पैसा करता है वह किसी की हाजिरी क्यों दे ?

१६५४ मत मरज्यो बालक की माबड़ी 'र मत मरज्यो बुड़े की बीय।

छोटे बच्चे की मां न मरे। बुड़े की स्त्री न मरे। बड़ी मामिक उचित है।

१६५५ मतलब की मनुहार अगत जिमाबै चूरमा।\*

अपने स्वार्थ के लिए भाग्य बूझरों की जुगामद करते हैं।

१६५६ नभरा में रहती बकी राधा किलना ( राधा गोविन्द ) कहती।

जो मपुरा में रहेगा वह राधाइया या राधा गोविन्द रहेगा।

१६५७ मरकबाऊ कुमाव लो कौनी पन घरा लो भाबै।

कम कमानेवाला बहुत कम कमाबे तब भी पर पर लो भाबे। उसकी कमाऊ बी-नी लें बखी नहीं लगती।

१६५८ मन के पाव कौपी।

मन के मर्पादा नहीं होती।

१६५९ मन में भाबै मूड हिलारै।

\*राजिवे का पूरा लोखठा इस प्रकार है—

मतलब की मनुहार अगत जिमाबै चूरम्।

बिन मनपव मनुहार, राव न पारै राजिया ॥

भोजन के समय बीर लेने की इच्छा तो है किन्तु ऊपर से इन्कार कर देता है जब कोई परोस देता है तो कां कटा है।

१६६० मन बिना बेल नहीं, बाड़ बिना बेल नहीं।

मन बिस्मने पर ही मेळ बढ़ता है बाड़ के सहारे ही बेल बढ़ती है।

१६६१ मन राजा की, करम कमेड़ी की तो।

मन तो राजा का सा है किन्तु माग्य पड़ुकी पैता है।

१६६२ मन होय तो बेटो बे बे, नहीं बेटो ही कोली बे।

-मन हो तब तो बेटा बेदे अग्यबा बेटो मी नहीं बे।

१६६३ मन होय तो घालबे चापाबे।

यदि काम करने की इच्छा हो तब तो मनुष्य बहुत दूर तक जा सकता है इच्छा न हो तो एक कदम भी आगे नहीं बढ़ता।

१६६४ पर ज्वाणू क्यूल जब बी को बलिप्यो नहीं जाणू।

मर जाना स्वीकार है पर बी का बधिया जाना स्वीकार नहीं।

१६६५ मरन न परयो पन मन हयलेबे में ही रयो।

कहानी यों है कि एक ठाकुर था जिसकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण विवाह नहीं हो सका और वह स्वारा ही मर गया। माई कोय मबा बी पिंड-दान के लिये गए। किचरन्ती है कि पुराने जमाने में पिंड-दान देने वाला आदमी गंगाजी में लड़ा होकर अपने बडके (पुरखे) को उसके नाम से पुकारता था तब पानी में से हाथ निकल कर पिंड ग्रहण कर लिया करता था। ठाकुर के माई ने जब पुकारा कि 'ठाकुरा पिंड लेबो' तो पानी में से आवाज आई 'हयले बो'। तात्पर्य यह है कि मरने वाले ठाकुर के मन में मृत्यु के समय हयलेब की विवाह की प्रबल इच्छा थी इसलिए जब 'पिंड लेबो' कहा तो 'बो' को लेकर उसे हयलेबो चुना और उसने पानी में से उठी तरह पुकारा। तब पिंड देने वाले ने कहा "ठाकुरा किचो हयले बो पिंड लेबो पिंड।"

१६६६ मरनू ज्वाण से ना जाणू है।

मरना कोई साधारण बात नहीं है दुनिया से न चला जाना है।

१६६७ मरतां किता पाडा कुर्ब है ?

मृत्यु के समय शकट नहीं जोड़े जाते सवारों की सवारियाँ नहीं की जाती अर्थात् मृत्यु अकस्मात् आ जाती है।

- १९९८ बरत को बोवन साठ बरत जे घर में होय सजाई ।  
 बरत को बोवन तीस बरत हर बरत को जीवित दाई ॥  
 यदि घर में काम-नीति की पर्याप्त सामग्री हो तो मनुष्य साठ वर्ष तक  
 पका रह सकता है श्री शंभु वन वन मुबना रहता है और रत्न बड़ा  
 क्यों तक ।
- १९९९ बरत तो अध्यात बंकी कूज बंकी गोरिया ।  
 सुख तो रूपार बंकी तैत्र बंकी बाड़िया ।  
 बर तो बही जो बनाव का बनी हा तारी तो बही जो बोर-अनचिनी हो,  
 गाय तो बही जो ब्रह्म देन बानी हा, और बोरी तो बही जो तैत्र बन्धन  
 बानी हो ।
- १९७० बरत तो ब्रह्मात्म बंकी, नीम बंकी गोरिया ।  
 सुख तो सीपाठ बंकी, बोट बंकी बाड़िया ॥  
 यदि हा बही घेण है जा नूठा बाठा हा कामिनी हा बही है त्रिमके वन  
 बकि हा माव तो बही है त्रिमके नीम बच्छ हा बाही हा बही है त्रिमके  
 पैर सुन्दर हों ।
- १९७१ बरतों परधीं हक हं बरत परधीं माय ।  
 भर बबाला में पक्षीय मास की उम्र में मरु में प्राणोत्सर्ग कर बना  
 राजपूत मरं क लिए जीवन है ।
- १९७२ बरतों तो हुआ की" र वन सट्टा की ।  
 सट्टे हा वन त्रिमकी आशानी जे मिलता है उसना और कोई वन नहीं ।  
 इसी प्रकार हैजे मे कृत्य होने में भी विराम नहीं लगता ।
- १९७३ बरी क्या ? सात कीना आयो ।  
 मूल बँठे हुई ? अतए, "सोम नहीं माया ।"
- १९७४ बरी राठ, हुयो बैरागी ।  
 श्री के मरत पर बैरागी ही गया ।
- १९७५ बरं कको तो बोकी त ही भर ब्यावे बई तो बोकी तं ई बोकी मरे ।  
 प्रतिष्ठित मनुष्य के लिए तो बनावर ही कृत्य क सम्पन्न है ।  
 नि० समाधिगम्य बाहीनिर्नरवावनिर्गम्यते (मीमा) ।
- \* १९७६ बरं वृत्त की आज कबोर्ष-सी ।

\*मि० बर बई भर कपति नामी । मुंड मुहाप बने सम्पानी ।

(तुमचीबाम)

पुत्र को जीवित रहते तो नजर के मय में माता-पिता उसके लौन्धर्य की प्रशंसा नहीं करते किन्तु उसके मरने पर उसके लौन्धर्य का अतिमयी-नितपूर्ण वर्णन करते हैं ।

१६७७ मरं हे पन मलार घाई हूँ ।

मरते समय भी गगन-रग मूलता है ।

१६७८ मरो मा बीबी भाबसो धी बाण्यो न न गोडा बाळमी ।

इस उक्ति का प्रयोग मौमी की प्रशंसा करने में किया जाता है ।

१६७९ मरो हाडची नार मरो कठगानू दडदू ।

पंचवली स्त्री तथा काटन वाला दट्टू मरे ।

१६८० मर्या न भूल क्याय आया न कोनी भूलं ।

मरे हुए व्यक्ति को चुका दिया जाता है किन्तु मृत्यु पर दुःख प्रकट करने का किए जाने वाले को नहीं मुझाया जाता ।

१६८१ महली बँट्यो छेड़ु जको करडी बैठे ले कुहाय ।

महलों में बैठा हुआ जो दूसरे का छेड़ता है वह घर पर बैठे हुए से बुरा-भला सुनता है । जो दूसरे को अपसम्पन्न कहता है उसे बदले में बुरा भला मनना पड़ता है । वाहे वह कितना ही बडा क्यों न हो ।

१६८२ महाबतां ले घारी मर दरबाजा लकड़ा ।

कोई बनी जगो से सम्पन्न स्थापित करे और उनके स्वागत-सत्कार के लिए बिलके पास पूर से उपकरण नौ न हों उसके लिए इस लोकोक्ति का प्रयोग किया जाता है ।

१६८३ माय कर छाव स्याईं सुरज नं छाँटो दे ।

माय कर छाव जाने और सूर्य को अर्घ्य दे ।

क० माय-माय कर छा स्याईं 'र सुरजी नं छाँटो ।

१६८४ मांघी तो मोत ई कीनी मिलं ।

मांघी हुई तो मोत भी नहीं मिलती ।

१६८५ मांघी अथ माळ जाँले काई कमी रँ खास ?

जिनका मुहमाया पन यों ही मिल जाता है उनको किस बात की कमी है ?

१६८६ मांघ्या बाळ । उत्तया बार ।

दुपहर को बर्तन माँघ सैने पर फिर बहु बार उठता जाता है दूसरा बार मात्र किया जाता है ।

- ११८७ माँकी का डालिया मंघेजी किवाड़ ।  
अब दो बन्धुजाँ में अनुसूचना म हूँ, तब इन उचित का प्रयोग किया जाता है ।
- ११८८ माँकी को भीत दिपलती बार कोली लगाई ।  
बिन्नी की हीबार को बिन्ने दर नहीं लगनी ।
- ११८९ मा का पेट से कोई सीप का कोनी आई ।  
माँ का पेट में ही कोई सीप का माँको भाता भर्तान् बाद म रिशा मया नाँमारिक भनभव मे ही मनप्य उठिमान् हाता है ।
- ११९० मा क सरायाँ बून कोयाँ सरायो आय जपत के सरायो सरायो आय ।  
रिमी भी माता के किाँ अपम पुत्र की प्रसमा बरता म्बाभाबिह है यदि दूसरे उगवी प्रसमा करे तभी उस प्रसमनीय समझना चाहिए ।
- ११९१ मा गल डीकरी, घड़ा गैल डीकरी ।  
लड़की माँ क अनुसूचि होनी है और घर क गडिना म्बा बर क भनभव ।
- ११९२ मा की ई माँकी पप है तो पुषो ई तेरा बरस की ।  
नाम का तो माताजी ही माताजी है पर अबम्बा मो पौत्र म्बर बप की ही है म ।
- ११९३ माता से तो मारा बेटा-बेटी इकमत होय है ।  
माता क रिप हा मभी पुत्र-पुत्रियाँ इकमत है ।
- ११९४ माको मूँब्याँ अती नहीं ।  
काई मूँब मवाने म ही म'यागी नहीं हो जाता ।
- ११९५ मान का तो मुँठो भुंगड़ा ही घसा ।  
मम्मान क ता म'द्वी भर बने ही दहन है ।
- ११९६ मान बड़ा ' क बाल ?  
मम्मान बडा है ।
- ११९७ मा क मा को जायो बैलहुलो परायो ।  
नउबय अब पहने उरन मन्गल प्राणी है तब बरता है 'अहाँ क ता माँ है म माँ का बटा है से तो पराय देग आ गर्' ।'  
बाबायन प्रबान में बीमारी में बिगलि में मा म'का क मयय माई बन्पु पार जाने है ।
- ११९८ माता बाबा सागर मनादग हाता कया ?  
माता अनुसूचि पनी उगता मवाने बाबा बीन ?



- १६९९ भागें ली देव नहीं भीत को लेव ।  
 मूर्ति में देवत्व के आरोप का मूल कारण भावना ही है ।  
 मि न कांठे बिद्यते देवो पापाने न च मूर्त्तये ।  
 भावे हि बिद्यते देवस्तस्माद्भाषो हि कारकम् ॥
- १७०० मा पर पूत पिता पर बीड़ो घबो नहीं लो बीड़म बीड़ो ।  
 आदृति-अदृति में पुत्र मा का अनुसरण करता है बीड़ा पिता का ।  
 यदि बहुत नहीं लो बीड़ी बहुत अनुकंपता ता देखी ही जाती है ।
- १७०१ मा बाप मरगा जे ई घर की करवा ।  
 जब तक माता पिता जीवित रहते हैं तब तक विवाहित सङ्गी को समुदाय  
 से बर्ष में एक-दो बार अपने यहाँ सङ्गी को बुला केते हैं । उनकी मृत्यु  
 के बाद जब उसे बुलाने वाला कोई नहीं रह जाता तब उसे समुदाय में  
 ही रहना पड़ता है ।
- १७०२ मा मठियारी पूत जलेजा ।  
 जब कोई बड़-बड़ कर बात करता है तब उसके मति महु व्यंग्योक्ति है ।
- १७०३ मा मरी माबी रत बाप मरुयो परभात ।  
 विपत्ति पर विपत्ति जाती है ।  
 मि० छिद्रेष्वनर्पा बहुलो भवन्ति ।
- १७०४ मामा को क्या जर मा परोतवारी ।  
 मामा के विवाह में माँ परोछने वाली हो लो सोने में सुयम्ब है ।
- १७०५ मा । मामा किताक ? बेटा मेरा ई माई ।  
 हे माँ ! मेरे मामा कैसे हैं ? उत्तर, हे पुत्र ! वह लो मेरा ही माई हैं ।  
 इसलिये जैसी मे बीसे ही तुम्हारे मामा ।
- १७०६ मा मे बडो हुपां बामबां ही बामबां मे मारस्युं कह बेटा बडो ही क्युं  
 होती ?  
 हे मा ! मैं बड़ा होने पर ब्राह्मणों ही ब्राह्मणों की मार्जना । उत्तर, हे पुत्र !  
 तब तुम बड़े ही बडां होये ? बर्बात् ऐसा अग्यामी मनुष्य ईश्वरीय क्रीप  
 से जीवित ही नहीं रह सकता ।
- १७०७ मामा बंड की बिद्या कंड की ।  
 अपने पास का पैसा ही काम जाता है बिद्या भी जो कल्प हो नहीं  
 मोके पर काम देती है ।  
 मि पुस्तकस्था च पा बिद्या परहस्तवर्ष वनम् इत्यादि ।

- १७०८ माया तेरा लोन नाम परस्या परसी परसराम ।  
ज्यो-ज्यो मनुष्य क पाम पसा बढ़ता जाता है त्यो-त्या उमकी बर भी बढ़ती जाती है । जिनी परोब भावनी को लाग "परस्या जैसे छाटे नाम म पुकारते हैं । उमकी भाषिह बवसमा में कुछ मुबार हाने म बह 'परमी' हा जाता ह और बनवान होने पर ता लोग उसे "परसराम" कहने लपडे हैं । यह मव पमे का ही प्रताप है ।
- १७०९ माया दिल्ली सूम में भा तारख भा भाय ।  
सूम को पन मिला गया न बह दान देता है न मवप उसका उपनोम करता है ।
- १७१० माया न छाया भली ।  
बन की अपेधा इमारत सेठ है ।
- १७११ मार कर माम जगजू छाकर लो जगजू ।  
मार कर मग जाता चाहिए और या-नीकर मो जाता चाहिए ।
- १७१२ मार क्यार छाया को मार ।  
कटे को मार से न ता गून निबल मरता है और न बह गरीर क मरर पुन ही मरता ह ।
- १७१३ मार क भागें मृत भाय ।  
ग्रहार के जामे मृत भी मग जाता है ।
- १७१४ मारन हात का लो हाथ बहइयो भाय बोवन हात की जीब कोनी पकड़ी जाय ।  
मारने बान का हाथ ता पकड़ा जा मरता है बोवन बाप की जीब मड़ी पकड़ी जा मरता ।
- १७१५ मारजूं ऊंररो लोबजूं डूगर ।  
बूढ़े क पारने के लिए पहाड़ गादना ब्यप है ।  
जरा म बाम क बिर बहुत बडा उग उठाना बहार है ।  
मि० लोटा पहाड़ निबमी बुहिया ।
- १७१६ मारगिये से त्रिवागिर्नु बाडो (बडो) ह ।  
मारने वाले म त्रिजान बाना प्रबन्ध है ।  
मि० किया होमा राम का धन मूं ही दीटे ।  
पारमी बोई मोह के ऊरली बोड़ ।  
मि० त्रिवादिने का हाथ मंवा हा है ।

१७१७ मारले तो मीर ।

जो पहले मारता है, वही घेठ है ।

१७१८ मारबाड़ की मुड़ता मिटली बोरी धिस्त ।

हे मित्र ! मारबाड़ की मुड़ता मुश्किल से दूर होनी ।

१७१९ मारबाड़ मततूबे दूबी, पूरब दूबी गाबा में ।

कानवेत कुरखों में दूबी बलिब दूबी बाबा में ।

(स्पष्ट है)

१७२० मारें आप कमाबे ताप ।

किसी की मृत्यु का असली कारण तो परमात्मा ही होता है । जब आदि रोमी का बहाना बना कर वह मनुष्य को सत्कार से उठा लेता है ।

१७२१ मारें नहीं जली बली उठावै ।

बिसे काम नहीं करता हो वह केवल बड़-बड़ कर बातें बनाता है ।

'बला' एक हीर्षकाय स्पूल काष्ठ का स्तम्भ होता है वह बहुत मुश्किल से ही उठाया जा सकता है । जिसकी मारना न हो वह केवल बला उठा कर मारने की बमकी बैता है ।

१७२२ मारबा-कूइवी एक नाब जीम्पी-जूइपी (जापो-पीपी) एक नाब ।

किसी को कम पीटो या अधिक पीटने का नाम हो ही जाता है । किसी के मही मोबनाब जाकर बोड़ा मोबन करा या अधिक जीमने का नाम हो ही जाता है ।

१७२३ माल बैक जबात ।

वैसा माल हो बैपी ही जगाठ सगती है ।

१७२४ माल सै बाल जाबे ।

बन ल ही बाल आती है ।

१७२५ मालिक को मालिक कज ?

मालिक का मालिक कोई नहीं ।

१७२६ माली भर नूला छीबा ही भसा ।

माली बीर मूक (वैस नूमी जादि) दूर-दूर ही बज्ज ।

माली आपस में लड़ते हैं, इसलिए उनके घर दूर-दूर हों तो ही बज्ज ।

१७२७ मारबा पोबा बीबूफाट, कागज माल उड़ाव धार ।

बैता भासा बीज ह्युकीर्ष भर बैताला केतू बीब ।

बेठ आप लभयो तो कृष्ण रोषे साबज भाइया बन बरतौतो ।

माप धीर पीप में काहरा रिसलाई पड़े फलामून में बूम उड़े। शैब में बिजली म गिपई बे लो बगाय में बर्पा हो। गरुड म मूरें छपता रूह लो किनो को पणित नही है जा धाबब-भाइ की बर्पा का राऊ मटे ?

१७२८ मिनल को के बडो पीता बडो ह।

मनुष्य का क्या बडा ? पैमा बडा ह।

७२९ मिनल माचसियो हो होय ह।

त्रिनमें छीम मत्प जादि मुषहै बहता मानुष कहुनाता है धीर बिसमें इन गुना का अभावहै बहु मानुषिया लघु या हीन मनुष्य कहा जाता है।

७३० मिनल लून को बई रोटी खात ह।

मनुष्य सकल को बा हुरई रोणे घाता है। यात्रा म गुम गरन हात पर हो मनुष्य को बन-बान्यादि की प्राप्ति हुनी है अग्य-ना बहु इसर उभर मत्क कर गानी हाया लीट आता है। गरम की प्रणमा में यह उचित बही पर है।

१७३१ मिनल हजार बय को नीब बाये भरोता पलक का ई को ग्या।

मनुष्य हजार बय की नीब बांजता है किन्तु एक पय का मो भरामा नही।

१७३२ मियां को बीड़ मटबोल लाई।

मियां की बीड़ ममत्रित तर।

परिमित पणित बाउ क मन्वग्य म दम स्वीकारित का प्रयोग हाता है।

१७३३ मियां क सलाम को खानर बनुं दसाया ?

मियां का सलाम बे गिण बना रूह मियां जाय ?

१७३४ मियां रोबी बरू ? क बग्दा को सकल ही इमा है।

किनो ने पूठा "मियांको तुम बना गेने हा ?" उत्तर मिला "मेरी पणत ही छमी है म राणा बहो है ! गरक हाएगा समनी है मानी मे रा ग्या है !"

१७३५ मियूं बीबी बी बगां बरू खाई बं ओ बया ?

उय कर में अविब गाने बाये नहा होने बरक को उरुय हो हा तब क ओ बन की रागी क्या गाय ?

१७३६ मियूं नरुयो उर जाबियो उर बानीयो होय।

उब लफ रिनी बाम में पीठा बहुत भी मन्हेह बना रू ओर उमहा दिर दाया न हा जाय तब तब उम पूरा नही ममसना चाहिये।

१७३७ मिल बिछड़ो मत कौप ।

मिल कर किसी का बियोग न हो ।

१७३८ मिली मुकतरो माल सांड रई सोरा ।

जब मूषक का माल मिलता है तो जीवन-यापन करने में बड़ी सुविधा रहती है ।

१७३९ मिस्या मिद्या र हुंसेर पूरी हुई ।

मिलना हो गया आपस में भेंट हो गई मिलने की हविस पूरी हो गई ।

१७४० मीडका नं तिरमू कुण सिबाई ?

मैडक को तैरना कौन सिखाता है अर्थात् कोई नहीं । यह उसका सहज गुण है ।

१७४१ मीठी घुरी भर शेर की भरी ।

कपटी मनुष्य मीठा बालता है किन्तु उसके मोठे में बहर भरा होता है  
मि० विपकुम्भं पयोमुखम् ।

१७४२ मीठे के साकल्य बूठो काय ।

मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की बुझाकर करता है ।

१७४३ मुंह पैल पाप ।

जिसमें अतिनी धर्मिता है वह उतना ही प्रहार सहन कर सकता है ।

१७४४ मुंह डोकसी-तो नांव सकुपली ।

मुंह तो टोकसी ( मारियल का जग और मुखा-नहित टुकड़ा ) के समान है और नाम रख रखा है मन्दरी ।

१७४५ मुंह सुई तो घेट कई-तो ।

किसी घेट के सम्बन्ध में कही गई उक्ति ।

१७४६ मुंह त निकल क्याय तो माग धबी का ।

योगी अथवा धनी के मुख से किसी के लिए कुछ प्रिय बात निकलती तो यह बड़े धीनाय की बात है ।  
अनर्थक बोझने वाले के मुख से बाई जो निकल जाता है ।

१७४७ मुकवना में दो काये कोडा" र योडा ।

मुकहमें में दो बीजों की आवश्यकता होती है एक ठा वन और  
पैर ।

१७४८ मुख में राम बपल में घुरी ।

मुम स लो राम राम करता ह और बगल में छरी ह ।

क० हाथ सुमरणा अब बन्दरणा ।

१७४९ बर्षों के लो ताकू कोई डाम ।

निर्बल पाई ही प्रहार की सहन कर गवना है ।

१७५० मुतल्ल को संसार सनही ।

मारत नमार स्वार्थबध स्नेह रमता है ।

१७५१ मुतल्ल बगता लीप हूम लो हूलबा घो ।

स्वाम मिद्ध होता हा और यदि माग हमत हा लो उगह हमन बी ।

१७५२ मुरवाँ क साथ कापिया काग्या बल ।\*

जो धव का कंधा पर बहन करत म जाते ह ब मर्ये क माय नहीं जलते ।

बिय जाने बाबा ही मरता है उमके माय रजने बाबा नहीं ।

१७५३ मरवेँ कर बाहू एक बस्तो गरा बाहूँ मो कस्ती पेरौ ।

मरे हुए का मारना व्यर्थ है ।

१७५४ मूं जाने मार पीठ पीछ पराई ।

जिमो पुरुबकी क सम्बन्ध म उचित है सो पनि की उपस्थिति म पत्नी

की तरह आचरण करनी है उमकी अनुपस्थिति म पराई हा जानी है ।

१७५५ मूब मोठ में कूब सो बडो अर कप सो छोटी । (मूब मोठ में कब स्तुही-  
बडो—?)

मूब-मोठ में कौन बड़ा कौन छोटा ? बाना बराबर है ।

१७५६ मूंछो उजाड़ा से मुरवा हलका बीड़ा हो छ ।

मूंछे उजाड़ लेने से मरवेँ कनी हलके नहीं हाने ।

१७५७ मूंछ मूंछापी सर ज्याय जिंदी मूं कूबाँरे ?

मूछ मुछाने म जिनका नाम बल जावे वह जाबिकायात्रम क लिए पनि  
धम क्यों करे ?

१७५८ मूं लामी बाट काग्या छूटै ।

मू ह मयी हुई बाट नहीं छूटती ।

१७५९ मूर्खों का बाल बलकरा पाय ।

मूर्खों का मान समथर या जाने है ।

१७६० मूरत वह छूटै बलद वह छूटै ।

\*मुरवा ली मगर्म बर्न पण कापिया ता कर्म बन्ना कानी देखा है ।

मूर्ख भी मग में जाता है अनाप-जनाप कह शानता है और बैल हल खेतता ही है ।

१७६१ मूरख के माथे लीग कौनो होय ।

मूर्ख के लीग मही होते बैसे वह पय ही है ।

१७६२ मूरख नै टक्का रे देणू पय अकल नही देणी ।

मूर्ख को पैसा रे बना अकल किन्तु अकल मिलाने को कोसिम नही करनी चाहिए ।

क० साङू न टक्का रे देणू अकल नही देणी ।

१७६३ मूरख ले काम पड़े बर के करणू ? खुप रहु ब्याणू

मूर्ख से काम पड़े तब क्या करना चाहिए ? उत्तर खप रहना चाहिए ।

१७६४ मूत से ब्याज प्यारो ।

मूत भसे डो डूब पाय ब्याज नही छोरा जाता ।

पीब छोटा रहने के कारण बटे से अजिब प्यारा हाता है ।

१७६५ मेवा तो बरसत भला हुणी हो खी होय ।\*

जो भी हो वर्षा तो सब ही अच्छी है ।

१७६६ मूलक के अनी ना गरीब क बनी ना ।

मूलक के अनी नहीं होती और गरीब का कोई बनी-बोरी नहीं हाता ।

१७६७ मूर्ख को जायो बिल ई खोदेगो ।

बूढ़े की सव्दान बिल ही फाबती है । कोई अपने स्वभाव को नहीं छोड़ सकता ।

मि० जातिस्वभावो न मुष्यते ।

१७६८ मे बाबी जायी सिद्धा-बली स्वायो ।

अरमत्त हविष होकर लेकते हुए बच्चे इस उक्ति का प्रयोग करते करते हैं । वर्षा मे जो मिट्टे तथा कलिया होती है ।

१७६९ मेर लता के कुन कब मार ? बीबी छीसी मर बजिमार ।

जब कोई खराब सोहबत में रहने मगता है तो उसके प्रति यह शोकोक्ति कही जाती है ।

\*पुरा बीहा इन प्रकार है—

ली बोड़ा भी करहुला पूत निपूठी ओय ।

मेवा तो बरसत बठार भई होखी हाव सो होय ॥

- १७०० मेर छोटवयाँ में मृत चाहे बड़ीड़ा न मृत स डारि सख्या ह ।  
मरछोति लइके ना निमअम दा चाहे बने को मब अडाई मर लाने बाब है ।
- १७०१ मेरो ई मूठ मेरो ई भोगरो ।  
मेरो ही बस्तु मरी ही शानि भयबा मर ही ग्यर जीर उम्ही म मरा  
दापन ।
- १७०२ मेरो कुदाबकसियो डारि मेर को लावती ला ग्याप पम प्या ग्याप क बड़बा  
की ?  
मरा सखबा अडाई मर लपनी सा जाय पर लानाय रहा न
- १७०३ मेरो मिठू घर नहीं मुझ जिमो का डर नहीं ।  
मेरा स्वामी घर नहीं है इगमिये मर जिमी का डर नहीं है ।
- १७०४ (क) मेरा पिपा घर नहीं मुझे जिमो का डर नहीं ।  
(ख) मेरो लाजन घर काना जने कोई का डर काना ।
- १७०५ मेरा को जाया चिरबा का छाया ।  
माया तो मब दया को हो है या छाया बुरा को ही है ।
- १७०६ मेहा तो निल बरस तो जित राजो होमी राम ।  
बरा सा बड़ा होगी जहा ममबात को बुरा ह्याम ।
- १७०७ मैं क नल छुरी ।  
जहूना क तमे छुरी ।
- १७०८ मैं मला कडाब ।  
भहूकारी का नाग हुए बिना नहीं रतना ।
- १७०९ म बो राधी तू बो राधी कूब घर पड़े को पाधी ?  
अब अपने हाव मे को राम नहीं करना चाइना मब म उबिन का  
प्रयाप शिया जाना है ।
- १७१० म मट मेरो आई तू मू मर पराई आई ?  
बम पर ता जा परी है इममिण म इम शिपति को मर रह ३ विगु  
तू इमर की लइकी हा कर ऐसा बवा कर रही ह ?
- १७११ म कैरु को तमे तू से बड़ी मम ।  
म ना तुम पर दोब लगाय बीग पा तू मुा ही न बीग ।  
टि० यह पहली है ।
- १७१२ बोडा कर मलाह, बरामे घरा पर ।  
बाप इमरा न बन म जानय मना रह ह ।



- १७८२ मोठा को राठ में लुंवा ई उछळ ।  
 बाही साधु लड़ते ते वही लुंवे ही उछळते हे ।
- १७८३ मोठा घना बैकुण्ठ सांकड़ी ।  
 साबुजी को संख्या बहुत अधिक है बैकुण्ठ म उनके लिए जगह की तंबो  
 है ।
- १७८४ मोठी माय सदा बैरफी कुहावे ।  
 बिना सीनों वाली माय सदा उरुण कहकाती है ।
- १७८५ मोठी खुतो अर बैकुण्ठ के माय ।  
 छानू मृत्यु के बाद बैकुण्ठ में जाता है ।
- १७८६ मोठपी ओठे रास में दो पीवे दो कास में ।  
 छाबु रास में बनता है अपने लिए दो रोगी बना कर ला लेता है दो  
 मारण्डाक के लिए रख लगा है ।  
 जबवा दो को उसने बमळ में बना रखी है दो उसके लिए खाना बना  
 रही है । बसिबारी महन्त के सम्बन्ध में उक्ति ।
- १७८७ मोत मापवी मामबी मम्बी मानवहार ।  
 पाबू मम्भा एकसा पत राई करठार ।  
 मृत्यु रोय मुकड़मा गरीबी और कर्जदार ये पाबो वस्तुएं बहुत बुरी  
 है । भगवानु हो इनस बचावे ।
- १७८८ मोत हरावे भूख निबावे ।  
 मोत के जाने सबका हार माननी पड़ती है और भूख के आवे सबको लुकना  
 पड़ता है ।
- १७८९ मोर नाई ई नाई पय आपका पगा कानी देख कर रोई ।  
 मोर नाचता ही नाचता है किन्तु अपने पैरों की ओर देख कर रोता है ।  
 बहि कोई मनुष्य सब तरह म मुक्तो हो किन्तु एक ही दुख ऐसा हो जो  
 सब मुक्तों को नोरस कर बे तब इस उक्ति का प्रयोग किया जाता है ।
- १७९० मोरिया तो मेहू मेहू करे पय बरलाखू ती इबर के हाय है ।  
 मयूर तो बर्षा की रट बरामे हुए हैं किन्तु मेहू बरखाना तो इन्द्र के हाथ है ।
- १७९१ म्हां लू की मोरी बिके पीसिया की रोय ।  
 मूठसे अधिक नीरबय वाली और कोई पही है ।
- १७९२ म्हां इबरत लावे राबड़ी भी में दांत हार्से न बाबड़ी ।

किसी बूढ़े की उक्ति है हमें तो राजड़ी भ्रमृत के तुल्य मगती ह जिसमें  
न दाँत का प्रयोग करना पड़ता ह न जबड़े का ।

१७९३ गहारी ई बिल्ली गहारी ही म्याऊं ।

हमारे ही घर की बिल्ली और हमें ही डरावे ।

वो हमारे ही आश्रित रहे वह हमें ही पसन्दी दे

१७९४ गहारे न भाग ग्याई नाँव बरुपी बंसुम्बर ।

हमारे यहाँ से भाग माँग कर साईं और नाम रखा बैरबानर !

हमारे के यहाँ से माँग कर साईं हुई बन्तु पर जब नाईं गव कगता है तो

इस उक्ति का प्रयोग हाता ह ।

१७९५ म्हे माना-सा ये घीगा-सा म्हे करी मसकरी ये रो दिया ।

हम गगप्य है भाप प्रबल है हमने तो होमी की भी भाप रा दिया ।

क हम माना-सा तुम वाना-सा हम ग्याल दिया तुम रो दिया ।

( यह मतप्य क प्रति बरें की उक्ति है । )

१७९६ म्हे ही रोस्या म्हे ही डाया ।

हमने काम प्रारम्भ दिया हमन ही उनको तप्ट कर दिया ।

१७९७ म्याऊं को मूँटो कुन पकड़े ?

म्याऊं का मुह कौन पकड़े ?

य

१८९८ या बाँप उघाड़ तो या लाखां मरें या उघाड़े तो या ।

दोनों में से कौन सी बात नहीं दोनों में से कोई भी नहीं तो मेरी ही इज्जत  
जागी है ।

१८९९ पो डोरङ्गे तो बोरी ई पार होमी ।

यह उष्ट्र-विघोर तो मुक्तिम मे ही पार होगा ।

१८०० या बैबी बोला भगत ताप्या है ।

इस देवी मे बहुत से भक्तों का उदार कर दिया है ।

किसी अनुभवी या बिग्री बुझता के भ्रमण्य में प्रयुक्त उक्ति ।

१८०१ या बटी भर वो हापत्रो ।

जब देने के लिए परिमित पत्र हा ठब बहन है बने पान तो यह लड़की  
है और यह बहोत्र है देन के लिए । बस !

१८०२ पार में आपकी पारी स ही काम ।

पार को तो अपनी पारी से ही काम है ।

- १८१९ राग रसोई पापड़ी कबे कब बच गया ।  
 राग रसोई और पापड़ी व कभी-कभी ही ठीक बच पाती है ।
- १८२० राघो भली न पिरायो ।  
 न राधा भला है न पिरायो अपत्ति दोनों इच्छाएँ हैं ।  
 मि० राई भली न कली होयू रोड कबली ।
- १८२१ राजा करे सो भ्याव पासो पड़े सो डाव ।  
 ( स्पष्ट है )
- १८२२ राजा क घर मोतिया की के कमी है ?  
 राजा के घर में मोतियों की क्या कमी है ?
- १८२३ राजा के सोने का बागड़ा ? कहु भाव के दिन तो भलाई भुङ्ग का करायो ।  
 किसी ने कहा राजा के यहाँ सोने के पापड़े हैं । किसी मोठी-भाठी स्त्री ने कहा भाव तो यदि वह चाहे तो सोने के ही क्या पड़ के पाड़के करवा सकता है ।  
 उक्त स्त्री की दृष्टि में कुछ बीसी बहुमूल्य वस्तु संसार में अन्य कोई नहीं ।
- १८२४ राजा नदी में डोणी मछी घे ।  
 राजा किलों में और डोणी मछी में डोमित होते हैं ।
- १८२५ राजा डोणी मगल बर डुब की उल्टी रीत ।  
 बरता रहियो परतरान घे बोड़ी पाल प्रीत ।  
 ( स्पष्ट )  
 मि नदीना न नमीना न भूदिवामरुषपादिना  
 विरवासा नैव कतम्य स्त्रीषु राजकलेषु च ।
- १८२६ राजा बाँधे दल घेर बाँध मल ।  
 राजा दल को बाँधता है और बंध मल को ।
- १८२७ राजा बाग्या सो मानवी मेवा नोनी बरती ।  
 राजा जिनको मांगते हैं जिनका सम्मान करते हैं वे ही मानव हैं । बर्बा  
 की जिन पर कृपा है वही वस्तु परतो है ।
- १८२८ राजा राज पिरजा बँस ।  
 मच्छ राजा के राज्य में प्रजा बँस की बनी बजाते हैं ।
- १८२९ राजा कर्ने तो बापकी पाँच राजे ।  
 राजा दृष्ट हो बाप तो अपना बाँध रभे ।  
 किसी आत्माधिमानी की उक्ति है ।

- १८३० राज सल्ला को पीसो पस्ला को ।  
राज्य सल्लाह में श्रीर पैसा परस्पर महभाग में होता है ।
- १८३१ राज करे सो बोन भाडो ।  
जो लड़ाई मोम सेना चाहता है वह उटपत्तीग बोसने लपटा है ।
- १८३२ राज को घर हांती रोम को घर कांती ।  
हूँसी-हूँसी में लड़ाई-समझा हा जाता है । पाँसी सब रोगों की बड़ है ।
- १८३३ राज से बाड़ भली ।  
लड़ाई को ज्येसा अलग-अलग हो जाता अच्छा है ।
- १८३४ राजो में कापी बना कही ।  
राजो को कापी मत कहा ।
- १८३५ रात अंबेरो मा बरोलवारो ।  
अंबेरो रात में कोई बनने वाला नहीं इसलिए मा अपने लड़के की बेगटके बूढ़ गिलानो है ।  
वहाँ घोने में सुगन्ध हा वहाँ इन उषिष का प्रयोग किया जाता है ।
- १८३६ रात आर्ग अंबार कातो ।  
रात के आगे घर नहीं है ।
- १८३७ रात को नीर परे दिन की भूल गई ।  
बिम्बा के बारम रात को नीर नहीं जाती दिन की भूल नहीं सगती ।  
मि० निगि न भीद नहि बामर भूया ( तुलसीदास )
- १८३८ रात क्यानपी बात आस्या देयो जानपी ।  
रात मो आँवनी रात हो है आँवा-देनी बात पर ही बिरबाम करना चाहिए ।
- १८३९ रात में शारपूबो दिन में सूजे ई लौग्या ।  
रात को लोपी और दिन में दिग्गमाई हो गही पड़ना ।
- १८४० रात की कोई कमात को बी ।  
कोई कमान क माल को बीरो चारी रात का से जा रहा'वा । संयोग से वह पकड़ लिया गया जिन पर यह उषिष है ।
- १८४१ राबड़ी को नांभ गुल्लकका ।  
जब एक रात के पर्याय न कप में डूमेरे कठिन दारु का प्रयोग करते हैं, तब इस प्रकार की उषिष का प्रयोग होता है ।
- १८४२ राबड़ी की कहुं कर्ने बांनो न राबो ।

जब छोटा मनुष्य भी मखरे दिखनाया है, उस इस उक्ति का प्रयोग करते हैं।

- १८४३ राजड़ी में मुग होता तो क्या में ना राजता ।  
राजड़ी में यदि मुग होते ता बिबाह में ही उसको न राजत । सब ती मह है कि राजड़ी परीशों का वेम पराबं है ।
- १८४४ राजड़ी में राज राजे जून जाटे पीसती ।  
बेजो रं या कुड़ राज, जाने पस्ता बीसती ।  
फूहड़ स्त्री राजड़ी के साब-साब राज राज केटी है, जाटा पीसते समय जून जाटवी रहवी है और बरते समय पस्ता बसीटते हुए बरती है ।
- १८४५ राम कह कर रहीम के कहनू ?  
जब राम कह किया तो फिर रहीम क्या कहना ?  
राम और रहीम तो एक ही है ।
- १८४६ राम की डाम पर बेंडो है ।  
समुद्र में तूफान के समय जहाजी बेंडे का पार लगना भगवान की बया पर निर्भर है ।
- १८४७ राम की भर को राम में ही बेरो ।  
भगवान् के घर का छिनी को पता नहीं ।
- १८४८ राज की भर राज को सिर ऊपर में पीसो है ।  
परमात्मा और राजा सर्वसक्तिमान है ।
- १८४९ रामजी ऊपर बढयो बैसो है ।  
भगवान् ऊपर से सभी के मने-बुरे कर्मों को देख रहे हैं । इसलिए मनुष्य का यह समझ कर कि कोई हमें नहीं देखता ककम नहीं करना चाहिए ।
- १८५० रामजी को मांज छदा मिठरी जद बाबै जद बूद गिरी ।  
भगवान का नाम मेने से मेने-मिठरी मिठरी रहते हैं अर्थात् मनुष्य हमेशा आतन्द्र मनाता रहत है ।
- १८५१ राम झरोखे बैठ कर, सबका मुजरा लेय ।  
जैसी बेनी जाकरो जैसा ही भर बेय ।\*  
झरखे में बैठ कर राम सबका अभिवादन स्वीकार करते हैं, वे जैसी जाकरो देखते हैं उसके अनुसार ही सबको देते हैं ।

\*राम झरखे बैठ कर सबको मुजरी लेत ।

जैसी जाको जाकरी जैसी ही भर बेठ ॥

- ३८५२ राम से तो बाढ़ में ही रहे ।  
मगवान् जब देना चाहता है उस वह चाहे जिस माग से दे सकता है ।  
जब किसी को एम स्थान में पन मिला जाता है वही मिलने की स्थान में भी माना नहीं पी उस हम लोकप्रिय का प्रयोग करते हैं ।
- ३८५३ रामदेवजी ने मिस्या बना डेह ही डेह ।  
रामदेवजी को सबसे सब चमार ही मिला । रामदेवजी के पुत्रारी भी चमार ही हाथ है ।  
क० रामदेवजी ने मिस्या बना कामड़िया ही कामड़िया ।
- ३८५४ राम धनी के गाँव बयो ।  
बनाव का रसाव या तो मगवान् है या ग्राम है जिसमें वह रहता है ।
- ३८५५ राम में लंका लूटपा ही जुम बीतया ।  
राम को लंका लूटे ही मग बीत बये ।
- ३८५६ राम राम चौपरी सलाम भियांजी ।  
पने लागू पांडिया बडौत बाबाजी ।  
चौपरी का राम राम दिया जाता है मियां से सलाम करते हैं पंडित को " पा लागू " ( पैर पड़ता है ) कहते हैं और बाबाजी से दण्डवत् की जाती है ।
- ३८५७ राम कसवोड़ी बुरो ।  
मगवान् का बच्चा होता बुरा है ।
- ३८५८ रामू कहो भाबें उजाड़ बहो ।  
रामू उजाड़ का मूर्त रूप है रामू नहीं या उजाड़ नहीं एक ही बात है ।
- ३८५९ राबली घोड़ी बाबला हसबार ।  
राम्य की ता उस चलने वाली घोड़ी है और तबार है बगला । यह बेड़ा किस पार हो ?
- ३८६० राबल की तेल पस्त में ही बोनी ।  
राम्य का तल ता पस्त में भी अच्छा । यद्यपि तेल से पस्ता बिचना होता है किन्तु ता भी राम्य में जाना-जाना होने से अधिक में अधिक लाभ की ही सम्भावना रहती है ।
- ३८६१ रास पुरानी बाजरी मीठक बाल बंवार ।  
इसका बुरका बोलिया, कीही बाल बंवार ।

बाजार बोते समय उतना ही अन्तर रहना चाहिए जितना रास बीर 'पुरानी' में रहता है। बीलों के बंधी हुई उस रस्ती को जिसे हल चलाने वाला नामे रहता है 'रास' कहते हैं तथा हाव-डेड-हाव को बँस हाँकने को लकड़ी को पुरानी कहते हैं। एक मच्छक ज्युति और दूसरी में जितनी दूरी होती है उतनी दूरी पर म्यार बौना चाहिए। मोठ एक-एक, दो-दो करके बौना चाहिए और म्यार को बीठियों की पठति पर बिलकुल पास-पास बौना चाहिए।

१८६२ रिपिया तेरो रास दूजी नर बलम्बो नहीं।

जे बलम्बा दो म्यार, तो जुय नें बीया नहीं ॥

हे भयमे। जिस रात तुम पैदा हुए, उस रात कोई भी पैदा नहीं हुआ क्योंकि तुम जैसा इस संसार में कहीं कोई बिल्लाई ही नहीं पड़ता। यदि क्या-बिच् बी-बार पैदा हुए हों तो वे जीवित नहीं रहे क्योंकि यदि वे जीवित रहते तो बेसने में तो जाते ?

क्यान्तर बाब्या तेरो रास दूजी नर बलम्बो नहीं।

जे बलम्बा दो म्यार, तो जुय नें बीया नहीं ॥

१८६३ रिपियो हाव को बँस है।

बपया हाव का मँस है। उसे अच्छे कामों में अवश्य ध्यान करना चाहिए।

१८६४ कजा बुझा नर मूबा, बाङो कीनो लार्ने।

जिन पंगुओं की पीठ पर बाक होते हैं उनको बाङा नहीं सटाटा। अग्नि के पास बाङा नहीं लगता। मुठक को बाङे से कोई भय नहीं लगता।

१८६५ कय का कड़ा रोहीई का फूल।

रोहीई के फूल देखने में ही सुन्दर होते हैं।

क० दिवखडका ई सोबवा रोहीई का फूल।

१८६६ कय की बपियाबी पाबो भरवा जाय।

कपकपी स्त्री पानी भरने जाती है और कुकप स्त्री अपने भाग्य के बख पर मौन करती है।

१८६७ कय की रोबे करव का जाय।

कपकपी स्त्री भी दुखी रहती है किन्तु कदप स्त्री भी यदि भाग्यपाकिनी हो तो उसे भोग्य की कमी नहीं रहनी।

१८६८ रोबड़ नें कुन घपी ? बाबो । कह बाबो भेडपा से भी बुरी।

किसी ने पूछा "रेबड़ में कौन गया ? उत्तर मिला "बाबा !" तब  
पूछने वाले ने कहा कि बाबा का मेडिके से जो बुरा है ।

बाबा क माँगाहारी होने म ऐसा कहा गया है ।

दि० रेबड़ में बाबो हूँ तो किमावरा से जो बुरो ।

१८६९ रोगी को रात भर भोगी को दिव करदो बीसरे ।

रागी की गल और भागी का दिन बड़ी मुश्किल म कगता है ।

राज क समय रोग का प्रकोप बढ़ जाता है ।

१८७० रोग में रोबड़ भोगो म रोग में पाबल भोगो म ।

बहु सुबहा निकम्मा है ।

१८७१ रोटी छोट रोटी के पतली के मोटी ।

किसी ने दूसरी स्त्री को कुछ रोटियाँ उपार दी । जब वह लौटने लगी  
तो रोटी उपार देने वाली म कहा "मेरी राटियाँ बड़ी-बड़ी थी ।"

उत्तर में कहा गया "रोटियाँ में क्या पतली और क्या मोटी ?"

१८७२ रोगी जब अर भारतो जाय ।

दूसरे को मारता भी जाता है और स्वयं रोगी भी जाता है ।

म० मार बराबर, रोने बकास ।

१८७३ रोगी बिना मा भी बोबी कोनी रे ।

बिना रोगे बच्चे को मा भी स्तनों का दूध नहीं रिसती ।

१८७४ रोगी राबड़ी कल घाले ?

केवल रोगे से कुछ नहीं होता । परिपक्व करने म ही कुछ निकलता है ।

१८७५ रोगी जाय मुँह की लहर स्याह ।

जो रोता हुआ जाता है वह मरे हुए की लहर जाता है ।

कार्य करने में पहले ही जो कामा-कानी करे उनसे काय पूरे होने की  
बाधा नहीं ।

११

१८७६ लंबा में किता हातरी कोनी बर्त ?

लंबा में क्या बरिख नहीं रहने ?

१८७७ लंबा में से बाबल हाथ का ।

जहाँ पर लम्बी जगुर हों वहाँ इन उजिन का प्रयाय होगा है ।

१८७८ संयम ल मापनी जोलो ।

अनपन से ता लपती ही मफामे ।



- १८७९ लज्जत लखेसरी का करम जिसारी का ।  
लज्जत तो हैं लखपति के-से वीर करम हैं जिसारी के-से ।
- १८८० लज्जतली बर में बड़ी चूड़ जाने मेरे से बरी ।  
कोई चूड़इ स्त्री किसी जगजाबती स्त्री को बुरा-भला कहने लगी ।  
चूड़इ की बातों का जबाब न देकर वह चुपचाप अपने घर में चुप गई ।  
तब चूड़इ ने समझा कि मुझसे डर कर उसने ऐसा किया । वास्तव में  
अपनी मातृ मर्यादा की रक्षा के लिए ही वह घर में प्रविष्ट हुई ।
- १८८१ सबधियाई लज्जा करें हे ।  
जो लपते बाधे होते हैं वे ही लज्जा करते हैं ।
- १८८२ लज्जा ही लज्जा ।  
जो लज्जा कर चुके वहीं लज्जा करना जानते हैं ।
- १८८३ लरकी पर ऊन कुछ छोड़ी है ?  
भेड़ पर ऊन कौन छाड़ता है ?
- १८८४ लाली बां डूर ताई पसरै ।  
लम्बी मुसा डूर तक फैलती है ।
- १८८५ ला कोई वीरज ऐसा नए, वीर बबरची भिस्ती बर ।  
ब्राह्मण के सम्बन्ध में उक्ति है जो बड़ी लोक-प्रसिद्ध वीर प्रसिद्ध है ।
- १८८६ लाला बर लेखो कोड़ा पर कलम ।  
यह बड़ा बनी बराना है । यहाँ लालों का हिताव-विशेष होता है ।  
करीबों पर कलम चलती है ।
- १८८७ लाज जठे पीठ ।  
आरमीय के अधिक होने पर आरमीय को ही दुःख होता है ।
- १८८८ लायें जहाँ करवें ।  
जिसके चोट जवती है वही चोट की पीड़ा सहता है ।
- १८८९ लाजो तो तीर नहीं तुफानो ही सही ।  
वदि लय गया तो तीर, नहीं तुफान ही सही ।
- १८९० लाग्योँर जाम्यो ।  
कायर के सम्बन्ध में उक्ति । बार पड़ते ही घम गया ।
- १८९१ लाज तो लाली की होय है ।  
लम्बा तो लालों की ही होती है ।
- १८९२ लाठी दूई न भाँडो दूई ।

इस तरह कार्य किया बाप कि न तो माटी टूटे और न बचन भी फूटे ।

१८९३ साहू को कोर चाली चडे ही पीठी ।

प्रकृति क मयूर पुनः पर तरह मयूर जाने है ।

१८९४ साहू कुंठ उठ ता भोरा लिई ही ।

जहाँ लड़कू कंगेई वहाँ लड़कू के छान-छान दुबरे बिलगत होई । मनवानों में जहाँ मकयं हाणा है वहाँ दुमरा का बछ नाम हाणा ही है ।

१८९५ सातो का देव बातो से कातो कार्य ।

सातों का देव बातों से नहीं मानता अर्थात् जा समझान-बमाने में किसी की बात नहीं मानता पिछम में हा उमरो अरुण निकाने जातो है ।

१८९६ साबदा का मोड कानी ।

साबदा का अर्थ नहीं ।

१८९७ काम को घर काम को बर है ।

अपनी करने से काम शिष्ट जाता है ।

१८९८ काम सायां किनो कयो गुई ?

बाग लगने पर कहीं कभा सुदना है ?

१८९९ कालाजी करो म्यारस घर का बारस की बारी ।

कालाजी न एनी एकादशी की या बारस की भी जाने की अर्थात् वे जिनका बारस के दिन भावम करण है उमने अधिक उम्हारे फलाहार भादि में एकादशी के दिन अन्न उदाया ।

१९०० लिओ है लताट लेज ऊं से नहीं भीन-बेल ।

जो लताए की देखाओं में बिना हुमा है उममें नकिच भी कमी नहीं हो सकती ।

१९०१ लिछवी भाई अघो हो गई ।

कामी बिन भाई बेग हो कमी गई ।

१९०२ लिमवी कडे बाफर राबी हुई ।

कामी न मो बड़ी हुआ की है ? कामी न भी बड़ा जाना आयय बुद्धा है ?

कामी के कजूस क यरी जान पर इन उक्ति का प्रयोग हाणा है ।

१९०३ लौर भी साब ली हाओ की साव लिओ पैर ली अर उदाव ।

आयय भी लता बड़े बाने गतामद भी करने ता लिओ बड़ की करे जिलने सब तरह इच्छाओं की पूर्ति हो ।

- १९०४ लीप्यो पोस्यो जांगवू पहरी-जोड़ी मार ।  
 क्लिपा-पुठा जांगल और पहनी-जोड़ी स्त्री सुन्दर लगती है ।
- १९०५ लुगाईं के पेट में टावर खाटा ज्वाय पन बात कीनी खाटावे ।  
 स्त्री के पेट में बच्चा समाया रहता है किन्तु बात नहीं ठहर पाती ।।
- १९०६ लुगाईं को ग्हाणू, गरब को जाणू ।  
 स्त्री को स्नान और पुष्प को भोजन जन्मो करना चाहिए ।
- १९०७ कमाईं को कमाईं मोदमार ज्वाय तो डांठिईं को जिस उतर ज्वाय ।  
 स्त्री की कमाईं पर यदि पुरुष अपना जीवन बसर करे तो चाहे बरं के समान भी उसका उग्र स्वभाव हो उसकी उग्रता जाती रहती है ।
- १९०८ लूमा बड़णी बांस, उतरें चौबै मास ।  
 एक लोमड़ी किसी जलाशय पर पानी पीने गई । गौरव को वहाँ बैठे देख कर बोली शृगाल मामा मुझे पानी पीने को इजाजत दो । शृगाल ने कहा " पहले मुझे एक सासो मुताबो फिर निर्मम होकर पानी पी सकती हो । " लोमड़ी ने शृगाल की प्रमत्ता में कहा " स्त्री को तेरो बूठरी सोने वाली है । काना में तेरे गोलक जाके राजा बैठपो है । अर्थात् तुम्हारा बबूतरा चाँदी का बना हुआ है जिस पर सोना डाल दिया गया है । तुम्हारे कानों में गोलक है जिसमें तुम ऐसे जान पड़त हो मानो कोई राजा बैठा हुआ हो । इस सासो को चुन कर मोरव बहुत प्रसन्न हुआ । जब भरपेट पानी पीकर लोमड़ी चलने लगी तब गौरव ने उसे दूखरी सासो मुताने के लिए कहा । लोमड़ी को शरारत सूझी और बोल उठी " मांटी की ठेरी बूठरी गोबर वाली है काना में तेरे लूसड़ा जाके डेढ बैठपो है । " अर्थात् मिट्टी का ठेरा बबूतरा है जिस पर गोबर दिखाया हुआ है । कानों में फटे-पुराने जूते हैं । तुम जमार-से लगते हो ।

गौरव बड़ा बूट हुआ । लोमड़ी मगी और गौरव उसके पीछे-पीछे चला । लोमड़ी एक बांस के पेड़ पर चढ़ गई । उस समय की उक्ति है । तब गौरव ने कहा " गौरव मारी पालखी में बड़-सर्प हाकसी । " आलाक लामड़ी ने गौरव को जकमा देने की मुक्ति साधी । उसने कहा भी मामा ! काली लामक कठा बना वै कन माईं ज्वाय ज्वाय । " अर्थात् देखो माना ! मे कौन बार जले जा रहे हैं काली कम्बल जोड़े हैं साथ में बहुत से चिकारी नृत हैं । गौरव लोमड़ी की भजकी में आ गया और जर कर भय गया । इस प्रकार लामड़ी की उक्ति सफल हो गई ।

- २९०९ लूम कूट-कूट कर लिबल ।  
जो नमकहराम हीना है उसे बुरा फल मिलना है ।
- २९१० लूम बिना रनोई पूज ।  
नमक के बिना भोजन का मान्य पीना रह जाता है ।
- २९११ मूला भर लार्प । दो कर्ना पकड़ना कह आके बात ? कह मा खोली लीर्प ।  
एक लंबड़ी लिंगा का काम कर रही थी । बा उसे पकड़ हुए ब । मायों ने कहा " यह क्या बात ?" उत्तर मिला " यह लिंगाई का काम बहुत मज्जा करता है ।
- २९१२ से पाड़ातम झुंफड़ी मित उठ करती राख ।  
आखो बगड़ बुझारतो हारो हो बुझार ॥  
है पहीमिन । तुम मदा मुमम मयडा किया करती थी जब रनो मजनी शीपड़ी को । पहल जब मैं पनी थी तुम्ह माया ही बीयन बुझारना पकडा या जब मेरी अनुपस्थिति में मारा बीयन तुम्हें हा बहारना होया ।
- २९१३ से से करतीं तो डाकन भी कोम्पा से ।  
" ल से " करने में श्री डाकिन भी बच्च नहीं सेडी ।
- २९१४ लोडा निर सित डूब ।  
यहां ग्याद-अम्याद का कोई विचार नहीं है ।
- २९१५ लोही लकड़ कामड़ी पहला कित्त बजान ।  
बहु बडेरा डीकरा मोबटियां परबान ॥  
लोहा लकड़ी बयडा इनका पड़े कछ पना नहीं बजना । बहु घोड़े का बच्चा जीर लड़े इन लकडा बयस्क होने पर ही पना बजता है ।
- २९१६ स्याडं चून उबारो कोई गुड़ दे तो ।  
भर-यड़ कर सासू-कोई कर दे तो ।  
जिनो कूड़ की उक्ति है यदि को नु दे दे तो माटा ता नहीं से उधार ही से आडं । यदि कोई बना दे तो घानू ॥
- २९१७ हसन भी घावो रोग भी को मयो ना ।  
कहमुन भी गायो भीर गोग भी नहीं मिया ।  
मि० मधिनैऽपि लगुने न शान्ती व्यापि ।

घ

- २९१८ बहु घोड़ी घर जीर का मानी शार्प घाम ।  
यह घर घोड़ी मानना भर पीबिन्द्र की आम ॥

११११ १५१ ३००० जहाँ तुम्हें राजा-बास बानी के लिए मित्र  
 १११२ १५२ के लिये घर है यहाँ नयवान् की बास कर ।

१११३ १५३ ३००० देवदेव बारी का असमान ।

१११४ १५४ ३००० और आसमान भी स्वर नहीं रहने बाण है ।

१११५ १५५ ३००० समाप्त की बंदी कोठी बाण ।

१११६ १५६ ३००० मुक्तनी है जिसके नाम का भंडार भरा रहा है ।

१११७ १५७ ३००० विद्या बहिता बेल गुण ये नहीं आत मिश्रत ।

को ही इनसे प्रेम कर ताऊ के कियतत ।

(स्पष्ट है)

१११८ १५८ ३००० बरस घटाई कर जोपी बवाई । \*

बेरपा है अगर उसकी अवस्था पूछी जाय तो वह अपने-आपकी कम अवस्था  
 बाणी बतलाती है और योपी अपनी अवस्था अधिक बतलाता है ।

१११९ १५९ ३००० अंतुवार हैजात यणी है जोसो कप कर में लाया बेरो करे ।

अभिनेय बेसे तो बहुत अच्छे हैं किन्तु कर में जान लग जाय तो पठा बल  
 जाय ।

स

११२० १६० ३००० संज कर और मरपी ।

संज और और से भरा हुआ । फिर और क्या चाहिए !

११२१ १६१ ३००० संजोय बीबता के बार लारी ।

यदि बीबतात् कोई नाम होता है तो उसके होने में देर नहीं लगती ।

११२२ १६२ ३००० संविद्या विपय कर पर हावां लेती ।

समाचार भुगत कर खापार किया जाय और डुमरी के मरासे खेती  
 छोड़ दी जाय तो कभी सफलता नहीं मिलती ।

११२३ १६३ ३००० मंडारता बार लारी, विपय लेती लारी ।

- १९३० सगलो गांव रुदई, कोई पाले कोई नटई ।  
मारे गांव मे मिशा को सामघा जुटायी जानी है कहीं मे मिशा मिसत्री  
है कहीं मे नहीं मिसत्री है ।
- १९३१ सपे कीजे जाण कर पाणी पीने छान कर ।  
सम्बन्ध मोब-ममम कर करना चाहिए, पानी छान कर पीना चाहिए ।
- १९३२ सगो समय कौमिये कर-तर आई काज ।  
बिबाहादि द्वारा समय को अपना सम्बन्धी बनाना चाहिए, वह समय  
समय पर बड़ा उपयोगी मिष्ट होता है ।
- १९३३ सत मत सोनो सूरमा सत सोया पत आय ।  
सत की बाबी लिच्छमी फेर मिलेगी आय ॥  
हे सूरमा ! मनु की रटा करो मनु के बाप जाने मे प्रतिष्ठा पत्नी जती  
है । मनु मे बेबी हुई लछमी फिर आकर मिस जायगी ।
- १९३४ सदा दिवासी सत के जाठों पहर अमर ।  
मस्त के मिष्ट हमेशा दिवासी रहनी है बह जाठों पहर आनन्द के लोख  
में बिबरण करना है ।
- १९३५ सदा न बुय में बीबना, सदा न कयता केस ।  
हमेशा संसार में जीना नहीं होता और पीबन भी मरा स्थिर नहीं रहता ।  
मत्कर्म की धोर प्रेरित करने वाली उक्ति ।
- १९३६ सदा न बरसे बावली, सदा न साबन होय ।  
मदा ही बर्पा नहीं होनी मदा ही साबन मदा होना अर्थात् अक्सर ही  
काम उठाना चाहिए ।
- १९३७ सदा भवानी बाहनी समुक्त होय मनेश ।  
बाब देव रिचछा करे बड़ा बिष्णु महेस ॥  
(स्पष्ट है )
- १९३८ सदा ही इकमार दिन कोनी रंबे ।  
मना ही इकमार दिन नहीं रहने ।  
इय कहावत का छात्रा रूप है 'मदा न र्है दिन पर मिम्बकिमिन कहावी  
बही जानी है—  
एक सेठ का निमक पान बहुत पत पा । उगवा यह नियम पा कि जो भी  
बन्धु उज पहर में बिबने को जाती पी वह भग्न बिद जाती तब तो

हे चौड़ी ! वह घर और वा जहाँ तुम्हें बाला-बास खाने के लिए मिला  
करता था यह मेरा घर है यहाँ भगवान् की आस कर ।

१९१९ बाली जाती बरतड़ी बाले का असमान ।

निश्चय ही परती और आसमान भी स्थिर नहीं रहने वाले हैं ।

१९२० वा ही नार सुलाखनी बेंकी छोटी धाम ।

वह स्त्री सुलझनी है जिसके अन्न का मजदूर मरा रहा है ।

१९२१ बिद्या बलिता बेल नृप पे नहि कस्त गिबस्त ।

जो ही इनसे प्रेम करे ताहु कैं लिप्टस्त ।

(स्पष्ट है)

१९२२ बेस्सा बरस बटावै अर थोपी बचार्वै । \*

बेस्सा से अमर उसकी अबस्सा पूछी जाय तो वह अपने-आपको कम अबस्सा  
बाची बतलायी है और योमी अपनी अबस्सा अधिक बतलाता है ।

१९२३ बेसुन्दर बेस्ता घनी ई जोखी पर घर में लाप्ता बेरो परै ।

अग्निदेव जैसे तो बहुत अच्छे हैं किन्तु घर में जाग लय जाय तो पता चक-  
जाय ।

स

१९२४ संख अर नीर भएयो ।

सख और नीर स मरा हुआ । फिर और क्या चाहिए !

१९२५ संजोग पीबता के बार लाम ।

यदि बीबनशास्त्र कोई काम होता है तो उसके होने में देर नहीं लगती ।

१९२६ संदिला बिबख अर पर हावां खेतो ।

समाचार भुगता कर म्मापार किया जाय और बूखों के भरोसे खेती  
छोड़ दी जाय तो कमी सफलता नहीं मिलती ।

१९२७ संबारता बार लाम बिबाइता कोपी लाम ।

किसी वस्तु को सुधारते देर लगती है बिबाइते देर नहीं लगती ।

१९२८ सक्करखोरा नै सक्करखोरो तो कोस की अंलाई का कर नी मिल क्याव ।

मि इलै नै तिलो मिल ही क्याव ।

जैसे को तैसा मिल ही जाता है ।

१९२९ सवर्ण पुय की बूख है ।

सभी जगह पुनों का आकर होता है ।

\* बेस्सा उमर बटाव है जोगी उमर बड़ाव ।

- १९३० सगलो पांच लट्टई कोई घाले कोई नटटे ।  
 सारे पांच मे निघा कौ सामयो जुटायो जानी है वही न निघा मिम्पनी  
 है कहीं न नहीं मिम्पनी है ।
- १९३१ सपी कौजे जाब कर पापी पीसे छाब कर ।  
 सम्बन्ध गीब-गमन कर करना चाहिए, पापी छान कर पीना चाहिए ।
- १९३२ सप्यो समरय कौजिये कर-सर आबे जात ।  
 बिबाहाणि द्वारा समय को अपना सम्बन्धी बनाना चाहिए, वह समय  
 समय पर बड़ा उपयगी मिद्ध होता है ।
- १९३३ सत मत लोप्रो मूरमा सत पोपी पत आय ।  
 सत को बापी लिपछमी कोर मिलेगी आय ॥  
 हे मूरमा ! मनु की रखा करो मनु के चम जात से प्रतिष्ठा बली जाती  
 है । सनु न बोधी हुई लरमो फिर बाकर मिल जायगी ।
- १९३४ धरा दिवासी सत के साठों पहर अगम्ब ।  
 मत्त क मिय हुमेगा, दिवासी रहते है वह मांगे पहर जातन्व के लाठ  
 में बिचरय करता है ।
- १९३५ तदा न बुय में बीबना सदा न कासा केस ।  
 हमेशा मसार में जीना नहीं होना और बीबन भी मरा मियर नहीं रहना ।  
 मत्कर्म की ओर प्रेरित करने वाली उक्ति ।
- १९३६ सदा न बरले बावली, सदा न साबन होय ।  
 मदा ही बर्दा नहीं होनी मदा ही साबन नहीं होना अर्थात् बबरन से  
 लाभ उठना चाहिए ।
- १९३७ सदा भवानो दाहणी समुज होय मजद ।  
 पांच देव रिच्छा करे बड़ा बिप्यु महेगा ॥  
 (स्पष्ट है )
- १९३८ सदा ही इकमार दिन कोनी रब ।  
 मदा ही इकमार दिन नहीं छते ।  
 इन कथावन का छात्र रूप है मदा न छई तिम पर तिमनिगिन बहानी  
 नहीं जानी है—  
 एक सेठ या त्रिगरे नाम बहुत धन था । उमरा वह नियम था कि जो भी  
 बस्तु उक्त पहर में बिचन को जाती थी वह अगले दिन जाती तब ठो



ठीक नहीं तो उसे वह खरीद लेता था। एक दिन एक आरामी कामज का एक छोटा-सा टुकड़ा लेकर आया और उसकी कीमत के एक साथ रुपये वाले। कौन सेता ? राम ही नहीं। किन्तु जब वह चीटने लगा तो किसी ने उसे सेठ का नाम और उसका नियम बता दिया। वह आरामी सेठ के पास गया और सेठ ने एक कागज रुपये लेकर वह कामज खरीद लिया और अपनी पगड़ी के पत्ते बाँध लिया। संयोग की बात कि समुद्र में मारी तूफान आया जिससे सेठ का सारा बैड़ा बूब गया और कुछ ही दिनों में वह बिबाकिया हो गया। राज्य का कर का रूपया भी उसमें बाकी रह गया था इसलिए उसकी जेब खाली पड़ा। एक दिन जेल में बैठा हुआ वह अपनी पगड़ी का बल निकाल कर उसे सीधी कर रहा था तभी कामज बाँधी हुई गाँठ उसके हाथ में आ गई। गाँठ खोल कर क्या देखता है कि उस कामज के टुकड़े पर लिखा हुआ है 'सबा न रहे। यह पड़ कर वह अत्यन्त प्रसन्न हुआ और उसके मन में बड़ी हिम्मत आ गई। सारी निराशा दूर हो गई और उसे यह सोच कर जोरों की हँसी आ गई कि अगर बं दिन नहीं रहे तो ये दिन भी सबा नहीं रहेंगे।\* जेल के पहरेदारों ने जाकर राजा की खबर दी कि बमुक्त सेठ जो सबा जवाब रहा करता था आज बहुत कुछ गजर आ रहा है और गुन हँस रहा है। राजा ने सेठ को बुला कर पूछा तो उसने आघोषान्त सारी कथा कह सुनायी और साथ ही वह भी कहा कि न मेरे ये दिन रहे और न ये दिन रहने वाले हैं और न तुम्हारा राज्य ही सबा रहने वाला है। राजा की आज्ञा प्राप्त हो गया और उसने सेठ को सब-मात्र से स्वीकार कर लिया। सेठ के दिन फिर : फिर वह बनवान हो गया और साथ ही उसे आज्ञा की उपजम्बि भी हो गई।

१९३९ सपूत की कमाई में से जो सीर।

सपूत की कमाई में बहुत दूर के सम्बन्धियों का भी हिस्सा रहता है क्योंकि सपूत बाँट कर जाता है।

क० सपूत की सो पीड़ी सीर।

१९४० सपूत तो पाड़ोसी को भी खोजो।

सपूत तो पाड़ोसी का भी अच्छा है।

१९४१ सब कीई मुकई पाबई का सीरी है।

\*If winter comes, can spring be far behind ? (shelly)

सब झुकते पसड़े क मापी है अर्थात् सब घनवान् के मापी है ।

१९४२ सब भाप आपका भाप की आप है ।

मक अपने-अपने भाग्य की पाते है ।

१९४३ सब भाप आपको बाड़यो पाओ योबै ह ।

मक अपने हाथ से निकाला हुआ पानी पाते है अर्थात् सब अपने-अपने परिधम की कमाई पाते है ।

१९४४ सबकी भय्या सांझ ।

सांझ सबकी माता है ।

१९४५ लक्ष्मी रिसमिक्त चाकिये नदी माक संजोग ।\*

लक्ष्म हिल-मिल कर चलना चाहिए । नदी-माक व समय की तरह लोपों का समार में मिलना होता है ।

१९४६ लमनाकहार लुजाय कर मोसर चुळे ग्ही ।

मोसर को महताय , रहे पका दिन राबिया ॥

ममनहार मोका नहीं चुकता । मोके पर किया हुआ एहमान बहुत दिनों तक याद रहना है ।

१९४७ लपटर को के सूई ?

ममुद्र का क्या सूने ?

पि० छकटर सूई तो भी गाईं तीई पाओ रैबै ।

ममुद्र यदि सूने भी जाता है तो भी घटनों तक ही पानी रहना ही है । घनवान् यदि गरीब हो जाता है तो भी सामान्य नियंत्रण की अपेक्षा वह अधिक पनी होता है ।

१९४८ लम दिवाली, पोकर ग्हाम ।

दिवाली और पुकर का म्यान समय पर ही आते है ।

१९४९ लरीर के रोपी को बबा है मन के रोपी को कोपी ।

लरीर के रोपी को बबा की जा सकती है किन्तु मन के रोपी की नहीं ।

पूरा दीहा इन प्रकार है—\*

लुभनी या संभार में भाग भाग का लोम ।

मकम रसमिक्त चाकिये नदी माक संजोग ।

अथवा

लुभनी या संभार में मकम मिलिये भाग ।

जा जाते दिन केर में मारयम मिल गयाय ॥

- २९५० सलाम ताई मियां ने ब्यू बत्ताबो ।  
सलाम के लिए मियां को क्यों दण्ट किया ?
- २९५१ साईं हाव कतरनी, राखैगो जगमान ।  
परमात्मा सभी को कर्मानुसार देता है ।
- २९५२ सांझी गली बर धारणा बलब ।  
एक ठो पकी ही रसम है फिर बँल भी ऐसे मिक मए जो मारने वाले हैं—  
बबीए ऐसी विपत्ति बिघसे बचने का रास्ता मुश्किल ही ।
- २९५३ सांघर जोय पकी को मेवो ।  
देविस्तान बालों के लिए ठो सांघर बीर जोय बीसी बस्तुएँ ही मेवे का काम देती हैं ।
- २९५४ सांघ कई भी नाबड़ी मूठ कई बा लोय ।  
बारी लगी माबड़ी, भीठा लाम्या लोय ॥  
माता का कहना सत्य निबन्धा बस्य लोन मूठ बोल रहे थे किन्तु उस समय  
बागों के शब्द मधुर जान पड़े और माता के शब्द कटु प्रतीत हुए ।
- २९५५ सांघ नै बांघ कोम्या ।  
(स्पष्ट)  
मि० सांघ नै सराय कोगी ।
- २९५६ सांघी कह्यां शाल उठै ।  
सत्य बात कह देने से सुनने वाला शल्ला उठता है ।
- २९५७ सांघ की रांघ झाड़ू लो काटै ।  
नाबड़ी ही सर्प के बिय को दूर करता है ।
- २९५८ सांघ की बीलली को न बडो धर के छोटो ?  
सांघ के बन्ध का क्या बड़ा और क्या छोटा ? बर्बात पुष्ट का क्या बीघा,  
क्या बड़ा । यह हाति पड़वाने वाला होता है ।
- २९५९ सांघ के मांघठियां को के सांघ ?  
पुष्ट किसी का मिहारा नहीं करता ।
- २९६० सांघ को बायोडो बीछ्यां से के डरै ?  
जो बड़े कपटों का सह जुका है वह छोटे कपटों से क्या डर ।
- २९६१ सांघ-बकबूरर हाकी हो रई है ।  
सांघ-बकबूरर की बति हो मई है ।

- १९६२ साँप जलनी मोठ है ।  
साँप जलनी हुई मुरमु है ।
- १९६३ साँप भी घर ज्यादा मोर लाठी भी न दूरे ।  
काम भी हो जाय धीर अपना मुकाम भी न हो ।
- १९६४ साँप सजल डेडी मोडो चाल पक बिल में बड़े कर सीरो हो क्याप ।  
साँप मनी जगह टड़ा-मेड़ा चलता है किन्तु बिल में प्रवेश करते समय सीमा ही जाता है ।  
दुष्ट भावनी पाँच में बिलका भी छल-छिद्र करे किन्तु पर में भाबर ठी नहीं बात बतानी ही चाहिए ।
- १९६५ साँप लक्ष्मीदास सराई देखा इजगर बाबो मबकै ।  
छोटे-मोटे साँप तो सदा ही देखे किन्तु अजगर में साक्षात्कार ठी इस बात ही हुआ ।  
माचारम दुष्ट तो पहले भी देखे हैं परन्तु ऐसे भयंकर दुष्ट से इस बात ही पाला पड़ा है ।
- १९६ साँपों का घ्या में बीजा की सवालप ।  
साँपों के बिबाह में जीमा की हो सवालप होंगी है । जहाँ बछ मिलने की उम्मीद न हो वहाँ इस उक्ति का प्रयोग होता है ।  
मि सारे माग मर या मे जीवना सपनारा ।
- १९६७ साँपों के किता सापर ?  
दुर्जन मनुष्य मित्रों का भी बिहाव नहीं करता ।
- १९६८ साँपों के कर गूगो प्याच ।  
साँपों के कर म गूगो का प्याच करता है ।
- १९६९ साँप कर लप भात ।  
जब कर मीम है जब कर जीने की जागा बनी रहनी है ।
- १९७० साँपों के बयोडी बिबालो ?  
साँपों सांगन बापी जानि है उमके क्या बिबाला ?
- १९७१ साँपों के सराबगी धीमास सुनार ।  
ये सस्ता बाबू बुरा पहले करो बिबाव ॥  
साँपों साह मराबगी धीमास और सनार में पाँच सवार दुरे है । इनके मोच-ममा कर व्यवहार करना चाहिए ।

\*साँपों की बिल में ठी मीदा होकर बड़े ।

- १९७२ सारकी कट्टी भाटा की बई ।  
सब कहला ऐसा क्या मार्गो पत्थर को बे मारी हो अर्थात् सत्य कट्टु सचता है ।
- १९७३ साजा बाजा केस गोड बंवाला बेस ।  
बवालिप्यों के सजे-सजाये केस रहते हैं ।
- १९७४ साडी बुप नाठी ।  
जब मनुष्य साठ वर्ष की अवस्था में पुरुष जाता है, तो उसकी बुद्धि मट्ट हो जाती है ऐसा विश्वास लोग करते हैं ।
- १९७५ सात बार गो त्तिवार ।  
हिन्दुओं के यहाँ ७ बारों में गी त्पीहार मनाये जाते हैं ।
- १९७६ सात मामा को भावनी बूखो रंज्या ।  
सात मामों का भावना बूखा रह जाता है क्योंकि एक मामा सोचता है कि दूसरा मामा खिलायेगा और दूसरा भाभा तीसरे का कर्तव्य समझ केता है ।
- १९७७ सातों गैला मोकला सेरें जग्गे छठें जा ।  
तुम्हारे किए सातों रास्ते जुझे पड़े हैं तुम जहाँ जाना चाहो, वहाँ जाओ ।
- १९७८ साबदा के कसो सुबाब आबब दे मलाई सूबाई ।\*  
एक साबू का बो कित्ती बर से छाछ मींगने क्या । बिलोने वाली स्त्री ने कहा कि छाछ जमी बिलोई नहीं है । तो साबू ने कहा कि मलाई मुक्त बिना बिलोई ही छाछ दे बो हम साबूमीं को स्वार से क्या मतलब ? मि माई अब बिलोयो ही जाबा दे, साबदा के कसा सुबाब ?
- १९७९ साया की पाबली ई जोली ।  
साबूओं की तो चबद्री ही मन्गी ।
- १९८० साबू की पन सीर की ।  
सम्बल का पन समी के हिस्से में जाता है क्योंकि वह बाँट कर खाता है ।
- १९८१ सापुरसा का जीबनां थोड़ा ही मना ।  
जग्ग आबमिपों का जीबन थोड़ा ही होता है ।
- १९८२ सापर पड़ पो तो लूज ।

\*इ साबां के कसा स्वार अबबिलोयो ही सही ।

साँवर सीक में जो पड़ा वहीं नमक हो गया । मरे हुए ऊँ भेड़ बकरी  
बादि उसमें फिर कर पल जाते हैं ।

१८३ सारी दुनी भोगनी हूँ मैं आप आपरें पढ़ें बीतर उपाही हूँ ।

मारु ससार बबबुध बासा हूँ पदों क भीतर मनी मने हूँ ।

१८४ सारी रामायण पढ़ की सीता कृष्ण की भू ?

सारी रामायण पढ़ पप और इन बात का पता न चला कि सीता किसकी  
स्त्री थी ?

वि० सारी रामायण भुष ली पण थी बेरो कोर्ग्या पड़यो के राजन राम  
हो क राजन ।

सारी रामायण मृत ली पर इन बात का पता न चला कि राम राक्षस  
बा या राजन ?

१८५ सालगजी का सालगजी गोकविपु का गोकविपु ।

गालिधामजी का पत्थर दोनो नाम आता हूँ देवता का देवता हूँ और  
गोकिया जी ।

१८६ साली छोड़ सामुझा से ई मसकरी ।

हैमी बगबर बाला मे ही बरनी बाहिए, पूज्या से नही ।

१८७ साल बिना बरा को सालरो ?

गाले बिना बीना समुरान ?

१८८ साबन का भाषा मैं हट्टो ई हट्टो बीस ।

भाषण में जो अन्धा हो जाता हूँ उसे प्रभोक बन्दु हरी-ही-हरी किगलाई  
पड़ती हूँ ।

१८९ साबन का पंचक गाल, नदी बहस्ता नीर ।

यदि साबन के पंचकी में बरा हो जान ती फिर आगे इनती बरा होनी  
कि दरियों का जल बराँरा छोड़ कर बान लगगा ।

१९० साबन की छा बूती मैं कानिक की छा बूती मैं ।

धावण की छाठ स्वास्थ के लिए गराव हूँ इमनिर् मूर्ति के लिए है और  
कानिक की छाठ अन्धी होनी हूँ इमनिर् पूर्ति को देनी बाटिया ।

१९१ साबन छाठ न घालनी भर बीनागो बूध ।

परत दिवानी गूजरी घर में बाँदो बूध ॥

बही स्वादिन जो साबन की अन्धाधरर छाठ तब के लिए भी नहुठनी  
थी पुष के बीमार होने पर बघाण ने महीने में जब गाँवें बूध बच देनी

- २००८ खिर भारी सरबार का, पग भारी मुरबार का ।  
खिर तो सरबार का भारी हुंठा है और पैर खिची के ।
- २००९ तिरि को बाबर ताबई बस पोड़ो ही खोजो ।  
सामेबार के लड़के की धूप में तपाना ही बख्खा है ।
- २०१० तिलारै न तिलारो कोनी देख सखै ।  
पयो की प्रतिस्पर्धा के कारण दर्जी को दर्जी नहीं देख सकता ।  
नि०—Two of a trade seldom go together
- २०११ सिब सिब रटे संकट कटै ।  
जो "सिब सिब" रटता है उसका संकट दूर हो जाता है ।
- ✓ २०१२ सीत को बसन घस रे लाग्या, तूं भी घस, तिरा बरका नै बुझाया ।  
मुफ्त की बस्तु का उपभोग करने में किसी का क्या समता है ?
- २०१३ सीत को मास मसकरा जाय ।  
सेंतमेंव का मास मसकरे उड़ा जाते हैं ।
- २०१४ सीखइस्यां घर ऊजई सीखइस्यां घर होय ।  
बुरी सीख से घर उजड़ जाता है अच्छी सीख से घर बस जाता है ।
- २०१५ सीतला माता । मरी बोड़ो बिये, कहु, में ई पबे पर चहुं हूँ ।  
हे शीतला माता ! मुझे बोड़ा देना । उत्तर, में ही बने की लवारी करती हूँ ।
- ✓ २०१६ सीधी बंगुलियां घी लौग्या नीकल ।  
सीधी बंगुलियों से भी नहीं निकलता । सभी जगह लज्जता से काम नहीं चल सकता कबाई से ही कार्य सिद्ध हुंठा है ।
- २०१७ सीबे पर बो करै ।  
सीबे पर बो मरते हैं ।
- २०१८ सीर की होली कृकन की ही होय है ।  
सामेबारी का काम बख्खा मही हुंठा ।
- २०१९ सीर समारै चाकरी खुसीराबे को काय ।  
सामेबारी मगारै और नौकरी बयनी दख्खा का काम है जो चहे तो करे, मही तो न करे ।
- २०२० सीली हो लपूनी हो, तात पूत की मा हो । कह रंजबे, तैरी अलीत नै नी तो बीती ई है ।  
कितनी भी पुर्बा बाबी माता को एक रजी नै जायीकवि दिया कि तुम छाव

पुत्रों की माता बनो । उमने कहा कि अपने आशीर्वाद को रहने दे । म तो भी पुत्रों की माता पहले से ही हूँ ।

मि० सीली हो, छतूनी हो साठ पूत को मा हो बूढ़ सुहाग्र्य हो बुरा न्हायो पूर्ता फलो ।

यह बहू के लिए आशीर्वादामक उक्ति है सीतमम्पम और पुनबती हो साठ पुत्रों की माँ हो बूढ़ावस्था तक भीभाग्यशालिनी बनो रूप से महामो और पुत्रों से फलो-फूला ।

२०२१ सोता सोना सुपड़ भर मकरा ही बोलत ।

काली कली कुमारजा बिन छोडवा कूकत ॥

सीता सोना और सज्जन और ही बोलत है । काली कली और कुमायी बिन छोड़े ही कूकने लगत है ।

२०२२ सुक्करवारी बाइली, जो लनीकर छाय ।

सहैम कहै हे माइली, बिन बरती नहिं काय ॥

यदि सुक्करार के दिन बाइल छानर दानिबार तक म्या क त्या बन रह तो ब बबरम बरमये ।

१०२३ सुज की तो जायी धानी बुज की मनी न एव ।

मृतपूर्वक मिस तो जायी भी अच्छी बुज की एक भी किम काम को ?

१०२४ सुज सोबे कन्हार की चोर न मदिमा लेय । मरवा चोर न मपिया लेय ।  
कन्हार की स्त्री मुज न सीतो है क्यकि चार उनक मिट्टी के बनैनी की चारी नहीं करता ।

१०२५ सुबदो काम बिनइयो नही थी बुस्यो मूंगा मही ।

थी बिकरा है तो मूंगों में ही इसलिए काम बिगडा नहीं बल्कि सुधरा है ।

१०२६ मुरम को बरबाजो बुध बैत्यो है ?

रबय नर द्वार किमने गेया है ?

१०२७ सुतको लड्डो संलियो, सुतको और सराव ।

लसा बाबू नेड है सोबे मुंह की जाव ॥

ऊपर की कहावत में बहे गये सोबे बरार निहृष्ट बनवाने गये हैं ।

२०२८ सुतरो बैव कुटोड़ ताई ।

रबनुर बैव है और बहू के मामिक रमान में बाट आई है ।

अपना छिन्न छिपाना ही पकता है ।



## राजस्थानी कथावर्तें

- २०२ सुत्या को तो पाडा ही जर्ब ।  
 दो मैसवालों की भर्से एक सार्पियाई । उनमें से एक मैस वाला सोया हुआ  
 पा और उसकी मैस ने एक पाड़ी जनी । दूसरा मनुष्य जो जाप रहा था  
 और जिसकी मैस ने पाडा जना था अपने पाडे को उसकी पाड़ी से चुपके  
 से बदल दिया और इस तरह पाड़ी का मासिक बन गया ।  
 मि० १ सुत्या के पाडा जकने जागता क पाड़ी ।  
 २ ओ जगी घी पाई ओ सोई सो खार्ब ।
- २०३० सूडी छिपकली घसा जिनाबर छाय ।  
 ऊपर से देखने में सीधा और अन्दर से कपटी अधिक नुकसान पहुँचाता  
 है ।
- २०३१ सुनां खेत तुलाजना हिरनां चर चर जाय ।  
 सुनें खेतों को हरिज चर जाते हैं ।
- २०३२ सुनें पांच बानन जासूमो कोम्बा ।  
 बिना सिर परबिलक किये जयर ब्राह्मण मिस्र जाय वी अवशकन समझा  
 जाता है ।
- २०३३ सुन के घर में घूम बर्बाकी ?  
 घूम के घर में कौसी घूम ?
- २०३४ सुरख कुंड जर चारि बलेरी दूबा डीबा भरणी डेरी ।  
 यदि सूर्य के चारों ओर कुंड हो और वैसे ही चन्द्रमा के चारों ओर बलेरी  
 हो तो इतनी जारों की बर्बा होती है कि टीले टूट-टूट कर पानी के बाप  
 कह जाते हैं और सरोवर बल से परिपूर्ण हो जाते हैं ।
- २०३५ सुरदासजी ह्यो मोठ कह और मर गा के ? सुरदासजी ह्यो सांघ जर  
 थी कह सुनावे है और बापां में पटक तो को देना ।  
 सुरदास को किसी ने कहा कि मोठ को ता उसने अच्छी परतु न बेल कर  
 कहा कि क्या दुनिया में और नहीं मने बाभ है ? परतु अब थी और सांघ  
 के लिए कहा गया तो कह दिया कि दूसरे लोगो को क्यों सजाते हो चुप  
 चाप क्यों मही द देते ?
- २०३६ सेर की हाडी में तबा सेर कोनी जठार्ब ।  
 सेर की हाडी में तबा सेर नहीं समाता ।  
 जोछा जब बढ़ता है तो पर्व करने लगता है ।

- १३७ खेर में लबा लर मिस गया ।  
बलवान का बधिक बलवान मिस जाना है ।
- १३८ सेल घमोड़ा तो सहे जो बायोरो लाव ।  
जो बायोरोवारी के बागम उठता है वही मुठ के लिए भी जाता है ।
- १३९ तेह के ही मूँडे बांत हीम तो बिन में ई ना चरे ।  
किमी में हिम्मत ही ती वह छिय कर बाम बना कर ?
- १४० सै भूजा उठे ह, भूजा तोरे कोण्या ।  
प्रावकाम नब भूजे उठत है किन्तु रात्र को भूत मावे नहीं ।  
भयवान् सबका देता है ।
- १४१ लोह लो कार्ध बून को भी बुरी ।  
नाग ता कश्चे बून की भी बुरी हाती है ।
- १४२ लोक में लोक कोनी सहारे ।  
मोठ को सीठ अच्छो नही लगती ।
- १४३ लो मरण्या मर एक निरवा ।  
मो बार कहने का भयेना मित्तन वा महम्ब मधिक है ।
- १४४ लोहू रैल पय बमारो ।  
मनुष्य का भयनी भाव के अनुसार ही व्यव करना चाहिए ।
- १४५ लो बिन चोर का एक दिन सहकार को ।  
चोर चाटी करता है किन्तु बानी का पकड़ा बागा है ।
- २०४६ लो पीनो भर एक पीना ।  
एक लम्बयो मय गी यजिनया व बराबर ज्ञाना है ।  
बि० राई लो बानी बेंडो लो प्राति ।
- २०४७ लो बट्टो में एक माह हांसी ही भय बाब ।  
भी भयना में एक माहवाला ही भय पहमाता है ।
- २०४८ लोनी की बटो सहेपी लख ।  
बाबिया की बटो म्हुयो करत ।  
मुनार की लड़की मुनार हान हुए भी मस्ती है बलिय की लड़की कुम्भ  
हाते हुए भी मस्ती है ।
- २०४९ लोनी पयो करव के लाव ।  
गोना लो रात्रा बर्ष के लाव ही बना मना अपान् बर बय रीम मान व  
बानी मही रहे ।

बिसेव गुनी की मृत्यु होने पर उस मुन के अभाव के स्मरण में प्रमुक्त  
उचित ।

- २०५० लोमि के बाद लौम्पा लार ।  
सज्जन के कसक नहीं लपटा ।
- २०५१ लोमि के बाल में लोमि की मेक ।  
जहाँ अमुरुपता अथवा औचित्य का अभाव हो वहाँ उसका प्रयोग होना  
है ।
- २०५२ लोमां शुक्रं सुरगुरी जे बन्वा ऊपल ।  
ईक कहे हे लङ्केशी जल बल एक करल ॥  
सोमवार, शुक्रवार और बृहस्पतिवार को यदि बन्ना उदय हो तो बड़े  
जोर की बर्षा होती है ।
- २०५३ लो में सूर लहत में लोमिं सवते लोमो ऐंजातामू ।  
ऐंजातामू करी पुकार, कंजा ल रहियो हुंतिवार ॥  
सूरदास १०० से बृष होवा है काना हमार से और ऐंजाताना तो सबसे  
बृष होवा है । किन्तु ऐंजाताना ने कहा "कंजे से होधिपार रहना चाहिए ।
- २०५४ लोरठियो इहो भलो भल मरकम री बात ।  
लोबध छाई बल भली तारो छाई रात ।  
लोरठिया बोहा अच्छा होता है मरकम की बर्षा अच्छी है । मुबली स्त्री  
और तारो छाई रात सुन्दर बनती है ।
- २०५५ लोरे अंट पर लो बई ।  
लोमे अंट पर बा बइते है अर्वात् लोमे-लारे को लनी संय करते है ।  
नि० लोमे बर हो लर ।
- २०५६ लोला लाल लो लोमो ग्हायी, लोली से लुलुमायी ।  
लोलह बर्षो से मावा लहाया और बार्शो को लोली से लुलुमाया । पूरुह  
के सम्बन्ध में उचित ।
- २०५७ लो लुमार की एक लहार की ।  
लुमार की लो लोट और लहार की एक लोट बराबर है । निर्वक्र के लो  
प्रहार और सबल का एक प्रहार बराबर है ।
- २०५८ लो हावी लो कलहना पूत निपूती होय ।  
मेवा लो बरपत भजा होपी लो लोय ॥

आवधिक बर्षों में जाहे नौ हाथी और ऊँट बह जायें पुत्रवती स्त्री पुत्र रहित हो जाय फिर भी बर्षों का होना महा मध्या है ।

२०५९. स्यामा समझवान को तो लपट्टी बातों मोठ है ।

जो स्यामा और समझवार हैं उनकी ठा समी तरह मोठ है क्योंकि सब प्रकार की विमताएँ उसे घेरे रहती हैं ।

२०६०. स्याम का मर्या में दिन कब उर्ये ?

बिजली लायकाल मृत्यु हो जाती है उसके लिए सारी रात बिजलीने बीगती है ।

२०६१. स्वामीजी तिलक तो बोला कदवा बच्चाजी लूबयो डीक पड़ती ।

कितो ने कहा "स्वामीजी ! तिलक ठा बच्चे निय ' उलर मिमा " सूख जाने पर पठा बसेया । "

२०६२. स्यामी तो भोपी को भर ऊँचाहा बीगी को ।

भोपी तो बाढ़े की ऋतुमें बानस्य मनागा है और भोगी गर्मी में मृग पाठा है ।

ह

२०६३. हूँक भावकें गर गया काम हुआ परमाण ।

बाबो विम पर आपनं तिय कितो अजवान ?

सिंह के जब हूँक मंत्री या तब ठा बाह्यण को कुछ विमला रहना या विन्नु ज्योही कीबा प्रपाण हा गया उमन कहा " हे बाह्यण ' अपने पर जात्रो सिंह भी कमी विमी का मजवान हुमा ह ? बर्षान् विमी राजा के पहा जब कोई बच्चा मंत्री होता है तब ठा बह बान भादि हागा दूसरा को मलाई करता रहता है । बुरे मन्त्रा ने विमी का बच प्राणि तथा हानी ।

२०६४. इतली तो पड़ास्यु पर घर को पची बस में कोम्पा ।

इमली तो पड़ासु विन्नु पति बध में नहीं है ।

२०६५. हकीमजी ! म तो मर्या, तो बह ऊँटे बुक बीरपो ह ।

विमी ने कहा—'हकीमजी ! मैं तो मरा । उलर मिमा— ठा पहा की बीस रहा ह ?

२०६६. हाउ हाउ हंतें कुम्हार की मालम का बूटें बूट ।

तू के हातें बाबली, कबड बंठें ऊँट ?

एक ऊँट के बोरे में एक कप ठा मिट्टी व बउन पे और दूसरी कप हरे भरे बीपे । ऊँट ने बीपों को गाना शुरू किया एक पर कुम्हार को लड़की होने लगी । एक पर मालिन की लड़की ने कहा ' कभी क्या हूँबडो हो ? देखना यह है कि ऊँट किस बरपट बैठता है ? " कहा जाता है कि

झेंट जब बैठा ता घरती पर लोटने लगा जिससे कुम्हार की लड़की क बर्तन फूट गये । इसीलिए अंग्रेजी की एक कहावत में कहा गया है—  
He laughs best who laughs last.

- १०६७ हुबेली में सिरस्यू लोनी उर्य ।  
हुबेली में मारसा नहीं उगती ।
- १०६८ हुस्से घोड़ी हाल पयो ।  
सामान कम आइम्बर बहुत ।
- १०६९ हर बड़ा क हरिषा बड़ा सपुवा बड़ा क प्याम ।  
मरवान एब ने हाँस दे, लसी कर मनवान ।  
हरिष का बाँया आना बपसकुन समसा जाता है । हरिषों की बाँयी ओर देख कर एब होकने में अर्जुन की हिसकिचाहूँ होमे लगी । इस पर किसी ने कहा जब भगवान् अनुकूल हों तब सकन का क्या बेचना है ? हरि बड़े या हरिष बड़े ? शकन बड़े या श्याम ? अर्थात् हरि और श्याम ही बड़े हैं हरिष और सकन नहीं ।
- १०७० हर हर गंवा पौरावरी किरीक सरवा मर किरीक जोरावरी ।  
कुछ तो मझा से भयबइ भजन करता है और कुछ शीत क कारण दिवस होकर ।
- १०७१ हरी खेती प्यामव घोबू पार पड़े बर खाँधिये ।  
खेती बर्पा पर निर्भर रहती है । न जाने बर्पा ही या न हो । गाय भँस खाँध के गधियाँ होने से ही भाप के लिए बूब की खासा नहीं बाँधी जा सकती । न जान कम तु धार्ये ।
- १०७२ हूयो देख कर परं सुली देख कर विरकं ।  
अच्छा लागे जाहवा है बरे को देख कर ही लीकता है ।
- १०७३ हुंसा समय न छाड़िये धै बल भारी होव ।  
आमर आबर जोसतई, मली न कहती कोव ॥  
बुरे स्वाम में रहने की अपेक्षा अच्छे स्वाम में आरामस्थान पूर्वक रहना कहीं अधिक श्रेष्ठ है ।
- १०७४ हुलई पर बल आवे ।  
परीश की कड़ी बवाने समय है ।
- १०७५ हुलवी खरवी ना तरे खटरत तरे न जान ।

शीलवन्त गुण का तर्ज भीयुम तर्ज न यत्नाम ॥

( स्पष्ट है )

- १०७६ हलदी में रंभोड़ी चारद, माँव पीताम्बर ।  
हन्दी में रंभी हुई चदर न रती है और माम है पीताम्बर ।
- १०७७ हवा हवा को मोल है ।  
ममय-ममय का मोल है ।
- १०७८ होती में जाती हो ज्यार ।  
हूँची-हूँची में जाती हो जाती है । हूँची-हूँची में मझाई हो माया करती है ।
- १०७९ हाथ को मात भर बैकुण्ठ को बाल ।  
जो शान बंठा है वह बैकुण्ठ में जाता है ।
- १०८० हाथ तेरे पाँव तेरे भिन्न की-सी देह ।  
मे तर्ज बूझूँ बाबरा घर बनुँ ना कर केह ?  
हे बन्दर ! तुम्हारे यत्पुत्र की सी देह और मैंसे हो हाथ-पाँव है । म तुम  
पूछता हूँ कि तुम भर क्यों नहीं कर लने ?
- १०८१ हाथ न हाथ काप ।  
माई के लिए भाई मातक सिद्ध होता है ।
- १०८२ हाथ पोतो तो जमत पोतो ।  
शान से सब बन में हो जाते हैं ।
- १०८३ हाथ लियो काँसो माँपन को के लभो ?  
हाथ में जब काँसा का बजन न लिया तब माँपने में क्या फल ?
- १०८४ हाथो लबाबे पगा बुझाबे ।  
हाथों से धाम सयाता है और पैरा से बुझाता है ।
- १०८५ हाथियाँ की कमाई पाता कीड़की की कर लाई ।  
जो ऊँचे पद पर काम करके जीविकोपाजन करता है वह नीच पद पर  
काम नहीं करता ।
- १०८६ हाथियाँ की यत्त घना ही मंडकड़ा धूरवा करे हे ।  
हाथियाँ के पीछे पाही बहुत न कल मीचने रह्य है ।
- १०८७ हाथी जाक की बानी कौमी बंभे ।  
हाथी जाक की बानी नहीं बंभता मर्दान् बड़ा भारमी छोने पद पर गीना  
नहीं देता ।
- ८८ हाथी का लाभा का बंभ और होय है भर विनायक का बंभ और ।

हाथी के खाने के बाँट और होते हैं तथा बिखाने के और।

- ८९ हाथी से खोज में सबका खोज समारंभ ।  
हाथी के पद-चिह्न में सबके पद-चिह्न समा जाते हैं ।  
मि० सर्वे पदा हस्तिपदे निमग्ना ।
- ९० हाथी को पुर जाकल है ।  
हाथी का पुर अंकुश है ।
- ९१ हाथी ने हर्बा कृम कहे ?  
समर्थ को बोध कौन दे ?
- ९२ हाथी मरे तो भी नी लाल को ।  
हाथी मरता है तो भी बहुमुख्य होता है ।
- ९३ हाथी हजार को, म्हावत कीड़ी प्यार को ।  
( स्पष्ट )
- ९४ हाथी हाथ ऊँठ बोड़ा और से चिन्ताम पीड़ा ।  
हाथी हाथ ऊँठ पीड़ा जादि के बिना खीचना न जावे तो और बिना फालतू है ।
- ९५ हाथी कुमारी हुनू खेले ।  
हाथ कुमारी कुमारी बसता है ।
- ९६ हाथीकी ऊँठ बरमसाका कानी देखे ।  
बका कुमारी ऊँठ भर्मसाका की और देखता है ।
- ९७ हाथ तो बाबल काया ही है ।  
जमी तो बाबल कल्पे ही है अर्थात् अभी कुछ नहीं बिगड़ा है ।
- ९८ हिम्बरां से छोटा से ई मुसकल ।  
हिम्बरां के महा जो छोटा होता है उसी को मुसकल होती है क्योंकि छोटे-मोटे सब काम उसे ही करने पड़ते हैं ।
- ९९ हिम्बू कहती सरबाई लड़ती कोम्बा सरमारंभ ।  
बिस्ती से काम सने में हिम्बू पहिले मजदूरी जादि के सम्बन्ध में तय नहीं करता बाद में जमना करता है ।
- १०० हिम्मत कीमत होय बिन हिम्मत कीमत नहीं ।  
( स्पष्ट है )
- १०१ हिये की आँधी कठड़ी की पुरी ।  
हृदय का जम्हा पाँठ या पुरी ।

- २१०२ हिरनों के तीनों की पादकों में क्या लुहात ?  
हिरनों के तीनों गीदकों को क्या अच्छे लगते हैं ?
- २१०३ हीमड़ों की कमाई मूछ मूछाई में ।  
हीमड़ों की कमाई मूछ मूछाने में जाती है ।
- २१०४ हीमड़ा भी कबे कटार लुटी है ?  
कबा कमी मपुंसकों ने भी बिजय पायी है मर्दान् नहीं ।
- २१०५ हीरों की परत बोरी ही कार्म ।  
हीरों की परत ओहरी ही करता है ।
- २१०६ हूषी में निमस्कार है ।  
भबितम्पता को ममस्कार है ।
- २१०७ हेत कबट बिबहार, रहे न छानो राजिया ।  
प्रीति और कपट का व्यवहार छिपाये नहीं छिपता ।
- २१०८ होत की भाव ममहोत को भाई ।  
यदि किमी के पास मन होता है तब तो वह किमी को बहिन बनाता है  
यदि स्त्री के पास मन नहीं होता तो वह दूमरे को अपना भाई बनाती है ।
- २१०९ होनी हो सो होब ।  
जो भबितम्पता है वह होकर रखी है ।





परिशिष्ट—१  
सिरोही की कहायतें



## परिशिष्ट १

### सिरोही की कहावतें

[ मैंने कई लाख से लाख रत्ना का कि जादू-मिराही प्रजन म और उनक  
-यात जो साक साहित्य कपी बन बिभय पना है उस में बगलें में  
अस्य प्रकृतिमां के कारण बह बाप में नही कए पाया हूँ बबबिन् बबबिन्  
त करला रहता हूँ। मैं अपने एक भाई की अपममान पायाक क मागपन  
येही में प्रकटित कहावतें एकत्रित करवाई थी। उनम म बहक में चुन कर  
में देन करला हूँ। जहाँ-जहाँ प्रा० नरालमशाम स्वामी और प० मुरलीधर  
म द्वारा तपाहित 'राजस्थानी कहावतों म कहावत ली ब' है उन्ह काण्ड  
में दिवा गया है।

—श्री गोकुल माह मस्ट }

- (१) जावबियां पुड़ी जादू ली म सदाकां पुडो में ली।  
मूर्यात हा जाने के बाद हर नहीं धोर कए जान क भाग मय नहीं।  
(मूडीयां बाठ बाईं डर ?)
- (२) एक सुतकी तैरें जांवा जाय।  
एक हुंही को तेरह बीजा की जमान गहना हूँ पान रमां म कई बीजें  
बाहिय।
- (३) जादुरो सा (छा) का में प्रबुरा जाया।  
जादू की छावा म लीम लहर हूँ।
- (४) आज बारो बारो ता काले बारो अजो।  
(आज हवां तो काल लयां)
- (५) जावा उपर अजो लो म रांड उपर अजी ली।  
जाताम वा कोई अजम नहीं और कया वा कां पति महु।
- (६) अबुअ उबादेन् मर म मूरत गायन मर।  
मुह बार हा डो कए मरना हूँ और मने ला गारण मरना हूँ।
- (७) आरमोअ बं लादू आबडीवेद भाब।  
पुनर वा भोजन करना और स्त्री वा म्यान करना मयम दाना कानी  
में समान लगना हूँ।
- (८) अकलवाक में उना बीबा, बांड बांटी म बोडा बीबो।

कमाई करे नहीं परन्तु भोजन ताजा चाहिए, काम करे नहीं परन्तु स्वादिष्ट भोजन चाहिए ।

- (९) अंगुली लीडने बाहू पकड़े - १  
(अंगुली पकड़तां पूंखो पकड़े)
- (१०) आर्दु आवेन् पुटे पड़ीया हो ।  
अदरम साकर पीछे पड़े हा ।
- (११) ईश्वर बड़े पादरो तो बेरी बहू अरिखो ।  
ईश्वर को कृपा होवे तो धनु अन्धा बनता है ।  
(राजमहार जवा भुज ध्यार तो क्या बिबड़ भुज हो के बिपाड़े ?)  
वि० आके रजवाल घोपाल पनी ताको बलमर कहा डर रे)
- (१२) बचाप करतां महकाय हानो ।  
Prevention is better than cure
- (१३) उकरड़ा मायबी रतन पाळु ।  
कचरे में से रत्न पैदा हुआ ।
- (१४) उबलतु अतर्ब दुर नी न बोळु तजर्ब होनु नी ।  
(बोळो बोळो सो भुज को हुईनी,  
पीलो पीलो सगलो सोनी का हुई नी)
- (१५) ऊंड जसा न पुछ डूका ।  
ऊंड ऊंडे नीर वूछ डूके ।  
(ऊंड लोको ने पूछ डोटी)
- (१६) ऊह हुवं मोकर नी ।  
ऊह का उपाय नहीं मकार कर देने के बाद कुछ बचती नहीं ।
- (१७) ऊदु कुजो ता बणु हे ने माण कुजो ता काइए नी ।  
ताह में देखा तो बहुत है ऊपर से देखो तो कुछ नहीं ।
- (१८) ऊंडरे बावलीयो हपी ।  
ऊ का रिस्ता बचल त ।
- (१९) डंग नी बाये उकरलो ने मुक नी बाये मुहुं ।  
कचरे के ढर पर भी नीर बाली है नीर बूल में ईसा भी जाने को मिले ।  
(मूक बीटी क तापती ?)  
मूल में बरतु के स्वाद का ध्यान नहीं रह्या ।



- (४१) कारी करते पच हाथो नी करते । ।
- (४२) छोटा इधियारी करो (जिबुं) वासो भाबे ।
- (४३) जोडा मेरबात तो गवा वेलबात ।
- (४४) खाली ठकराई न करारकोम सोनां भाप कुंभारा ने बेली भांवां ।
- (४५) गदेकान् गवान नी न बातारमान म्यान नी । ।
- (४६) गरब हुरो मारी तो पागड़ी सेऊं जारी ।
- (४७) पाल घालोईओ जतरे गलोमुं बेई ।  
 (पुङ्ग घालतो जितो हो भीठो हुतो  
 जिनो पुङ्ग बालतो जितो ही भीठो हुसी)
- (४८) गोरबाक न पाइ बलीधुं जटे बलीधुं ।
- (४९) पाराम भाटो नांकोइओ तो लोटा तो ऊडी ।
- (५०) बोन बाब बाको साब का खनी ।
- (५१) परबी गदेकान् भाप कधी पड़े  
 (परजरां नारबा पथेन बाब खेबो)
- (५२) मोलेली नर तो डोलेली नी मारबो ।  
 डील से मठलब हूं मिट्टी के डेले स । भादलं हूं पत्पर प्रहार स ।  
 (पुङ्ग दिमां मर जके ने अहर वमु देबो)
- (५३) घरला जोगी जोपदा न बांन घरला संत  
 (घर का बीली जोपिदा बाप गांव का सिब  
 पर को मुरयो बाक बरखर । )
- (५४) बासीबा घोड़ा न बेटीया साकोर ।  
 जिन बोड़ों को लिफं बास दिने और जिन नीकरो को लिफं पेठिया  
 मिले ने कैंमे काम करवे ?
- (५५) बरलां तो घरबो सांयो न परतन जाटा बाली ।  
 ( बररा छोरा पंकी बाटे जोलबी न भाटी; बहली घर ने बडे  
 मतीत ने )
- (५६) पोर पों ने डीडा रिमा ।  
 लखहर ही गया ।
- (५७) घना पा ने जोड़ा रिमा ।  
 बहुत नई, बीड़ी रही ।
- (५८) पी पील ने भाटी, बीजी बात बाटी ।

- (५९) पशु घाली बचेरा प्राममा ।  
 (६०) पोमेरे पापी पीपलो बले ।  
 ( ५५माइ र पापसू पीपलो बले । गृहिर क बोव से पीपल कालाई )  
 (६१) घटेरो घाट ने पेडीमरो पाट ।  
 (६२) बरस पाव ने गेलो हुानी पाबु ।  
 (६३) धी गोल एक बेई ने साव पडिपु रई ।  
 (६४) घटे भाबे रलो जरी बात परी मेतो ।  
 (६५) पररा बलीया बन में या तो बन में लागी भाग ।  
 (६६) जडे बुर सेवा जाई बटे भीह (मल) घर ।  
 (६७) जलो भीमारा न लको तीमारा ।  
 (६८) जाय बोरु ली घोर विपे मोक्ष ।  
 (६९) जगारा र एक न होजगारा र हो ।  
 बोरी करने जाने काटे वा राम्ना एक होना ह केजिन मोहन बाव  
 को मो राम्ने देवन पन्न ई ।  
 (७०) जपन होपना भावन ने बोव पाइ जांग ।  
 (७१) बर बनोन ने जीरु एकजीपारी छोर ।  
 (बमी बोरु जर राइरा घर)  
 (७२) जपार पाइ बेइपों बनेरा गोन पाइपों ।  
 (७३) जो भाव बरहाइ ता पावे बरहाइ ।  
 (७४) जीवना कोई जामे मो न जमा पुडो पडापड ।  
 (७५) जुदा घोर जमेरा जदा बरगो ।  
 (७६) जम में कदा दम ।  
 (७७) ठाड जाय बए न भावन जाय नए ।  
 (७८) छप डगारा प्राममा न बरगिण बे बार बार जगल मीबड न तेर  
 हानड बी ।  
 (७९) डांशनीय डाइपों ।  
 (८०) डापोरा धारोरा पापो बटा भी बने ।  
 (८१) डना माइबानी डोकना ।  
 (८२) डडबाइ पडनड जडबानी घरा मो बीरा ।  
 (८३) डडीरा देवन नांशरो पुखा ।  
 (८४) नवा डरनी नेरी न जग डरनी धरी ।



- (८५) तुड़ीमरी बड़ी नी ।  
( बुँटी में बूँटी कोनी )
- (८६) भेकड़ तीखो माई ।
- (८७) बाकी खरी पाकी ।
- (८८) थोड़ना थोड़ु न थोबला थोळु ।
- (८९) बीबे बैबीलां नी नीरतां ।
- (९०) बगो कर्नारोई हुपो नी ।  
( बग्या न कस्तका खगा )
- (९१) बैरा सोड़बो पन बेत नी सोड़बी ।
- (९२) बैस बेबी बेत ।  
( बैस जित्तो भंस )
- (९३) बोटारो बाब पांजली ।  
बरठ बलाने में काम न दिया हो तो ज्यादा काम बेत में पानी  
ध जाने का करना होया ।
- (९४) बूबेरो बलीयो लाई पूके न पीळ ।  
( बूबरो बसयोको छाछ न पूक दे दे र पीबे )  
हिन्दी-जैस बाघ्यो बूब के पीबत छाछहि पूक ।
- (९५) बूबे न रांरो ले पीळ ध बीयो ।  
बूब में गज्जामो और नी के ताब बीयो—बासीबाशारमक ।  
( बूयां ग्वाबी पूतां कली )
- (९६) बरमोएर बटो बाड़ न कसाईएरे घरी कुलत ।
- (९७) बरमो भाइवुं पाड़ी बाद ।
- (९८) बरम री गाइबे रे बत का गबवा ?  
बामोबी एरा कदे बत गबवा हि ?  
( बरमरो पापरा बत डाड काई देखवा  
बरमरी पापरा बत न देखवा कम डाड )
- (९९) पके बरार नी न पुटे उलात नी ।  
किनी प्रकार की मिम्मवाटी मही ।
- १००) बाए बीनी कौल याबे ।
- १०१) बाबतिका न कुहाड़ा बुटाहि ।
- १०२) बबीयां हुपां बीनु—बरार हुनां ।

- (१०३) चाँदिया बूट नी पीरें न अणपाँदिया बूतर ।  
(मान मनाया लीर न चाया अंग पातल बाटण माया)
- (१०४) नबरो बेटो नकोर चाते ।  
(ताली बेटा उतपात मूर्ति) ।
- (१०५) नबरो नाई पाटला माँसे (मुँहे) ।  
(निकम्पो नाई पाटला (पाडा मुँहे)
- (१०६) नकटा गामन नकटा बत्ते, पाडकां जाएन नकड्ड हनी ।
- (१०७) नाम बबरो नास ।
- (१०८) नी बालबां नें नब पुब ।  
(नहि बोधये में नब पुब)
- (१०९) नाई नाई केत कतरा ? के पारा बुडा र बापें ।  
(नाई नाई केत कित्ता ? के अजमान आय माब हे—मुँद मात)
- (११०) नामी मोटी करता कभारा रिया ।
- (१११) नामो खोर मारियो आय न नामो बेवारी कभाये वाय ।
- (११२) नबी बात नाथ बाडा नें ताँदियो ताँची पी लेरें बाडा ।  
(मुँई बात नब दिन मुँई नब दिन पुरानी दल दिन  
मुँई बात नी दिन कधी ताँची दम दिन)
- (११३) नवीणुं जलो प्रभु न दमीयं ।
- (११४) नामो नाय का नें मोमीबे का ?  
नामी (नायेले) काई बीबे काई निबीबे  
नायेले लाब अँ काई बल ?
- (११५) नटे अणेएँ बटे ।
- (११६) नी माँपानी काँपो नामो ।  
(नहि नामिसू काँपो नामो खोली)
- (११७) नीनका रेवा नबो मोटा रेवा ।
- (११८) नकामो र नकीया । करे काम ? करो फिर, उबलूँ कामो ने धरं  
बाँ  
निकम्पो का बजा करेगा काम ? का पत्र अरबा देना है पाई की ।  
दोरी लोभूँ और वही फिर अर्थ यानी निकम्मा ही काम बन् ।
- (११९) पाँपोबे बेना काम (बाणी आरी काम बाँबे बाणी आरी काम  
बहनी बाँबे बाणी बहनी काम बाँबे)

- ( १२ ) पंक्ति बाँडे प्रायचा बीजे बाँडे प्रीत प्रीतो बाँडो रई बको प्रदेहे  
सडी  
(पावको प्यारो पथ एक हो-सिन ) १०
- ( १२१ )
- ( १२२ ) पेटरो बलीमे याम बाले
- ( १२३ ) पथ पालबो के अय पालबो ?
- ( १२४ ) (हाल तो पायली में पाव हल्लो पीली-गमीनी, हाल  
तो सेर में रूच ही को क्ती-ज्बोली सेर में पूची ही को क्तीनी) ।
- ( १२५ ) पेटेम् पडीम् पुन करी
- ( १२६ ) पानी पीयेम् बाँर नी पुताता ।  
(पानी पी'र बात नहीं बुलानी )
- ( १२७ ) पुतर राँ लक्ष्य पारनामस्ती ने बुरे लक्ष्य बारनामस्ती (पुतरा  
अ पालथ में पिछानीजी पुतरा लक्ष्य पालथे बहुरा लक्ष्य बारनी;  
बहुरा लक्ष्य बारनेम् औलखीर्न )
- ( १२८ ) पारके घरे पेला ने घरे हाँकडा
- ( १२९ ) पोयको पडियो पूक सिन उठी ।  
(पोयो पड्यो बको रंत से'र उठली)
- ( १३० ) बाबलीयो रोपेम् अँबलीरो भाषा नी राकबी ।
- ( १३१ ) बाप सेरारो हाप ।
- ( १३२ ) बीता ओ बाबली बाबी गीगाजीराँ पीत ।
- ( १३३ ) बाबी बोडो जये न बाबे अतबं जये ।
- ( १३४ ) बारोबाबं बारे बाबे जाय ।
- ( १३५ ) बोल्ं बाँमभेती सील्ं ।
- ( १३६ ) बोधी जनेराँ बोर बोताय रेइ ।  
(बोलेँ जकीरा बोर किनेँ बोलेँ जकीरा भुँभड। ही निक ज्याय ।
- ( १३७ ) बुद्धि माये बोल पाँचो नरे ।  
(इसके बिपरोत—बल जाये बुद्धि बापडी)
- ( १३८ ) बोरेबं बोर बीत हुवी ।
- ( १३९ ) बज्जोव बिपामे नी ने परडी बेइ नी ।
- ( १४० ) मी जावरबो याव नरे लं क्तेम् नरे ।
- ( १४१ ) भर्नामनिर्नु ने भीरामनिर्नु ।

- (१४२) भरिये पाछे हूपडाई कतक धार ।  
 (१४३) धान सोइबु प हान नी सोइबो ।  
 (मान छोइ बेया ताब नहीं छोइया)  
 (१४४) भला भाइरी घात में गूबर देलाबो ।  
 (१४५) भांग भांग भबोवा न पाबो भायें घो । दान नीने बुनिया में पीला  
 हो तां पी ॥  
 (१४६) घूह नी जयें घूह भाल में उंग नी भाय उबरबु ।  
 (बैयो कहावत १९)  
 (१४७) भावनीतुं न बदे कायुं रोनीती न बोरीया मनीया ।  
 (भावनी र बीह कह्यो)  
 (१४८) भीए जागल भापवत । (भैत भाये भायोल)  
 (१४९) भीते या नीते ।  
 (१५०) बरोयो मोष में टलियो रोग ।  
 (१५१) भविता पय मां बेबजी जनी ।  
 (१५२) भनम् परबे में भनम् राई ।  
 (भनरा लाडू लार्बे)  
 (१५३) भुमा नी में घूत हुमा ।  
 (१५४) भरल मालबो लीबी हे के ?  
 (१५५) भुजा बाइरी जाल कसोला जगरी ।  
 (१५६) भनक जेबं पात न पार बेबी हानी ।  
 (१५७) भाईनुं पाजां लाई न हुजालीपरा होग करी ।  
 (१५८) भेला लेतुं तां भाये बतुं ।  
 (१५९) भूं बाई ईट में बूनाके भागै । परावना परे जाई करी बूने बू एर ।  
 (१६०) भनहारि मालो नी में उबरार उताली नी ।  
 (१६१) भांटी भुजा में मसा हुजा; बनी भुजा में परा हुमा ।  
 (१६२) कतापी पां मइहां पाला भाबी के ?  
 (कतापी मयोडा बइदा भायें ही पाछा भाया हा ? कतापी मयोडा  
 लावडा घरे ही पाछा भाया हा ?)  
 (१६३) मरह मूलापी में बमर बुलापी ।  
 (१६४) भाजे मनीं मीनाम नी बेनां ।  
 (१६५) रोकड़े राजबी राजी ।

- (१६५) राजा बाबा ने बाहरा तीरे जात कजात ।  
 (१६६) रिपे तां भापती ने जाय तां हुवा बापती ।  
 (रबै तो आपतू नहीं तो जाय तथा बाप तू)  
 (१६७) राइरा भाव राते बीता ।  
 (रायां रां भाव रातै पया)  
 (१६८) काकडू पोतू ने मनच बोतू ।  
 (१६९) काकारां कुवडां न बोरा रो इरातू ।  
 (१७०) मातू तां तीर नी तां घोतू ।  
 (१७१) काक बाबा देवा पम हाक नी बाबा देवी ।  
 (काक जाय साक ना जाय)  
 (१७२) जाये जने रे पीड़ ।  
 (जापे ककरे डुलै)  
 (१७३) बगर भीकदे बराव गी ।  
 (१७४) बेहोवां बोडांतू दिवां सांभ ।  
 (१७५) बेडीका बाव करे बावती कापडी बेई बरी परी उडी ।  
 (१७६) बीका बाणी ने कसे बाणी ।  
 (१७७) बकांनइवी बीसडी बति बलये ।  
 (बनो सराही बीबडी बांठां तू बिप ज्पाय)  
 (१७८) बेबाटी जातू बीतू ने बेबारी भीडतू वेरतू ।  
 (१७९) बासीतू बापरा सेन जांय ।  
 (१८०) बरेन बररी ना बकाने ।  
 (१८१) बाबतू पावतू सवरे भाबी ।  
 (१८२) बातनारी बं बनडे ने कातनारी बं हररे ।  
 (१८३) हाती हातां तका ने कुतरां भातां तकां ।  
 (१८४) हारीयो डेड पूजीरा इपला करे ।  
 (१८५) हारीयो नांटी पाइडी अरे पाडे हुतोपुरो ।  
 (१८६) जस्तांटी बांयली हरकी बीडीय ही ?  
 (१८७) हागांर बालीया कोपला ई हाबा ।  
 (१८८) हाडांरे नाले साकोर केडी ?  
 (१८९) हूँवे एकी ह्रीडी ।  
 (ह्रिवैटी बात ह्रीठां जायां तरै; कोडेरी बात होडे जाया रैब; जोडे

सोई होउ)

- (१९०) हात मेला पोलो तां कांय करे पोलो ।  
(हाय पोलो जगत पोलो)
- (१९१) हिमत कर बनेरी विमत बंध ।  
— (हिम्मत विम्मत होय)
- (१९२) साई सवरा हरी घो, जेतरी हरी मे होगळ हांमे हरी ।
- (१९३) सोर दुडानीये बोझ ।
- (१९४) सोरुटी घामान घो हे मे अँट पाषीमे गा हि ।
- (१९५) नुरमानी लम्पु सैई ।
- (१९६) सीतरारो हाय ।
- (१९७) मुलबं मूल समोय ।
- (१९८) लडनुं साजे न उतरनुं राके ।
- (१९९) हेडरारी हुमारोमेनुं डोळियो घलीओ ।
- (२००) हाडकारो हेई मे सोरेरान मांया ।
- (२०१) दोलां बरारी हारे मां जाय न बारे बरारीमेन हीक रिपे ।
- (२०२) हाते (हाय) होईमे नी जोजतो ।
- (२०३) हवाइये हाऊरोटा बाँडा तां कबीकन बुंवेरा ।  
(मो दिन तानूरा एक दिन बहूरो)
- (२०४) हाडे मारोतरे न काट लयड लाज मो भावतो ।
- (२०५) हाय हेदरान् जातां सोवी बई ।
- (२०६) हाडोमी उडबारी बंध में डालकी भागवारी बंध ।
- (२०७) हाय मर नी न लाकडो घागे नी ।  
(साय मरं न लाडो हूई)
- (२०८) हाडमेरी बुह नीलडो रवि न घगो जावे जरो घावडो मांडे ।
- (२०९) हाराई या हवेकणे मे मे रोवा जरे पय ।
- (२१०) हारारी हुलो हाई वण बोदरी बालको सराब ।
- (२११) होदोटां बारीयां वायो जुडां नी बेंतां ।
- (२१२) असप्य
- (२१३) नीबडी तूटे पर बमडा नी तूटे ।
- (२१४) नीमेन नीवणुं कीवुं ।
- (२१५) नांभेरा वेवेनुं कपाडकारी जांक ।

(वि०—साकडां रे बेव ने जूमबेरी पूजा)

- (२१६) कललीन् शोक भाबे । (कोबली में मुड भाती)
- (२१७) कौबरमोमेरो पीग भापो ताई का ने नी भापो ताई का ?
- (२१८) कबारे र घरे हाबला रो खोट ।  
(सांभर काय अलूभो काय; सांभर में मूभरो बोडो; बूजार कुटी में रांबे; बूमर रे घरे कुडी हांड)
- (२१९) करलु कासा ने मुंय हीला ।
- (२२०) कुडाम् पीप ने कडाइ बाम् जार्नु ।
- (२२१) कांकार कासबे करबु पडी ।
- (२२२) कैरी सोलबा कांभूस ने बस सोलबा उदार ।
- (२२३) कराकेज कोकी ने घर-घर होमीयो ।
- (२२४) कांटाकोडे कांटा भापो ने हुमात्मकीये हुकीहये लडी ।
- (२२५) कोई सेरेती भार तां जल्पन गोसैती नारबी ।

## परिशिष्ट २

“अपूरा पूरा” तथा कहावती पद्य

- १ भद्रवर कर न चाकर। बटी कर न काम ।  
दास मरुका बच पदा सबको दाता राम ॥
- २ अनमो नाथ अनया कूरु अनमी कर पटरका ।  
आज अनमो घर में नाही कूल बरैला पटरका ॥
- ३ अमरो तो म मरता बैरयो आजन बैरयो मुरो ।  
बोहर ता म कुतयो बैलो लाछ बहार कूडा ।  
पारो तो गोबर बुदै लतम मला संदुरो ॥
- ४ अमू जान की बाकरो ला गई सगला लन ।  
बाक पड़ी लखपोर को ला पयो छाल रुमैल ॥
- ५ आज कड़ई बाई क बार जिसे कं लाई ।  
आज कड़ई रहयो सात घमूका नहणी ॥
- ६ आज मरा काल मरा, मरुया मरुया किरा ।  
घोल कचोल जर पिचा भई बनड़ा होया किरा ॥
- ७ आजस मोह किस्तान में लोबे चोर में लोबे लाली ।  
दबको टिवियो मूल में लोबे राइ में लोबे हामी ॥
- ८ आज तो बूझ नहीं रही तो या डोड ।  
हुंता में सरबर घना सरबर हुंस गिरोड ॥
- ९ उस्टी गत गौनाल को गई मिटल्लू भाय ।  
बाबल में सेवा कदुया डोट बिरज क भाय ॥
- १० ऊँची टोरी ठोहरो पड़-पड़ गदा बन्हार ।  
रावम निरला बल दिया लंबा का मिरदार ॥
- ११ एक हल हाया दो हल काज ।  
लोन हल खेरी, ध्यार हल राज ॥
- १२ और मंत्रा लव कोजिये एक कीज बागिया ।  
अरो बुलार्ब मोडो बोर्न कर मन का बागिया ॥
- १३ बपड़ा तो लपोठ नहिं मूँड देल नहिं लान ।



सहयो न माने खोचरो क्यो खेना किञ्च वाय ?  
गुब्बो डोरिया नाही ।

- १४ करिबर केरो कान, तरल पुंछ तरिया तची ।  
पीपल केरो पान, निबला रङ्ग न नारणा ।
- १५ कासो कली कमारणा कर कामा कुञ्जत ।  
सोतो सोनो सापुरत, मकुर बाण बोर्जत ॥
- १६ काय कहाडो कविल नर, काई हो काटी ।  
सुई मुहायो सापुरत साठे ही साठे ॥
- १७ कागा कुता कुनाचता तीग्या एक निकास ।  
क्या-क्या तैदुया नीसरं त्या-त्या करं निनास ॥
- १८ काणू कोडो कायरो पुंवाताणू होम ।  
इम नै जव हो छेडिये, हाच पडलो होम ॥
- १९ काळ कुलमम मा मरं कामव करतो अंत ।  
को मागी वा छिर करं, को लुजा चाबं छुट ॥
- २० कित खंडा कित बावली, कित तरवर कित गीर ।  
पुं पुं ना विपवा पडो तू तू स्त्री सरीर ॥
- २१ कुंवारो हडहड हूँतं, मालन सीईं बूट ।  
मज्जेव पगडा दूर हूँ (बिणू) किञ्च कव बीसे अंत ॥
- २२ केडो चाले डोकरो के का काई खोज ।  
काई चारो जो गयो पुळी राजा भोज ॥  
म्हारं सं चारं यईं बीका माणू खोज ।  
चार स जो चापनी मल गरबाई खोज ॥
- २३ कोड नै बीवव वापळा, कोड नै बीपव पळत ।  
कोड रं चडं जाकरो, कोड रं चडं मळत ॥
- २४ कटमल कली वायमो, कडुवो मांछर नू ।  
मरुल गई करतार को, इता कनाया क्यू ॥
- २५ कडवी न होतं पारबी, मथी न बीसे बाण ।  
मं सोव बूबू हो विवा, (मां) कित विव तग्या विराज ।  
कल कोडा नेहा कना लय्यो प्रीत की बाण ।  
'दुं पो लूं पो', करत (मां) निरनां तग्या विराज ॥
- २६ कर पुंनू भुरख नरां लवा सुनी प्रविराज ।

करना करनी बसुर नर, मिल प्रत रहत उदात्त ॥

- २७ बागो पीनो जलनो सोनो लूटी ताम ।  
माछी डीबो संबड़ा भावहीं कं पाव ॥
- २८ सेता जेती मत करै उरुम कर कंइ भीर ।  
बोठ मूसा जा यवा चारो लम्पा खीर ॥
- २९ खेनी पानी बीनतो परभेसर का जाप ।  
पर हावा मत कोत्रिये करिये माया भाप ॥
- ३० पंयात्री को ग्हाबनु बिपरी को ध्योहार ।  
डूब जयाम तो पार हूँ पार जयाम ता पार ॥
- ३१ माड़ी पड़ी उत्राडु में काँटो लगै बाँध ।  
पोरो लूँ सेर में कह खेला रिष बाप ?  
मुझको जाड़ी नाही ।
- ३२ गेलो भली न कोन की बटी भया न एक ।  
लहयो भली न बाप को साहब रान्म टक ॥
- ३३ खया माडू पर रहपा ये निग जीपुग होय ।  
कपड़ा काँटे तिय बर्य बाँध न जाग होय ॥
- ३४ खया बाब कर कौं ग्हे बाबन पाया ।  
गुड़ी छान पर कून ग्हे हूँनी न जाया ॥
- ३५ खन गुल बीमाव लल, अँठ खन भयाडुँ बल  
साबन भाग भावहीं छी बहार करना कानी ग्गी ।  
अमरुन बीरा पूने बाबा भाँजे निमरो बागव बिबा ॥
- ३६ छोछ छोचनी छोचरा अर छोचपानी भाग ।  
खारी छोछा लख निरु, अब नूँडे बरनार ॥
- ३७ छोचन बावे छोचन बीन छोचन रतिय भाव ।  
छोचन बर पर बर न जावे आछा बरे न होंप ॥
- ३८ छोटी ही खन माटो कई खारी खान बर नरि कौं ।  
अब जाया बेचन हो बाब भागी बर्बा क छोँटे पाव ?
- ३९ छोटा-छानन बूट उत्राडुन परबनिनी भी माई ।  
एना खेना न करो गकरी बाव न आवे काँई ॥
- ४० छोचपा टोडा टोडरी, लाम्या ग्गी बरान ।  
अटोचनी उत्राँचनी छोडू पराँ की भाव ॥

- ४१ जननी जल तो ममत जल की बाता के सुर ।  
नाई तो जल बात रह भती पंथाई मूर ॥
- ४२ जाट कई तुम जाटनी, ई पांथ में रहणू ।  
ऊँट बिलाई ले गईं हाँसी हाँसी कहणू ॥
- ४३ भोजन दरब न छट्टियाँ क्या परदेता जाय ।  
ममिया मूं हो बीहड़ा मिनक जमारै जाय ॥
- ४४ क्याका ऊँडा बैठना क्याका जेत निबाण ।  
बाँका बेरो के करै क्याका मीत निबाण ॥
- ४५ ताता बड़म सुरंग भात-भात भोजन मना ।  
सुबरा खोर सुरंग नहीं पुष्य दिन मारना ॥
- ४६ तोमा पाँके तोजड़ी होली पाँठ बूँड ।  
छेरा पाँके जूनड़ी मार जसम के मूँड ॥
- ४७ तोतर पंखो बाबली, बिबाबा काजल रेल ।  
बा बरतै बा घर कर ई में मीन न मेल ॥
- ४८ तोन बुलाया तेरा माया नई राम की बापी ।  
राबो जेतन मूं कई नद छो बाल में पापी ॥
- ४९ तेन बेखि तेन की बार बिच बैस्या मति करे पुकार ।  
जाँब ऊँठि पारर को लूँटि देखी किप कडि बेठि ऊँठि ॥
- ५० बाँत बरानी बायनो, बारी भीर दरवान ।  
मे पाँचू बड़ा बुरा बत राकै भववान ॥
- ५१ बर जाताँ घन पल्लताँ, बिबा पड़न्ताँ ताव ।  
तोन बिबत मे मरब रा कून एक कुन राव ॥
- ५२ बर रहुँसी रहतो बरन जप जाती सुरसाण ।  
जबर बितम्बर ऊँरताँ राबो नहुँचो राव ॥
- ५३ बान पुराणा खो नवाँ घर कलबन्ती मार ।  
खौबी पीठ सुरंग रो बरन तथा कल ध्यार ॥ १
- ५४ नाई साधे हुँसी लुँमार बरि घरि बोठै करै जुँहार ।  
जबसे खेरै लूँडो लो (तो) बड़ियौड़ो बर लूँडुलो ॥
- ५५ पंथाँ भीर नबालची बोनू उल्टी रीत ।  
भीर बिलाकै ध्यानजो जाय भंभेरै बीच ॥ ४
- ५६ पन पूगल पड़ कोयड़े बाहु बायड़नेर ।

दिरागो-शिरागो बोरपुर टागो ब्रम्भन्तर ॥

- ५७ दूनी नम तोरदा बान्ना । दूनी नम हो दर में मन्ना ॥  
तोरो नम पूर अरिहारा । बोदा नम दन्धिया मन्ती ॥  
दांरधो नम रात्र में पाण । उडा नम मन्धने बान्ना ॥  
हाणधो नम विद्या कनकान्ना । पू हाणो नम उन्ना विपान्ना ॥
- ५८ दाग महे पाडा अङ्क विडा बान्ना मन्ना ।  
दोनी नम बोगार म बह बन्ना विप रात्र  
पन्नी उदुवा बाग्य ।
- ५९ पन्ना दाग दई मन्नि पोरा देर दिराग तोरें लोरा ।  
पन् मन्नादर पन्ने बाण दन्धो बाण बुना मन्ना ॥
- ६० पुट्ट री घर हुई बंशङ्गी कुला निव बान्ना रबागो ।  
पाण बलें लोण्डा मूक दन्ना लो ना पन् इरने बन्ना ?
- ६१ बाण बङ्गा मन्ना बहे हुदा न मन्निवा बोय ।  
म मन् क मन्ना हुई मन् लो मन्ना होय ॥
- ६२ बाई में बाई परमाई बर विमगार बाणर भाई ।  
दोनु हुना मन्ने डाण, अणगान्ना अणगोराण ॥
- ६३ बाणें मन्ना, बाणें म्वाण बाण नर बाणें मन्नाण ।  
बाण पुण्ड मन्ना बरें (ती) मन्ना को रात्र विमोमय कर ।
- ६४ बाणें रोमैं बाणियु गीका म दन्नुन ।  
बाणम रोमैं लान्ना बाणम रोमैं मन् ॥
- ६५ बाणम मं बाणम निरदा पुरबान्ना जन्म बा मन्नाण ।  
देम मन् म कण्ड बरें मन्नाण ही मन्नाण ॥
- ६६ बाण बोमैं बोनी पन्ने बन्नाण दन्ने पाणी ।  
मो बान्ना लो बाणम बन्ने मन्ना म पन्ने मन्ना ॥
- ६७ बाण बाण मन्निवे दन्नी मन्ने टाण ।  
बाणम म निवयर पन्ने, बाण म बाणें लण्ड ॥
- ६८ बाण बाणर बाण निव मन्ने मन्ने मन्ने गोण ।  
मे बन्ना हो बाणम, पी जन्ने मन्ने ॥
- ६९ दन्ना विगाई री उन्ना के मन्नी के मन्ने ।  
बो बोमैं बन्ने बन्ने बो बन्नाण देण ॥
- ७० बाण दाने म् मन्ना बोमैं मन्ने पी ।

- बाक मायें भूतिमा खुती हो तो पी ॥  
 ७१ नाईं जायो पइसा मर मायें जायो तेर ।  
 बालमजी तो बीमरघा जी में हेर न खेर ॥  
 ७२ मीकें मीडो बाकरो, बीबी बिबना नार ।  
 ये थ्याकें माझा भला मोटा करे बिमाइ ॥  
 ७३ भोजन भवति न नीपमै ना कंवा ना काट ।  
 साप साप रे प्राहुवा बीमां रा लबलाट ॥  
 ७४ मरइ तो अघ्यान बंको कृष बंकी गोरिया ।  
 सुरहल तो डूपार बंकी लेब बंकी घोड़िया ॥  
 ७५ मरइ तो भूच्छघाल बंकी मंभ बंकी गोरिया ।  
 सुरहल तो सींगाल बंकी पीठ बंकी घोड़िया ॥  
 ७६ मरवां मरणी हुक है ऊवरसी पस्तार्इ ।  
 सापुरसां रा बीबना बोड़ा ही भस्माह ॥  
 ७७ मान रखें तो पीठ तज पीठ रखें तज मान ।  
 दोय-दोय पयम्ब न बंभही, हूकें खंनु ठाम ॥  
 ७८ मिनक कहुं में बन कक, कर की ककें नुमान ।  
 साईं हाथ फतरणी भइ राखीयो जनमान ॥  
 ७९ मोत मानकी मामलो भंडी बांगल हार ।  
 पांभू मम्मा एकता पत राखें करतार ॥  
 ८० मोरां बिन बूंगर कित्ता मे बिन कित्ती मलार ।  
 तिरिया बिन तीजां कित्ती पिघ बिन कित्ता लुंहार ॥  
 ८१ रात-पुराची बाजरी, मीठक बाल बेंबार ।  
 तोड़े तोड़े नोठिया कौड़ी माल बेंबार ॥  
 ८२ रिविया तेरी रात डूजो नर जायो नहीं ।  
 बी जायो परमात (तो) तेरी रंग पायो नहीं ॥  
 ८३ लुजा भोजन मग बहुच बडका बीली नार ।  
 नंबर चुई टपूकड़ा पाच तनां फल थ्यार ॥  
 ८४ लोबे लाग्यो बाभियूं चुई लागी माय ।  
 बाबई तो बाबई नईं चास्यां ईं जाय ॥  
 ८५ साईं इन संतार में, जांत-जांत का लीय ।  
 लबतूं रलमित्त धानिये नदी-बाब संजोप ॥

- ८६ तांसी ताह तरावयो तिरीमात्त तुमार ।  
ये तस्ता पांरुं बुरा पहले बरो विचार ॥
- ८७ ताब कती अर सुरमा म्यानी अर गरदंत ।  
ये पाछा ना बाबड् बे बुय बाय अर्नत ॥
- ८८ ताबण छाछ न घालनी, भर ब्रिसाणां बूब ।  
घरज दिवानी पुअरी, घर में मोदा पूत ॥
- ८९ ताबण में तो सूरयो चासै भाबूई परयाई ।  
आसोआ में पिछवा चासै भर भर गाढा स्याई ॥
- ९० ताबण हरई भाडू बीत आसोआं मुड् जावो मीत ।  
काती धूला मंगसर लेल, पीह में कगे बूध लुं मेळ ।  
माघ मास घिब ज्जिबड़ी साय कागज विनुवे उठ ग्हाय ॥
- ९१ सासरो कुल सासरो  
पम दिनां तीन को आसरो ।  
रैस्यां मात्त छा मात्त  
बेस्यां कुरपी, बुदास्यां घात्त ॥
- ९२ साहकार को बेटो आयो करी कभाई लखो स्यायो ।  
सोदो बेच आययो काजा अत्त गई रा बार्जे बाजा ॥
- ९३ तिह संन सगुण्य बच कोस कर्जे डक बार ।  
भिरिया लेल हमीर हठ, कई न बुझी बार ॥
- ९४ तुवना केरी प्रीतड़ी तापुरतां री बाह ।  
बालो डाकर सैबिये बलती सीजे छाह ॥
- ९५ हुंता तरवार ना तर्जे बे जस मारा होय ।  
डाबर डाबर डोलतां बला न रहती कोय ॥
- ९६ हरई भरई भाबला घी सक्कर में साय ।  
हाबी भाईं बाय में ताठ कोम ले उयाय ॥
- ९७ हर बड़ा क हिरवा बड़ा लपवा बड़ा क इयाम ।  
अरजन रच नै हांन बे भली करे भगवान ॥
- ९८ हर भजतां हांमी बरे जिनटे पेई पाव ।  
पेट बलाण्यां घालनी अंपल होमो मांप ॥
- ९९ हाड आ बाजार जा भाबूं बरस्या बोरी ।  
कमाने को बुरत भरीं ता वरुं बरये पो गोरी ॥

- १०० श्राव कमाया कामडा कोने बीजे होस । ७ ;  
जोने जो रो पालुगी काहे मीनो जास ॥
- १०१ हियडा संकुचि निरख वयु मन पसरंत निवार ।  
बेता बेई मोडया, सेता पाव पत्तार ॥

